WHITE BOOK

COACH UP IAS

YOUR SELECTION Is OUR BUSINESS

प्राचीन भारत का इतिहास

सिविल सेवा परीक्षा के लिए

IAS COACH ASHUTOSH SRIVASTAVA

IAS COACH MANISH SHUKLA

8009803231 / 9236569979

Saarthi

THE COACH

1 : 1 MENTORSHIP BEYOND THE CLASSES

- **Diagnosis** of candidates based on background, level of preparation and task completed.
- **Customized solution** based on Diagnosis.
- One to One **Mentorship.**
- Personalized schedule **planning.**
- Regular **Progress tracking.**
- **One to One classes** for Needed subjects along with online access of all the subjects.
- Topic wise **Notes Making sessions**.
- One Pager **(1 Topic 1 page)** Notes session.
- **PYQ** (Previous year questions) Drafting session.
- **Thematic charts** Making session.
- **Answer-writing** Guidance Program.
- **MOCK Test** with comprehensive & swift assessment & feedback.

Ashutosh Srivastava
(B.E., MBA, Gold Medalist)
Mentored 250+ Successful Aspirants over a period of 12+ years for Civil Services & Judicial Services Exams at both the Centre and state levels.

Manish Shukla
Mentored 100+ Successful Aspirants over a period of 9+ years for Civil Services Exams at both the Centre and state levels.

इतिहास के प्रमुख स्रोत

प्राचीन भारतीय इतिहास का अध्यन करने हेतु स्रोतों को दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

- **पुरातात्विक स्रोत**
- **साहित्यिक स्रोत**

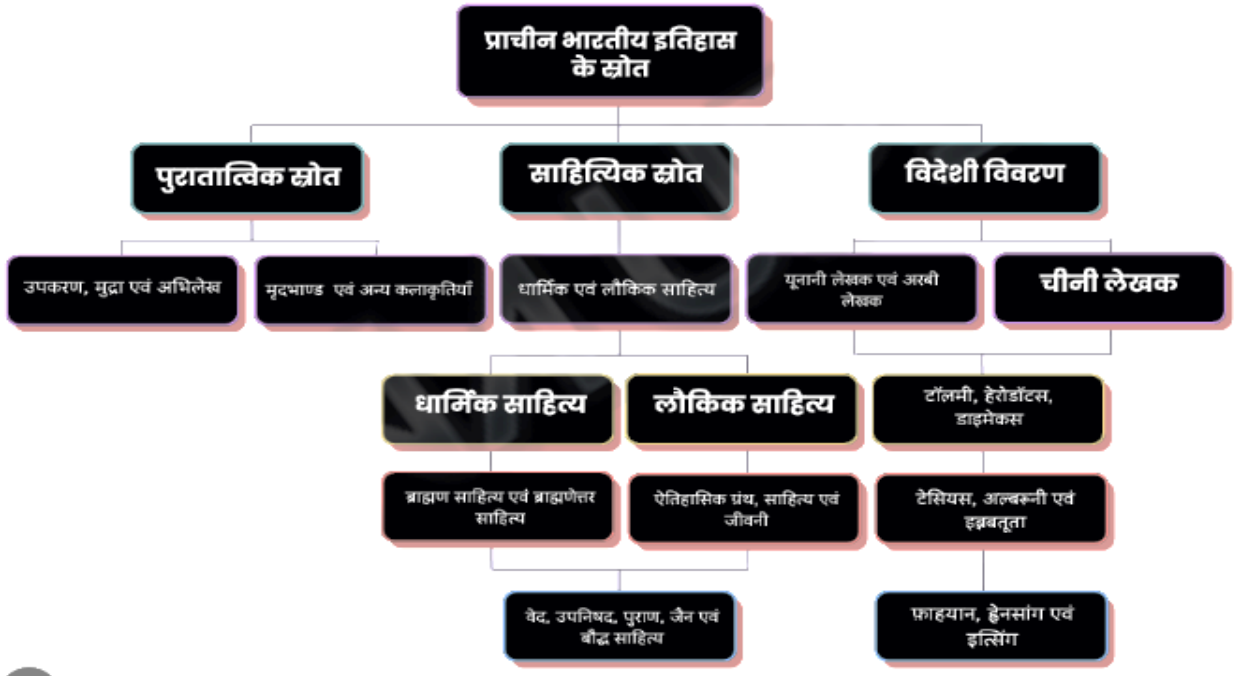

पुरातात्विक स्रोत

- पुरातात्विक स्रोत आर्कियोलॉजी यूनानी भाषा के शब्दों आर्कियोस तथा लोगो से मिलकर बना है।
- प्राचीन भारत के अध्ययन के लिए पुरातात्विक सामग्री का विशेष महत्व है क्योकि साहित्यिक स्रोतों की कुछ सीमाएं हैं।
- जैसे-
  - प्रामाणिकता की समस्या
  - भारतीय ग्रंथों का रचनाकाल ज्ञात न होना
  - ग्रंथों की प्रतिलिपि करते समय सुलेखकों द्वारा तथ्यों का हेर-फेर कर दिया जाता हैं जिससे व्याख्या न सिर्फ अतिशयोक्ति पूर्ण हो जाती है, बल्कि कभी-कभी हास्यापद भी हो जाती हैं।
- साहित्यिक स्रोतों की इस कमी के कारण ही कहा जाता है कि **"जहां से साहित्य मौन हो को जाता है, वहां से पुरातत्व बोलता है"**। कही कही पर तो हम पाते हैं कि पुरातात्विक स्रोत ही महान शासकों के संबंध में जानकारी प्रादान करने का एकमात्र साधन हैं। जैसे -गुप्त शात्तक समुद्रगुप्त के इतिहास के संबंध में हमें उनके अभिलेख प्रयाग-प्रशस्ति से ही जानकारी प्राप्त होती है।
- इसी तरह हड़प्पा या उसके पहले की प्रागैतिहासिक संस्कृतियों का अध्ययन करें तो ज्ञात होता है कि इस संबंध में पुरातात्विक साक्ष्य हमारे इकलौते स्रोत हैं।
- पुरातात्विक साक्ष्यों के इसी महत्त्व के कारण 1861 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का गठन किया गया।
- 1871 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का गठन किया गया। इसके प्रथम महानिदेशक कनिंघम थे।
- 1904 में कर्जन के समय प्राचीन स्मारक परिरक्षण अधिनियम पारित हुआ।
- पुरातत्व को एक स्वतंत्र विषय के रूप में स्थापित करने का श्रेय ब्रिटिश पुरातत्वविद मार्टिमर व्हीलर को जाता है।

❑ अभिलेख

अभिलेख ऐसे लेख अंकित स्रोत हैं, जो कागज पर नहीं हैं, इन्हें साहित्य का अंग नहीं माना जाता।

ज्यादातर अभिलेखों की शैली पद्यात्मक है, कुछेक चंपू शैली में तथा कुछेक गद्य में भी हैं। प्रमुख अभिलेख निम्नलिखित हैं-

- **बोगजकोई/मितन्नी अभिलेख :-**
  - यह 1400 ई.पू. का है।
  - इसे मध्य एशिया का प्रथम अभिलेख कहते हैं
  - इसमें वैदिक देवताओं के नामो का उल्लेख हैं
  - **जैसे** - इंद्र, मित्र,वरुण और नास्तय
  - इसे एशिया माइनर का अभिलेख भी कहते हैं।
- **पिपरहवा का लेख :-**
  - संभवतः भारत का पहला अभिलेख है जो पाँचवीं शताब्दी ई.पू. का है।
  - लिपि- ब्राह्मी, भाषा- प्राकृत
  - बुद्ध के महापरिनिर्वाण का उल्लेख मिलता है।
  - यह उत्तर प्रदेश के कुशीनगर जिले में स्थित हैं।
- **सोहगौरा अभिलेख** –
  - चंद्रगुप्त मौर्यकालीन, लिपि ब्राह्मी, भाषा- प्राकृत,
  - कल्याणकारी कार्यों की जानकारी हैं (अकाल से निपटने का राजकीय प्रयास)
  - यह अभिलेख गोरखपुर (उत्तर प्रदेश) से प्राप्त हुआ हैं
- **महास्थान अभिलेख** –
  - दीनाजपुर (बांग्लादेश), चंद्रगुप्त मौर्यकालीन लिपि-ब्राह्मी, भाषा-प्राकृत,
  - विषय- कल्याण (अकाल से निपटने का राजकीय प्रयास)।
- **अशोक के अभिलेख :-**
  - भारत के सबसे प्राचीन अभिलेख मौर्य काल से प्राप्त हुए हैं
  - अशोक ने सबसे पहले रोम से प्रभावित होकर भारत में अभिलेखों की रचना की।

- सर्वप्रथम 1837 में जेम्स प्रिंसेप ने ब्राम्ही लिपि में लिखित अशोक के अभिलेखों को पढ़ने में सफलता प्राप्त की।
- इन अभिलेखों में अशोक के जीवन शासन काल की पद्धतियों तथा उसके धर्म से सम्बंधित विषयों की जानकारी प्राप्त होती हैं
- अशोक के नामो का उल्लेख मास्की गुर्जरा निट्टूर उदयगोलम अभिलेख से प्राप्त होता हैं अशोक के अभिलेखों में चापड़ नामक एक मात्र लेखक का नाम मिलता हैं
- D.R भंडारकार महोदय द्वारा अभिलेखों के आधार पर ही मौर्यकाल का इतिहास लेखन किया गया हैं।

- **अशोक के अभिलेखों में प्रयुक्त लिपियाँ -**
- **ब्राम्ही लिपि -** यह लिपि बाएं से दाएं लिखी जाती हैं अशोक के अधिकांश अभिलेख इसी लिपि में हैं।
- **खरोष्ठी लिपि -** यह लिपि दाएं से बाएं लिखी जाती हैं अशोक के कुछ अभिलेख इस लिपि में हैं
- **यूनानी और आरमेइक लिपि-** पकिस्तान और अफगानिस्तान में पाए जाने वाले अभिलेखों में इस लिपि का प्रयोग किया गया हैं।

- **अभिलेखों का महत्त्व -**
- शासक के सीमा क्षेत्र , विस्तार , अर्थव्यवस्था , धर्म एवं नियम तथा सामाजिक मान्यताओं के साथ साथ शासक की अन्य राज्यों के साथ सम्बन्धो की जानकारी प्राप्त होती हैं।

- **वृहद शिलालेख-** 14 (आठ जगहों से प्राप्त, दो पृथक वृहद् शिलालेख - धौली और जौगढ़ से प्राप्त)
- **स्तंभ लेख-** 7 (छह जगहों से प्राप्त)
- **अशोक के 6 प्रमुख स्तंभ शिलालेख** कौशांबी (इलाहाबाद), टोपरा (अब दिल्ली), मेरठ (अब दिल्ली), लौरिया-अराज, लौरिया-नंदनगढ़, रामपुरवा (चंपारण) में पाए गए हैं, और 7वां दिल्ली-टोपरा स्तंभ पर पाया गया है।
- **गुहालेख-** 4 (बराबर पहाड़ी से तीन एवं पानमुनेरिया से एक)
  - कर्ण , चौपार , सुदामा और विश्व झोपड़ी
  - अशोक के पौत्र दशरथ ने इन्ही पहाड़ियों पर लोमष ऋषि व गोपिका गुफा का निर्माण कराया था।

अशोक के अभिलेखों का विस्तृत विवरण शिलालेख उसमें उल्लिखित विषय	
प्रथम शिलालेख	1. समाज (उत्सव) का निषेध 2. पशुबलि का निषेध
प्रथम पृथक कलिंग शिलालेख	1. सभी मनुष्य मेरी संतान की तरह है।
द्वितीय शिलालेख	1. प्रत्यन्त राज्य-चेर (केरल पुत्त) चोल, पाण्ड्य, सत्तियपुत्त एवं ताम्रपर्णी (श्रीलंका) 2. पशु चिकित्सा एवं मानव चिकित्सा एवं लोक कल्याणकारी कार्य।
तृतीय शिलालेख	1. महामात्रों अर्थात् पदाधिकारियों के प्रति पांचवें वर्ष दौरे का आदेश। 2. अल्प पाप 3. अल्प संग्रह
चतुर्थ शिलालेख	राजुक या राजुकों की नियुक्ति
पाँचवें शिलालेख	1. धर्म महामात्रों की नियुक्ति एवं कार्य निर्देश 2. मौर्यकालीन समाज एवं वर्णव्यवस्था का उल्लेख
ग्यारहवें शिलालेख	धम्म विजय की विशेषताओं का वर्णन
बारहवें शिलालेख	धार्मिक सहिष्णुता की नीति का उल्लेख
तेरहवें शिलालेख (पृथक शिलालेख अन्यत्र नहीं मिलता)	1. कलिंग युद्ध का वर्णन 2. पाँच सीमान्त यूनानी राजाओं के नाम जहाँ अशोक ने अपने धर्म प्रचारक भेजे थे। (i) अन्तियोक (सीरियाई नरेश) (ii) तुरमय (मिस्त्री नरेश) (iii) अन्तिकिनि (मेसीडोनियन नरेश) (iv) मग (एपिरस) (v) अलिकसुन्दर (सिरीन) 3. . आटविक राज्यों का उल्लेख

Note:-

- सभी मनुष्य मेरी सन्तान (प्रजा) है, जिस प्रकार में अपना सन्तान के लिए इहलौकिक एवं पारलौकिक कल्याण की कामना करता हूँ उसी प्रकार अपनी प्रजा के लिए भी।" "प्रथम पृथक शिलालेख' (कलिंग लेख)
- "जैसे एक माँ अपनी सन्तान के लिए एक कुशल धाय को सौंपकर निश्चिन्त हो जाती है उसी प्रकार मैंने भी इसीलिए राजुकों की नियुक्ति की है।" "प्रथम पृथक शिलालेख" (कलिंग लेख)
- "सभी पंथों के मध्य आत्म नियंत्रण और मन की पवित्रता होनी चाहिए।" 'सातवें शिलालेख'

- **पहलव शासक गोंडोपफर्निज का गद्देबहर तख्ते-बही अभिलेख** –
  - पेशावर स्थित इस अभिलेख पर 103 विक्रम संवत् की तिथि दी गई है।
- **नहपान का नासिक अभिलेख :-**
  - इससे नहपान द्वारा मालवा जीतने की तथा समकालीन सातवाहन शासक के पूर्वी दक्कन (आंध्रप्रदेश) की ओर बसे होने की जानकारी मिलती है।
- **रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख :-**
  - संस्कृत भाषा का प्रथम अभिलेख (150 ई.), लिपि - ब्राह्मी ।
  - सुदर्शन झील का पुनरोद्धार सुविशाख द्वारा स्वयं के कोष से कराने का तथा यज्ञश्री सातकर्णी के पुत्र पुलुमावी से अपनी पुत्री का विवाह करने का उल्लेख मिलता हैं
  - चन्द्रगुप्त मौर्य और अशोक दोनों का जिक्र जूनागढ़ अभिलेख से ही मिलता है।
- **कनिष्क प्रथम का सुईविहार लेख :-**
  - बहावलपुर (पाकिस्तान), भाषा संस्कृत से प्रभावित प्राकृत, लिपि - खरोष्ठी।
  - इससे कनिष्क के बौद्ध मतावलंबी होने की जानकारी मिलती है।
- **बेसनगर का गरुड़ध्वज अभिलेख :-**
  - यूनानी राजा एंटियालकिड्स के राजदूत तक्षशिला निवासी हेलियोडोरस के विदिशा के शुंग शासक भागभद्र के दरबार में आने और भागवत (वैष्णव) हो जाने का उल्लेख है।
  - हेलियोडोरस ने वसुदेव को एक गरुड़ध्वज अर्पित किया, जिस पर आत्मनिग्रह, त्याग और सतर्कता जैसे तीन अमर सत्य खुदे हुए हैं।
  - इस अभिलेख पर महाभारत के शांति पर्व तथा कृष्ण और विष्णु के एकीकरण का उल्लेख है।
- **कलिंग नरेश खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख :-**
  - भुवनेश्वर के निकट, उदयगिरी पहाड़ी पर स्थित प्रशस्ति है
  - 15 वर्ष की आयु में खारवेल के युवराज बनने और 24 वर्ष की आयु में शासक बनने का उल्लेख एवं खारवेल की उपलब्धियों का वर्षवार विवरण किया गया है।
  - इस अभिलेख में अशोक के कलिंग युद्ध की जानकारी प्राप्त होती हैं।
- **नागनिका का नानाघाट लेख :-**
  - प्रथम सदी ई.पू. के उत्तरार्ध का भाषा- प्राकृत, लिपि - ब्राह्मी

- गौतमी बलश्री के समय यह लेख खुदवाया गया।
- इसी से भूमि दान का अभिलेखीय साक्ष्य प्राप्त होता है।

- **विशेष** –
- **भूमि दान :-** इस समय अधिकारीयों को वेतन के स्वरुप भूमि दान में दी जाती थी लेकिन अधिकारीयों का भूमि पर कोई अधिकार नहीं होता था जैसे वे भूमि को हस्तांतरित और वंशानुगत नहीं कर सकते थे केवल उपज पर ही एकमात्र अधिकार होता था। **यही से पहली बार सामंतवाद के प्रमाण प्राप्त होते हैं।**

- **स्कंदगुप्त का भीतरी स्तंभलेख :**
- सैदपुर (गाजीपुर- उत्तर प्रदेश), पुष्यमित्रों और स्कंदगुप्त के युद्ध, राजनीतिक उपलब्धियों एवं ग्राम दान का उल्लेख मिलता है।

- **विशेष** –
- **ग्रामदान-** गुप्तकाल में स्कंदगुप्त ने पहली बार ग्राम दान देने की प्रथा शुरू की जिसमे अधिकारीयों को प्राप्त भूमि पर उन्हें वंशानुगत तथा हस्तानांतरित करने का अधिकार प्राप्त हो गया इन्हे अपने क्षेत्र में सेना रखने का भी अधिकार प्राप्त हो गया।
  - यही कारण है की सामंतवाद अपने शीर्ष पर चला गया जिसके कारण गुप्तकाल का पतन होना प्रारम्भ हो गया।

- **हरिषेण की प्रयाग प्रशस्ति:-**
- भाषा संस्कृत, लिपि ब्राह्मी, शैली - चम्पू।
- इस अभिलेख पर अशोक, समुद्रगुप्त, बीरबल और जहाँगीर के लेख हैं।
- इसमें समुद्रगुप्त के विजय अभियान का विस्तृत वर्णन है, किंतु अश्वमेघ यज्ञ की सूचना नहीं है।
- इस प्रशस्ति में उत्तर भारत(आर्यावर्त) के नौ राज्य तथा दक्षिण के बारह राज्यों की विजय की जानकारी प्राप्त होती हैं।

- **चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य का मेहरौली का लौहस्तंभ :-**
- ब्राह्मी, ब्राह्मी, भाषा संस्कृत
- विष्णुध्वज के रूप में निर्मित, साम्राज्य विस्तार और धार्मिक उपलब्धियों का वर्णन (बंगाल, पंजाब और बाहलिक राजाओं पर विजय) किया गया है।

- **कुमारगुप्त का विलसंड अभिलेख :-**
- एटा (उत्तर प्रदेश), कुमारगुप्त के राज्यारोहण का पता चलता है। कुमारगुप्त तक गुप्तों की वंशावली मिलती है।
- श्रीगुप्त से लेकर कुमारगुप्त प्रथम तक की जानकारी प्राप्त होती हैं जबकि इसके बाद के अन्य शासको की जानकारी कल्हड की पुस्तक राजतरंगिणी से प्राप्त होती हैं

- **कुमारगुप्त का मंदसौर अभिलेख :-**
- वत्सभट्टि द्वारा उत्कीर्ण यह अभिलेख दशपुर (प्राचीन मालवा) के राज्यपाल बंधुवर्मा द्वारा सूर्यमंदिर निर्माण का उल्लेख (कुमारगुप्त द्वितीय के समय रेशम बुनकरों की एक श्रेणी ने इसका जीर्णोद्धार कराया करता है।

- **स्कंदगुप्त का जूनागढ़ अभिलेख :-**
- स्कंदगुप्त की राज्यारोहण तिथि गुप्त संवत् 186 (455 ई.)
- हूणों के पराजय, प्रांतीय शासक के स्वरूप, सुराष्ट्र के राज्यपाल पर्णदत्त द्वारा **सुदर्शन झील** के पुनर्निर्माण (गिरनार के पुरपति चक्रपालित द्वारा) का उल्लेख मिलता है।

- **सुदर्शन झील** –
- इसका निर्माण मौर्या वंश के शासक चन्द्रगुप्त मौर्य ने सौराष्ट्र के गवर्नर पुष्यगुप्त के माध्यम से कराया था। इस निर्माण का मुख्य उद्देश्य पेय जल और सिंचाई व्यवस्था को मजबूत करना था।

- **सुदर्शन झील का पुनर्निर्माण** –
- मौर्यवंश - अशोक - सौराष्ट्र के गवर्नर तुषास्य
- शक वंश - रुद्रदामन प्रथम - सौराष्ट्र के गवर्नर सुविसाख
- गुप्तवंश - स्कन्दगुप्त - सौराष्ट्र के गवर्नर चक्रपालित एवं पर्णदत्त

- **भानुगुप्त बालादित्य का एरण अभिलेख :-**
- साँची (मध्यप्रदेश), 510 ई. में भानुगुप्त के मित्र गोपराज की युद्ध में मृत्यु के बाद उसकी पत्नी के सती होने का वर्णन है (सती प्रथा का प्रथम अभिलेखीय साक्ष्य)

- **सती प्रथा का अर्थ** –
- इस प्रथा के अंतर्गत किसी महिला के पति की मृत्यु होने के बाद उसे स्वयं अपने पति की चिता में समर्पित होना होता था।
- इसका प्रथम प्रमाण एरण अभिलेख से प्राप्त होता हैं गुप्तकाल में यह प्रथा केवल सैनिको के क्षेत्रो में लागू थी अर्थात यह समाज की अनिवार्य प्रथा नहीं थी जबकि आगे चलकर यह प्रथा भारतीय समाज की एक महत्वपूर्ण परंपरा बन जाती हैं।
- मध्यकाल में इस प्रथा का आंशिक विरोध अकबर, जहांगीर और शाहजहां के द्वारा किया गया। लेकिन इस पर पूर्णतयः प्रतिबन्ध नहीं लगाया गया।
- आधुनिक भारत में पुर्तगाल गवर्नर अल्बुकर्क ने इसे प्रतिबंधित करने का प्रयास किया जबकि 1829 में लार्ड विलियम बैंटिक ने राजाराम मोहन राय की सहायता से धारा न. 17 के आधार पर इस प्रथा को पूर्णतयः प्रतिबंधित किया।
- प्रसिद्ध समाजसुधारक राधाकांतदेव इस प्रथा के समर्थक बने रहे।

- **पुलकेशिन द्वितीय का एहोल प्रशस्ति :-**
- यह रविकीर्ति द्वारा संस्कृत भाषा तथा दक्षिण ब्राह्मी लिपि में लिखित है
- हर्ष को पराजित (634 ई.) करके उसे विन्धय पर्वत से आगे बढ़ने से रोका। अर्थात दक्षिण विजय करने से रोका।
- इस विजय के बाद पुलकेशिन द्वितीय ने परमेश्वर की उपाधि धारण की।
- पट्टडेकल क्षेत्र में बनाए गए मंदिरों तथा गुफा चित्रों का उल्लेख मिलता है
- इसमें रविकीर्ति ने अपने को कालीदास तथा भारवि के समकक्ष बताया है।

- **मालवा के यशोधर्मन की मंदसौर प्रशस्ति :-**
- इस प्रशस्ति की रचना वासुल द्वारा की गई। मंदसौर का प्राचीन नाम दसपुर मिलता है।
- इसमें उसे जनेन्द्र तथा औलिकरवंशी कहा गया है।

- **उत्तर मेरूर अभिलेख (परांतक प्रथम का)** –
- चोलकालीन स्थानीय स्वशासन का वर्णन मिलता है।
- परांतक प्रथम ने स्थानीय स्वशासन का प्रारम्भ किया तो राजेंद्र प्रथम और राजराज प्रथम ने इसे शासन का महत्वपूर्ण अंग बनाया।
-

अभिलेख	लेखक
अशोक	चापड़
बेसनगर	हेलियोडोरस
उदयगिरि(चंद्र द्वितीय)	वीरसेन
समुद्रगुप्त (प्रयाग)	हरिषेण
मंदसौर (यशोधर्मन)	वसुलि
एहोल (पु० द्वितीय)	रविकीर्ति

- **भारत में पुरातत्व विभाग:-**
- भारत में सर्वप्रथम 1861 ई. में अलेक्जेंडर कनिंघम को पुरातत्व सर्वेक्षक के रूप में नियुक्त किया गया था।
- 1871 ई. में पुरातत्व सर्वेक्षण को सरकार के एक विभाग के रूप में गठित किया गया था।
- वर्ष 1901 में लॉर्ड कर्जन के समय में इसे भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के रूप में केंद्रीकृत कर जॉन मार्शल को इसका प्रथम महानिदेशक बनाया गया था।
- वर्ष 1902 में जॉन मार्शल ने कार्यभार ग्रहण किया।

- **Note** –
- **अभिलेख महत्वपूर्ण तथ्य**

- अभिलेखों के अध्ययन को एपिग्राफी एवं प्राचीन लिपियों के अध्ययन को पेलियोग्राफी कहा जाता है।
- अशोक के अभिलेख प्राचीनतम अभिलेख हैं, जिन्हें पढ़ा जा सकता है।
- 1837 ई में जेम्स प्रिंसेप द्वारा इन्हें पढ़ा गया।
- सोहगौरा ताम्रपत्र एवं महास्थान शिलालेख भारत में अकाल एवं उससे निपटने के लिए अनाज की व्यवस्था का उल्लेख करने वाले प्राचीनतम उदाहरण हैं।
- अशोक का एरागुडी अभिलेख बौस्ट्रोफेडॉन शैली में लिखा गया पहला भारतीय अभिलेख है।
- बाँसखेड़ा ताम्रपत्र में हर्षवर्धन के हस्ताक्षर उत्कीर्ण है।
- खारवेल का हाथीगुंफा अभिलेख (भाषा प्राकृत) भारत की प्राचीनतम प्रशस्ति है।
- यवन शब्द का पहला अभिलेखीय प्रमाण प्राकृत भाषा में उत्कीर्ण नासिक लेख में मिलता है।
- चंद्रगुप्त द्वितीय के साँची अभिलेख में ग्राम पंचायत का विवरण मिलता है। भारत का सबसे बड़ा अभिलेख महाराणा राजसिंह का "राजप्रशस्ति" है।
- हुविष्क के मथुरा लेख में आटा पीसने वाली श्रेणियों का वर्णन हैं।
- अश्वमेध यज्ञ का प्राचीनतम अभिलेखीय प्रमाण धन देव का अयोध्या अभिलेख है।
- सती प्रथा, सप्ताह के सात दिनों का प्राचीनतम साक्ष्य एरण अभिलेख है।

❑ मुद्रा

सिक्कों के अध्ययन को **'न्यूमिस्मेटिक्स'** कहा जाता है। भारतीय मुद्राशास्त्र का जनक **जेम्स प्रिंसेप** को माना जाता है।

- **आहत सिक्के :-**
  - ये भारत के प्राचीनतम् सिक्के माने गये हैं, इनका नाम 'पण' ज्ञात होता है, कार्षापण कहे जाते थे।
  - इन सिक्कों को सामान्यतः सोना, चांदी तथा तांबा से बनाया जाता था।
  - आहत सिक्कों के निर्माण की एक अन्य विधि में धातु के गर्म पिंडों को ठप्पे से दबाकर सिक्का तैयार किया जाता था।
  - इस प्रकार के सिक्के मूलतः मध्य भारत से प्राप्त हुए हैं।
  - पुरातात्विक साक्ष्यों की विवेचना से प्राचीन भारत में मुद्रा निर्माण की तीन विधियाँ ज्ञात होती हैं। 1- छिद्रण , 2. ढलाई विधि , 3. ठप्पा प्रहार विधि
  - श्रेणियाँ और निगम सभाएँ सिक्के तैयार कराती थीं।
  - आहत सिक्कों पर अंकित किसी न किसी चिन्ह से उनका संबंध निश्चित था।
  - ऐतिहासिक साक्ष्यों के आधार पर स्पष्ट होता है कि मौर्यकाल में सिक्के राजकीय नियंत्रण में निर्मित होते थे।
  - अर्थशास्त्र में राज्य के टकसाल के भीतर बनने वाली मुद्राओं के लिए लक्षणाध्यक्ष नामक अधिकारी का उल्लेख मिलता है, वहीं 'रूपदर्शक' नामक सिक्कों के जाँचकर्ता का नाम भी है।
- **आहत मुद्राओं पर चित्र :-**
  - सिकंदर का बेबीलोन से ड्रेकाद्रम नामक चाँदी का सिक्का (झेलम/हाइडेस्पीज युद्ध की स्मृति में चलाया गया) प्राप्त होता है
  - सिक्के के एक तरफ जीसस के रूप में सिकंदर का अंकन है, दूसरी तरफ युद्धभूमि का अंकन है, जिसमें एक अश्वारोही गज सवार पर भाले से वार करता है।
- **मौर्योत्तर काल में :-**
  - मौर्योत्तर काल में विदेशी प्रभाव के कारण मुद्रा का रूप और आकार निश्चित हो गया।
  - मुद्रा के ऊपर शासक की पहचान दी जाने लगी।
  - बड़ी संख्या में एक ही स्थान से सिक्कों की प्राप्ति से अनुमान लगाया जाता है कि सिक्कों की प्राप्ति का स्थान उस शासक के राज्य का भाग था ।
  - सिक्कों के पृष्ठभाग पर जिस देवता की आकृति बनी हो, उससे शासक के धार्मिक विचार जाने जाते हैं।
  - सिक्कों में जब सोने की अपेक्षा खोट की मात्रा अधिक हो तो राज्य की आर्थिक दशा के पतनोन्मुख होने की जानकारी मिलती है।
- **इंडो-ग्रीक मुद्रायें :-**
  - इस काल में पहली बार स्वर्ण सिक्के (पहला सिक्का **मिनाण्डर** का) बनने लगे।
  - ये आकार में गोल थे, इन्हें **स्टेटर/डिनेरियस** कहा जाता था।
  - रजत सिक्के अधिक मात्रा में मिले हैं, इन्हें **'द्रम'** कहा जाता था।
  - हिंद-यवन सिक्कों के अग्रभाग पर राजा का सिर अथवा वक्ष की आकृति तथा पृष्ठभाग पर लेख , जबकि भारतीय क्षेत्र में तैयार सिक्के द्विभाषीय होते थे
  - कुषाण मुद्रायें कुजुल कडफिसेस के सिक्कों के ऊपर हर्मियस की तस्वीर अंकित है।
  - विम कडफिसेस के आद्य सिक्के तांबे के बने हैं
  - भारतीय इतिहास में सर्वाधिक ताम्र सिक्के कुषाणों ने जारी किए
  - विम कडफिसेस की मूल इकाई दीनार है, जो संकेतित करता है कि यह रोमन प्रभाव लेकर आया होगा।
  - यह अंतिम शासक था, जिसने द्विभाषीय सिक्के चलाये - ग्रीक एवं खरोष्ठी (प्राकृत)।
  - विम कडफिसेस के सिक्कों पर अग्रभाग पर वज्र एवं गदाधारी राजा, जिसके कंधों से अग्नि लपटें निकल रही हैं, इसके पृष्ठभाग पर त्रिशूलधारी शिव नंदी के साथ अंकित हैं।
- **कनिष्क** –
  - सबसे पहले कनिष्क ने सिक्को में कुषाण शब्द जोड़ा था
  - कनिष्क की मुद्राओं पर भारतीय, यूनानी, ईरानी तथा पर्सियन देवताओं के नाम मिलते हैं।
  - कनिष्क के सिक्कों पर अग्रभाग पर हवनकुण्ड में आहुति देता राजा, पृष्ठभाग पर देवता का अंकन है।
  - कनिष्क की एक स्वर्ण मुद्रा पर हरिहर का आदि रूप मिलता है (देवता के एक हाथ में चक्र तथा दूसरे में उर्ध्वलिंग), तथा इसके सिक्कों पर विष्णु, उमा (कमल लिए), महासेन आदि देवताओं का भी अंकन मिलता है।
  - वासुदेव के सिक्कों पर हवनकुण्ड में आहुति देता राजा, जिसके बाएँ हाथ में त्रिशूल तथा अधिकांश सिक्कों पर शिव का अंकन।
  - कुषाणों के स्वर्ण सिक्के शुद्धता की दृष्टि से उत्कृष्ट हैं।
- **गुप्तकालीन सिक्के**
  - गुप्तों ने सोने, चांदी व तांबे के सिक्के चलाये।
  - गुप्तकालीन स्वर्ण सिक्कों का सबसे बड़ा ढेर बयाना (राजस्थान) से प्राप्त हुआ है।
  - अन्य धातु के सिक्कों में कमी तथा स्वर्ण सिक्कों की अधिकता से यह स्पष्ट होता है कि स्थानीय व्यापार अवनत तथा विदेशी व्यापार उन्नत हुआ होगा।
  - फाहयान अपनी रचना **'फो क्यों की'** में वर्णन करता है कि सामान्य लेनदेन कौड़ियों के माध्यम से होता था।
  - चंद्रगुप्त प्रथम ने लिच्छवि प्रकार, राजा-रानी प्रकार या विवाह प्रकार के सिक्के चलाए।
  - इसके भाग पर चंद्रगुप्त कुमारदेवी की आकृतियों उनके नामों के साथ और पृष्ठभाग पर सिंहवाहिनी देवी'के साथ मुद्रा लेख लिच्छवयः उल्लिखित हैं
- **समुद्रगुप्त के सिक्के**
  - इसकी कुल छह प्रकार की स्वर्ण मुद्रायें प्राप्त होती है
  - 1) गरुड़ प्रकार, 2) धनुधारी प्रकार, 3) परशु प्रकार, 4) अश्वमेध प्रकार, 5) व्याग्रहनन प्रकार, 6) वीणावादन प्रकार
- **चन्द्रगुप्त द्वितीय के सिक्के**
  - 1) धनुधारी प्रकार, 2) पत्रधारी प्रकार, 3) पर्यक प्रकार, 4) सिंह निहन्ता प्रकार, 5) अश्वारोही
- **कुमारगुप्त के सिक्के**
  - कुमार गुप्त ने सबसे अधिक संख्या में स्वर्ण सिक्के चलवाये।

- कार्तिकेय प्रकार के सिक्के

- **पारसीक सिक्के**
- पारसीको ने भारत में चांदी के सिक्के 'सिगलोई' का प्रचलन किया।
- फारस के सोने का सिक्का 'डेरिक' कहलाता था।

- **शक पहलव सिक्के**
- सर्वप्रथम शक शासक जीवदामन के काल से सिक्कों पर तिथियों के अंकन की परंपरा प्रारंभ हुई।
- **नहपान** –
- इसके सिक्के अजमेर से नासिक तक के क्षेत्रों में प्राप्त हुए हैं।
- सिक्कों पर ग्रीक, ब्राह्मी, खरोष्ठी लिपि का प्रयोग हुआ है।
- इसके सिक्कों का ढेर जोगलथम्बी से प्राप्त हुआ है
- जिनमें से अधिकांश सातवाहन नरेश गौतमीपुत्र शातकर्णी द्वारा पुनरंकित किए गए हैं।
- नहपान ने महाराष्ट्र क्षेत्र में सबसे पहले रजत मुद्रा जारी की।
- पश्चिमी शकों के सिक्कों पर यूनानी, खरोष्ठी एवं ब्राह्मी तीनों ही लिपियों का प्रयोग मिलता है।

- **सातवाहन सिक्के**
- इन्होंने सर्वप्रथम सीसे के सिक्के चलाए।
- इनके सोने के सिक्के नहीं मिलते।
- सातवाहन सिक्कों पर मछली एवं दोहरे मस्तूल वाले जहाज का अंकन मिलता है।

साहित्यिक स्रोत

साहित्यिक स्रोतों की अपेक्षा पुरातात्विक स्रोत अधिक महत्वपूर्ण माने जाते है क्योंकि साहित्यिक स्रोत व्यक्तिगत विचारधारा से प्रेरित होने के साथ-साथ इनमें परिवर्तन की भी गुंजाइश रहती है, जबकि पुरातात्मिक स्रोतों में बाद में परिवर्तन नहीं किया जा सकता।

- **साहित्यिक स्रोतों को हम मुख्यतः तीन भागों में बांट सकते हैं।**
- धार्मिक साहित्य - इसके अंतर्गत वैदिक साहित्य, वैदिकोत्तर साहित्य(जैन साहित्य एवं शेष आदि साहित्य) शामिल किये जाते है।
- धर्मेत्तर साहित्य - इसके अंतर्गत लोकसाहित्य जैसे नाटक, जीवनी, महाकाव्य, टीका, व्याकरण, खगोल, चिकित्सा, स्थापत्य एवं राजनैतिक ग्रंथ जैसे साहित्यों को शामिल किया जाता है।
- विदेशियों का विवरण - इसके अंतर्गत यूनानी, चीनी एवं अरब यात्रियों के विवरण शामिल किये जाते हैं।

- **साहित्यिक स्रोत का वर्गीकरण**
- धर्मग्रन्थ
- लौकिक
- विदेशी
- देशी

❑ धार्मिक ग्रन्थ

- वैदिक साहित्य
- **वेद-** ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद,अथर्ववेद
- ब्राह्मण
- अरण्यक
- उपनिषद्, पुराण
- वेदांग एवं स्मृति ग्रन्थ

- वैदिकोत्तर साहित्य
- **बौद्ध-** अंगुत्तर निकाय , जातक निकाय, त्रिपिटक, दिव्यावदान, मिलिन्दपन्हो आदि
- **जैन-** परिशिष्टपर्वन, आचारांगसुत्त, कल्प सुत्त, भगवती सुत्त , उवासगदसाओ, भद्रबाहु चरित आदि

❑ लौकिक ग्रन्थ

- अर्थशास्त्र, अष्टाध्यायी, राजतरंगिणी, महाभाष्य, मुद्राराक्षस, कालिदास की रचनाएँ, मृच्छकटिकम् कामसूत्र , दक्षिण भारत के वृत्तान्त, चचनामा आदि

❑ विदेशी वृत्तान्त

- ईरानी, यूनानी , अरबी, चीनी, तिब्बती

❑ धार्मिक ग्रन्थ

- **वैदिक साहित्य**
- वैदिक साहित्य में वेद, ब्राह्मण, अरण्यक, उपनिषद शामिल है।
- वेद शब्द विद् धातु से बना है जिसका अर्थ है जानना अर्थात् ज्ञान भारतीय मान्यता में वेद को **अपौरुषेय** कहा गया हैं।
- वैदिक साहित्य को 'श्रुति' भी कहा जाता है।
- श्रुति' का शाब्दिक अर्थ है सुना हुआ।
- भारतीय साहित्य में वेद सर्वाधिक प्राचीन हैं।
- वेद चार हैं-ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद।
- ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा सामवेद को 'वेदत्रयी' या 'त्रयी' कहा जाता है।
- प्रत्येक वेद के चार भाग होते हैं - संहिता, ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक और उपनिषद
- **ऋग्वेद**
- ऋग्वेद में कुल 10 मंडल तथा 1028 सूक्त और 10552 ऋचाएं हैं।
- ऋग्वेद के 2 से 7 तक के मंडल प्राचीन माने जाते हैं।
- ऋग्वैदिक काल का इतिहास पूर्णतया ऋग्वेद से ज्ञात होता है।
- ऋग्वेद में लोहे का उल्लेख नहीं है।
- उत्तर वैदिक ग्रंथों में लोहे का उल्लेख मिलता है।
- ऋग्वेद के नदी सूक्त में 21 नदियों का वर्णन है, जिसमें सबसे पश्चिम में कुभा तथा सबसे पूर्व में गंगा है।
- ऋग्वेद में अफगानिस्तान की चार नदियों क्रम, कुभा, गोमती और सुवास्तु का उल्लेख मिलता है।
- ऋग्वेद में सप्त सैंधव प्रदेश की सात नदियों का उल्लेख मिलता है। ये नदियां हैं- सरस्वती, विपासा, परुष्णी, वितस्ता, सिंधु, शुतुद्री तथा अस्किनी ।
- सर्वाधिक पवित्र नदी सरस्वती को माना गया है , जिसे 'मातेतमा,' 'देवीतमा' एवं 'नदीतमा' (नदियों में प्रमुख) कहा गया है।
- इसमें गंगा का प्रयोग एक बार तथा यमुना का प्रयोग तीन बार हुआ है।
- ऋग्वेद में सिंधु नदी का सर्वाधिक बार उल्लेख हुआ है, सिंधु नदी को उसके आर्थिक महत्व के कारण 'हिरण्यनी' कहा गया है तथा इसके गिरने की जगह 'परावत' अर्थात अरब सागर बताई गई है।
- गंगा-यमुना के दोआब एवं उसके समीपवर्ती क्षेत्रों को आर्यों ने 'ब्रह्मर्षि देश' कहा।
- आर्यों ने हिमालय और विंध्याचल पर्वतों के बीच का नाम 'मध्य देश' रखा। कालांतर में आर्यों ने संपूर्ण उत्तर भारत में अपना विस्तार कर लिया, जिसे 'आर्यावर्त' कहा जाता था।

ऋग्वेद के मंडल एवं उसके रचयिता

ऋग्वेद के मंडल	रचयिता
प्रथम मंडल	मधुच्छन्दा, मेधातिथि
द्वितीय मंडल	गृत्समद
तृतीय मंडल	विश्वामित्र
चतुर्थ मंडल	वामदेव
पंचम मंडल	अत्रि
षष्ठम् मंडल	भारद्वाज

सप्तम् मंडल	वशिष्ठ
अष्टम् मंडल	कण्व एवं आंगिरस
नवम् मंडल	सोम देवता और अन्य ऋषि
दशम मंडल	विमदा, इंद्र, शची और अन्य

- ऋग्वेद के तृतीय मंडल में 'गायत्री मंत्र' का उल्लेख है। इसके रचनाकार विश्वामित्र हैं।
- यह सविता (सूर्य देवता) को समर्पित है।
- ऋग्वेद के नौवें मंडल के सभी 114 सूक्त 'सोम' को समर्पित हैं।
- प्रारंभ में हम तीन वर्णों का उल्लेख पाते हैं- ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य |
- 'शूद्र' शब्द का उल्लेख सर्वप्रथम ऋग्वेद के दसवें मंडल के पुरुष सूक्त में हुआ है।
- ऋग्वेद के मंत्रों का उच्चारण करके यज्ञ संपन्न कराने वाले पुरोहित को 'होता' कहा जाता था।
- **ऐतरेय** तथा **कौषीतकि** ऋग्वेद के दो ब्राह्मण ग्रंथ है।
- पतंजलि के अनुसार, ऋग्वेद की 21 शाखाएं हैं।
- ऋग्वेद की कुछ ऋचाओं की रचना महिलाओं ने भी की है।
- ये हैं - लोपामुद्रा, घोषा, शची, पौलोमी, कक्षावृत्ति, श्रद्धा ,कामायनी ,रोमसा ,देवजायामः ,इन्द्रमारतः ,इन्द्राणी ,गोधारिषिका ,उर्वशी ,सूर्य सावित्री , अदितिः ,दाचायनी ,यमी ,सरमा ऋषिका शाशवती,सार्पराज्ञी । ।
- ऋग्वेद की पांच शाखाएं हैं।
- ऋग्वेद में दशराज युद्ध का वर्णन प्राप्त होता हैं। इस युद्ध में भरत कबीले के नेता सुदास (पुरोहित वशिष्ठ) ने रावी नदी के तट पर दस राजाओ के संघ (पुरोहित विश्वामित्र)को पराजित किया था।
- **यजुर्वेद :-**
- यजुष् का अर्थ है यज्ञ
- यजुर्वेद के दो भाग हैं। कृष्ण यजुर्वेद, शुक्ल यजुर्वेद
- कृष्ण यजुर्वेद इसमें मंत्र तथा गद्यात्मकं वाक्य हैं तथा शुक्ल यजुर्वेद इसमें केवल मंत्र है
- कृष्ण यजुर्वेद जो पद्य और गद्य दोनों में है और शुक्ल यजुर्वेद जो केवल पद्य में है।
- कृष्ण यजुर्वेद की मुख्य शाखाएं हैं- तैत्तिरीय, काठक, मैत्रायणी तथा कपिष्ठल।
- शुक्ल यजुर्वेद की मुख्य शाखाएँ हैं - माध्यन्दिन तथा काण्व।
- इसे वाजसनेयी भी कहा गया क्योंकि वाजसेनी के पुत्र याज्ञवल्क्य इनके द्रष्टा थे।
- यजुर्वेद में स्तोत्र एवं कर्मकांड वर्णित हैं।
- यह वेद गद्य एवं पद्य दोनों में है। यजुर्वेद के कर्मकांडों को संपन्न कराने वाले पुरोहित को 'अध्वर्यु' कहा जाता था।
- यजुर्वेद का अंतिम भाग 'ईशोपनिषद' है, जिसका संबंध याज्ञिक अनुष्ठान से न होकर आध्यात्मिक चिंतन से है।
- शतपथ ब्राह्मण शुक्ल यजुर्वेद का ब्राह्मण ग्रंथ है।
- **सामवेद**
- साम का अर्थ है संगीत इसमें यज्ञों के अवसर पर गाने वाले मंत्रों का संग्रह है, जिसे उद्गाता गाता था।
- इसमें 75 सूक्त को छोड़कर शेष ऋग्वेद से लिए गए हैं।
- यह भारतीय संगीत शास्त्र पर प्राचीनतम् पुस्तक है।
- सामवेद में कुल 1875 ऋचाएं हैं
- सामवेद की प्रमुख शाखाएं हैं-कौथुमीय, राणायनीय एवं जैमिनीया।
- **अथर्ववेद**
- यह लौकिक फल देने वाली संहिता है।
- इसमें तंत्र-मंत्र संकलित हैं।
- इसमें औषधि एवं विज्ञान संबंधी जानकारी भी है।
- इसे अथर्वाङ्गिरस वेद भी कहा जाता है।
- इसकी कुछ ऋचायें ब्रह्मविद्या से संबंधित हैं, इसी कारण इसे ब्रह्मवेद भी कहा जाता है।
- यह यज्ञ के निरीक्षक ब्रह्म के उपभोग के लिए थी।
- इसमें मगध तथा अंग को दूरस्थ प्रदेश कहा गया है।
- इसमें मगधवासियों को व्रात्य कहा गया है। जो प्राकृत भाषा बोलते थे।
- इसमें कन्या के उपनयन की चर्चा, साथ ही ब्रह्मचर्य आश्रम में रहकर वेदाध्ययन करने का स्पष्ट उल्लेख है।
- अथर्ववेद में 20 कांड, 731 सूक्त तथा 5987 मंत्र है। इसमें 1200 मंत्र ऋग्वेद के हैं।
- अथर्ववेद के मंत्रों का उच्चारण करने वाले पुरोहित को 'ब्रह्मा' कहा जाता था।
- इसने सभा और समिति को प्रजापति की दो पुत्रियां कहा गया है।
- इसमें सामान्य मनुष्य के विचारों, विश्वासी तथा अंधविश्वासों का विवरण मिलता है।
- अथर्ववेद की दो शाखाएं उपलब्ध है-पिपलाद तथा शौनका
- पृथ्वी सूक्त अथर्वेद का प्रतिनिधि सूक्त हैं।
- अथर्वेद में **परीक्षित को कुरुओं का राजा** कहा गया हैं।

वेद	उपवेद	महत्वपूर्ण तथ्य
ऋगवेद	आयुर्वेद	यह चिकित्सा शास्त्र से सम्बंधित हैं
सामवेद	गंधर्ववेद	यह युद्ध कला से सम्बंधित हैं
यजुर्वेद	धनुर्वेद	यह कला , नृत्य , संगीत से सम्बंधित हैं ,
अथर्वेद	शिल्पविद	यह वास्तुकला / भवन निर्माण से सम्बंधित हैं

वेद	ब्राह्मण ग्रन्थ	पुरोहित	उपनिषद
ऋग्वेद	ऐतरेय , कौषीतकि	होता	ऐतरेय , कौषीतकि
यजुर्वेद	शतपथ , तैतरीय	अध्वर्यु	तैतरीय , कठ, श्वेताम्बर , त्रायणि (कृष्णा यजुर्वेद से , वृहदारण्यक , ईश शुक्ल यजुर्वेद)
सामवेद	पंचविश	उद्गाता	छान्दोग्य , केन
अथर्वेद	गोपथ	ब्रम्ह	मुण्डक , माण्डूक्य , प्रश्न

- **प्रमुख विदुषी महिलाएं-** गार्गी, मैत्रेयी
- अथर्ववेद में सिंचाई के साधन के रूप में वर्णाकूप एवं कुलमा (नहर) का उल्लेख है।
- इसमें वर्ष में दो फसल उपजाने तथा खाद के रूप में गोवर (शकृत और करिषु) के प्रयोग की बात है।
- सर्वप्रथम अथर्ववेद में रजत (चाँदी) का उल्लेख हुआ है।
- इसमें लोहे के लिए श्याम या कृष्ण अयस् शब्द प्रयुक्त किए गए।
- वाजसनेयी संहिता में श्याम (अयस) शब्द प्रयुक्त हुआ।
- **ब्राह्मण ग्रंथ**
- इनकी रचना यज्ञ के विधान तथा उसकी क्रिया को समझाने के लिए की गयी है।
- इनका प्रधान विषय यज्ञों का प्रतिपादन तथा उनके विधियों की व्याख्या करना है।
- ये अधिकांशतः गद्य में लिखे गए।
- शतपथ ब्राह्मण सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।
- इसमें विदेथ माधव तथा उसके पुरोहित गौत्तम राहुगण द्वारा सदानीरा (गण्डक) तक आर्यीकरण करने का उल्लेख है।
- शतपथ ब्राह्मण में ही पहली बार पुनर्जन्म के सिद्धान्त का वर्णन इसी में है।
- ऐतरेय ब्राह्मण की रचना महिदास ऐतरेय द्वारा की गयी।
- इसमें उत्तर का राजा विराट, दक्षिण का भोज, पश्चिम का स्वराट, मध्यदेश का राजा तथा पूर्व का सम्राट कहा गया है।
- वैराज्य ऐसा क्षेत्र होता था जहाँ शासक नहीं था।

- **अरण्यक्**
- यह ब्राह्मणों का अंतिम भाग है।
- इसका पाठ एकांत एवं वन में भी संभव है।
- यह तप पर बल देता है।
- इनमें यज्ञों के स्थान पर ज्ञान एवं चिन्तन को प्रधानता दी गयी है।
- इन्हीं से कालांतर में उपनिषदों का विकास हुआ।
- अरण्यक ग्रंथ वानप्रस्थ आश्रम के यज्ञों, व्रतों तथा कार्यों का विवरण देते हैं।
- **प्रमुख अरण्यक हैं -** ऐतरेय, शंखायन, तैत्तिरीय, बृहदारण्यक, जैमिनी तथा छन्दोग्य।
- **उपनिषद्**
- शाब्दिक अर्थ शास्त्र या विद्या जो गुरू के निकट बैठकर एकांत में सीखी जाती है।
- यह वैदिक साहित्य का अंतिम भाग माना जाता है इसीलिए इसे वेदांत भी कहते हैं।
- आरण्यकों में जिन दार्शनिक विचारों का सूत्रपात हुआ उनका विस्तृत एवं विकसित स्वरूप उपनिषदों में प्राप्त होता है।
- इनका प्रमुख विषय आत्म विद्या है।
- इनसे 800 ई.पू. से 500ई.पू. के मध्य के राजनीतिक इतिहास के , सन्दर्भ में जानकारी प्राप्त होती है।
- उपनिषदों की रचना गंगा-घाटी में की गई थी।
- मुगल काल में दाराशिकोह ने काशी के कुछ पंडितों की सहायता से (52) उपनिषदों का फारसी में अनुवाद सिर्र-ए-अकबर (महान रहस्य) या सिर्रे असरार (रहस्यों का रहस्य) नाम से करवाया था।
- यह रहस्यात्मक ज्ञान एवं सिद्धांत का संकलन है।
- मुक्तिकोपनिषद् में 108 उपनिषदों का उल्लेख है।
- मल्लोपनिषद् की रचना अकबर के समय में हुयी।
- कठ, श्वेताश्वर, ईश तथा मुंडक उपनिषद् छंदोबद्ध है।
- केन् और प्रश्न उपनिषद् का कुछ भाग छंद एवं कुछ भाग गद्य है।
- उपनिषदों में ब्रह्म तथा आत्मा के बीच तादात्म्य स्थापित किया गया है।
- जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य आत्म या ब्रह्म साक्षात्कार है।
- इसे प्राप्त करने का माध्यम उपनिषदों में बताया गया है।
- बृहदारण्यक उपनिषद में याज्ञवल्क्य गार्गी सम्वाद है जिसमें याज्ञवल्क्य गार्गी का वाद-विवाद के क्रम में सिर तोड़ने की धमकी देते हैं।
- सबसे बड़ा उपनिषद् वृहदारण्यक है और सबसे छोटा उपनिषद व माण्डूक्योपनिषद है।
- इसी में सर्वप्रथम ब्रह्म या परमात्मा के ज्ञान का निश्चित वर्णन है।
- छान्दोग्य उपनिषद में ब्रह्म ही सबकुछ है कहकर अद्वैतवाद की प्रतिष्ठा की गयी है।
- मैत्रायणी संहिता में स्त्रियों की तुलना मदिरा और पासा से की गयी है
- इसी में त्रिमूर्ति तथा चार आश्रमों के सिद्धान्त का वर्णन है।
- कठोपनिषद् में यम ने नचिकेता को आत्मज्ञान विषयक उपदेश दिया।
- सर्वप्रथम जाबालोपनिषद् में चारों आश्रमों की चर्चा हुई।
- सत्यमेव जयते मुण्डकोपनिषद् से लिया गया है। इसी में यज्ञ की तुलना फूटी हुई नौका से की गयी है।
- **वेदांग**
  - वेद के अर्थ को सरलता से समझने तथा वैदिक कर्मकांडों को प्रतिपादित करने में सहयोग देने के लिए एक नवीन साहित्य की रचना हुई, जिसे वेदांग कहा जाता है। ये छह हैं- शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद एवं ज्योतिष।

- **शिक्षा(नासिका)**
  - वैदिक मंत्रों के शुद्ध-शुद्ध उच्चारण तथा शुद्ध स्वर क्रिया की विधियों के ज्ञान के निमित्त इसकी रचना हुयी। इसे वेद रूपी पुरुष की नाक कहा गया।
- **कल्प(हाथ)**
  - वैदिक यज्ञों की व्यवस्था तथा गृहस्थाश्रम के लिए उपयोगी कर्मों के प्रतिपादन करने के निमित्त इसकी रचना हुयी, यानि इसमें धार्मिक अनुष्ठान का विधान है। सूत्र ग्रंथों को ही कल्प कहा जाता है।
  - कल्पसूत्र मुख्यतः चार प्रकार के हैं - श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र एवं शुल्वसूत्र।
  - श्रौतसूत्र में हमें वेदों में वर्णित यज्ञ भागों तथा यज्ञ सम्बन्धी विधि नियमों का क्रमबद्ध विवरण मिलता है। गृह्यसूत्र में गृहस्थाश्रम से संबंधित धार्मिक अनुष्ठानों तथा कर्त्तव्यों का वर्णन है।
  - धर्मसूत्र में चारों प्रमुख वर्णों की स्थितियों, व्यवसायों, कर्त्तव्यों, दायित्वों तथा विशेषाधिकारों में स्पष्ट विभेद दिखता है (सामाजिक नियमों तथा आचार-विचारों का विस्तारपूर्वक वर्णन)।
  - शुल्वसूत्र में यज्ञीय वेदियों को नापने आदि का वर्णन है जो आर्यों के ज्यामितीय ज्ञान का परिचालक है।
- **व्याकरण(मुख)**
  - शब्दों की मीमांसा करने वाले शास्त्र को व्याकरण कहा गया है। इसका संबंध भाषा संबंधी समस्त नियमों से है।
  - व्याकरण की सर्वश्रेष्ठ रचना पाणिनी की अष्टाध्यायी है। बाद में पतंजलि ने महाभाष्य लिखे तथा कात्यायन ने 'वार्तिका' की रचना की।
- **निरुक्त(कान)**
  - इसमें वैदिक शब्दों की व्युत्पत्ति दी गयी है।
- **छंद (पैर)**
  - वैदिक मंत्र अधिकांशतः छंदों में बद्ध हैं।
  - इसके सही उच्चारण हेतु छंदों का ज्ञान आवश्यक है।
  - छंदशास्त्र पर पिंगलमुनि का छंद सूत्र सबसे प्रमुख ग्रंथ है। छंदों को वेदों का पैर कहा गया है।
- **ज्योतिष (नेत्र)**
  - ग्रहों तथा नक्षत्रों की स्थिति के अध्ययन की आवश्यकता ने ज्योतिष वेदांग को जन्म दिया ताकि शुभ मुहूर्त में यज्ञ कार्य हो।
  - ज्योतिष की सर्वप्राचीन रचना लगधमुनि कृत ज्योतिष वेदांग है।
  - यही भारतीय ज्योतिष शास्त्र का मूलाधार है।
- **पुराण**
  - यह वैदिक साहित्य में शामिल नहीं है।
  - अथर्ववेद में कहा गया है कि चारों वेदों के बाद पुराण का स्थान है।
  - पुराणों के आदि संकलनकर्त्ता, महर्षि लोमहर्ष तथा उनके पुत्र उग्रश्रवा को माना जाता है।
  - मुख्य पुराणों की संख्या 18 है।
  - ये हैं -मार्कण्डेय, भविष्य, भागवत, ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त, ब्रह्म, वामन, वाराह, विष्णु, वायु, अग्नि, नारद, पद्म, लिंग, गरुड़, कुर्म तथा स्कंद।
  - इन्हें सम्मिलित रूप से महापुराण कहा जाता है।
- **पुराण के पाँच भाग होते हैं-**
  - सर्ग (सृष्टि),
  - प्रतिसर्ग (प्रलय, पुनर्जन्म),
  - वंश (देवता व ऋषि सूचियां),
  - मन्वन्तर (चौदह मनु के काल),
  - वंशानुचरित (सूर्य चन्द्रादि वंशीय चरित)
- पुराणों में प्राचीन राजकुलों का इतिहास है।
- परीक्षित से लेकर नंदवंश तक का इतिहास हमें मुख्यतया पुराणों से ही ज्ञात होता है।
- **मत्स्य पुराण**

- विष्णु के मत्स्यावतार से इसका प्रारम्भ होता है। इस पुराण का ऐतिहासिक महत्व है।
- आन्ध्र राजाओं की प्रामाणिक वंशावली इसमें प्राप्त होती है।
- भारत के दक्षिण अंचल की स्थापत्य, वास्तु मूर्ति आदि कलाओं का इसमें सुन्दर विवरण है।
- इसमें विष्णु एवं शिव दोनों के आख्यानों को प्रस्तुत किया गया है।

- **मार्कण्डेय पुराण**
  - इस पुराण में अग्नि, इन्द्र, सूर्य तथा ब्रह्मा आदि देवताओं को प्रधान स्थान दिया गया है।
  - इसी पुराण में 'देवी महात्म्य' है जिसमें आद्य शक्ति के रूप में देवी दुर्गा की स्तुति का गान है।
- **भागवत पुराण**
  - यह सर्वाधिक प्रसिद्ध तथा लोकप्रिय पुराण है। वैष्णव धर्म में इसे पंचम वेद ही माना जाता है। इस पुराण में बारह स्कन्ध तथा 12,000 श्लोक हैं जिसमें विष्णु के अवतारों का विस्तृत वर्णन है। इसके दसवें स्कन्ध में श्रीकृष्ण की विभिन्न लीलाएँ अंकित हैं। इस पुराण की शैली अत्यन्त प्रौढ़, दार्शनिक एवं परिष्कृत है।
- **विष्णु पुराण**
  - प्राचीनता एवं प्रामाणिकता की दृष्टि से इस पुराण का प्रमुख स्थान है। विष्णु के विविध अवतारों के माध्यम से इसमें विष्णु की उपासना वर्णित है। मौर्य राजाओं की प्रामाणिक वंशावली भी इस पुराण में प्राप्त होती है। इस पुराण का ऐतिहासिक, साहित्यिक तथा दार्शनिक महत्व प्रसिद्ध है। भारतीय पर्वत, नदी (भूगोल दृष्टिकोण से मानव विकास), सांस्कृतिक अवधारणा की व्याख्या।
- **वायु पुराण**
  - इसे शिव पुराण भी कहा जाता है। शिव की स्तुति प्रभुख होने के साथ-साथ इसमें विष्णु सम्बन्धी दो अध्याय भी हैं। इस पुराण का भी ऐतिहासिक महत्व है क्योंकि इसमें गुप्त साम्र है। इसमें संगीत शास्त्र से भी सम्बद्ध एक अध्याय है। भारतीय भूगोल की आरंभिक चर्चा इस पुराण में ही मिलती है।
- **अग्नि पुराण**
  - सबसे बाद का पुराण भारतीय स्थापत्य का वर्णन।

- **स्मृति ग्रंथ**
  - भारतीय न्याय व्यवस्था के लिए प्रथम प्राप्त ग्रन्थ है। इन्हें धर्मशास्त्र भी कहा जाता है। स्मृतियाँ हिन्दू धर्म के कानूनी ग्रंथ हैं। ये पद्य में लिखी गयी हैं। परन्तु विष्णु स्मृति गद्य में लिखी गयी है। इनका संकलन विभिन्न कालों में हुआ। प्रमुख स्मृतियाँ निम्नलिखित हैं-
- **मनुस्मृति**
  - मनु का धर्मशास्त्र हिन्दू धर्म के सम्बन्ध में प्रमुख और सबसे अधिक प्रमाणिक ग्रन्थ है और हिन्दू समाज और सभ्यता के लोकमान्य स्वरूप को प्रकट करता है। मनु का नाम अत्यन्त प्राचीन काल से कई रूप में मिलता है।
  - ये मानव जाति के आदिपुरुष, राजसंस्था के प्रथम कर्ता तथा धर्म के प्रथम व्यवस्थापक हैं।
  - इस स्मृति की मूल रचना मौर्योत्तर युग में शुंग काल में हुई। मनु स्मृति का अंग्रेजी संस्करण Code of Zentoo Laws के नाम से जाना जाता है।
  - मनुस्मृति में आर्य संस्कृति के चार क्षेत्रों ब्रह्मवर्त ब्रह्मर्षि, मध्यदेश और आर्यावर्त का उल्लेख मिलता है। मनुस्मृति में चारों वर्णों एवं जातियों का उल्लेख मिलता है। शूद्रों के बारे में कहा गया है कि सेवा करना ही उनके जीवन का कर्म था तथा ब्राह्मणों को उनके द्वारा दिये गये अन्न को न ग्रहण करने की बात कही गई। यद्यपि मनु शूद्र अध्यापकों एवं शिष्यों का उल्लेख करते हैं। मनु ने दासों के सात प्रकारों का विवेचन किया है। मनुस्मृति के द्वारा स्त्रियों को वेदाध्ययन का अधिकार नहीं दिया गया। कानून की दृष्टि से स्त्रीधन के अतिरिक्त वे सम्पत्ति की स्वामिनी नहीं बन सकती थी। स्त्री धन पर माता के बाद पुत्रियों और उसके बाद बहुओं का अधिकार था' विधवाओं के लिये इसमें मुंडन की बात कही गई है।
- **याज्ञवल्क्य स्मृति**
  - याज्ञवल्क्य का धर्मशास्त्र मनु की अपेक्षा अधिक सुव्यवस्थित एवं संक्षिप्त है।
  - मनु से इनका तुलनात्मक अध्यय निम्नलिखित प्रकार है-
  - मनु ने ब्राह्मण को शूद्र कन्या के साथ विवाह की अनुमति दी है जब कि याज्ञवल्क्य ने इसका विरोध किया हैं।
  - मनु ने नियोग की निन्दा की परन्तु याज्ञवल्क्य ने नहीं।
  - मनु ने विधवाओ के अधिकार के विषय में कुछ नहीं कहा किंतु याज्ञवल्क्य ने विधवाओ को समस्त उत्तराधिकारियों में प्रथम स्थान दिया है।
  - इसी स्मृति ने स्त्रियों को सर्वप्रथम सम्पत्ति का अधिकार प्रदान किया।
- **नारद स्मृति**
  - गुप्त कालीन यह एक प्रमुख स्मृति है।
  - इसमें विशेष प्रथा और स्त्रियों के पुनर्विवाह की अनुमति दी गई है।
  - दासों की मुक्ति का विधान सर्वप्रथम इसी पुस्तक में मिलता है।
  - इसमें भी राजकीय नियंत्रण में द्यूत की अनुमति दी गई है।
  - नारद ने विधवाओं की सम्पत्ति राज्य द्वारा लेकर उनके भरण पोषण को राजा का कर्तव्य बताया है।
  - नारद स्मृति में स्वर्ण मुद्राओं के लिए दीनार' शब्द का प्रयोग किया गया है।
  - यह मुद्रा सर्वप्रथम रोम में प्रारम्भ हुई थी और भारत में इसे सर्वप्रथम कुषाण शासकों ने प्रारम्भ किया।
- **विष्णु स्मृति**
  - यह स्मृति गद्य में लिखी गई है तथा गुप्तकालीन मानी जाती है।
  - इस स्मृति में मुद्राओं का विवेचन मनु की अपेक्षा अधिक विकसित रूप में किया गया है।
- **देवल स्मृति**
  - यह पूर्व मध्यकालीन स्मृति है।
  - इसे मूलतः विधि विषयक नहीं माना जाता क्योंकि इसमें उन हिन्दुओं को पुनः हिन्दू धर्म में शामिल करने का विधान मिलता था जिन्होंने मुस्लिम धर्म अपना लिया था।

NOTE	
प्राचीनतम दो स्मृतियों मनुस्मृति और याज्ञवल्क्य स्मृति पर विद्वानों ने परवर्ती काल में कई भाष्य लिखे।	
स्मृति	भाष्यकार
मनुस्मृति	मेद्यातिथि, कुल्लूक भट्ट, गोविन्द राज और भारुचि
याज्ञवल्क्य	विज्ञानेश्वर, विश्वरूप एवं अपरार्क

- **वैदिकोत्तर साहित्य** –
  - **मिताक्षरा**
    - **लेखक -** विज्ञानेश्वर
    - यह कल्याणी के चालुक्य शासक विक्रमादित्य षष्ठ के दरबार में रहते थे।
    - **मुख्य तथ्य -**
    - इस ग्रंथ से पता चलता है कि पिता के जीवन काल में भी पुत्रों को सम्पत्ति का भाग मिल सकता है, जो आज बंगाल, असम तथा पूर्वी भारत के राज्यों को छोड़कर समस्त भारत में प्रचलित है।
  - **दायभाग**

- **लेखक -** जीमूतवाहन
- **मुख्य तथ्य -**
- इससे पता चलता है कि पिता के जीवन काल में उसके पुत्र को सम्पत्ति का भाग नहीं मिल सकता, केवल मृत्यु के बाद ही मिल सकता है।
- बंगाल, असम तथा कुछ पूर्वी राज्यों में यह आज भी प्रचलित है।

- **महाकाव्य**
  - इस काल से तात्पर्य रामायण और महाभारत के समय से है।
  - ये दोनों आर्ष महाकाव्य माने जाते हैं।
  - यद्यपि इनके सम विवाद है, परन्तु लगता है इन दोनों का अन्तिम संकलन गुप्तकाल में किया है।

- **रामायण**
  - **लेखक -** महर्षि वाल्मीकि हैं।
  - **मुख्य तथ्य**
  - इसका अन्तिम संकलन 400 ई० के आसपास हुआ।
  - इसे भारत का आदि महाकाव्य कहा जाता है जबकि वाल्मीकि को आदिकवि।
  - प्रारम्भ में इसमें 6000 श्लोक थे परन्तु, बाद में इनकी संख्या बढ़कर 12000 और वर्तमान में 24000 हो गई।
  - इसे चतुर्विंशति साहस्री संहिता भी कहा जाता है।
  - **रामायण का अनुवाद**
    - भाषा - अनुवादक - अनुवादित कृति
    - तमिल - कवि कम्बन - रामायणम या रामावतारम (चोल शासक कुलोत्तुंग तृतीय के समय)
    - बांग्ला - कृत्तिवास - (बारबक शाह के समय)
    - तमिल - ई. वी. रामस्वामी नायकर उर्फ़ पेरियार - सच्ची रामायण -

- **महाभारत** –
  - **लेखक -** महर्षि वेदव्यास
  - **मुख्य तथ्य**
  - यह अन्तिम रूप से 400 ई. के आसपास पूर्ण हुआ।
  - इससे दसवीं सदी ई.पू. से चौथी सदी ईस्वी के बीच की जानकारी प्राप्त होती है।
  - प्रारम्भ में इसमें केवल 8800 श्लोक थे, तब इसे जयसंहिता कहा गया, जिसका अर्थ है विजय सम्बन्धी संग्रह ग्रंथ ।
  - बाद में श्लोकों की संख्या बढ़कर 24000 हो गई, तब इसे भारत कहा गया क्योंकि इसमें प्राचीनतम वैदिक जन भरत के वंशजों की कथा है।
  - अन्ततः इसमें एक लाख श्लोक हो गए और तदनुसार यह शतसाहस्री संहिता या महाभारत कहलाने लगा।
  - यह विश्व का सबसे बड़ा महाकाव्य है।
  - महाभारत में वेदव्यास ने लिखा है "जो इस ग्रंथ में है, वह अन्य जगह भी है, जो इसमें नहीं है, वह कहीं भी नहीं है।"
  - महाभारत में कुल अठारह पर्व हैं।
  - इसमें भीष्म पर्व (छठा पर्व) का भाग गीता है, जिसमें कर्म, भक्ति एवं ज्ञान का संगम मिलता है।
  - इसमें कर्म को सर्वाधिक प्रधनता दी गई है।
  - गीता में ही सर्वप्रथम अवतारवाद का उल्लेख मिलता है।
  - **महाभारत का अनुवाद**
    - तमिल में सर्वप्रथम अनुवाद पेरून्देवनार ने किया, जो भारतम् नाम से जाना जाता है।
    - बंगला भाषा में अनुवाद अलाउद्दीन नुशरत शाह के समय में हुआ।

- **बुद्धचरित**
  - **लेखक -** महाकवि अश्वघोष
  - **मुख्य तथ्य**
  - राजा कनिष्क (78 ईस्वी) के सभाकवि अश्वघोष जन्म से ब्राह्मण होने पर भी प्रकाण्ड बौद्ध दार्शनिक हुए
  - इस महाकाव्य में तथागत बुद्ध के जन्म से लेकर बुद्धत्व प्राप्ति तक का सुन्दर वर्णन है।
  - सौन्दरानन्द अश्वघोष का एक अन्य महाकाव्य है।

- **रघुवंश**
  - **लेखक -** कालिदास
  - **मुख्य तथ्य**
  - रघुवंश को संस्कृत साहित्य का उत्कृष्ट रत्न स्वीकार किया गया है।
  - इसमें उन्नीस सर्ग हैं
  - जिनमें राजा दिलीप से लेकर अग्निमित्र तक सूर्यवंशी राजाओं की अनेक पीढ़ियों के राजाओं का चित्रण है।
  - आकर्षक चरित्रचित्रण, विशद रुचिर वर्णन, प्रौढ़ प्रतिमा, सुन्दर रस व्यंजना तथा सरल अलंत शैली सभी का मणिकांचन संयोग इस महाकाव्य में द्रष्टव्य है।

- **कुमारसंभव**
  - लेखक - कालिदास
  - मुख्य तथ्य
  - हिमालय की पुत्री पार्वती घोर तपस्या करके शिव को पति रूप में प्राप्त करती हैं।
  - इसके मिलन से कुमार कार्तिकेय का जन्म होता है।
  - कार्तिकेय देव सेनापति बन कर भयंकर तालकासुर का संहार करते हैं और सृष्टि का कल्याण करते हैं
  - यही इस महाकाव्य की संक्षिप्त कथा है।

- **भट्टिकाव्य अथवा रावणवध**
  - लेखक - महाकवि भट्टि
  - मुख्य तथ्य
  - राजा श्रीधरसेन के समय में वलभी नगरी में इस महाकाव्य की रचना की गयी।
  - इसका समय छठीं शती का अन्त अथवा सातवीं शती ईस्वी का प्रारम्भ माना जाता है।
  - इसकी कथा राम चरित्र पर आधारित है।

- **किरातार्जुनीय**
  - **लेखक -** महाकवि भारवि
  - **मुख्य तथ्य**
  - लगभग सातवीं शती ईस्वी पूर्वार्ध में इसे लिखा गया है।
  - यह एक संस्कृत महाकाव्य है
  - यह महाभारत के वनपर्व की कथा पर आधारित है
  - इस महाकाव्य में अर्जुन और किरात (पहाड़ पर रहने वाले शिकारी) के बीच युद्ध का वर्णन है

- **शिशुपाल वध**
  - **लेखक -** महाकवि माघ
  - **मुख्य तथ्य**
  - इस महाकाव्य का समय सातवीं शती ईस्वी का उत्तरार्द्ध माना जाता है।
  - इसमे युधिष्ठर के राजसूय यज्ञ में श्रीकृष्ण के द्वारा चेदिराज शिशुपाल के वध की घटना मुख्य है।

- **हरविजय**
  - **लेखक -** महाकवि रत्नाकर
  - **मुख्य तथ्य**

- इस महाकाव्य का समय सातवीं शती ईस्वी का उत्तरार्द्ध माना जाता है।
- इनमें शिव के द्वारा दैत्यराज अन्धकासुर के वध की कथा वर्णित है।

- **नैषधीयचरित**
  - **लेखक -** महाकवि श्रीहर्ष
  - **मुख्य तथ्य**
  - ये कन्नौज के राजा जयचन्द्र के सभाकवि थे तथा इनका समय बारहवीं शती का उत्तरार्द्ध है।
  - महाभारत का प्रसिद्ध नलोपाख्यान इस महाकाव्य की कथावस्तु का आधार है।
- **खण्डकाव्य**
  - यह संस्कृत वाङमय का अत्यन्त सरस अंग है। महाकाव्य की अपेक्षा यह आकार प्रकार में लघुकाय होता है और इसमें जीवन के किसी एक पक्ष अथवा किसी एक घटना का चित्रण ही प्राप्त होता है।
  - खण्डकाव्य को ही गीतिकाव्य कहा जाता है क्योंकि इसके पद्यों को गाया जा सकता है। इस साहित्य विधि के दो रूप हैं- प्रबन्ध एवं मुक्तक
  - एक ही प्रकार के छन्दों में रची गयी, अल्प एवं परिमित कथावस्तु से सम्पन्न रचना खण्डकाव्य में प्रबन्ध रचना कहलाती है।
  - मुक्तक का अर्थ है केवल एक पद्य, जो बाह्य संदर्भ से स्वतंत्र रहकर भी रस की पूर्ण अभिव्यक्ति करा देती है।
  - गीतिकाव्य अथवा खण्डकाव्य के उद्गम की दृष्टि से ऋग्वेद में देवी उपस् के लिए ऋषि के जो हृदयोद्गार हैं गीतिकाव्य के सुन्दर उदाहरण है।
  - महर्षि पाणिनि के नाम से प्राप्त अनेक सरस श्लोक गीतिकाव्य के अंतर्गत ही आते हैं। किन्तु संस्कृत साहित्य में गीतिकाव्य को एक स्वतंत्रा विधि के रूप में स्थापित करने का श्रेय महाकवि कालिदास को ही प्राप्त है।
- **ऋतुसंहार**
  - **लेखक -** कालिदास
  - **मुख्य तथ्य -**
  - इस खण्ड काव्य में छह सर्ग हैं जिसके 144 पद्य एवं पूरे वर्ष की छह ऋतुओं का सुन्दर एवं शृंगारिक वर्णन है।
  - इसमें कवि का रचनाकौशल पर्याप्त प्रौढ़ नहीं हैं किन्तु कवि ने इसमें ग्रीष्म ऋतु से प्रारम्भ करके यथाक्रम वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर तथा बसन्त ऋतुओं का प्रेमी मानव की दृष्टि से सरस वर्णन किया है।
  - इस काव्य की भाषा सरल है और शब्द विन्यास अनुप्रासमय है।
- **मेघदूत**
  - **लेखक -** महाकवि कालिदास
  - **मुख्य तथ्य**
  - यह खण्डकाव्य संस्कृत की एक अनुपम रचना है।
  - इसके दो नाम हैं, पूर्वमेघ तथा उत्तरमेघ तथा दोनों में मिला कर कुल 121 पथ हैं जो मन्दाक्रान्ता छन्द में है।
  - इसकी कथा अत्यन्त संक्षिप्त है।
  - कुबेर के श्राप के कारण अलका नगरी से एक वर्ष के लिए निर्वासित कोई यक्ष रामगिरि पर्वत पर रहता है और वर्षा के प्रारम्भ में मेघ को देखकर अपनी प्रिया की स्मृति से व्याकुल होकर मेघ के द्वारा अपनी प्रिया पत्नी को संदेश भिजवाता है।
  - काव्यकला एवं रस की अभिव्यंजना की दृष्टि से यह गीतिकाव्य अत्यन्त उत्कृष्ट रचना है।
- **घटकर्पर**
  - लेखक - घटकर्पर
  - मुख्य तथ्य
  - इसमें केवल 22 पद्य हैं तथा इसका कथानक पात्रा की दृष्टि से मेघदूत से उल्टा है। अर्थात् वर्षा ऋतु के आ जाने पर एक नवविवाहिता विरहिणी मेघ द्वारा अपने पति के पास सन्देश भिजवाती है।
  - इस पूरे काव्य में यमक अलंकार का बहुल प्रयोग है
- **भर्तृहरि के शतकत्राय**
  - भर्तृहरि का व्यक्तित्व एवं स्थिति काल अत्यधिक विवादास्पद है।
  - अधिकांश विद्वान भर्तृहरि का समय छठी शती का अन्त मानते हैं।
  - **भर्तृहरि ने तीन शतकों की रचना की है -** नीति शतक, शृंगार शतक और वैराग्य शतक। शतकों के नाम के अनुरूप ही इनमें क्रमशः नीति, श्रृंगार और वैराग्य का सरस चित्रण है।
  - इन शतकों में प्रायः सभी प्रचलित छन्दों का प्रयोग किया गया है।
  - भर्तृहरि ने अपने विचारों की पुष्टि में प्रतिदिन के जीवन के अनुरूप उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। इसलिए भर्तृहरि के कथन सूक्ति बन कर लोक में पर्याप्त प्रचलित हो गये।
- **अमरूक शतक**
  - **मुख्य तथ्य –**
  - अमरूक अथवा अमरू नाम से विख्यात इस कवि के शतक में प्रणय और श्रृंगार कला ललित और मनोरम भंगियों के सर्वोत्तम चित्रा उपलब्ध होते हैं।
  - रचना शैली के आधार पर इनका समय 700 ई. माना जाता है। साहित्यिक दृष्टि से यह अत्यन्त महत्वपूर्ण रचना मानी जाती है।
  - संस्कृत के काव्यशास्त्रीय आचार्यों के शास्त्र ग्रन्थ इस शतक के उदाहरणों से भरे पड़े हैं। अमरूक ने **'गागर में सागर'** की उक्ति चरितार्थ कर दी है, फिर भी ये सरल एवं सुबोध हैं।
- **चौर पंचाशिका**
  - **लेखक -** कवि बिल्हण
  - **मुख्य तथ्य**
  - इस लघु गीतिकाव्य में 50 पद्य हैं। इसकी भाषा सरल एवं प्रवाहपूर्ण है।
  - प्रत्येक पद्य 'अद्यापि' से प्रारम्भ होता है तथा सम्पूर्ण गीतिकाव्य में श्रृंगार रस चित्रित है।
  - इन्होंने ऐतिहासिक महाकाव्य विक्रमांकदेवचरित की रचना की थी।
- **गीतगोविन्द**
  - **लेखक** - महाकवि जयदेव
  - **मुख्य तथ्य**
  - ये राजा लक्ष्मणसेन की सभा में थे।
  - अतः इनका स्थितिकाल भी बारहवीं सदी ईस्वी है।
  - जयदेव ने श्लोक, गद्य एवं गीत के मिश्रण से एक अद्भुत काव्यशैली का सूत्रापात किया।
  - इस काव्य में नायक कृष्ण हैं तथा नायिका राधा।
  - इन दोनों के पारस्परिक शृंगार की आशा, निराशा, ईर्ष्या, मान, कोप, मानभंग, विरह, मिलन आदि विभिन्न दशाओं का सरस चित्रण इस काव्य में है।
  - गीतगोविन्द जैसा साहित्यिक सौन्दर्य एवं माधुर्य अन्य किसी काव्य में मिलना दुष्कर ही है।
  - कोमलकान्त पदावली के साथ ललित अनुप्रास युक्त छन्दों ने इस काव्य में रमणीय गेयता उत्पन्न कर दी है।
  - महाप्रभु चैतन्य ने गीतगोविन्द की काव्यमाधुरी के अनन्य उपासक रहे।
  - आज भी वैष्णव समाज में जयदेव के पद्य बहुत प्रचलित हैं।

- **बौद्ध साहित्य**
  - अधिकांश साहित्य पाली भाषा में बाद के साहित्य संस्कृत में भी हैं।

- बौद्ध साहित्य में त्रिपिटक का महत्व सर्वाधिक है। ये हैं सुत्तपिटक (उपदेश), विनयपिटक (संघ के नियम), अभिधम्मपिटक (दर्शन)।

- **सुत्तपिटक :**
  - इसमें बुद्ध के उपदेश हैं। यह सर्वाधिक विस्तृत एवं प्रमुख है। इसका विभाजन पाँच निकायों में हुआ है।
  - दीर्घनिकाय में बुद्ध के शिक्षा और संवादों का संकलन है
  - खुद्दक निकाय में बोद्ध दर्शन से संबंधित 15 ग्रंथों का संकलन है।
  - इसमें धम्मपद, सुत्तनिपात, थेरीगाथा, थेरगाथा, जातक कथा शामिल है। बौद्ध धर्म में धम्मपद की तुलना गीता से की जाती है (चीनी त्रिपिटकों में इसके अनुवाद मिलते हैं)।
  - जातक कथा में बुद्ध के पूर्व जन्म की घटना का वर्णन है।
  - अंगुत्तर निकाय में 16 महाजनपद का वर्णन हैं।
- **विनयपिटक :**
  - इसमें संघ से संबंधित नियम हैं। इसके चार भाग हैं- सुत्तविभंग, खंदक, पतिमुक्ख एवं परिवार पाठ।
- **अभिधम्मपिटक :**
  - इसमें बुद्ध की शिक्षा का दार्शनिक विवेचन है एवं आध्यात्मिक विचारों को समाविष्ट किया गया है।
  - इस पिटक से संबंधित सात ग्रंथ हैं जो प्रश्नोत्तर शैली में लिखे गये हैं। जिनमें मोग्गलिपुत्त तिस्स रचित कथावत्थु सबसे महत्वपूर्ण है।
- **मिलिन्दपन्हों**
  - इसमें ग्रीक राजा मिनांडर एवं बौद्ध विद्वान नागसेन के बीच प्रश्नोत्तर है।
  - दीपवंश, महावंश
  - क्रमशः चौथी, पाँचवीं सदी ई. में रचित श्रीलंकाई बौद्ध महाकाव्य है।
- **आगम**
  - इसके सबसे बडे टीकाकार बुद्धघोष है। उन्होंने विशुद्धिमग्ग की रचना की जो बौद्ध सिद्धांतों पर आधारित प्रमाणिक दार्शनिक ग्रंथ है।
- **महायान साहित्य**
  - यह अधिकांशतः संस्कृत में लिखे गये हैं।
  - आरंभिक पुस्तक ललित विस्तार है जो बुद्ध की प्राचीनतम् जीवनी है, इसमें विभिन्न प्रकार के लिपियों का वर्णन है।
  - एड्विन अर्नोल्ड ने इसे 'द लाइट ऑफ एशिया' नाम से अनुदित किया।
  - महायान संप्रदाय का सबसे महत्वपूर्ण दार्शनिक पुस्तक प्रज्ञापारमिता है।
  - पारमिता का अर्थ उन गुणों की प्राप्ति है जो बुद्धत्व प्राप्ति के लिए आवश्यक है।
  - महायान साहित्य में दंतकथाओं का भी भंडार है, इन कथाओं को अवदान कहते हैं।
  - कुछ प्रमुख अवदान हैं :- अवदान शतक, दिव्यावदान, अवदान कल्पलता (क्षेमेन्द्र रचित)।
  - कुछ अन्य बौद्ध ग्रंथ :- नागार्जुन - सहस्रप्रज्ञापारमिता, आर्यदेव - चतुश्शतक, एवं वसुबंधु - अभिधम्मकोष।
- **जैन साहित्य**
  - प्राचीनतम् जैन ग्रंथ पूर्व कहे जाते थे। कहा जाता है कि इसकी जानकारी सिर्फ भद्रबाहु को थी। उसके दक्षिण चले जाने पर स्थूलभद्र ने एक सभा आयोजित किया जिसमें 14 पूर्वी का स्थान 12 अंगों ने ले लिया।
  - पूर्वो में महावीर द्वारा प्रचारित सिद्धांत संग्रहित थे जिसे स्वयं महावीर ने अर्धमागधी प्राकृत भाषा में अपने शिष्यों तक पहुँचाया था।
  - श्वेताम्बर के आगमों में 12 अंग, 12 उपांग, 10 प्रकीर्ण, 6 छंदसूत्र / भेदसूत्र, 4 मूलसूत्र एवं अनुयोगसूत्र हैं।
  - प्रारंभिक जैन आचार्यों ने अर्द्धमागधी भाषा को अपनाया। आगे चलकर इसने उत्तर भारत में अपभ्रंश, गुजराती, राजस्थानी आदि के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। दक्षिण भारत में तमिल, तेलगु, कन्नड़, मराठी के विकास में भी आचार्यों ने भूमिका निभाई।
  - हेमचंद्र के लेखन के आधार पर जैन धर्म से संबंधित तिथियाँ स्पष्ट की जाती हैं। उसी ने अपभ्रंश भाषा को व्याकरणवद्ध किया।
- **कुछ अन्य जैन ग्रंथ**
  - भद्रबाहु : भद्रबाहुचरित, कल्पसूत्र
  - हेमचन्द्र : परिशिष्टपर्वन (कौटिल्य का जीवनवृत्त).
  - हरिभद्र सूरी : समारादित्यकथा, धर्मबिंदु अनेकांतविजय
  - उद्योत्तनसूरी : कुवलयमाला
  - नयचंदसूरी : हम्मीर रासो
  - अमोघवर्ष (राजा) : रत्नमालिका
  - जिनसेन : आदिपुराण, हरिवंशपुराण (883 ई.)
  - विमलसूरी (दिगम्बर) : पद्मचरितया या पद्मपुराण

- **व्याकरण साहित्य**
  - प्राचीन भारतीय लेखकों का ध्यान व्याकरण, शब्द-व्युत्पत्तिशास्त्र, शब्दकोष शास्त्र, छन्द शास्त्र और अलंकार शास्त्र की ओर भी गया था। व्युत्पत्तिशास्त्रीय तथा ध्वनिशास्त्रीय प्राचीनतम ग्रंथ यास्क के नैचण्टुक और निरूक्त, जो अपनी वैदिक शब्दावली के लिए विख्यात हैं और ध्वनि संबंधी ग्रंथ हैं।
  - **अष्टाध्यायी-**
  - **लेखक -** पाणिनि
  - आठ अध्याय में बनी इस प्रख्यात व्याकरण ग्रन्थ ने अपने पूर्ववर्ती कई वैयाकरणों का उल्लेख किया है, जिनमें शाकटायन और शकल्य, गार्ग्य, और गालव भी हैं।
  - ऐसा माना जाता है कि पाणिनि को व्याकरण का ज्ञान 14 सूत्रों के रूप में स्वयं शिव ने दिया था।
  - इन चौदह सूत्रों को महेश्वरसूत्राणि कहा जाता है।
  - पाणिनि की अष्टाध्यायी में लगभग 4000 सूत्र हैं, जो केवल दो-दो या तीन-तीन शब्दों के ही हैं।
  - इस ग्रंथ में, जो एक प्रकार की आशुलिपि में लिखा गया करने के लिए एक एक अक्षर या शब्दांश का प्रयोग किया गया है।
  - पाणिनि द्वारा बनाए गए व्याकरण के नियम शिष्ट लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा पर लागू होते थे।
  - इनके ग्रंथ का रचना काल ईसा पूर्व की छठी और पांचवी शताब्दियों के बीच माना जाता है।
  - **वार्तिक**
  - **लेखक -** कात्यायन
  - इसमें पाणिनि के नियमों पर विमर्श और व्याख्या हैं।
  - इस प्रकार उसने पाणिनि के व्याकरण को श्रेण्य संस्कृत के अनुकूल बना दिया।
  - संस्कृत का लेखन उस समय शुरू हो चला था।
  - इस प्रकार पाणिनि के कुछ नियमों को कात्यायन ने अप्रचलित बना दिया।
  - **महाभाष्य**
  - **लेखक -** पंतजलि
  - तीन महान वैयाकरणों में से यह अंतिम था।
  - उसने ब्राह्मण पंडितों के लिए अपने ग्रंथ की रचना उस समय की, जिस समय व्याकरण में लोगों की रुचि घट रही थी और संस्कृत भाषा की शुद्धता नष्ट हो रही थी।

- पतंजलि पुष्यमित्र शुंग (ईसा पूर्व की दूसरी शताब्दी) का समकालीन था और उसने अपने ग्रंथ में उसका कई बार उल्लेख भी किया है।
- इस भाष्यकार ने व्याकरण के नियमों को स्पष्ट करने लिए जो वैयक्ति उदाहरण दिए हैं, उनसे उसके काल के भारत का चित्र भी उपस्थित हो जाता है

- **वाक्यद्वीप**
- **लेखक -** भर्तृहरि
- यह महाभाष्य पर टीका की।
- वाक्यपदीय पद्य में लिखा गया है और इसके तीन खंड हैं।

- **काशिकावृत्ति**
- **लेख़क -** जयादित्य और वामन
- यह अष्टाध्यायी की टीका थी ।

- **खगोल विज्ञान एवं चिकित्सा साहित्य**
  - संस्कृत में भैषज्य, शल्य क्रिया, गणित, फलित ज्योतिष और गणित ज्योतिष (खगोल विज्ञान) जैसे वैज्ञानिक विषयों का साहित्य उतना ही समृद्ध है, जितना व्याकरण, व्युत्पत्ति शास्त्र, शब्दकोश शास्त्र, छंद शास्त्र, अलंकार शास्त्र, संगीत तथा स्थापत्य जैसी मानविकी विद्याओं का साहित्य।
  - गणित विज्ञानों के क्षेत्र में भी अंकों तथा दशमलव पद्धति के आविष्कारकों के रूप में प्राचीन भारतीयों की उपलब्धि बहुत काफी थी सबसे पुराने इस समय विद्यमान गणितीय लेख वैदिक शुल्व सूत्र हैं, जो एक प्रकार की कर्मकांडीय ज्यामिति के सूचक है, जिसका प्रयोग वेदियों के निर्माण के लिए किया जाता था।
  - इसमें समकोणों वर्गों तथा आयतों की रचना भी आ जाती है और पाइथागोरस का यह सिद्धांत भी, कि कर्ण का वर्ग अन्य दो रेखाओं के वर्ग के बराबर होता है।
  - उत्तरकालीन गणितज्ञों ने ज्या पफलक (साइन टेबल) का आविष्कार करके त्रिकोणमिति में भी प्रगति की।
  - **वराहमिहिर**
  - यह अपने पंच सिद्धांतक, जो एक व्यावहारिक ज्योतिष ग्रंथ है और बहुल संहिता के कारण प्रसिद्ध है।
  - **आर्यभट्ट**
  - भारतीय ज्योतिष का संस्थापक आर्यभट्ट थे ,
  - इन्होने सबसे पहले यह सिद्धांत प्रतिपादित किया था कि पृथ्वी अपने अक्ष (धुरी) पर घूमती है।
  - उसके ग्रंथ का नाम है : आर्यभट्टीम।
  - **ब्रह्मगुप्त (सातवीं शताब्दी)**
  - अपना ब्रह्म स्फुटिक सिद्धांत लिखा और यह ज्योतिषियों की इस परंपरा में अंतिम थे , भास्कराचार्य (बारहवीं शताब्दी)
  - इन्होने सिद्धांत शिरोमणि अर्थात् सिद्धांत का शिरोमणि लिखा।
  - **चरक संहिता और सुश्रुत संहिता**
  - भैषज्य तथा शल्य शास्त्र पर लिखे गए ग्रंथों में चरक संहिता और सुश्रुत संहिता आती हैं, जिनके नाम उनके लेखकों के नाम पर पड़े हैं।
  - इनमें से पहला भैषज्य का और दूसर शल्य शास्त्र का ग्रंथ है।
  - ये दोनों ही ईसा की दूसरी शताब्दी के हैं।
  - भैषज्य विज्ञान अर्थात् चिकित्सा की कला के उल्लेख अथर्ववेद में इस रूप में प्राप्त होते हैं कि उसमें अनेक रोगों की और साथ ही महत्वपूर्ण जड़ी बूटियों की भी चर्चा है।

- **गद्य एवं कथा साहित्य**
- **वासवदत्ता**
  - **रचनाकार -** सुबन्धु
  - **मुख्या तथ्य**
  - इस गद्यकाव्य के रचयिता सुबन्धु हे कुसुमपुर की राजपुत्री वासवदत्ता तथा एक राजकुमार कन्दर्पकेतु के पारस्परिक प्रणय की विघ्नयुक्त कथा का इस गद्यकाव्य में वर्णन है।
  - इसमें कथानक अत्यन्त संक्षिप्त है जिसे सुबन्धु ने पाण्डित्य युक्त लम्बे वर्णनों से अत्यन्त दीर्घ कर दिया है।
  - अलंकार बहुलता दीर्घ समास तथा श्लेष के आधिक्य के कारण यह रचना सरस की अपेक्षा दुरूह अधिक है।
- **हर्षचरित**
  - **रचनाकार -** बाणभट्ट
  - **मुख्य तथ्य**
  - इनका समय सातवीं सदी का पूर्वार्द्ध है।
  - हर्षचरित ऐतिहासिक काव्य माना जाता है।
  - इसमें हर्षवर्धन के वंश तथा जीवन चरित का वर्णन किया है।
  - अपने पूर्ववर्ती अनेक मान्य कवियों तथा सामान्य ग्रन्थों की भी इसमें प्रशंसा की है जिससे इन सबके समय निर्धारण में पर्याप्त सहायता मिलती है।
  - काव्यगत विशेषताओं की दृष्टि से भी हर्षचरित एक सुन्दर गद्यकाव्य हैं।
- **कादम्बरी**
  - **रचनाकार -** बाणभट्ट
  - **मुख्य तथ्य**
  - यह गद्यकाव्य है।
  - यह गद्यकाव्य युवक तथा युवती के उस अनुराग का चित्रण करता है जो जन्म जन्मांतर तक दृढ़ एवं भावस्थिर रहता है।
  - इसमें कवि ने चन्द्रापीड कादम्बरी तथा पुण्डरीक महाश्वेता के गूढ़ प्रणय का हृदयस्पर्शी वर्णन किया है।
- **दशकुमारचरित**
  - **रचनाकार -** महाकवि दण्डी
  - **मुख्य तथ्य**
  - इस गद्यकाव्य में तीन राजपुत्रों तथा सात मन्त्रीपुत्रों की कथा है।
  - ये दसों कुमार बड़े होने पर दिग्विजय पर निकलते हैं और रास्ते में बिछुड़ कर अलग स्थानों पर पहुचते हैं।
  - कुछ वर्षों के बाद सभी राजकुमार एक-एक करके मिलते जाते हैं और अपनी यात्राओं, पराक्रमों और विचित्रा लोकानुभवों को रोमांचक और मनोरंजक रूप में सुनाते हैं।
  - इन्हीं साहित्यिक विजयगाथाओं का संग्रह दशकुमार चरित है।
- **हितोपदेश**
  - **रचनाकार -** कवि नारायण पण्डित
  - **मुख्य तथ्य**
  - इस ग्रन्थ की प्राचीनतम हस्तलिखित प्रति 1373 ई. की प्राप्त होती है।
  - कई विद्वान इस ग्रन्थ को पंचतंत्र का ही लघु संस्करण मानते हैं।
  - इसमें कुल 43 कथाएँ हैं जिनमें से 25 कथाएँ पंचतंत्र से ही ग्रहण की गयी हैं।
  - इस ग्रन्थ में चार परिच्छेद हैं- मित्रलाभ, सुहृदभेद, सन्धि और विग्रह।
  - पंचतंत्र की अपेक्षा हितोपदेश में पद्य अधिक है।
  - संस्कृत के सुगम पठन-पाठन की दृष्टि से भारत में हितोपदेश का प्रचार ही अधिक रहा है।
- **बृहत्कथा**
  - **रचनाकार -** कवि गुणाढ्य
  - **मुख्य तथ्य**
  - यह लोककथाओं का सर्वाधिक प्राचीन तथा वृहत संग्रह है।

- महाराजा हाल के सभाकवि गुणाढ्य ने इसकी रचना पैशाची प्राकृत में की थी तथा मूल रचना में एक लाख पद्य थे।
- भारतीय परम्परा तथा जनश्रुति के अनुसार इसकी रचना विक्रम की प्रथम शताब्दी में हुई।
- मूल वृहत्कथा आज उपलब्ध नहीं है किन्तु उसके तीन विभिन्न संस्कृत रूपान्तर प्राप्त होते हैं।

- **वृहत्कथा मंजरी**
  - **रचनाकार -** कवि क्षेमेन्द्र
  - **मुख्य तथ्य**
  - कश्मीर के राजा अनन्त के आश्रित कवि क्षेमेन्द्र ने 1037 ई. में इस ग्रन्थ की रचना की।
  - इसमें 18 लम्बक तथा 7500 श्लोक हैं।
  - कथानक की अस्पष्टता के कारण यह कहना कठिन है कि इसमें मूल कथानक की कितनी रक्षा हो सकी है
- **कथासरित्सागर**
  - **रचनाकार -** सोमदेव
  - **मुख्य तथ्य**
  - इसके रचयिता सोमदेव क्षेमेन्द्र के समसामयिक थे।
  - वृहत्कथा के विभिन्न संस्कृत रूपान्तरों में यही सर्वाधिक प्रसिद्ध हुआ है।
  - इसमें 124 तरंगे तथा 24000 श्लोक हैं।
  - विश्व साहित्य का यह सबसे बड़ा संग्रह है।
- **शुकसप्तति**
  - इसमें सत्तर रोचक कथाएँ संग्रहीत हैं।
  - मदनसेना नामक युवक कार्यवशात् विदेश जाता है तथा उसका तोता प्रत्येक रात को एक-एक नवीन तथा रोचक कथा सुनाता है।
  - इस ग्रन्थ की भी संक्षिप्त और विस्तृत दो वाचनिका प्राप्त होती हैं।

संस्कृत के मुख्य नाटककार और उनकी रचनाएँ इस प्रकार हैं-

- **भास**
  - यह संस्कृत के प्रथम नाटककार हैं।
  - भास से पूर्व लिखे गये कोई नाटक उपलब्ध नहीं हैं।
  - भास का समय ईसा पूर्व पाँचवीं चौथी सदी सिद्ध किया गया है।
  - **स्वप्नवासवदत्ता** को भास का सर्वोत्कृष्ट नाटक माना गया है।
- **शूद्रक**
  - इस कवि ने अत्यन्त रोचक और बहुरंगी प्रकरण **मृच्छकटिक** की रचना की।
  - मृच्छकटिक में दस अंक हैं
  - इसमें दरिद्र किन्तु अत्यन्त गुणी ब्राह्मण चारुदत्त और रूपवती गणिका वसन्तसेना का पारस्परिक प्रणय प्रमुख कथा के रूप में वर्णित है।
  - इसी के भीतर शूद्रक ने राज्य क्रान्ति की कथा भी बड़ी कुशलतापूर्वक जोड़ दी है।
  - मृच्छकटिक का अभिनय रूस, अमेरिका, फ्रांस आदि देशों में अनेक बार किया जा चुका है।
- **कालिदास**
  - महाकवि कालिदास रचित तीन नाटक प्राप्त होते हैं- मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय तथा अभिज्ञानशाकुन्तल।
  - नाट्य रचना के क्रम में **मालविकाग्निमित्र** कालिदास की प्रथम रचना जान पड़ती है।
  - इसका कथानक ऐतिहासिक न होकर भी इसके पात्र ऐतिहासिक हैं क्योंकि इसका नायक अग्निमित्र शुंगवंशीय नरेश पुष्यमित्र (दूसरी शती ईसा पूर्व) का पुत्र है।
  - कालिदास की दूसरी नाट्यरचना **विक्रमोर्वशीय** पाँच अंकों का त्रोटक है जिसमें अप्सरा उर्वशी पुरुरवा के पारस्परिक प्रणय की कथा है।
  - इस कथा का मूल वैदिक आख्यान में तो प्राप्त होता ही है, साथ ही महाभारत, विष्णु पुराण, मत्स्य पुराण आदि में भी यह कथा प्राप्त होती है।
  - कालिदास ने उस संक्षिप्त वैदिक आख्यान को अपनी कल्पना से सम्मिश्रित करके एक सुन्दर परिवर्तित रूप प्रदान किया है।
  - **अभिज्ञानशाकुन्तल** कालिदास की सर्वश्रेष्ठ नाट्यति है।
  - इसको विश्वसाहित्य का सर्वश्रेष्ठ नाटक माना जाता है।
  - यह सात अंकों का नाटक है जिसमें चन्द्रवंशी राजा दुष्यन्त तथा महर्षि कण्व की पालिता पुत्री शकुन्तला के मुग्ध प्रणय, गान्धर्व विवाह, वियोग तथा पुनर्मिलन की कथा अत्यन्त मार्मिक रूप में विभिन्न नाटकीय मोड़ों के साथ वर्णित है।
- **विशाखदत्त**
  - इन्होंने मुद्राराक्षस नामक नाटक की, जो कथावस्तु की विशिष्टता और शैली की गंभीरता के कारण संस्कृत साहित्य में अद्वितीय है।
  - विशाखदत्त का समय छठीं शती का अन्त माना जाता है।
  - इसका कथानक - नन्दवंश का नाश करके चाणक्य द्वारा चंद्रगुप्त मौर्य को राजा बना देता है किन्तु इस राज्य को दृढ़ करने के लिए वह नन्द के स्वामिभक्त मंत्री राक्षस को अपने पक्ष में करना चाहता है।
  - राक्षस अपनी स्वामिभक्ति से विचलित नहीं हो रहा।
  - इसी बुद्धि संघर्ष में चाणक्य की कूटनीतिकुशलता ही नाटक का मूल मंत्र है।
- **हर्षवर्धन**
  - संस्कृत साहित्य में हर्षवर्धन सुन्दर नाट्यों के रचयिता के रूप में प्रसिद्ध हैं।
  - हर्षवर्धन ने तीन नाटकों की रचना की थी प्रियदर्शिका, रत्नावली तथा नागानन्द
  - रत्नावली चार अंकों की नाटक है
  - इसमें राजा उदयन और रानी वासवदत्ता के अन्तःपुर में भाग्यवशात् दासी के रूप में रह रही
  - सिंहल राजकन्या रत्नावली (सागरिका) का मुग्ध प्रणय चित्रित है।
  - यह संस्कृत साहित्य की सर्वाधिक सरस नाटिका है जिसमें हर्ष की नाट्यकला का चरम विकास प्रस्फुटित हुआ है।
- **भवभूति**
  - संस्कृत नाट्य के क्षेत्रा में महाकवि भवभूति का स्थान अन्यतम है।
  - इन्होंने तीन नाटकों की रचना की थी- **महावीरचरित, मालतीमाधव तथा उत्तररामचरित**
  - **महावीरचरित** में श्रीराम-सीता विवाह से लेकर रावणवध के उपरान्त अयोध्या में राज्याभिषेक तक की कथा है।
  - भवभूति ने इस नाटक में नायक राम के चरित्र का उत्कर्ष करने के लिए मूल रामकथा में अनेक परिवर्तन कर दिये हैं।
  - **मालतीमाधव** दस अंकों का प्रकरण है।
  - इसका कथानक कवि की कल्पना से प्रसूत है जिसमें माधव और मालती तथा मकरन्द और मदयन्तिका की प्रणय कथा का विस्तार वर्णित है।
  - **उत्तररामचरित** भवभूति का सर्वोत्कृष्ट नाटक है।
  - इसकी कथा का स्रोत वाल्मीकि रामायण का उत्तरकाण्ड है।
  - कवि ने अपनी चमत्कारिणी मेध से उस प्रख्यात रामकथा में अनेक परिवर्तन करके उसे सुखान्त बना दिया है।
  - इस कारण इस नाटक के अन्तिम अंक में सीता, राम, लब, कुश आदि सबका सुख पूर्वक मिलन हो जाता है।
- **हर्ष चरित**
  - जीवनचरितों में सबसे प्रसिद्ध बाणभट्ट हर्षचरित है जिसमें उसने हर्ष की उपलब्धियों का वर्णन किया है।

- बाणभट्ट का हर्षचरित यद्यपि हर्ष के काल की घटनाओं को जानने का महत्वपूर्ण स्रोत है लेकिन इसमें बाण ने हर्ष की उपलब्धि को अतिरंजना के साथ चित्रित किया है
- इस क्रम में बाण द्वारा उपलब्ध करायी जानकारी ऐतिहासिक तथ्यों के साथ कल्पना का मिश्रण हो जाती है।

- **राजशेखर**
  - प्रबंधकोश, बाल रामायाण, बाल महाभारत, कर्पूरमंजरी, भुवनकोष आदि।

प्रमुख जीवन चरित्र		
कृति	राजा	लेखक
विक्रमांकदेव चरित्र	विक्रमादित्य	बिल्हड़
रामचरित	रामपाल	सन्ध्याकरनन्दिनी
कुमारपाल चरित	कुमारपाल	हेमचंद
द्वयाश्रय काव्य	कुमारपाल	हेमचंद
नव साहसांकचरित	सिंधुराज	पद्मगुप्त
पृथ्वीराज विजय	पृथ्वीराज चौहान	जयानक
पृथ्वीराज रासो	पृथ्वीराज तृतीय	चंदबरदाई
बीसलदेव रासो	विग्रहराज वीसलदेव	नरपति नाल्ह

- **तमिल साहित्य (संगम कालीन साहित्य)**
  - संगम साहित्य मुख्य रूप से तमिल भाषा में लिखे गए हैं।
  - संगम साहित्य के ग्रंथ आज के समय में **"साउथ इण्डिया शैव सिद्धांत पब्लिशिंग सोसायटी तिन्नेवल्ली"** द्वारा प्रकाशित किए गए हैं।
  - काव्य में आगम वर्ग की कविताएँ मुख्यतया प्रेम सम्बन्धी हैं। प्रमुख संगम ग्रंथ निम्नलिखित हैं-
- **कुरल**
  - इस अष्टादश लघु उपदेश गीत का ग्यारहवाँ संग्रह कुरल है।
  - इसके प्रणेता कवि तिरुवल्लुवर हैं।
  - इसमें उनकी तथा उनकी पत्नी अव्वे की अनेक कहानियाँ मिलती हैं।
  - तिरुवल्लुवर ने अपने ग्रंथ की रचना श्रीलंका के नृपति इलल जो इनका मित्र था अथवा उसके पुत्र को शिक्षित करने के लिये किया था।
  - कुरल को तमिल साहित्य का आधार ग्रंथ माना जाता है।
  - इसकी गणना साहित्यिक त्रिवर्ग में की गई है, क्योंकि इसमें धर्म, अर्थ तथा काम (अरम, पोरूल, तथा इनवम) का उल्लेख किया गया है।
  - इसमें राजनीति एवं कला का भी वर्णन मिलता है। इसे तमिल साहित्य का बाइबिल अथवा पंचमवेद भी माना जाता है।
- **तोलकाप्पियम्**
  - यह द्वितीय संगम का उपलब्ध एक मात्र प्राचीनतम ग्रंथ है।
  - इसके लेखक **तोलकाप्पियर** हैं।
  - यह एक व्याकरण ग्रंथ है।
  - इसकी रचना सूत्र शैली में की गई है।
  - व्याकरण के साथ-साथ धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की नियमावली भी इस ग्रंथ में हैं।
- **एतुत्तौके अथवा अष्ट संग्रह**
  - यह एक संग्रह ग्रन्थ है जिसमें तीसरे संगम के आठ ग्रन्थों का संग्रह है।
  - इसके प्रमुख भाग हैं- नण्णिनै, कुरुन्थोके, एनकुरुनूर, पदित्रप्पत्तु, परिपादल, कलिथौके, अहनानरु, पुरुनानरु.
- **परिपावल**
  - यह तमिल साहित्य का प्रथम संगीत संग्रह है।
  - इसमें विभिन्न देवताओं की प्रशंसा में छंद गाए गए हैं।
  - इसी संग्रह में इन्द्र द्वारा गौतम ऋषि की पत्नी के साथ किए गए दुर्व्यवहार एवं भक्त प्रहलाद का वर्णन है।
  - एक गीत में मयूर नृत्य का स्वाभाविक वर्णन मिलता है।
- **केलिथोके**
  - इसकी रचना का श्रेय कपिलर तथा अन्य चार व्यक्तियों को दिया गया है।
  - इसमें संगम युग के **विवाह की प्रथाओं** का उल्लेख है।
- **अहनानरू**
  - मदुरा निवासी रुद्रशर्मन के पाण्ड्य शासक उपपेरूअणुदि के संरक्षण में इसका संग्रह किया गया था।
  - इसकी विषय वस्तु भी प्रेम प्रसंग है।
- **पुरूनानरू**
  - इसे पुरम् नाम से भी जाना जाता है।
- **पत्तुप्पातु अथवा दशगीत**
  - तृतीय संगम का यह दूसरा संग्रह ग्रंथ है।
  - ये चेर राजाओं की कहानी कहते हैं।
- **पत्तिनप्पाले**
  - इसकी रचना भी रूदनकन्ननार ने की।
  - इस ग्रंथ में प्रेमगीत संगृहीत हैं।
  - इसमें चोल बन्दरगाह पुहार (कावेरीपत्तनम्) तथा तमिल क्षेत्रों के साथ विदेशी व्यापारिक सम्बन्धों का वर्णन है।
  - इसमें कवि ने योद्धा के समरभूमि में जाने की इच्छा तथा प्रेयसी के आकर्षण के अंतद्वंद्व का अत्यन्त स्वाभाविक वर्णन किया है।
  - इसकी कहानी अश्वघोष के बुद्धचरित से मिलती है।
  - इस कृति से प्रभावित होकर चोल शासक करिकाल ने लेखक को 16 लाख स्वर्ण मुद्राएँ ईनाम में दीं।
- **संगम युग के महाकाव्य-**
- संगम युग में कुल पाँच काव्य हैं - शिलप्पादिकारम्, मणिमेखले, जीवकचिन्तामणि, वलयपति तथा कुण्डलकेशि।
- इनमें प्रथम तीन ही उपलब्ध हैं।
- यद्यपि ये ग्रन्थ संगम साहित्य के अन्तर्गत नहीं आते तथापि इनसे तत्कालीन जन-जीवन के विषय में अच्छी जानकारी प्राप्त होती है।
- इन महाकाव्यों के रचनाकाल को तमिल साहित्य का स्वर्णयुग कहा जाता है।
- **शिलप्पादिकारम्**
  - इलांगोआदिगल की रचना है।
  - इसका लेखक जैन माना जाता है।
  - इसका नायक कोवलन एक व्यवसायी तथा नायिका कण्णगी एक व्यापारी की कन्या है।
  - इसकी कथा कावेरीपत्तनम से संबंधित है जिसमें नायक कोवलन बाद में माधवी नामक वेश्या से प्रेम करने लगता है।
  - बहुत उतार-चढ़ाव के बाद कोवलन को पाण्ड्य शासक डुजेलियन द्वारा फाँसी दे दी जाती है।
  - कण्णगी द्वारा अपने पति को निर्दोष सिद्ध कर देने के बाद पाण्ड्य शासक नेंडुजेलियन की आत्मग्लानि से राजसिंहासन पर ही मृत्यु हो गई।
  - तत्पश्चात् कण्णगी ने अपनी क्रोधाग्नि से मदुरा को जला डाला तथा चेर राज्य में चली गई।
  - वहीं पहाड़ी पर उसकी मृत्यु हो गई।
  - इस प्रकार इस महाकाव्य में कोवलन तथा कण्णगी की दुर्भाग्यपूर्ण कथा का वर्णन है।
  - इस ग्रंथ को तमिल साहित्य का इलियड माना जाता है।

- **मणिमेखले (मणियों युक्त कंगन)**
  - सीतलेसत्तनार की रचना है।
  - इसे बौद्ध पुस्तक माना जाता है।
  - इसकी कथा वहाँ से प्रारम्भ होती है जहाँ शिलप्पादिकारम् की कथा समाप्त होती है।
  - इस महाकाव्य की नायिका मणिमेखले हे जो कोवलन की माधवी से उत्पन्न पुत्री है।
  - काफी उतार-चढ़ाव के बाद इसकी नायिका मणिमेखले बौद्ध भिक्षुणी बन जाती है।
  - इसे तमिल साहित्य का ओडिसी कहा जाता है।
- **जीवक चिन्तामणि**
  - कवि तिरुतक्कदेवर की रचना है।
  - इस पुस्तक को विग्रह की पुस्तक भी कहा जाता है क्योंकि इसका नायक जीवक अपने पराक्रम द्वारा आठ रानियों से विवाह कर आनन्दपूर्वक जीवन बिताता था, लेकिन बाद में जैन भिक्षु बन गया।
- **पेरूंगडाई**
  - इसका लेखक कॉगेलेवीर जैन है
  - इस महान काव्य में कौशाम्बी के प्रसिद्ध राजा उदयिन के पुत्र नखानदत्त के साहसिक कार्यों की कथा है।
- **शूलामणि**
  - इसका रचयिता जैन लेखक तोलामोली था।
  - इस काव्य की गणना तमिल साहित्य के पाँच लघु काव्यों में होती है।

❑ **साहित्यिक स्रोतों की त्रुटियाँ**

- साहित्यिक स्रोतों की त्रुटियाँ विभिन्न प्रकार की हो सकती हैं, जो लेखन या शोध के दौरान सामने आती हैं। ये त्रुटियाँ लेखक के विचार, भाषा, संदर्भ, या तथ्यों में हो सकती हैं, जो लेखन की गुणवत्ता और विश्वसनीयता को प्रभावित करती हैं। साहित्यिक स्रोतों की कुछ प्रमुख त्रुटियाँ निम्नलिखित हैं:

- **तथ्यात्मक त्रुटियाँ**
  - जब लेखक तथ्यों को सही तरीके से प्रस्तुत नहीं करता या गलत जानकारी देता है, तो यह त्रुटि उत्पन्न होती है।
  - उदाहरण: अगर एक लेखक किसी ऐतिहासिक घटना के बारे में लिखते हुए गलत तारीख या स्थान का उल्लेख करता है।
- **संदर्भ की त्रुटियाँ**
  - साहित्यिक स्रोतों में कभी-कभी संदर्भ गलत होते हैं। इसका मतलब है कि उद्धृत किए गए स्रोतों या उद्धरणों की सही पहचान नहीं होती। या फिर जो स्रोत उद्धृत किया गया है, वह गलत हो सकता है।
  - उदाहरण: अगर लेखक ने किसी पुस्तक से उद्धरण लिया है, लेकिन उस पुस्तक के लेखक या प्रकाशन वर्ष का गलत उल्लेख किया हो।
- **भाषाई त्रुटियाँ**
  - साहित्यिक स्रोतों में व्याकरण, वर्तनी, या भाषा की अन्य गलतियाँ भी पाई जा सकती हैं। इससे पाठक को सही अर्थ समझने में कठिनाई हो सकती है।
  - उदाहरण: वर्तनी की गलतियाँ, गलत विराम चिह्न का प्रयोग, या संक्षिप्त रूप का गलत इस्तेमाल।
- **संकलन की त्रुटियाँ**
  - साहित्यिक स्रोतों के संकलन में भी त्रुटियाँ हो सकती हैं, जैसे उद्धृत शब्दों या वाक्यांशों का संदर्भ से बाहर उपयोग। इससे लेखक का मूल उद्देश्य गलत समझा जा सकता है।
  - उदाहरण: किसी कविता या लेख के एक भाग को संदर्भ से बाहर रखकर प्रस्तुत करना।
- **अनुवाद में त्रुटियाँ**
  - जब साहित्यिक कार्यों का अनुवाद किया जाता है, तो कभी-कभी अनुवादक शब्दों के सही अर्थ को नहीं पकड़ पाते या भावनाओं को ठीक से व्यक्त नहीं कर पाते।
  - उदाहरण: किसी विदेशी साहित्यिक कृति के अनुवाद में सांस्कृतिक या भाषाई अंतर के कारण अर्थ का ह्रास होना।
- **तार्किक त्रुटियाँ**
  - साहित्यिक लेखन में विचारों या तर्कों की एक दूसरे से असंगति भी हो सकती है। जब लेखक एक स्थान पर कोई दावा करता है और बाद में उसी दावे को खंडित करता है, तो यह तार्किक त्रुटि होती है।
  - उदाहरण: अगर लेखक एक स्थान पर यह कहे कि "समाज में असमानता बढ़ रही है," और अगले पैराग्राफ में यह साबित करने की कोशिश करे कि असमानता कम हो रही है।
- **विविधता का अभाव**
  - लेखक यदि केवल एक ही स्रोत पर निर्भर रहते हैं और कई स्रोतों से जानकारी नहीं लेते, तो यह स्रोत की विश्वसनीयता को प्रभावित कर सकता है। ऐसा लेखन एकतरफा नजरिया प्रस्तुत कर सकता है।
  - उदाहरण: किसी ऐतिहासिक घटना के बारे में सिर्फ एक इतिहासकार की राय को मानना और अन्य संभावित दृष्टिकोणों को नजरअंदाज करना।

विदेशियों के वृत्तांत

- विदेशियों के वृत्तांत भी साहित्यिक साक्ष्य हैं।
- विदेशी लेखकों की धर्मेतर घटनाओं में विशेष रुचि थी, अतः उनके वर्णनों से राजनीतिक और सामाजिक दशा पर अधिक प्रकाश पड़ता है।
- इन लेखकों के समय प्रायः निश्चित हैं, इसलिए उनके वर्णन भारतीय लेखकों के वर्णनों की अपेक्षा अधिक उपयोगी सिद्ध हुए हैं।
- विदेशियों के वृत्तांतों का विवेचन हम तीन वर्गों में करेंगे- (1) यूनान और रोम के लेखक, (2) चीन के लेखक और (3) अरब के लेखक।

❑ **यूनान और रोम के लेखक** –

- यूनान और रोम के लेखकों में सबसे प्राचीन **हिरोडोटस** और **टीसियस** के वृत्तांत हैं।
- संभवतः इन दोनों लेखकों ने भारत के विषय में अपना ज्ञान ईरान से प्राप्त किया था।
- **हिरोडोटस** के वर्णन में कुछ उपयोगी तथ्य मिलते हैं किन्तु उसमें भी उनकी कल्पित कहानियां हैं।
- **टीसियस** के वर्णन में अधिकतर कल्पित कहानियाँ हैं जो पूर्णतया अविश्वसनीय हैं।
- इन दोनों लेखकों की अपेक्षा उन यूनानी लेखकों के वर्णन अधिक महत्वपूर्ण हैं जो सिकंदर के साथ भारत आए थे।
- **सिकंदर के साथ भारत आए लेखक -** नियार्कस, आनेसिक्रिटस और अरिस्टोकुलस
- इन लेखकों का वर्णन मेगस्थनीज की इंडिका में हैं
- मेगस्थनीज की लिखी पुस्तक 'इंडिका' अब उपलब्ध नहीं है।
- यूनान और रोम के लेखकों ने इंडिका के आधार पर अपने वर्णन लिखे हैं।
- इन लेखकों के वर्णन बहुत उपयोगी हैं क्योंकि उन्होंने उन तथ्यों को लिखा है जिन्हें भारतीय लेखक कोई महत्व नहीं देते थे।
- इनसे प्राचीन भारत का सामाजिक तथा राजनीतिक इतिहास लिखने में बहुत सहायता मिली है।
- उदाहरण के लिए **सिकंदर के आक्रमण की तिथि पर ही मौर्य शासकों की तिथियाँ निश्चित की गई हैं।**

- **इन लेखकों के वर्णन में भी कुछ कमियाँ हैं।**
  - वे भारतीय भाषाएं नहीं जानते थे

- भारतीय संस्थाओं और रीति-रिवाजों की उन्हें जानकारी नहीं थी
- जो तथ्य उन्होंने अपनी आंखों से देखे थे वे प्रायः पूर्णया विश्वसनीय हैं
- जो वर्णन उन्होंने सुनी हुई बातों के आधर पर लिखा है या अनुमान से लिखा है, वह विश्वसनीय नहीं हैं, जैसे मेगस्थनीज ने लिखा है कि भारत में दास प्रथा नहीं है या भारत में सात जातियां है।
- हम अन्य साक्ष्यों के आधार पर निश्चयपूर्वक कह सकते हैं कि ये दोनों ठीक नहीं है।
- इन लेखकों के वर्णन चंद्रगुप्त के समय की राजनीतिक घटनाओं पर कम, सामाजिक रीति रिवाजों और शासन प्रबंध पर अधिक प्रकाश डालते हैं।

- **पेरिप्लस ऑफ दि एरिब्रियन सी**
  - यूनानी लेखकों के ग्रंथों में पेरिप्लस ऑफ दि एरिशियन सी का उल्लेख करना आवश्यक है।
  - इस पुस्तक के यूनानी लेखक का नाम हमें ज्ञात नहीं है।
  - उसके विषय में इतना पता है कि वह यूनान का रहने वाला था।
  - उसने 80 ई. के लगभग भारतीय समुद्रतट की यात्रा की।
  - उसने अपने वर्णन में भारतीय बंदरगाहों के नाम तथा इनसे आयात और निर्यात की जाने वाली वस्तुओं के नाम लिखे हैं।
- **टॉलमी की ज्योग्राफी**
  - टॉलमी ने दूसरी शती ईसवी में भारत का भौगोलिक वर्णन लिखा।
  - उसने अन्य लेखकों के वर्णन के आधार पर अपना वर्णन लिखा था। अतः उसके वर्णन में अनेक भूले हैं।
- **प्लिनी का वर्णन**
  - प्लिनी ने अपना वर्णन पहली सदी ईसवी में लिखा।
  - भारतीय पशुओं, पौधे और खनिज पदार्थों के बारे में उसका भी वर्णन बहुत उपयोगी है।
  - इन लेखकों को दूरस्थ देशों के विषय में जानकारी प्राप्त करने की जो लगन थी वह प्रशंसनीय है।

सिकंदर के समकालीन यूनानी लेखक	
यूनानी लेखक	**मुख्य तथ्य**
नियार्कस	यह जल सेनाध्यक्ष था।
आनेसिक्रेटस	यह सिकंदर का जीवनीकार था।
अरिस्टोबुलस	इसने 'हिस्ट्री ऑफ वॉर' नामक पुस्तक लिखी।
यूनेनीस	सिकंदर का समकालीन था।

सिकंदर के पश्चात हुए यूनानी लेखक	
यूनानी लेखक	**मुख्य तथ्य**
मेगस्थनीज	इंडिका
डायमेकस	बिंदुसार के दरबार में आया था।
डायोनिसियस	मिस्र के टॉलेमी फिलाडेल्फस का राजदूत था।

❑ चीनी यात्रियों के वृत्तांत

- चीन के यात्रियों ने भारत के लिए तिएन-चू अथवा चुआंतू शब्द का प्रयोग किया है।
- लेकिन वेनसांग के बाद वहां पर 'यिन-तू' शब्द का चयन हो गया।
- चीनी यात्रियों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण फाह्यान, युवान च्वांग और इत्सिंग के वर्णन हैं।
- इनके वर्णन चीनी भाषा में अभी तक उपलब्ध हैं और उनका अंग्रेजी भाषा में अनुवाद भी कर दिया गया है।
- **फाह्यान**
  - फाह्यान गुप्त शासक चंद्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य के समय भारत आया था।
  - इसका उपनाम कुंग था।
  - यद्यपि उसने समकालीन शासक का नाम उल्लेख नहीं किया है।
  - उसने अपनी किताब **फो-क्यो-की** में अपनी भारत यात्रा का वर्णन किया है।
  - वह चौदह वर्ष भारत में रहा और उसने विशेष रूप से भारत में बौद्ध धर्म की स्थिति के विषय में लिखा।
  - उसे भारत की तत्कालीन राजनीतिक स्थिति से कोई सरोकार नहीं था।
  - पाटलिपुत्र में उसने अशोक का राजमहल देखा तथा इससे इतना प्रभावित हुआ कि उसने उसे देवताओं द्वारा निर्मित बताया।
  - उसके प्रमुख वर्णन इस प्रकार हैं। मध्य प्रदेश ब्राह्मणों का देश था, जहाँ लोग सुखी और सम्पन्न थे।
  - यहाँ मृत्युदण्ड नहीं दिया जाता था, केवल आर्थिक दण्ड प्रचलित थे।
  - बार-बार राजद्रोह के अपराध में केवल दाहिना हाथ काट लिया जाता था।
  - मध्य देश के लोग न तो किसी जीवित प्राणी की हत्या करते थे और न ही माँस, मंदिरा, प्याज, लहसुन आदि का प्रयोग करते थे।
  - केवल चाण्डाल इसके अपवाद थे तथा समाज में बहिष्कृत थे।
  - इस प्रकार चाण्डालों का विस्तृत वर्णन करने वाला फाह्यान पहला विदेशी यात्री था।
  - मध्य देश के लोग क्रय-विक्रय में कौड़ियों का प्रयोग करते थे।
- **ह्वेनसांग**
  - ह्वेनसांग चीनी यात्री था।
  - इसका उपनाम **युवान च्वांग** था।
  - जो बौद्ध ग्रंथों का संकलन करने के लिए ईसा की सातवीं सदी में भारत आया और लगभग 15 वर्ष इस देश में रहा।
  - उसने अपने यात्रा संस्मरण को एक पुस्तक के रूप में **सी-यू-की** नाम से संकलित किया है।
  - वह भारत को 'इन्-टु' नाम देता है।
  - **इन्-टु (दन्दु)** अर्थात् चन्द्र की कला (अर्द्धचन्द्राकार) के समान भारत की भौगोलिक स्थिति के कारण इस देश का चीनियों ने यह नाम दिया।
  - ह्वेनसांग की जीवनी **'व्ही-ली'** ने लिखी थी।
  - "ह्वेनसांग के अन्य नाम **'युवानच्वांग'** या **'श्वानचांग' 'शाक्यमुनि'** एवं **यात्रियों में राजकुमार** थे।
  - हर्ष को उसने **'फीसे'** या **'वैश्य जाति'** का बताया है तथा उसकी प्रशंसा करते हुए लिखा है कि वह सदैव काम करता रहता था। दिन उसके लिए बहुत छोटा होता था।
  - कर्त्तव्य परायणता के कारण वह भोजन और शयन को भी भूल जाता था।
  - हर्ष को उसने **'शिलादित्य'** के नाम से सम्बोधित किया है।
  - ह्वेनसांग ने हर्ष के समय के सामन्तों की कई श्रेणियों का भी उल्लेख किया है।
  - उसने शूद्रों को कृषक कहा है।
  - उसके समय में नालन्दा के प्राचार्य शीलभद्र थे।
  - वेनसांग के अनुसार इस समय सिंचाई घटी यंत्र (रहट) द्वारा होती थी।
  - उसके अनुसार, भारत के घोड़े अरब, ईरान एवं कम्बोज से आते थे।
  - वेनसांग ने कन्नौज की धर्मसभा एवं प्रयाग की महामोक्षपरिषद् का भी वर्णन किया है।
- **इत्सिंग**
  - इसका उपनाम **इ-चिंग** था।
  - सातवीं शताब्दी के अंत में ई-चिंग भारत आया था।
  - वह बहुत समय तक विक्रमशिला और नालंदा (10 वर्ष) के विश्वविद्यालयों में रहा।
  - इसने भारत को आर्यदेश कहा हैं
  - इसने श्रीगुप्त द्वारा मृगशिखा वन में चीन का मंदिर बनवाये जाने का उल्लेख किया हैं।

- उसने बौद्ध शिक्षा संस्थाओं और भारतीयों की वेशभूषा खानपान आदि के विषय में भी लिखा है।

- **चाउफ जू-कुआं**
- यह चोल काल में भारत आया था।
- इसके विवरण से चोल कालीन समाज राजनीति, न्याय एवं अर्थव्यवस्था के बारे में जानकारी मिलती है।
- इसकी पुस्तक चू-फान-ची थी।

- **इन लेखकों के वर्णन में भी कुछ कमियाँ हैं।**
- यह हमारा दुर्भाग्य है कि सभी चीनी यात्री बौद्ध भिक्षु थे, इसलिए उनका दृष्टिकोण पूर्णतया धार्मिक था।
- इन सभी चीनी यात्रियों की बौद्ध धर्म में अटूट श्रद्धा थी, अतः वे निष्पक्ष रूप से भारत का वर्णन लिखने में असफल रहे।
- युवान च्वांग ने लिखा है कि हर्ष महायान बौद्ध धर्म का अनुयायी था और अन्य धर्मों का आदर नहीं करता था। परंतु अन्य साधनों से हमें ज्ञान होता है कि हर्ष की प्रतिमा के साथ-साथ सूर्य और शिव की प्रतिमाओं का भी पूजन किया था। इस प्रकार की भूल का मुख्य कारण यही था कि चीनी यात्री प्रत्येक बात को बौद्ध दृष्टिकोण से देखते थे और वे विशेष रूप से भारतीय बौद्धों के ही संपर्क में आए।

चीनी वृत्तांत		
लेखक	**वृत्तांत**	**समय**
फाह्यान	फो-म्यों-की	399-414 ई
ह्वेनसांग	सी-यू-की	629-645 ई.
इत्सिंग	ए रिकॉर्ड ऑफ द बुद्धिस्ट रिलिजन	लगभग 671 ई.
चाउ-जू-कुआं	चु-फान-चीन	1225 ई.

❑ अरब यात्रियों के वृत्तांत

- आठवीं शताब्दी से अरब लेखकों ने भारत के विषय में लिखना आरंभ कर दिया था।

- **सुलेमान**
- इनकी पुस्तक का नाम सिलसिलत-अल- तवारीख हैं।
- नवीं सदी ईसवी के मध्य में भारत आया था।
- यह अमोघवर्ष एवं मिहिरभोज के समकालीन था।
- इसने मिहिरभोज को अरबों का घोर शत्रु बताया है।
- इसने पाल और प्रतिहार राजाओं के विषय में लिखा है।

- **अल मसूदी**
- 941 ई. 943 ई. तक भारत में रहा।
- इसकी पुस्तक का नाम मुरुज-अल-धहाब वा मादिन अल जवाहिर था।
- इसे 'अरब का हेरोडोटस' कहा जाता है।
- इसने गुर्जर-प्रतिहार राज्य को 'अल-जुजर, प्रतिहार शासक महिपाल को 'बऊर' एवं राष्ट्रकूट शासक इंद्र तृतीय को 'बल्हर' कहा है।
- इसने मुल्तान के सूर्य मंदिर का उल्लेख किया है।
- इसने पान का विस्तृत विवरण दिया है।

- **अलबरूनी**
- इसका दूसरा नाम अबूरिहान था।
- अरब लेखकों में सबसे प्रसिद्ध अबूरिहान है।
- वह महमूद गजनवी का समकालीन था। उसने उसे राज ज्योतिषी के पद पर नियुक्त किया था।
- यह पहला मुस्लिम विद्वान था, जिसने संस्कृत सीखी व हिंदू धर्म ग्रंथों (पुराण व भगवद्गीता) का अध्ययन किया।
- उसने अपने ग्रंथ तहकीक-उल-हिंद में भारत का बहुत तर्कसंगत और पूर्णवर्णन लिखा है।
- उसके वर्णन में धर्मिक पक्षपात बिलकुल नहीं है।
- उसने बड़े धैर्य से भारतीय समाज और संस्कृति को जानने का प्रयत्न किया।
- इसने उल्लेख किया हैं की दक्षिण भारत में ताड़ के पत्तों एवं उत्तर भारत में तुज की छाल का प्रयोग लेखन हेतु किया जाता था।
- इसने सिद्धमात्रिका लिपि एवं बौद्धों की भैक्षुकी लिपि का भी उल्लेख किया है। तहकीक-ए-हिंद का सर्वप्रथम अनुवाद सचाऊ द्वारा जर्मन भाषा एवं बाद में उसी के द्वारा ही अंग्रेजी में भी किया गया।
- शांताराम द्वारा वर्ष 1926 में इसका पहला हिंदी अनुवाद एवं सैयद असगर अली ने इसका प्रथम उर्दू अनुवाद किया।

- **अलबरूनी के वर्णन के दो प्रमुख दोष हैं:**
- **पहला दोष -** उसने अपने वर्णन में भारत की राजनीतिक दशा के विषय में कुछ नहीं लिखा
- **दूसरा दोष -** उसके वर्णन का मुख्य आधार उस समय उपलब्ध भारतीय साहित्य था। उसने निजी अनुभव के आधार पर कुछ नहीं लिखा।

मुस्लिम लेखक	
लेखक	**पुस्तक**
इन खुर्दादब	किताब-अल मसालिक वल ममालिक
सुलेमान	सिलसिलत-अल- तवारीख
अलबरूनी	तहकीक-ए-हिंद
अल मसूदी	मुरज अल-धहाब
मिन्हाजुद्दीन	सिराज तबकात-ए-नासिरी
इब्नबतूता	रेहला
अल-बलादुरी	फुतुह-अल-बुल्दान
अल-इदरीसी	नुजहत-अल-मुश्ताक

पाषाणयुगीन संस्कृति

इतिहास के काल का विभाजन मुख्यतः तीन कालखण्डों में किया गया है। यथाः

1. प्रागैतिहासिक काल
2. आद्य ऐतिहासिक काल
3. ऐतिहासिक काल

- **प्रागैतिहासिक काल**
  - इस काल में मनुष्य को **लिपि एवं लेखन कला का ज्ञान नहीं था**।
  - इस काल की परिधि में सभी पाषाण युगीन सभ्यताओं को शामिल किया जाता है।
- **आद्य ऐतिहासिक काल**
  - वह काल खण्ड जिसमें लेखन कला के प्रमाण तो प्राप्त होते हैं, किन्तु वे गूढ़ एवं अपठनीय हैं, आद्य इतिहास काल की पुन संज्ञा से विहित किये जाते हैं।
  - सिन्धु तथा वैदिक सभ्यता इस काल के द्योतक हैं।
  - इसके अन्तर्गत वे धातुकालीन सभ्यताएँ भी आती हैं जिनके सम्बन्ध में लिखित साक्ष्य का अभाव मिलता है।
- **ऐतिहासिक काल**
  - जिस काल से मानव के क्रिया कलापों का लिखित विवरण प्राप्त होता है उसे हम ऐतिहासिक काल की संज्ञा प्रदान करते हैं।
  - भारतीय सन्दर्भ में यह काल छठी शताब्दी ई.पू. से प्रारम्भ होता है।
  - इस काल की लिपि पठनीय एवं प्रमाणिक है।
  - इस काल का मानव सभ्य था।

प्रागैतिहासिक काल

- प्रागैतिहासिक शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम **डैनियल विल्सन** ने 1851 ई. में किया था।
- इस काल के मनुष्य को **लिपि एवम् लेखन** कला का ज्ञान नहीं था।
- **डॉ. एच.डी. सकालिया** ने इस काल को परिभाषित करते हुए लिखा है कि **"लिपि ज्ञान के पूर्व किसी क्षेत्र, देश या राष्ट्र के मानव इतिहास को प्रगैतिहासिक काल की संज्ञा दी जाती है।"**
- इस काल में सभी पाषाण युगीन सभ्यताओं को शामिल किया जाता है।
- इस काल को जानने का एकमात्र स्रोत पुरावशेष है।
- डेनमार्क के कोपेनहेगन के राष्ट्रीय संग्रहालय के अध्यक्ष सी.जे. थामसन ने 1816 ई. में पुरावशेषों के वर्गीकरण का त्रियुगीय विभाजन प्रस्तुत किया।
  - पाषाण काल
  - ताम्रकांस्य काल
  - लौह काल

❑ पाषाण काल

- पाषाण अथवा प्रागैतिहासिक पुरावशेषों में पाषाण उपकरणों की अधिकता के कारण इसे **पाषाण काल** कहा जाता है।
- परन्तु शीघ्र नष्ट हो जाने वाली वस्तुओं, जैसे- काष्ठ, हड्डी व श्रृंग का भी प्रयोग इसके उत्तर काल में किया जाता था।
- इसके आधार पर **जॉन लुब्बाक** जो आगे चलकर **लार्ड एवेवरी** के रूप में जाने गये, ने अपनी पुस्तक **'प्री-हिस्टोरिक टाइम्स'** में पाषाण काल को पुरापाषाण काल एवम् नवपाषाण काल में विभाजित किया।
- यह विभाजन उन्होंने पाषाण उपकरणों के प्रारूप और तकनीक के आधार पर किया था।
- 1887 में फ्रांस की **'मास द एजि'** नामक गुफा के उत्खनन से ऐसे उपकरणों की जानकारी प्राप्त हुई जो पुरापाषाण काल और नव पाषाण काल दोनों की विशेषता लिये हुए थे।
- ऐसे में पुरापाषाण काल और नवपाषाण काल के बीच मध्यपाषाण काल की उपस्थिति स्वीकार किया गया।
- भारत में भी अब यह विभाजन स्वीकार्य है।
- प्रागैतिहास वह काल है, जिसके अध्ययन के लिए पुरातात्विक सामग्री तो उपलब्ध है, किंतु लिखित प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं।
- इस समय आदमी, आदमी की तरह तो था, लेकिन आदमी नहीं था।
- पुरातात्विक सामग्रियों की काल गणना के लिए **कार्बन-14** विधि का प्रयोग करते हैं।
- इसके पीछे सिद्धांत यह है कि सौर विकिरण रेडियोधर्मी कार्बन-14 उत्पन्न करता है।
- प्रत्येक कार्बनिक पदार्थ वातावरण में उपस्थित कार्बन खींचते हैं।
- जब कार्बनिक पदार्थ निर्जीव हो जाते हैं, तो उसमें कार्बन के जमाव की प्रवृत्ति समाप्त हो जाती है और जमे हुए कार्बन का विघटन होने लगता है।

Note:-

- **प्रागैतिहासिक पंचांग**
- अनुमानतः आज से 6 अरब वर्ष पूर्व पृथ्वी एक दहकते हुए अंगारे की भांति किसी विशेष ब्रह्मांडीय घटना के द्वारा सूर्य से अलग हुई थी,
- तब से लेकर आज तक के समय अंतराल को 6 महायुगों में विभाजित किया गया है
- (1) एजोइक (2) आर्कियोजोइक पूर्व कैम्ब्रियन महायुग (3) प्रोटिरोजोइक (4) पैलियोजोइक (5) मिसोजोइक (6) सिनोजोइक/ नियोजोइक।

- पाषाणकालीन संस्कृतियों का विभाजन - पाषाणकालीन मानव की संस्कृतियों में क्रमिक रूप से विकास हुआ था,
  - इसे तीन भागों में विभाजित करते हैं :- 1) पुरापाषाण काल 2) मध्यपाषाण काल 3) नवपाषाण काल
- **पुरापाषाण काल**
  - पुरापाषाण संस्कृति का उद्भव प्लीस्टोसीन युग में हुआ था।
  - इस युग में धरती हिम से आच्छादित थी।
  - भारत में पाषाणकालीन बस्तियों के अन्वेषण की शुरुआत 1863 ई. में जियोलॉजिकल सर्वे से सम्बद्ध अधिकारी **रॉबर्ट ब्रस फूट** ने की।
  - उन्हें चेन्नई (मद्रास) के समीप पल्लवरम से एक पाषाण उपकरण प्राप्त हुआ।
  - अन्ततः **सर मार्टीमर व्हीलर** के प्रयासों से भारत के समग्र प्रागैतिहासिक सांस्कृतिक अनुक्रम का ज्ञान हुआ।
  - ए. कनिंघम को प्रागैतिहासिक पुरातत्त्व का जनक कहा जाता है।
  - भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण संस्कृति मन्त्रालय के अधीन एक विभाग है।
  - सन 1870 ई. में लार्तेत ने उपर्युक्त आधार पर पुरापाषाण काल की संस्कृतियों को तीन भागों में बाँटा गया है :-
    - निम्न पुरापाषाण काल
    - मध्यपुरापाषाण काल
    - उच्च पुरापाषाण काल
- **निम्न पुरापाषाण काल:-**
  - इस युग के औजारों के प्रयोगकर्त्ता होमो इरेक्टस थे।
  - इसी में मानव जीवन असभ्य बर्बर अस्थिर और प्रकृति पर निर्भर था
  - प्रकृति का अधिकांश भाग हिमयुक्त था
  - शिकार ही जीविका का मुख्य साधन था।
  - मानव आवास एवं वस्त्र से अपरचित था

- इस युग के उपकरण पेबुल (बाटिकाश्म), हैंड एक्स (हस्त कुठार), क्लीवर (विदारणी), चापर थे।
- इस काल का सबसे महत्वपूर्ण उपकरण हैंड एक्स था, जो चर्ट एवं क्वार्टजाइट के बने होते थे, ये पहले औजार थे, जिसे मनुष्य ने क्रिया करके निर्मित किया।
- इसे चापर-चापिंग भी कहा गया।
- भारत की पूर्व पुरा पाषाण काल की संस्कृति को उपकरणों के आधार पर दो प्रमुख वर्गों बांटा जाता हैं।
- चापर-चापिंग-पेबुल संस्कृति
- हैण्ड-एक्स संस्कृति
- **चापर-चापिंग-पेबुल संस्कृति**
  - सर्वप्रथम पंजाब की सोहन नदी घाटी (पाकिस्तान) से चापर- चापिंग पेबुल संस्कृति के उपकरण प्राप्त हुए हैं। इसलिए इसे सोहन संस्कृति भी कहा जाता है।
  - सर्वप्रथम डी.एन. वाडिया ने 1928 ई. में इस क्षेत्र से पाषाण उपकरण प्राप्त किए थे।
  - 'चापर' बड़े आकार वाला उपकरण है, जिसे पेबुल से बनाया जाता था।
  - चापर में एक तरफ धार होती है, जबकि 'चापिंग' उपकरण में दोनों तरफ धार होती है। सोहन नदी की पांच वेदिकाओं से भिन्न-भिन्न प्रकार के पाषाणोपकरण पाए गए हैं, जिनमें से आखिरी वेदिका (5वीं) में मृद्भांडों के टुकड़े मिलते हैं।
  - महाराष्ट्र में नेवासा के पास चिरकी नामक पुरास्थल से पुरा पाषाणकालीन हैण्ड-एक्स एवं बेधनी पाए गए हैं।
  - नर्मदा घाटी के हथनौर ग्राम से "मानव खोपड़ी" के प्रमाण भी प्राप्त हुए हैं। इसकी खोज वर्ष 1982 ई. में अरुण सोनकिया द्वारा की गई। भारत में प्राप्त होने वाला मानव अवशेष का पहला प्रमाण हैं।
  - बेलन घाटी में पूर्व पुरा पाषाण काल से संबंधित यहां लगभग 44 पुरास्थल प्राप्त हुए हैं।
  - इलाहाबाद विश्वविद्यालय के जी.आर. शर्मा के निर्देशन में यह अनुसंधान किया गया।
- **हैण्ड-एक्स संस्कृति**
  - इसके उपकरण सर्वप्रथम मद्रास के समीप बदमदुरै तथा अतिरम्पक्कम से प्राप्त किए गए। इसलिए इसे "मद्रासियन संस्कृति" भी कहा जाता है।
  - इनके उपकरणों के निर्माण में क्वार्टजाइट पत्थरों का उपयोग किया गया है।
  - यहां के हैण्ड-एक्स अबेविलियन परंपरा के समान हैं।
  - हैण्ड-एक्स अंडाकार तथा नुकीले दोनों प्रकार के हैं।
  - अतिरपक्कम कोर्तलयार घाटी के हैण्ड-एक्स अश्यूलियन प्रकार के हैं।
  - भारत के अन्य भागों-नर्मदा घाटी, सोन घाटी, तुंगभद्रा एवं बेलन घाटी आदि से भी हैण्ड-एक्स संस्कृति के उपकरण प्राप्त हुए हैं।

- **मध्यपुरापाषाण काल**
  - इस काल के प्रमुख उपकरण छोटे एवं मध्यम आकार के होते थे।
  - **औजार -** हस्त कुठार, विदारणियां और विभिन्न प्रकार की खुरचनियां, बेधनियां और छुरिकाएं (चाकू) आदि हैं।
  - सर्वप्रथम महाराष्ट्र के नेवासा में इस काल के उपकरण प्राप्त किए जाने के कारण इस काल को "नेवासाई-चरण" भी कहा जाता है।
  - फलकों की अधिकता के कारण मध्य पुरा पाषाण काल को "फलक संस्कृति" (H.D. सांकलिया द्वारा) या "फलक-ब्लेड-स्क्रेपर संस्कृति" भी कहा जाता है।
  - इस काल में संस्कारों की शुरुआत हुई, जैसे शवों को दफनाना आदि।
  - आग का नियमित प्रयोग होने लगा
  - इस युग में मानव गुफा निवासी हो चुका था।
  - सर्वप्रथम 1956 में HD सांकलिया ने महाराष्ट्र में प्रवरा नदी घाटी से मध्यपुरापाषाण कालीन साक्ष्य प्राप्त किये।
  - इस काल में भी मानव भोजन संग्राहक ही था। लेकिन वह अब गुफाओं और कंदराओं में रहने लगा था।
  - मध्य पुरा पाषाण युग की बुनियादी विशेषता थी - शल्क निर्मित औजार थे।
  - औजार शल्कों (पपड़ियों) पर बनाए गए थे, जो कंकड़ों और बटिकाश्मों से प्राप्त की गई थीं।
  - इस काल के मुख्य स्थलों में उत्तर प्रदेश में चकिया (वाराणसी), बेलन घाटी (इलाहाबाद), सिंगरौली बेसिन (मिर्जापुर), राजस्थान में बागान-बेरोंच, कादमली घाटियों, हिमांचल में व्यास-वानगंगा एवं सिरसा घाटियाँ, झारखण्ड में सिंहभूमि एवं पलामू जिला, गुजरात में सौराष्ट्र क्षेत्र, मध्य प्रदेश के भीमबेटका गुफाओं एवं सोनघाटी आदि क्षेत्र हैं

- **उच्च पुरापाषाण काल**
  - इस काल के मानव होमोसेपियन्स थे।
  - मुख्य उपकरण ब्लेड था।
  - हड्डियों के औजारों का प्रयोग होने लगा, जैसे मछली मारने के काँटे।
  - पहले प्रक्षेप्रास्त्र तीर, धनुष या भाला का प्रयोग इस काल में हुआ।
  - आवास निर्माण तथा कुछ हद तक सामाजिक विभेदीकरण प्रारंभ हो गया।
  - इसे उच्च पुरा पाषाण काल भी कहा जाता है।
  - ब्लेड इस काल का प्रधान पाषाणोपकरण है।
  - प्रमुख उत्तर पुरा पाषाण कालीन स्थल हैं- बेलन तथा सोनघाटी (उत्तर प्रदेश), सिंहभूम (झारखंड), बूढ़ा पुष्कर (राजस्थान), विसदी (गुजरात), शोरापुर (कर्नाटक), रेणिगुण्टा, वेमुला, कुर्नूल गुफाएं (आंध्र प्रदेश) पटणे, भदणे तथा इनामगांव (महाराष्ट्र) व भीमबेटका तथा बधोर (मध्य प्रदेश) आदि।
  - इस काल में पाषाण के अतिरिक्त हड्डी से निर्मित उपकरण भी प्राप्त होते हैं।
  - आंध्र प्रदेश के बेतमचर्ला में अस्थि निर्मित अनेक औजार पाए गए हैं।
  - उत्तर प्रदेश के प्रयागराज जिले की मेजा तहसील में बेलन घाटी क्षेत्र में स्थित लोहदा नाला से हड्डी की बनी हुई मातृदेवी की एक मूर्ति मिली है। विद्वान इसे 'हारपून' कहते हैं।
  - भारत में उत्तर पुरा पाषाण काल के भू-तात्विक स्तर से प्राप्त यह एकमात्र मूर्ति है।
  - यहीं के चोपानी मांडो में उत्तर पुरापाषाणिक काल से लेकर नव पाषाण युग तक के क्रम का पता चलता है।
  - महाराष्ट्र के जलगांव जिले में स्थित 'पटणे' नामक पुरास्थल से शुतुरमुर्ग के तीन अंड कवकों पर आड़ी तिरछी रेखाओं से युक्त अलंकरण बने मिले हैं। शुतुरमुर्ग के अंड कवकों पर चित्रकारी का भारत में यह एकमात्र उदाहरण है।
  - यहां से अंड कवकों एवं सीपी के बने मनके भी प्राप्त होते हैं।

- **पुरापाषाणकालीन स्थल**
  - **बेलनघाटी (मिर्जापुर)**
  - यह सबसे महत्वपूर्ण स्थल है।
  - यहाँ से निम्न, मध्य एवं उच्च पुरापाषाण काल के साक्ष्य उपलब्ध हैं।
  - यहाँ के लोहंदा नाला से हड्डी की बनी हुई
  - मातृदेवी की एक मूर्ति प्राप्त हुई है।
  - **भीमबेटका (मध्य प्रदेश का रायसेन जिला) :-**
  - इस गुफा की खोज विष्णु श्रीधर वाकडक़र ने 1958 में की यह गुफा पुरापाषाण काल मध्यपाषाणकाल तथा नवपाषाण काल तीनो कालखंडो के प्रमाण प्रस्तुत करता हैं।
  - इस स्थल को 2003 में विश्व विरासत सूची में शामिल किया गया।
  - यहाँ से लगभग 500 शैलाश्रय प्राप्त हुए हैं।
  - गुफाओं में निर्मित चित्र उच्च पुरापाषाण काल के माने जाते हैं।

- यहाँ के कुछ गुफाओं से फर्श निर्माण के भी संकेत मिले हैं।
- यहाँ से चित्रकला के सर्वाधिक प्राचीनतम प्रमाण मिलते हैं

पुरा पाषाण काल से प्राप्त उपकरण और उनके स्थल

क्षेत्र	राज्य	स्थल	उपकरण
उत्तरी क्षेत्र	• कश्मीर घाटी • शिवालिक क्षेत्र	• कश्मीर में • लिंदर नदी के दाहिने किनारे पहलगाम	अनगढ़ हैण्ड-एक्स
पश्चिमी क्षेत्र	• राजस्थान • गुजरात	• नागौर जिला (डिजवाना, जनकपुरा) • सौराष्ट्र (काठियावाड़) के हिरन नदी में उमरेठी नामक पुरास्थल	सुंदर हैण्ड-एक्स, फलक, क्रेपर (अश्यूलियन परंपरा तीन अश्यूलियन हैण्ड-एक्स
दक्कन का पठारी क्षेत्र	• पश्चिमी महाराष्ट्र	• गोदावरी के तट पर गंगापुर , चिरकी-नेवासा , बोरी (कुकड़ी) नदी के किनारे	अश्यूलियन उपकरण तीन चापर, तीन पॉलि हेड्रन छः उभयमुखी, कुल्हाड़ियां, एक हैण्ड-एक्स
दक्षिणी क्षेत्र	• कर्नाटक • तमिलनाडु • आंध्र प्रदेश, तेलंगाना	• गुलबर्गा जिला (हुणसगी) बीजापुर (अनागवाड़ी) • पल्लवरम, अतिरम्पक्कम • कुर्नूल, चित्तूर, नागार्जुनकोडा, नलकोडा, नेल्लूर, प्रकाशम, महबूबनगर	क्लीवर, हैण्ड-एक्स, स्क्रैपर, नाइफ, चापर सुंदर हैण्ड-एक्स क्रोड, फलक
पूर्वी क्षेत्र	• बिहार • प. बंगाल • ओडिशा • झारखंड	• मुंगेर, राजगीर, बीरभूम, मिदनापुर, • बांकुडा, पुरुलिया, • मयूरभंज (बूदाबलंग नदी) • रांची, सिंहभूम, हजारीबाग	हैण्ड-एक्स स्क्रैपर
मध्य क्षेत्र	• म.प्र., • उ. प्र.	• मैहर (जिला-सतना), भीमबेटका (जिला-रायसेन) हथनौरा (जिला-होशंगाबाद) • बेलन घाटी (जिला-प्रयागराज)	मूठ लगा हस्त-कुठार (हैण्ड-एक्स, क्रोड, फलक)

पुरा पाषाण काल के तीन काल खंडो में अंतर

निम्न पुरापाषाण काल	मध्यपुरापाषाण काल	उच्च पुरापाषाण काल
1 लाख से 40 हजार ई.पू	10 लाख से 1 लाख ई.पू.	हजार से 10 हजार ई.पू.
मुख्यतः औजार क्वार्टजाइट पत्थर से निर्मित	क्वार्टजाइट के साथ-साथ जैस्पर, चर्ट आदि	हाथी के दांत एवं सींग का भी प्रयोग
बड़े आकार के भद्दे और बेडौल औजार	सुंदर, पैने तथा छोटे फलकों का प्रयोग	काफी विकसित अवस्था
संपूर्ण औजार पाषाण से ही निर्मित	पत्थरों से निर्मित, निर्माण में पाषाण शल्कों का प्रयोग	पत्थर के ब्लेडों से निर्मित
विशिष्ट औजार - क्रोड उपकरण उदाहरण- हस्त कुठार, खंडक, विदारिणी आदि	विशिष्ट औजार - फलक व स्क्रैपर उपकरण उदाहरण- बेधक व बेधनियां आदि।	विशिष्ट औजार - ब्लेड व ब्यूरिन उदाहरण- चाकू, बेधक, बेधनियां, स्क्रैपर आदि।

मध्यपाषाण काल

- भारत में मध्यपाषाण काल के विषय में जानकारी सर्वप्रथम सी.एल. कार्लाइल द्वारा सन् 1867 ई. में विंध्यन क्षेत्र से लघुपाषाणोपकरण खोजे जाने से हुई।
- इस काल के अधिकांश उपकरण चर्ट एवं चाल्सडेनी जैसे मुलायम पत्थर के बने होते थे तथा आकार में बहुत छोटे होते थे, इसलिए इस काल के उपकरण को माइक्रोलिथिक टूल्स भी कहा जाता है।
- इस काल में संस्कारों का प्रयोग व्यापक पैमाने पर होने लगा।
- शिकार के साथ-साथ जंगली अनाजों का भी प्रयोग होने लगा।
- कुत्ते को पालतू बनाया गया।
- शृंगार साधनों का इस्तेमाल होने लगा।।
- **मध्य पाषाण काल की विशेषताएं -**
  - मनुष्य पहली बार समूह शक्ति के साथ स्थानांतरित हुआ।
  - मनुष्य ने कुत्ते को सबसे पहला पालतू पशु बनाया।
  - पहली बार पशुपालन प्रारम्भ किया।
  - पशु पालन का साक्ष्य मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के आदमगढ़ तथा राजस्थान के भीलवाड़ा जिले के बागौर नमक स्थान से प्राप्त हुआ।
  - मनुष्य पहली बार व्यवस्थित रूप से गुफाओं में रहना प्रारम्भ करता हैं। जैसे - भीमबेटका की गुफा
  - मनुष्य को पहली बार परिवार रुपी संस्था का संज्ञान होता हैं।
  - पहली बार महिला और पुरुष के बीच कार्य विभाजन का प्रमाण मिलता हैं
  - मानव अस्थिपंजर सर्वप्रथम इसी काल से प्राप्त होने लगते हैं।
  - मानव ने पहली बार हड्डी के हथियारों का प्रयोग करना शुरू किया। जिसका प्रमाण उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जिले के महदहा और सरायनाहर से प्राप्त होता हैं।
- **मध्यपाषाणकालीन स्थल**
- **बागोर (राजस्थान के भिलवाड़ा जिले में)**
  - कोठारी नदी के किनारे पर उत्खनन किया गया है।
  - यहाँ से कुछ झोपड़ियों और इसके अंदर फर्श निर्माण के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं, कई मानव कंकाल मिले हैं, जिन्हें निश्चित दिशा में दफनाया गया है, जिसमें से एक कंकाल का सिर पश्चिम दिशा में और पैर पूर्व दिशा में है।
  - हस्त निर्मित मृदभांडों के साक्ष्य भी प्राप्त होते हैं।
  - यहाँ से पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य मिलते हैं।
- **आदमगढ़ (मध्यप्रदेश)**
  - होशंगाबाद जिले में स्थित है।
  - यहाँ से भी पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य मिलते हैं।
- **भीमबेटका (मध्यप्रदेश)**
  - खोज वी.एस. वाकरकण द्वारा 1958 ई. में किया गया।
  - यहाँ की गुफाओं से जंगली सांड, रीछ, वारहसिंहा तथा मैमथ के चित्र मिलते हैं।
  - इसे जुलाई 2003 में विश्व धरोहर घोषित किया गया।
  - वर्तमान में यह रातापानी अभ्यारण्य का अंश है।
  - मध्यपाषाण काल का सबसे बड़ा स्थल बागौर (राजस्थान) हैं
  - सर्वप्रथम मानव अस्थिपंजर मध्यपाषाण काल से प्राप्त हुए हैं।

- मानवीय आक्रमण का सर्वप्रथम साक्ष्य सराय नाहर (प्रतापगढ़) से प्राप्त होता हैं।
- एक ही कब्र से तीन मानव कंकाल दमदमा से प्राप्त हुए हैं

- **प्रमुख मध्यपाषाण कालीन समाधियाँ व नरकंकाल:**
  - **सरायनाहर राय**
  - इसमें उत्खनित कुल 12 समाधियाँ हैं, जिनमें से 11 समाधियों में एक-एक शव हैं, जबकि एक समाधि में एक साथ 4 शव दफनाए गए हैं।
  - इन 4 शवों में दो पुरुष और दो महिलाओं के शव हैं।
  - एक पुरुष के ऊपर दूसरा पुरुष और महिला के ऊपर दूसरी महिला को लेटाया गया था।
  - इस प्रकार सरायनाहर से कुल **15 नरकंकाल** मिले हैं।
  - यहां की समाधियां प्राय आवाश क्षेत्र के अंदर स्थित छिछली व अंडाकार थी।
  - इसमें शवों को पश्चिम से पूर्व की ओर रखा गया हैं।
  - **महदहा**
  - इससे कुल **28 समाधियाँ** मिली हैं, जिनमें से 26 समाधियों में एक-एक नरकंकाल मिले हैं, जबकि दो समाधियाँ युग्मित हैं अर्थात् इनमें दो-दो नरकंकाल एक पुरुष का व एक महिला का मिला है।
  - इस प्रकार महदहा से प्राप्त कुल **नरकंकालों की संख्या 30** है।
  - यहां से हड्डी से बने आभूषण प्राप्त हुए हैं।
  - **दमदमा**
  - इससे कुल **41 समाधियाँ** मिली हैं जिनमें से 35 में एक- एक शव हैं, 5 युग्मित हैं, जबकि एक समाधि में एक साथ 3 शव हैं।
  - इस प्रकार दमदमा से प्राप्त कुल नरकंकालों की संख्या 48 है।
  - दो नरकंकाल ऐसे हैं जिन्हे औंधे मुँह लिटाया गया हैं।
  - **लेखहिया**
  - इससे **17 नरकंकाल** मिले हैं, जिनमें से एक नरकंकाल बच्चे का है।
  - हालांकि **जॉन आर. लुकास** के अनुसार लेखहिया से कुल 27 नरकंकाल मिले हैं।
  - गुजरात में स्थित लंघनाज से **14 नरकंकाल** मिले हैं।
  - विंध्य क्षेत्र में स्थित लेखहिया शिलाश्रय से सर्वाधिक मानव कंकाल प्राप्त हुए हैं।
- **अन्य प्रमुख स्थल**
  - **गुजरात-** बलसाणा, लंघनाज
  - **आंध्र प्रदेश -** नागार्जुनकोंडा, गिद्यलूर, रेणिगुण्टा ।
  - **कर्नाटक-** संगनकल्लू, शोरापुर दोआब एवं जलहल्ली।
  - **तमिलनाडु -** टेरी पुरास्थल, कट्टमल्ली, नाजरेथ ,कुलत्तूर
  - **प. बंगाल-** बांकुड़ा, मेदिनीपुर, पुरुलिया जिला।
- विशेष तथ्य -
  - बागोर व लंघनाज से पता चलता है कि इन मध्य पाषाणयुगीन समुदायों का हड़प्पा व अन्य ताम्रपाषाणीय संस्कृतियों से संपर्क था।
  - बागोर से तांबे के तीन वाणाग्र मिले हैं।
  - सराय नाहर राय से मानवीय युद्ध के प्रमाण मिलते हैं।
  - बागोर और आदमगढ़ से पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य मिलते हैं। इसलिए कहा जाता है कि पशुपालन का प्रारंभ मध्य पाषाण काल में हुआ।

नवपाषाण काल

- इस काल में हुए परिवर्तनों को **गार्डन चाइल्ड** ने नवपाषाण क्रांति कहा।
- इस काल में मनुष्य का जीवन स्थायी हो गया, गाँव आबाद होने शुरू हो गए, सामुदायिक क्रियाकलाप (संस्कार) होने लगे।
- **नवपाषाणकालीन संस्कृति की विशेषताएं -**
  - राजनैतिक संस्थाओं की शुरुआत
  - उपजाऊ जमीन का उपयोग होने लगा
  - जनसंख्या में वृद्धि हुई
  - विशेषज्ञता प्राप्त समुदाय (शिल्पी) का विकास
  - श्रम विभाजन का प्रारंभ
  - प्राकृतिक संसाधनों के दोहन की शुरुआत
  - कम स्तर पर व्यापार-वाणिज्य (वस्तु-विनिमय) की शुरुआत।
- **औजार :-**
  - बेसाल्ट, डोलेराइट, पत्थर को औजार बनाने में प्रयोग किया गया।
  - इस काल के औजार की विशेषता थी घर्षित होना। नवपाषाण काल का मुख्य उपकरण कुल्हाड़ी था।
- **नवपाषाणकालीन स्थल**
- उन्हीं भारत में नव पाषाण काल से प्राप्त अवशेषों के आधार पर इसके विस्तारित क्षेत्र को छह भागों में विभक्त किया गया है
- यथा- उत्तरी क्षेत्र, मध्य गंगा घाटी क्षेत्र, पूर्वी क्षेत्र, उत्तरी-पश्चिमी क्षेत्र, विन्ध्य क्षेत्र एवं दक्षिण भारतीय क्षेत्र आदि प्रमुख हैं।
- **उत्तरी क्षेत्र**
- इस क्षेत्र के अन्तर्गत बुर्जहोम एवं गुफकराल (कश्मीर) का उल्लेख महत्वपूर्ण है ।
- बुर्जहोम का उत्खनन कार्य 1935ई. में डी.टेरा एवं पीटरसन द्वारा और गुफकराल का उत्खनन कार्य 1981 ई. ए.के. शर्मा के नेतृत्व में करवाया गया।
- **गुफकराल**
- इसका शाब्दिक अर्थ है कुम्हार की गुहा। यहाँ से अन्य उपकरणों के साथ-साथ सिलबट्टे एवं हड्डी की बनी सुइयाँ प्राप्त होती हैं, जिससे पता चलता है कि यहाँ के लोग अनाज पीसनें एवं वस्त्र सीने की विद्या से भी परिचित थे।
- यहां से शवाधान के प्रमाण नहीं मिले हैं।
- **बुर्जहोम**
- नवपाषाणकाल के तीन चरण मिलते हैं- पहले चरण में गड्ढे खोदकर आवास बनाये गये हैं (गर्त आवास), दूसरे चरण में झोपड़ी का साक्ष्य एवं तीसरे चरण में कंकड़-मिट्टी आदि से घर के निर्माण का साक्ष्य मिले हैं।
- यहाँ के लोग कृषि से परिचित थे, पशुओं को पालतू बनाया जाता था, बुर्जहोम से मालिक के साथ पालतू कुत्ते को दफनाये जाने का साक्ष्य मिला है, जो उत्तरी चीन की नवपाषाणिक परंपरा से प्रेरित प्रतीत होता है।
- **मध्य गंगा घाटी क्षेत्र**
- इस क्षेत्र का नवपाषाण कालीन स्थल चिरांद (बिहार, छपरा) है।
- इस स्थल से ताम्र पाषाण के साथ नवपाषाण कालीन संस्कृति के साक्ष्य भी प्राप्त हुए हैं।
- इस स्थल से अधिक संख्या में हड्डी एवं सींग निर्मित उपकरण प्राप्त होते हैं।
- यहाँ के लोग बाँस-बल्ली की सहायता से झोपड़ियाँ बनाते थे।
- यहाँ से चावल की खेती के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- इसके अतिरिक्त सिंहभूमि जिला में स्थित बरुडीह से भी नवपाषाण कालीन साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- **पूर्वी क्षेत्र**
- इस क्षेत्र के अन्तर्गत उड़ीसा के मयूरभंज जिला में स्थित कुचाई से इस काल के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- यहाँ से पालिशदार पत्थर की कुल्हाड़ी प्राप्त की गयी है।
- **पूर्वोत्तर क्षेत्र**
- यहाँ से नव पाषाण कालीन संस्कृति की खोज सर्वप्रथम 1867 ई. में जॉन लुब्बाक ने ब्रह्मपुत्र घाटी से की थी।
- यहां के प्रमुख पुरास्थल दाओजली हैडिंग, सरुतरु तथा मरकडोला हैं।

- नगालैंड में औज़ारो को हरे रंग के पत्थर और मेघालय में डोलेराइट पत्थर से निर्मित किया जाता था।
- यहां वर्तमान में भी नवपाषाण कालीन स्थानांतरित खेती या झूम कृषि का प्रचलन दिखाई देता है।
- गुवाहाटी के पास सरुतरु में आदिम कुल्हाड़ियों (सेल्ट) और गोलाकार मूठ वाले कुठारों के साथ अनगढ़ रज्जु या करंड अंकित मृद्भांड मिलते हैं।
- असम एवं मेघालय की गारो पहाड़ियों से प्राप्त साक्ष्यों एवं उपकरणों में कुल्हाड़ी, हथौड़े, सिल-लोड़े तया चाक द्वारा बनाये गये मिट्टी के बरतनों के टुकड़े आदि प्रमुख हैं।
- **उत्तर पश्चिमी क्षेत्र**
- इस क्षेत्र के प्रमुख स्थलों में राजस्थान का बागौर एवं बालाचल महत्वपूर्ण हैं।
- चागौर से मध्यपाषाण कालीन, ताम्रयुगीन एवं लौहकालीन संस्कृति के उपकरण प्राप्त होते हैं।
- यहाँ से कृषि एवं पशुपालन के साक्ष्य भी प्राप्त होते हैं।
- बालाबल से प्राप्त मृदभाण्ड हड़प्पा संस्कृति के मृदभांडो के समान हैं।
- इस स्थल से क्रमिक विकास के 22 स्तर प्राप्त होते हैं।
- इस स्थल से हड़प्पा सभ्यता के भी तत्व प्राप्त होते हैं।
- **मेहरगढ़ (बलूचिस्तान-पाकिस्तान)**
- यहाँ से नवपाषाण से कांस्य काल तक के अवशेष मिले हैं।
- गेहूँ, जौ आदि के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं
- इसे बलूचिस्तान की टोकरी कहते हैं।
- **विन्ध्य क्षेत्र**
- इस क्षेत्र के प्रमुख स्थलों में प्रयागराज के बेलन नदी के निकट स्थित कोल्डिहवा, महगड़ा, पंचोह एवं चोपनीमाण्डों आदि प्रमुख स्थल हैं।
- कोल्डिहवा से नवपाषाण काल, ताम्र एवं लौह कालीन संस्कृति के साक्ष्य भी प्राप्त होते हैं।
- कोल्डिहवा से धान की खेती के साक्ष्य प्राप्त होते हैं। यहाँ से चावल एवं जले हुए धान की बालियाँ प्राप्त होती है।
- लहुरादेव के बाद यह धान के साक्ष्य का दूसरा स्थल है। यह धान ओराइजा सताइवा किस्म का है।
- महगड़ा एवं पंचोह से गोल आकार वाली प्रस्तर की कुल्हाड़ी एवं रहने के लिए गोलाकार झोपड़ियों के साक्ष्य प्राप्त होते हैं।
- चोपनीमाण्डों से मधुमक्खी के छत्ते के आकार की झोपड़ियाँ एवं पुरापाषाण काल से लेकर नवपाषाण काल तक की तीन अवस्थाओं का अनुक्रम प्राप्त होता है।
- **कोल्डीहवा (इलाहाबाद)**
- बेलन नदी के किनारे पर, धान के जले हुए दाने, धान की खेती का प्रमाण (चावल के प्राचीनतम् साक्ष्य)।
- अनाज रखने के मिट्टी के घड़े भी मिलते हैं।
- कोलडिहवा से नव पाषाण काल के साथ-साथ ताम्र तथा लौहकालीन संस्कृति के अवशेष भी प्राप्त होते हैं।
- कोलडिहवा से जंगली के साथ ही घरेलू प्रजाति का धान (ओराइजा सटाइवा) मिला है।

> - **Note –**
> - अभी तक की पाठ्य पुस्तकों के अनुसार, धान की खेती का प्राचीनतम प्रमाण कोलडिहवा (6500 ई.पू.) माना जाता रहा है। यद्यपि नई खोजों में लहुरादेव में धान की खेती का प्राचीनतम प्रमाण प्राप्त हुआ है।
> - भारतीय उपमहाद्वीपीय में पालतू भैंस का प्राचीनतम साक्ष्य मेहरगढ़ से प्राप्त होता हैं।

- **दक्षिण भारत**
- सर्वप्रथम आर. बी. फ्रूट को दक्षिण भारत में नवपाषाणिक स्थल की जानकारी मिली।
- राख के टीलों से पशुबाड़ा होने का साक्ष्य सर्वाधिक केरल से प्राप्त होता है।
- **दक्षिण भारत में नवपाषाण काल के तीन चरण प्राप्त होते हैं :-**
- **पहले चरण -** हस्तनिर्मित धूसर मृदभांड
- **दूसरे चरण -** हस्तनिर्मित चमकीले धूसर मृद्भांड
- **तीसरे चरण -** चाक निर्मित मृद्भांडों का साक्ष्य मिलता है।
- घरों को गोबर, मिट्टी और चूना मिलाकर लेपन करने का प्रमाण मिलता है।
- दक्षिण भारत के नवपाषाणिक स्थलों द्वारा उगायी गयी सबसे पहली फसल मिलेट (रागी) थी।
- **कर्नाटक-** संगनकल्लू, टेक्कल कोट्टी, पिकली हल, कोडेकल आदि।
- **तेलंगाना -** उतनूर
- **आंध्र प्रदेश -** नागार्जुनकोंडा, सिंगनपल्ली
- **तमिलनाडु-** पैयमपल्ली।
- यह सभी स्थल कृष्णा तथा कावेरी नदी घाटियों में बसे हैं।
- कर्नाटक के संगनकल्लू नामक स्थान से राख के टीले प्राप्त होते हैं।
- उतनूर के राख के टीले से पशुओं के खुरों के निशान मिलते हैं।
- पिकलीहल में भी राख के टीले मिले हैं। यहां बांस-बल्ली से निर्मित गोलाकार या अण्डाकार झोपड़ी मिलती हैं।
- ब्रह्मगिरि, मास्की एवं पिकलीहल में झोपड़ियों के निर्माण हेतु स्तंभगर्त प्राप्त होते हैं।
- ब्रह्मगिरि, मास्की तथा पिकलीहल से चित्रकारी युक्त मृद्भांड मिले हैं।
- यहां से सिलखड़ी के मनके तथा पशुओं की हस्तनिर्मित कतिपय मृण्मूर्तियां भी मिली हैं।
- नागार्जुनकोंडा में आवास क्षेत्र के बाहर कब्रिस्तान मिला है।
- यहां तीन प्रकार की अंत्येष्टि क्रियाएं थीं- विस्तीर्ण शवाधान, आंशिक शवाधान तथा अस्थि कलश।
- स्त्रीपुरुषों को कब्रों एवं छोटे बच्चों के शवों को कलशों में दफनाया जाता था।
- दक्षिण भारत में पाई गयी नवपाषाण कालीन बस्तियाँ 2500 ई. पू. से अधिक प्राचीन नहीं पाई गयी हैं।
- पैव्यमपल्ली तमिलनाडु का एक प्रसिद्ध नव पाषाणिक स्थल है। इन स्थलों से पालिशदार प्रस्तर, कुल्हाड़ियाँ, सलेटी या काले रंग के मिट्टी के बर्तन एवं हड्डी से निर्मित उपकरण प्राप्त होते हैं। इस काल के लोगों को कृषि एवं पशुपालन का ज्ञान था।
- मिट्टी तथा सरकंडों की सहायता से गोलाकार एवं चौकोर आवास बनाये जाते थे। यहाँ के लोगों को कुंभकारी एवं चित्रकारी का भी ज्ञान था।
- कृषि कार्यों में कुछली, रागी, चना, मूंग आदि का उत्पादन किया जाता था।
- **नवपाषाण काल की विशेषता-**
- इस प्रकार नवपाषाण काल की संस्कृति अपने पूर्व की संस्कृतियों की तुलना में अधिक विकसित थी।
- इस काल में कृषि, पशुपालन, बर्तन बनाना, वस्त्रों की सिलाई, पहिए का आविष्कार, स्थायी आवास का निर्माण, ग्राम संस्कृति की स्थापना एवं पत्थर के उपकरणों पर पालिश आदि ने लोगों के जीवन को स्थायित्व प्रदान किया।
- **गार्डन चाइल्ड** ने इन्हीं विशिष्टताओं को देखकर इस काल को **'नवपाषाणिक क्रान्ति'** की संज्ञा से विहित किया है।
- पहली बार कृषि प्रारम्भ हुयी इसका प्राचीनतम प्रमाण बलूचिस्तान के मेहरगढ़ से प्राप्त होता हैं जबकि अभी हाल ही की खोजो में संतकबीर नगर के लहुरादेव नामक स्थान से कृषि के प्राचीनतम प्रमाण प्राप्त होते हैं।
- मेहरगढ़ से मानव के पहले स्थायी जीवन के प्रमाण मिलते हैं
- मानव द्वारा सर्वप्रथम **"जौ"** की कृषि के प्रमाण मिलते हैं

- इसी समय पहिये का अविष्कार हुआ जिसके कारण प्रारंभिक मनुष्य सुरक्षा के दृष्टिकोण से एक स्थान से दूसरे स्थान जाना प्रारम्भ करता हैं। जिससे मानवीय सांस्कृतिक गतिविधियों का विकास हुआ।
- मानव पहली बार संग्राहक के साथ-साथ अधिशेष करना प्रारम्भ करते हैं, जिससे बाजार व्यवस्था का जन्म हुआ और विनिमय के लिए मानव ने पहली बार वस्तु विनिमय प्रणाली का प्रारम्भ किया।
- मानव द्वारा अग्नि का प्रयोग इस काल की प्रमुख विशिष्टता थी।
- अग्नि के प्रयोग से भोजन एवं कच्चे मिट्टी के बर्तन पकाए जाने की तकनीक प्रारम्भ हुई।

ताम्र पाषाण काल

- नव पाषाण युग का अंत होते ही धातुओं का प्रयोग शुरू हो गया था। धातुओं में सबसे पहले तांबे का प्रयोग हुआ। इसके प्रयोग के साथ साथ पत्थर के उपकरणों का भीप्रयोग जारी रहा। इसी कारण इसे ताम्रपाषाणिक संस्कृति कहा जाता है।
- तकनीकी दृष्टि से ताम्रपाषाण अवस्था हड़प्पा की कांस्ययुगीन संस्कृति से पहले की है। पर कालक्रमानुसार में हड़प्पा संस्कृति पहले आती है। यद्यपि इनमें से कुछ संस्कृतियां हड़प्पा की समकालीन भी हैं और प्राक् हड़प्पन भी।
- **ताम्रपाषाण संस्कृति का महत्त्व**
- भारतीय सभ्यता के अंतर्गत मनुष्य द्वारा पहचानी गयी पहली धातु तांबा हैं।
- इस समय भारत में पहली बार ग्रामीण कृषक समुदायों का गठन हुआ इसी कारण आधुनिक भारतीय ग्रामीण समाज की नीव पड़ी।
- इस समय सूक्ष्म पत्थरो के साथ साथ ताम्बे के उपकरणो का प्रयोग प्रारम्भ हुआ।
- सर्वप्रथम इसी समय चित्रित मृदभांड का प्रयोग किया गया।
- सर्वप्रथम इसी संस्कृति के निवासियों ने प्रायद्वीपीय भारत में बड़े बड़े गांव बसाये।
- प्रारंभिक मकान आयताकार और वृत्ताकार होते थे।
- इस काल के लोग नवपाषाण की तुलना में अधिक अनाज उत्पादक हो गए।
- पहली बार मानव धार्मिक पद्धतियों से जुड़ने लगा।
- इन स्थलों से वृषभ एवं मातृदेवी की मूर्तियों के साक्ष्य मिलते हैं
- दायमाबाद से शिवपशुपति तथा ईनाम गावं से सिर विहीन छोटी-छोटी मूर्तियां प्राप्त होती हैं।
- पश्चिम भारत से सम्पूर्ण शवाधान तथा पूर्वी भारत से आंशिक शवाधान के साक्ष्य मिलते हैं।
- दक्षिण भारत में मृतकों को पूरब पश्चिम दिशा में दफनाया जाता था
- सभी ताम्र पाषाणिक क्षेत्रो में काला - लाल मृदभांड सर्वाधिक प्रचलित था।
- भारत में सबसे प्राचीनतम ताम्रकालीन बस्ती मालवा एवं मध्यभारत क्षेत्र हैं।

ताम्रपाषाणिक संस्कृतियां	विशिष्ट मृद्भांड
कायथा संस्कृति	लाल लेप वाले मृद्भांड उनपर चाकलेटी रंग के चित्र
अहार संस्कृति	काले लाल रंग के बर्तन उनपर सफेद डिजाइन
मालवा संस्कृति	मोटे सतही लेप वाले बर्तन उनपर लाल या काले रंग में डिजाइन
रंगपुर संस्कृति	हड़प्पा संस्कृति के समान, परंतु चमकदार सतह के बर्तन इन्हें चमकीले लाल मृद्यांड कहा जाता है।
जोर्वे संस्कृति	लाल या काले रंग से रेखित मृद्यांड जिनकी धुंधली व खुरदरी सतह पर पतला जलरंग

ताम्रपाषाणिक संस्कृति

संस्कृति	समयावधि
अहार संस्कृति	लगभग 2800 ई.पू. - 1500 ई.पू.
कायथा संस्कृति	लगभग 2450 ई.पू. - 1700 ई.पू.
मालवा संस्कृति	लगभग 1900 ई.पू. 1400 ई.पू.
सावलदा संस्कृति	लगभग 2300 ई.पू. - 2000 ई.पू.
जोर्वे संस्कृति	लगभग 1500 ई.पू. - 900 ई.पू.
प्रभास संस्कृति	लगभग 2000 ई.पू. - 1400 ई.पू.
रंगपुर संस्कृति	लगभग 1700 ई.पू. - 1400 ई.पू.

- **अहार संस्कृति**
- इसे बनास/ ताम्रवती संस्कृति भी कहते हैं।
- **स्थल** - अहाड़, गिलुंद, बालाथल।
- गिलुंद से पकी हुई ईंटों का साक्ष्य मिला है। संभवतः इस क्षेत्र के लोग अधिकांशतः मिट्टी की ही दीवार बनाते थे, काले एवं लाल रंग के मृद्भांड, जिस पर सफेद रंग की डिजाइन बनी हुई थी, इस संस्कृति की मुख्य विशेषता थी।
- तांबे का सर्वाधिक उपयोग होने के कारण इसे तांबवती भी कहते हैं।
- इसका उत्खनन **एच. डी. सांकलिया** ने कराया था।
- **कायथा संस्कृति (म.प्र.)**
- यह चंबल नदी के क्षेत्र में स्थित है।
- इसे हड़प्पा की कनिष्ठ समकालीन संस्कृति भी कहते हैं।
- यहाँ के मृदभांड लाल व काले रंग के होते थे।
- इसका उत्खनन **एच. डी. सांकलिया** ने कराया था।
- **नवदाटोली**
- यह स्थल **मध्य प्रदेश** के जिला खरगोन में नर्मदा नदी के तट पर स्थित है ।
- इसका उत्खनन **एच. डी. संकालिया** ने करवाया था ।
- यह भारतीय उपमहाद्वीप का सबसे विस्तृत उत्खनित ताम्रपाषाणिक स्थल है।
- यहाँ से गेंहूँ, धान एवं दलहन की खेती के साक्ष्य प्राप्त होते हैं।
- इस स्थल से उत्खनन के दौरान अत्यधिक मात्रा में अनाज या फसल के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं, जो भारत के किसी भी ताम्रपाषाणिकस्थल से नहीं प्राप्त होते हैं।
- इस स्थल को मालवा ताम्रपाषाणिक स्थल का प्रतिनिधि स्थल माना जाता है।
- मालवा के अन्य स्थलों में एरण से मिट्टी द्वारा निर्मित विशाल सुरक्षा प्राचीर का साक्ष्य एवं नागदा से हाथी दाँत से निर्मित एक मानव आकार की मूर्ति प्राप्त होती है।
- एरण और कायथा से किलाबन्द बस्ती के भी साक्ष्य प्राप्त होते हैं।
- **पश्चिमी महाराष्ट्र**- सबसे अधिक ताम्रपाषाणिक स्थल इसी राज्य से प्राप्त होते हैं।
- यहाँ के प्रमुख स्थलों में जोर्वे, नेवासा, चन्दौली, इनामगाँव, दायमाबाद (दैमाबाद), सोनगाँव एवं नासिक आदि हैं।
- **जोर्वे** –
- इन्हें जोर्वे संस्कृत की उपमा दी जाती है।
- प्रवरा नदी के बाँये तट पर स्थित जोर्वे को इस क्षेत्र का प्रतिनिधि स्थल माना जाता है।
- एकमात्र जोर्वे संस्कृति से ही सोने के आभूषण प्राप्त होते हैं।
- यहाँ से नौतली एर्व टोटीदार मृदभाण्डों का प्राप्त होना इस संस्कृति की अपनी एक महत्वपूर्ण विशिष्टता है।
- जोर्वे मृदभांण्ड के साक्ष्य नवदाटोली एवं कर्नाटक के टी नरसीपुर से भी प्राप्त होते हैं।
- **दायमाबाद**
- गोदावरी नदी के तट पर स्थित **दायमाबाद** सबसे बड़ा एवं महत्वपूर्ण स्थल है।
- इसके प्रारम्भिक काल में उतरवर्ती **हड़प्पा सभ्यता और मालवा संस्कृतियों** का प्रभाव दिखाई देता है ।
- यहाँ से ताँबे के साथ-साथ काँसे की वस्तुएँ भी प्राप्त होती हैं जिनमें रथ हाँकता मानव, गणेश की मूर्ति, गैंडा, हाथी एवं सांड़ आदि महत्वपूर्ण हैं।
- यहाँ से मातृ देवी की मृण्मूर्ति प्राप्त होती है।
- यहाँ से पात्र पर एक देवता को एक बाघ एवं मोर से घिरा हुआ दिखाया गया है, जो संभवतः पशुपति का रूप रहा हो।

- **इनामगांव**
- यह महाराष्ट्र में स्थित ताम्रपाषाण कालीन स्थल है।
- कुंभकार, धातुकार, हाथी-दांत के शिल्पी, चूना बनाने वाले और खिलौने की मिट्टी की मूर्ति (टेराकोटा) बनाने वाले कारीगर भी दिखाई देते हैं।
- इनामगांव में मातृ-देवी की प्रतिमा मिली है, जो पश्चिमी एशिया में पाई जाने वाली ऐसी ही प्रतिमा से साम्यता रखती है। इनामगांव से प्राप्त दो छोटी मूर्तियों को गणेश का आद्यरूप माना गया है।
- आरंभिक ताम्रपाषाण अवस्था के इनामगांव स्थल पर चूल्हों सहित बड़े-बड़े कच्ची मिट्टी और गोलाकार गड्डों वाले मकान मिले हैं।
- इनामगांव में सौ से अधिक घर और अनेक कब्रें पाई गई हैं।
- यह बस्ती किलाबंद है और खाई से घिरी हुई है। इसी तरह एरण में भी खाई एवं परकोटा मिलता है।
- **मालवा संस्कृति**
- एरण से मिट्टी के परकोटे एवं मिट्टी के बने पहिए का साक्ष्य।
- नागदा से कच्ची ईंटों का बना हुआ बुर्ज, स्टैण्ड पर रखी हुई तस्तरी का साक्ष्य, जो धार्मिक कर्मकांड को दर्शाती है।
- **महापाषाण काल**
- महापाषाण संस्कृति का सम्बन्ध लौहकाल (1000ई.पू. से 600 ई.पू.) से है।
- दक्षिण भारत में नवपाषाण काल के बाद महापाषाण कालीन कब्रों का क्रम मिलता है। यहाँ से कोई भी आवासीय स्थल नहीं मिला है। उनकी विशेषता केवल कब्रों के आधार पर बतायी गई है। यहाँ की मुख्य विशेषता शवाधान प्रणाली है।
- **महापाषाणिक संस्कृतियों की प्रमुख विशेषताएँ :**
- महापाषाणिक लोग लोहे का प्रयोग करते थे।
- लौह उपकरणों में अधिकांशतः तीर, भाला जैसे शस्त्र मिले हैं।
- इनका निवास क्षेत्र पहाड़ी ढलान या नदियों का किनारा होता था।
- ये लोग सिंचाई के साधनों से परिचित थे।
- ये रागी और धान की खेती भी करते थे।
- कुछ महापाषाणिक स्थलों से रोमन सिक्के प्राप्त होते हैं, जिससे उनका रोमन व्यापारिक संबंध भी परिलक्षित होता है
- प्रायः सभी समाधियों का निर्माण ऊँचे स्थलों पर किया गया था।
- काले एवं लाल मृदभाण्ड के प्रयोग के अतिरिक्त ताम्र एवं कांस्य निर्मित बर्तनों के प्रयोग के साक्ष्य भी मिले हैं।
- **प्रमुख उत्पादित अनाज-** चावल, जौ, रागी, चना आदि थे।
- लगभग सभी समाधियों से आंशिक समाधीकरण के साक्ष्य मिले हैं।
- व्हीलर ने **ब्रह्मगिरि** के उत्खनन में तीन संस्कृतियों को उद्घाटित किया था जिसमें दूसरी संस्कृति महापाषाणिक की हैं।
- **आदिचनल्लूर** नामक **महापाषाणिक** संस्कृति स्थल से प्राप्त साक्ष्यों से दक्षिण के अत्यन्त प्रिय देवता 'मुरुगन' की उपासना का साक्ष्य मिला है।
- **अलगैर** नामक **महापाषाणिक स्थल आवासीय** एवं **शवाधान** का मुख्य केन्द्र था।
- **प्राक् हड़प्पीय काल की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएँ**
- इस काल में सुरक्षा प्राचीर बनाये जाने लगे, जैसे मुडीगाक, कोटदीजी में।
- मेहरगढ़ में चबूतरे के निर्माण का साक्ष्य मिला है, जिस पर संभवतः बाजार लगता था।
- मुंडीगाक (अफगानिस्तान) से दुकान एवं घरों के अवशेष मिले हैं, जो कि योजनाबद्ध रूप से बनाये गए हैं।
- नहर और सिंचाई का प्रयोग, पशुओं को समान ढोने के लिए प्रयोग में लाना, पालदार नाव का प्रयोग, खेती में हल का प्रयोग, बागवानी, मुद्रा लिपि एवं अंकों का आविष्कार।
- प्रमुख प्राक् हड़प्पीय स्थल कोटदीजी एवं कालीबंगा है।
- कोटदीजी में सुरक्षा दीवार के अंदर कच्ची ईंटों से बने हुए भवन मिले हैं, जिसकी नींव पत्थरों की है।
- डीलयुक्त सांड की मूर्ति प्राप्त हुई है, जो सैंधव सभ्यता की महत्वपूर्ण विशेषता है।
- कालीबंगा में भी प्राक् हड़प्पीय संस्कृति के भी साक्ष्य मिले हैं।

प्रमुख प्रागैतिहासिक काल एवं सम्बन्धित स्थल

काल	संस्कृति के लक्षण	मुख्य स्थल	महत्त्व, उपकरण एवं विशेषताएँ
निम्न पुरापाषाण काल	शल्क, गण्डासा, खण्डक उपकरण संस्कृति	पंजाब, कश्मीर, सोहन घाटी, सिंगरौली घाटी, छोटानागपुर, नर्मदा घाटी, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश	हस्त कुठार एवं वटिकाश्म उपकरण, होमोइरेक्ट अस्थि अवशेष नर्मदा घाटी से प्राप्त हुए हैं।
मध्य पुरापाषाण काल	फलक संस्कृति	नेवासा (महाराष्ट्र) डीडवाना (राजस्थान), भीमबेटका (मध्य प्रदेश), नर्मदा घाटी, बांकुड़ा पुरुलिवा (पश्चिम बंगाल)	फलक, बेधनी, खुरचनी, भीमबेटका से गुफा चित्रकारी मिली है।
उच्च पुरापाषाण काल	अस्थि, खुरचनी एवं तक्षणी संस्कृति	बेलन घाटी, छोटानागपुर, पठार, मध्य भारत, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश	प्रारम्भिक होमोसेपियन्स मानव का काल, हार्पून, फलक एवं हड्डी के उपकरण प्राप्त हुए।
मध्यपाषाण काल	सूक्ष्म पाषाण संस्कृति	आदमगढ़, भीमबेटका (मध्य प्रदेश), बागौर (राजस्थान), सराय, नाहर राय (उत्तर प्रदेश)	सूक्ष्मपाषाण उपकरण बनाने की तकनीक का विकास, अर्द्धचन्द्राकार उपकरण, इकधार फलक, स्थायी निवास का साक्ष्य पशुपालन।
नवपाषाण काल	पॉलिश्ड उपकरण संस्कृति	बुर्जहोम और गुफ्कराल (कश्मीर), लंघनाज (गुजरात), दमदमा, कोल्डिहवा (उत्तर प्रदेश), चिरांद (बिहार), पोचमपल्ली (तमिलनाडु), ब्रह्मगिरि, मास्को (कर्नाटक)	प्रारम्भिक कृषि संस्कृति, कपड़ा बुनना, भोजन पकाना, मृद्भाण्ड निर्माण, मनुष्य स्थायी निवासी बना, पाषाण उपकरणों की पॉलिश, पहिया तथा अग्नि का प्रचलन।

- **मानव का उद्भव एवं क्रमिक विकास**
- जीवों का क्रमिक विकास विभिन्न युगों में हुआ।
- विकास के अंतिम चरण में पक्षी एवं स्तनपायी जीवों का उद्भव हुआ।
- इन स्तनपायी जीवों में सबसे प्रमुख प्राइमेट या नर-वानर थे, जिसके अन्तर्गत बंदरों, लंगूरों एवं वनमानुषों को शामिल किया जाता है। आगे चलकर इन्हीं से मानव का विकास हुआ।
- होमोनिड्स सर्वप्रथम मानव सदृश्य प्राणी थे। उनकी उत्पत्ति सर्वप्रथम अफ्रीका के जंगलों में प्लीस्टोसीन युग में हुई। ये आधा झुककर चलते थे। इनको रामापिथेकस भी कहा जाता था।
- मध्य अफ्रीका में पाया जाने वाला **आस्ट्रिलोपिथिकस** प्रथम वानर मानव था, जो सीधा चलता था।
- **होमोइरेक्टस को पिथेकेंथ्रोपस** मानव भी कहते हैं इसे जावा मानव या पीकिंग मानव या सिनाथ्रोपस मानव भी कहते हैं। इसकी सबसे बड़ी विशेषता इसका भौगोलिक वितरण हैं। अग्नि का अविष्कार इसी ने किया।
- **होमोहैविलस** को प्रथम कारीगर मानव कहा जाता है। इसी ने सर्वप्रथम पत्थर के औजार बनाये।

सिंधु घाटी सभ्यता

- सिन्धु सभ्यता का पूर्वाभास सर्वप्रथम 1826 ई. में चार्ल्समेसन नामक एक अंग्रेज को हुआ था। उसने हड़प्पा नामक स्थल से बड़ी संख्या में ईंटों को प्राप्त किया था।
- सर्वप्रथम अलेक्जेंडर कनिंघम ने 1853-1873 ई. तक हड़प्पा क्षेत्र का अन्वेषण किया किन्तु वे इसके महत्व को समझने में असमर्थ रहे।
- 1853 ई. में कनिंघम को एक अंग्रेज ने हड़प्पा क्षेत्र से प्राप्त वृषभ की आकृति वाली एक मुहर दी थी।
- 1872 ई. में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का प्रथम डायरेक्टर जनरल अलेक्जेंडर कनिंघम महोदय को नियुक्त किया गया। ध्यातव्य है कि कनिंघम को ही 'भारतीय पुरातत्व के जनक' की संज्ञा प्रदान की जाती है
- जॉन ब्रन्टन एवं विलियम ब्रन्टन ने 1856 ई. में कराची से लाहौर के बीच रेल पटरियाँ बिछाने के लिए हड़प्पा टीलों से प्राप्त ईंटों का उपयोग किया था।
- 1912 ई. में जे.एफ. फ्लीट ने हड़प्पा टीले से प्राप्त पुरातत्व सामग्री के आधार पर रायल एशियाटिक सोसायटी द्वारा प्रकाशित पत्रिका में एक लेख प्रस्तुत किया किन्तु फ्लीट हड़प्पा के पुरातात्विक महत्व का मूल्यांकन करने में असमर्थ सिद्ध हुए।
- विश्व के सम्मुख सिन्धु नदी घाटी में विकसित होने वाली एक नवीनतम सभ्यता 'सिन्धु घाटी की सभ्यता' के खोज की घोषणा सर्वप्रथम जॉन मार्शल से 1924 ई. में की थी।

❑ सिंधु सभ्यता के अन्य नाम -

- हड़प्पा सभ्यता, सिंधु सभ्यता, मेलुहा सभ्यता, कांस्ययुगीन सभ्यता, प्रथम नगरीकरण सभ्यता
- **हड़प्पा सभ्यता**
- 1921 में जॉन मार्शल की अध्यक्षता में दयाराम साहनी ने पंजाब प्रान्त में स्थित मॉन्टगोमरी जिले में हड़प्पा नामक स्थल की खोज की।
- यह इस सभ्यता का पहला स्थल था जिसके कारण इस सभ्यता का नाम हड़प्पा सभ्यता रखा गया।
- **सिंधु सभ्यता**
- इस सभ्यता के अधिकांश महत्वपूर्ण स्थल सिंधु एवं उसकी सहायक नदियों के किनारे स्थित हैं इसी लिए इसे सप्तसैंधव की सभ्यता या सिंधु नदी घाटी सभ्यता भी कहते हैं। इसका नामकरण 1924 में जॉन मार्शल ने किया था।
- **सप्तसैंधव नदियाँ -** सिंधु, चेनाब, रावी, झेलम, सतलुज, व्यास, श्योक
- **मेलुहा सभ्यता**
- मेसोपोटामिया या सुमेरियन सभ्यता के लोग सिंधु सभ्यता से व्यापारिक सम्बन्ध रखते थे इन लोगो ने सिंधु के लिए मेलुहा शब्द का प्रयोग किया जिसका अर्थ होता हैं व्यापार।
- **कांसयुगीन सभ्यता**
- मानव सभ्यता में पहली बार मिश्रित धातु का प्रयोग हुआ। जिसमें तांबे के साथ टिन मिलकर कांसा बनाया गया। यह मनुष्य की वैज्ञानिकता का प्रमाण था।
- जिसके कारण इस सभ्यता को कांसयुगीन सभ्यता भी कहते हैं।
- प्रथम पुरास्थल हड़प्पा के नाम से ज्ञात होता है। हड़प्पा सभ्यता उत्तर में मांडा (अखनूर-जम्मू-कश्मीर) से दक्षिण में दायमाबाद (अहमदनगर-महाराष्ट्र) और पश्चिम में सुत्कांगेडोर (बलूचिस्तान-पाकिस्तान) से पूर्व में आलमगीरपुर (बागपत-उ.प्र.) तक विस्तृत कांस्यकालीन आद्य ऐतिहासिक काल का अंग है, क्योंकि इसकी उपलब्ध चित्राक्षर लिपि (400 अक्षर) अभी तक पढ़ी नहीं जा सकी है।
- पुरातात्विक खुदाई से वैदिक सभ्यता से पहले की सभ्यता का पता चला जिसकी प्रधान विशेषता उसकी नगरीकरण व्यवस्था थी।
- **उदय एवं विकास -** इस संदर्भ में जॉन मार्शल, गॉर्डन चाइल्ड, मार्टीमर ह्वीलर, डी. एच. गॉर्डन आदि के मुताबिक इस सभ्यता के विकास की प्रेरणा सांस्कृतिक विसरण के अनुसार मेसोपोटामिया से मिली। किंतु कई कसौटियों पर हड़प्पा सभ्यता मेसोपोटामिया से भी उन्नत प्रतीत होती है और कहीं एक दूसरे से बिल्कुल अलग।
- लिपि, शहरों की योजना, जल निकासी व्यवस्था आदि में यह एक दूसरे से बिल्कुल अलग हैं।
- इतना ही कहा जा सकता है कि दोनों के बीच व्यापारिक अन्तः सम्बन्ध थे जिसका कुछ प्रमाण मिला है। इस व्यापारिक विकास का संतुलन भी हड़प्पा के पक्ष में ही प्रतीत होता है।
- इन अन्वेषकों ने हाल के वर्षों में हड़प्पाई क्षेत्रों की विभिन्न स्तरीय खुदाई की बदौलत नवपाषाण काल, धातुकाल के आरंभ आदि काल में पशुचारण एवं कृषि के विकास के साथ ग्राम्य संस्कृतियों के विकास का प्रमाण इकट्ठा किया है।

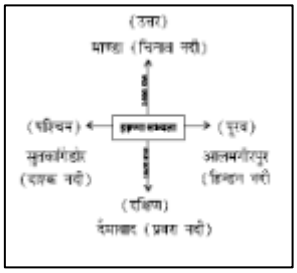

❑ सिंधु सभ्यता का विस्तार

- यह सभ्यता पाकिस्तान के बलूचिस्तान, सिंध एवं पंजाब तथा भारत के पंजाब, जम्मू, राजस्थान, हरियाणा, गुजरात, सम्भवतः महाराष्ट्र एवं पश्चिमी उत्तर प्रदेश क्षेत्र में विस्तृत थी।

Note:-

- **सिंधु सभ्यता की जुड़वाँ राजधानिया**
- इतिहासकार पिग्गट महोदय ने हड़प्पा और मोहन जोदड़ो को सिंधु सभ्यता की जुड़वाँ राजधानी कहा। कालीबंगा को सिंधु सभ्यता की तीसरी राजधानी कहा जाता हैं।

हड़प्पाई सभ्यता की मुख्य विशेषताएँ

❑ नगरीय सभ्यता

- यह एक नगरीकृत सभ्यता थी और इसके नगर योजनाबद्ध तरीके से विकसित हुए थे जो **ग्रिड पैटर्न** तथा **चेस बोर्ड** के समान फैले थे। नगर प्रायः पश्चिम में दुर्ग, जहाँ विशिष्ट महत्व के भवनों का निर्माण होता था, एवं निचला नगर जो रिहायशी क्षेत्र था में विभाजित होते थे।
- धौलावीरा में नगर तीन भागों में विभाजित था।
- स्वच्छता का पूरा ख्याल रखा जाता था एवं इसके लिए जल निकासी की विश्व की सर्वश्रेष्ठ व्यवस्था थी।
- विविध शहरों के योजना एवं भौतिक संस्कृति के स्तर पर व्यापक एकरूपता इस सभ्यता की प्रमुख विशेषता है, यद्यपि क्षेत्रगत विशिष्टताओं का भी दर्शन होता है।
- **नगर योजना की मुख्य विशेषताएँ:**
- **ग्रिड पैटर्न:**
- भवन जाल/ग्रिड पद्धति पर व्यवस्थित थे। नगरों में सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती थी, जिसके कारण नगर कई खंडों में विभक्त थे।। प्रत्येक क्रॉसिंग के चौराहे पर एक लाइट पोस्ट था और यह लंबवत था। सड़कों के दोनों ओर मकान बने थे।
- **एक अच्छी तरह से स्थापित ड्रेनेज सिस्टम:**
- राजमार्गों के दोनों किनारों पर, विशाल सीवर खोदे गए, और उन्हें पकी हुई ईंटों से बनाया गया। उन्हें ढकने के कारण नालियाँ दिखाई नहीं दे रही थीं। इन नगरों में पहले नालियों के साथ गलियों को बनाया गया तथा फिर अगल-बगल अधिवासों का निर्माण किया गया।
- जल निकास में अपशिष्ट फिल्ट्रेशन की भी व्यवस्था थी। घरों की नालियाँ पहले घर में मलकुंड में खाली होती थी, जिसमें ठोस अपशिष्ट पदार्थ जमा हो जाते थे और गंदा पानी गली की नालियों में बह जाता था।
- **पकी हुई ईंटों की इमारतें:**
- आवासीय संरचनाओं में कमरों से घिरी एक खुली छत थी और यह मुख्य रूप से ईंट से बनी थी। इन निर्माणों को बनाने के लिए इस्तेमाल की गई ईंटें समान रूप से पकी हुई और धूप में सुखाई गई थीं। कुछ घरों में तो कई मंजिलें और पक्की मंजिलें भी थीं।
- **वृहत स्नानागार**

- मोहनजोदड़ो में सिंधु घाटी सभ्यता के दौरान निर्मित एक विशाल स्नानागार है। इसे सिंधु घाटी सभ्यता की सबसे महत्वपूर्ण संरचनाओं में से एक माना जाता है।
- यह स्नानागार पाकिस्तान के सिंध प्रांत में स्थित मोहनजोदड़ो नामक प्राचीन शहर में पाया गया है।
- यह सिंधु घाटी सभ्यता के शहरी नियोजन और सामाजिक जीवन का एक प्रतीक है ।
- यह स्नानागार एक आयताकार टैंक है जो लगभग 12 मीटर लंबा, 7 मीटर चौड़ा और 2.4 मीटर गहरा है। इसमें उत्तर और दक्षिण की ओर दो सीढ़ियाँ हैं जो स्नानागार में प्रवेश के लिए इस्तेमाल होती थीं ।
- स्नानागार की दीवारों और फर्श को जलरोधी बनाने के लिए प्राकृतिक टार की परत का उपयोग किया गया है, जिससे पानी का रिसाव नहीं होता था।
- ऐसा माना जाता है कि इस स्नानागार का उपयोग धार्मिक अनुष्ठानों और सामाजिक समारोहों में भाग लेने के लिए किया जाता था।
- यह स्नानागार सिंधु घाटी सभ्यता के शहरी नियोजन, जल प्रबंधन और सामाजिक गतिविधियों का प्रमाण है।
- **बृहत् अन्नागार**
- सिंधु घाटी सभ्यता के दो प्रमुख शहरों, मोहनजोदड़ो और हड़प्पा में पाए गए थे
- मोहनजोदड़ो में विशाल अन्नागार की खोज हुई थी, जबकि हड़प्पा में छह छोटे अन्नागार थे। ये अन्न भण्डार अनाज और अन्य खाद्य पदार्थों को संग्रहीत करने के लिए इस्तेमाल किए जाते थे।
- मोहनजोदड़ो: यहाँ विशाल अन्नागार 169 फुट लंबा और 135 फुट चौड़ा था. यह दो भागों में विभाजित था, बीच में 23 फुट चौड़ा रास्ता था। प्रत्येक भाग में छह कक्ष थे, जिनके बीच पाँच गलियारे थे।
- ये अनाज भंडारण के लिए महत्वपूर्ण थे. सिंधु घाटी सभ्यता में, कृषि व्यवस्था के संगठन में इन अन्नागारों का विशेष महत्व था।
- सिंधु घाटी सभ्यता में अन्न भण्डार का उपयोग अनाज और अन्य खाद्य पदार्थों को सुरक्षित रखने के लिए किया जाता था।
- हड़प्पा: यहाँ छह छोटे अन्नागार पाए गए थे. हड़प्पा में अन्नागारों के पास ही अनाज की सफाई, कुटाई और पिसाई के लिए चबूतरे भी मिले थे.
- **निचला और ऊपरी शहर:**
- एक आदर्श शहर को दो भागों में विभाजित किया गया था और प्रत्येक को अलग-अलग तरीके से संरक्षित किया गया था।
- ऊपरी शहर मानव निर्मित पहाड़ी पर था, जबकि निचला शहर समतल ज़मीन पर था (जिसे एक्रोपोलिस भी कहा जाता है)।
- शहर की सबसे महत्वपूर्ण इमारतें, जैसे असेंबली हॉल, धार्मिक भवन, अन्न भंडार, और मोहनजोदड़ो के मामले में, बड़ा स्नानागार और निचला शहर, एक्रोपोलिस पर स्थित थे।
- **मकान**
- ज्यादातर श्रेष्ठ भवन दुर्ग के अंदर बनते थे, जैसे सभा भवन, पुरोहित का भवन, स्नानागार, अन्नागार आदि।
- रिहायशी क्षेत्रो में छोटे एवं बड़े आकार के अनेक भवनों के अवशेष पाए गए हैं जिनमें एक से लेकर 13 तक कमरे पाए गए हैं।
- भवनों का निर्माण कच्ची एवं पक्की ईटों से किया गया था।
- प्रायः मकान में आँगन, स्नानागार, रसोईघर और कहीं-कहीं कुआँ भी होता था।
- मकान के कोने पर एल (L) आकार की ईट का प्रयोग किया जाता था।
- दीवारों को सीधा बनाने के लिए साहुल (मोहनजोदड़ो में प्राप्त) उपयोग किया जाता था एवं ईटों का प्रयोग इंग्लिश बॉण्ड पद्धति पर किया जाता था।
- भवनों में वर्गाकार या आयताकार स्तंभों का प्रयोग हुआ है।
- मेहरगढ़ में तंबुओं में आवास के साक्ष्य मिले हैं।

❑ लिपि

- लिपि के ज्यादातर साक्ष्य वर्गाकार या आयताकार मुहरों पर मिले हैं।
- लिपि प्रायः चित्रात्मक, सीधी लकीरों वाली एवं भाव चित्रात्मक थी। ज्यादातर साक्ष्य दाएँ से बाएँ लिपि के हैं, कुछ बाएँ से दाएँ के भी मिलते हैं।
- एक से अधिक पंक्ति की लिपि के साक्ष्य बोस्त्रोपफेदन शैली के हैं। मृदभांडों पर अंकित चित्रों एवं लिपि के माध्यम से इनकी चित्रकला के ज्ञान का पता चलता है।
- कला का दृष्टिकोण ज्यादातर उपयोगितावादी ही रहा था, जो प्रायः सुविधा और उत्पादन से सम्बद्ध रहा था।

❑ अर्थव्यवस्था

- **कृषि**
- सिंधु एवं सहायक नदियों से बहाकर लाई गई जलोढ़ मिट्टी कृषि कार्य के अनुकूल थी
- सिंधु की भूमि नम होने के कारण भूमि बसाव, जल की उपलब्धता आदि अनुकूल थी ।
- कृषि कार्य में ज्यादातर प्रस्तर एवं कांस्य निर्मित उपकरणों का इस्तेमाल होता था।
- मोहनजोदड़ो से मिट्टी के बने एक हल का प्रारूप तथा बनावली से मिट्टी के बने हल का पूरा प्रारूप प्राप्त हुआ है।
- सिंचाई का प्रमुख स्रोत वर्षा ही रहा होगा और इसके अतिरिक्त सिंचाई के लिए जलाशय एवं कुआँ (कृत्रिम सिंचाई) का इस्तेमाल होता था।
- **नहर द्वारा** सिंचाई का प्रमाण नहीं मिलता है।
- अभी तक कुल नौ फसलों की पहचान हुई है, जिनमें मुख्य फसल गेहूँ, जौ, सरसों, कपास थी।
- लोथल एवं रंगपुर से मृण्मूर्ति से लिपटी हुई धान की भूसी मिली है।
- लोथल से आटा पीसने वाली चक्की के दो पाट मिले हैं।
- कृषि में अधिशेष उत्पादन के आधार पर ही नगर का विकास हुआ होगा जो गाँव के लोगों के लिए आवश्यक उपकरण, मनोरंजन एवं अन्य आवश्यक वस्तुओं का निर्माण करते थे।
- व्यापार ने अतिरिक्त कृषकीय उत्पादन को बढ़ावा दिया होगा।
- **पशुपालन**
- कूबड़दार वृषभ का विशेष महत्व रहा होगा
- बकरी, कुत्ता, हाथी, व्याघ्र (सिंह नहीं), मुर्गी आदि को पालतू बनाया गया होगा।
- गुजरात के लोग हाथी पालते थे। कालीबंगा से ऊँट की हड्डियाँ मिली है लेकिन ऊँट एवं घोड़े का अंकन मुहरों पर नहीं है।
- **पशुओं का इस्तेमाल -** कृषि कार्य, मालवाहन, मांस, खाल, बाल एवं ऊन के लिए किया जाता था।
- हड़प्पा कालीन मृदभाण्डों एवं मुहरों पर अंकित चित्र एवं प्राप्त जीवाश्मों के आधार पर हमें उनके पालतू पशु-पक्षियों के विषय में ज्ञान प्राप्त होता है।
- प्रमुख पालतू पशुओं में कूबड़दार वृषभ, भैंस, भेड़, बकरी, सुअर, खरगोश, ऊँट एवं हिरन आदि थे।
- हाथी से भी उनका परिचय था। हाँथी दाँत की पटरी लोथल से मिली है।
- मोहनजोदड़ों से मिट्टी से बनी घोड़ा की आकृति, लोथल से घोड़े की तीन मृणमूर्तियाँ और सुरकोटदा से प्राप्त घोड़े की हड्डियों के साक्ष्यों से विदित होता है कि सैंधव वासियों को घोड़े का ज्ञान था।
- **व्यापार**
- गाँव व शहर के मध्य व्यापार एवं विविध हड़प्पाई स्थलों के मध्य व्यापार के अतिरिक्त मेसोपोटामिया, मिस्र, बहरीन, मकरान, सम्भवतः तुर्कमेनिस्तान से भी व्यापार होता था।
- मेसोपोटामिया से व्यापारिक संबंध पाषाण काल में हुआ होगा जहाँ दिलमुन (बहरीन), माकन एवं मेलूहा (हड़प्पा) के साथ व्यापार का उल्लेख है।
- मेसोपोटामिया से जल एवं थल दोनों मार्ग से व्यापार के प्रमाण मिले हैं। मोहनजोदड़ो के एक मुहर पर सुमेरियन नाव का चित्रण है।
- **हड़प्पा से मेसोपोटामिया को निर्यातित वस्तुएँ**
  - सूती वस्त्र, इमारती लकड़ी, मसाला, हाथी दाँत, उर, किश, लगाश, निपुर आदि
  - मेसोपोटामिया से एक दर्जन हड़प्पाई मुहरें प्राप्त हुई हैं।
- **मेसोपोटामिया से हड़प्पा में आयातित वस्तुएँ**
  - पत्थर, हड़प्पा से प्राप्त खानेदार मनके, मोहनजोदड़ों से प्राप्त बेलनाकार मुहरें, मध्य एशिया एवं पश्चिमी एशिया से घनिष्ट व्यापारिक संबंध था।
- **व्यापार के लिए अनुकूल परिवहन का विकास**
- जल एवं थल दोनों मार्ग से व्यापार होता था।
- माल ढोने के लिए ठोस पहिए वाले बैलगाड़ी का इस्तेमाल किया जाता था।
- लोथल के पुरावशेष से पोत निर्माण, आयताकार बंदरगाह एवं नाव द्वारा समुद्री व्यापार का प्रमाण मिलता है।

- यहाँ से पक्की मिट्टी से बने जहाज का नमूना मिला है।
- हड़प्पा में काँसे की गाड़ी का नमूना मिला है। भगतराव , मेघम , प्रभासपाटन , लोथल , सोतकागेंडोर एवं सुतकोदता आदि तटवर्ती व्यापारिक केन्द्र रहे होंगे।
- विनिमय के साधन
- वस्तु-विनिमय प्रणाली क्योंकि मुद्रा का विकास नहीं हुआ था, किंतु लाइसेंस एवं छाप के रूप में मोहर का प्रयोग किया जाता था।
- माप-तौल की इकाई
- एकरूप इकाई जो 16 के अनुपात पर आधारित थी। लंबाई 37.6 सेमी. की एक फुट इकाई पर आधारित थी। मोहनजोदड़ो से सीप और लोथल से हाथी दांत का बना एक स्केल मिला है।

❑ शिल्प एवं उद्योग

- सोना, चाँदी, ताँबा, काँसा एवं सीसा का ज्ञान था। सोने का कोई बर्तन नहीं मिला है।

सूती वस्त्र उद्योग

- मोहनजोदड़ो से चांदी के बर्तन पर लाल रंग (मजीठ) का कपड़ा, तथा कालीबंगा से मिट्टी के बर्तन पर सूती वस्त्र की छाप मिली है।
- लोथल से मुद्रांक पर सूती वस्त्र की छाप, आलमगीरपुर से बने वस्त्र के निशान तथा नेवासा से अंगूठी पर लिपटा रेशम के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। वस्त्रों पर संभवतः कढाई का काम भी किया जाता था।

मृदभांड

- चाक और हाथ दोनों से बने होते थे। मुख्यतः लाल एवं गुलाबी एवं कुछ पर काली रेखाओं से चित्र बने होते थे।

मनका निर्माण उद्योग

- चंदुहाड़ो एवं लोथल में मनके बनाने का कारखाना था। मनका बनाने में सबसे ज्यादा सेलखड़ी का प्रयोग होता था।
- बालाकोट एवं लोथल अन्य उद्योगों में स्वर्णकार, शंख, सीप, हाथीदांत से विविध वस्तुओं का निर्माण

सैन्धव कालीन प्रमुख आयातित वस्तुएँ

आयात की जाने वाली वस्तुएँ	प्राप्ति स्थल (क्षेत्र)
सोना	अफगानिस्तान, फारस, कर्नाटक के कोलार की खानें (मैसूर)
चाँदी	ईरान, अफगानिस्तान
ताँबा	बलूचिस्तान, खेतड़ी (राजस्थान)
टिन	अफगानिस्तान , ईरान (मध्यएशिया)
लाजवर्द मणि (नीलरत्न)	बदक्ख्शाँ (अफगानिस्तान), मेसोपोटामिया
फिरोजा	ईरान
शिलाजीत	हिमालय क्षेत्र
सीसा	राजस्थान, अफगानिस्तान, ईरान
सेलखड़ी	राजस्थान, गुजरात, बलूचिस्तान
शंख एवं कौड़ियाँ	सौराष्ट्र (गुजरात), दक्षिणी भारत
हरित मणि	दक्षिण भारत
गर्मिद (मनका बनाने हेतु)	गुजरात

सैंधव सभ्यता के मुख्य बंदरगाह नगर

बंदरगाह नगर	अवस्थिति नदी तट
लोथल	भोगवा एवं साबरमती के संगम पर (खम्भात की खाड़ी)
भगतराव	किम नदी
प्रभासपाटन	हिरण्य नदी पर
सुत्कार्गेडोर	दाश्क या दशमक नदी (मकरान तट पर)
मेघम	नर्मदा तट पर
बालाकोट	बिंदार नदी

हड़प्पाकालीन स्थल

बलूचिस्तान	उत्तरी बलूचिस्तान में सैन्धव स्थल नहीं, किंतु दक्षिणी बलूचिस्तान में इसके कई पुरास्थल पाये गए हैं, जैसे - सुतकागेंडोर, सोतकाकोह, डाबरकोट, मेहरगढ़।
पंजाब	हड़प्पा, डेरा इस्माइलखान, जलीलपुर, रहमान ढेरी आदि।
सिंध	चान्हुदड़ो, आमरी, कोटदीजी, जुदेड़दरो आदि।
अफगानिस्तान	शोर्तघुई, मुंडीगाक, पठानी दंब (मूला दर्रे के मुहाने पर)
पंजाब	रोपड़, कोटलानिहंगखान, चक-86, बाड़ा, संघौल, ढ़ेरमाजरा आदि।
हरियाणा	मित्तायल, सिसवल, वणावली, राखीगढ़ी, बाड़ा आदि।
उत्तर प्रदेश	आलमगीरपुर (मेरठ), हुलास, बाड़गाँव।
राजस्थान	लगभग दो दर्जन स्थल सरस्वती (वर्तमान घग्गर) और दृषद्वती (वर्तमान चौतांग) नदी के क्षेत्रों में, जैसे- कालीबंगा।
गुजरात	40 से अधिक स्थल, जैसे- रंगपुर, लोथल, प्रभासपाटन, रोजदी, देसलपुर, भगतराव, सुरकोटदा, धौलावीरा।
जम्मू	मांडा

❑ कला

प्रस्तर मूर्तियाँ

- मोहनजोदड़ो से शाल ओढ़े हुए, सेलखड़ी की बनी संवरे दाढ़ी बाल एवं मोटा अधोराष्ठ वाली मूर्ति का खण्डित शरीर, जिसका एक हाथ टूटा हुआ है।
- मोहनजोदड़ो से भेड़ और हाथी की एक संयुक्त मूर्ति मिली है।

धातु की मूर्तियाँ

- सिंधु के लोग ताँबा और टिन मिलाकर मिश्रित धातु के रूप में काँस्य का निर्माण करना सीख चुके थे; मोहनजोदड़ो से दो ताँबे की मानव मूर्ति तथा भैसा व भेड़ की भी काँस्य मूर्ति मिली है।
- हड़प्पा एवं चंदहुदड़ो से बैलगाड़ी तथा इक्कागाड़ी प्राप्त हुई है।
- कालीबंगा से ताँबा की वृषभ मूर्ति प्राप्त हुयी है।
- कुत्ते की ताम्र मूर्ति लोथल से प्राप्त हुई है।

मिट्टी की मूर्तियाँ

- इसके लिए काँचली मिट्टी से मसाला तैयार किया जाता था।
- नारी मृण्मूर्तियाँ नर से अधिक हैं।
- हरियाणा के बनावली में हल के रूप में मिट्टी का खिलौना मिला है।

मुहर

- लगभग 2000 मुहरें मिल चुकी हैं जिनमें से 1200 सिर्फ मोहनजोदड़ो से मिली हैं।
- मुहरें अधिकांशतः सेलखड़ी से बनी होती थीं जो वृत्ताकार व आयताकार होती थीं।
- इनका उपयोग अनुबंध के दस्तावेज अथवा व्यापारिक वस्तुओं की प्रमाणिकता स्थापित करने के लिए किया जाता था।
- एक मुद्रा में मानव धड़ पर पशु सिर वाला प्राणी व्याघ्र से लड़ रहा है जो गिल्गामेश प्रतीत होता है। सम्भव है कि बह्मा के तीन सिर या रावण के दस सिर की शुरुआत वहाँ से ही हुई होगी। हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो से ताम्र पट्टिकाएँ मिली हैं।
- लोथल और देसलपुर से तांबे की बनी मुहरें मिली हैं

❑ समाज

- शहर और गांव का विभेद, शहर के दुर्ग और रिहायशी इलाके में विभाजन तथा विभिन्न आकार-प्रकार के भवनों का अवशेष एवं कब्रगाहों से मिली विविध सामग्रियों में स्तर भेद के अलावा कलात्मक अवशेषों के अनेक प्रकार जो समाज के आर्थिक स्तर पर स्तरीकरण का स्पष्ट दर्शन कराते हैं।

- पुरोहित वर्ग, प्रशासकीय वर्ग, व्यापारी वर्ग, विविध शिल्पों से संबद्ध सामाजिक वर्ग, श्रमिक अथवा दास वर्ग के विद्यमान रहने का संकेत मिलता है।
- समाज में महिलाओं की भूमिका का स्पष्ट पता नहीं चलता है। उनका कृषि समाज में उत्पादक महत्व रहा होगा।
- शृंगार प्रसाधनों का इस्तेमाल करती होंगी एवं नृत्य तथा ललित कला का भरपूर विकास हुआ होगा।
- देव समूह में भी महिलाओं को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। हो सकता है कि सिंधु एवं उसके निकटवर्ती क्षेत्र मातृ प्रधान रहे होंगे।

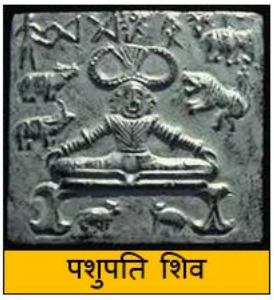
पशुपति शिव

- **भोजन**
- शाकाहार एवं माँसाहार का इस्तेमाल संभवतः किया जाता था। दूध के उपयोग के बारे में स्पष्टतः जानकारी नहीं है (गाय की कोई मूर्ति नहीं मिली। मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, कालीबंगा से अन्नागार मिला है।
- **वस्त्र आभूषण**
- सामान्यतया सूती वस्त्र एवं सर्दियों में ऊनी वस्त्र का भी इस्तेमाल होता था। समृद्ध लोग कढ़ाई किए वस्त्र भी धारण करते थे। ताम्र उस्तरा मिलने से हजामत का संकेत मिलता है। पुनः प्रस्तर मूर्ति की पुरुष की मूँछ पूरी तरह साफ है।
- शृंगार प्रसाधन (नख से शिख तक) जैसे नुपुर, अंगूठी, कमरधनी, चूड़ी, कंगन, बाजूबंद, झुमका आदि मिले हैं। हड़प्पा से सोने के मनके वाले छह लड़ियों का हार मिला है एवं मोहनजोदड़ो से कार्निलियन के मनकों का हार मिला है। इसके लिए ताम्र, सोना, चांदी, सीप, हाथी दांत, लाजवर्द, गोमेद आदि का प्रयोग होता था।
- कंघा का प्रयोग अवश्य होता होगा जैसा कि बाल विन्यास से स्पष्ट होता है।
- **मनोरंजन के साधन**
- पासा खेलना, शिकार, पशुओं एवं पक्षियों का द्वंद्व, मछली मारना, नृत्य आदि से जीवन की एकरसता भंग होती होगी। लोथल से पासा खेलने वाले बोर्ड के नमूने मिले हैं।

❑ धार्मिक जीवन

- सिंधु के नगरीकरण से उसका धर्म अभिन्न रूप से संबद्ध है।
- अभी तक उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर देवगण व पूजा पद्धति का ही संकेत हो पाता है और यहाँ से भी विवादास्पद निष्कर्ष ही निकाले जा सकते हैं।
- हड़प्पाई लोगों के जीवन के अन्य पक्षों के अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि धर्म के पीछे भी उनका दृष्टिकोण उपयोगितावादी रहा होगा
- अंत्येष्टि में मिले शवकलश से पुनर्जन्म का प्रमाण मिलता है।
- हड़प्पाई उत्पादन या अर्थव्यवस्था से संबद्ध पहलुओं से जुड़े विभिन्न अवलम्बों की पूजा की जाती थी।
- इसके अलावा पवित्रा स्नान एवं योग विधि, याज्ञिक पद्धति जो राजस्थान एवं गुजरात से मिली यज्ञ वेदिकाओं से स्पष्ट होता है जहाँ मातृदेवी के समान मूर्तियाँ नहीं मिली हैं।
- जादू एवं टोटके का प्रचलन रहा होगा।
- **मातृपूजा**
- हड़प्पा से प्राप्त एक मुहर से सिर के बल खड़ी एक स्त्री है जिसके योनि से एक वृक्ष उदित हो रहा है (उर्वरा देवी)।
- मुहर के दूसरी तरफ एक पुरुष शस्त्र लिए खड़ा है एवं एक स्त्री हाथ उठाए खड़ी है। कुछ इतिहासकार मानते हैं कि नारी पूजा को राज्याश्रय प्राप्त नहीं था अन्यथा प्रस्तर की नारी मूर्तियाँ भी मिली होती।
- **पुरुष देवता**
- इस कोटि में **पशुपति पूजा** को सर्व महत्वपूर्ण माना जा सकता है मोहनजोदड़ो से प्राप्त लगभग नग्नावस्था में समाधिस्थ देवता पशुपति शिव के रूप में अभिहित किया गया है। जिसके दोनों हाथ चूड़ियों से भरे हैं और इसके दाहिने तरफ एक हाथी और एक व्याघ्र तथा बाई तरफ एक गेंडा एवं एक भैंसा है और सिंहासन के नीचे दो हिरण अंकित हैं। मार्शल ने इसे रुद्रशिव कहा है।
- देवता के उपर सात अक्षरों की एक लिपि है।
- मोहनजोदड़ो से ही एक मूर्ति मिली है जिसके तीन मुख हैं और कुछ इतिहासकारों ने इसकी पहचान त्रिमुखी ब्रह्मा से स्थापित की है।
- इसके अलावा मछली, शंख, चक्र आदि के आधार पर कुछ इतिहासकारों ने विष्णु के समान देवता की सम्भावना की ओर भी संकेत किया है।
- मातृदेवी की भांति पुरुष देवता की उपासना में भी बलि का प्रावधान रहा होगा।
- लिंग एवं योनि की पूजा होती रही होगी।
- लोथल एवं कालीबंगा से अग्निकुंड के साक्ष्य मिले हैं।
- लोथल में एक चबूतरे पर ईंट की बेदी, जली हड्डी, मनके, मृद्भांड एवं राख मिले हैं।
- कालीबंगा में निचले नगर के घरों में भी बेदी मिली हैं।
- **पशु पूजा**
- पशुओं का कृषि एवं मालवाहन में इस्तेमाल ने हड़प्पाइयों की अर्थव्यवस्था में पशुओं को महत्वपूर्ण बना दिया और इसीलिए उन्होंने इनकी पूजा की होगी
- सबसे महत्वपूर्ण पशु कुकुदमान (कुबड वाला सांड) बैल रहा होगा।
- इसके अलावा हाथी, व्याघ्र (सिंह नहीं), गेंडा, घड़ियाल, बकरा, एक शृंगी पशु की पूजा की जाती होगी।
- गोपूजन का प्रमाण नहीं है।
- मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक ताबीज में नाग को चबूतरे पर लेटा हुआ दर्शाया गया है।
- मोहनजोदड़ो से ही मिले एक मोहर में एक देवता के पीछे दोनों तरफ एक-एक सर्प अंकित है।
- वनस्पति पूजा में पीपल सर्वाधिक महत्वपूर्ण रहा होगा।

- जलचक्र एवं स्वास्तिक चिह्न (सूर्य पूजा के प्रमाण) को पवित्र माना जाता होगा।

❑ अन्त्येष्टि संस्कार

- इसकी प्रधान विधियाँ प्रचलित थीं- पूर्ण समाधीकरण (बहावलपुर से), आशिक समाधीकरण, दाह संस्कार।
- कब्रिस्तान नगरों से बाहर बने होते थे।
- हड़प्पा से तीन कक्षों वाला कब्रिस्तान R-37 प्राप्त हुआ है। यहाँ से सेमेट्री-H भी प्राप्त हुआ है।
- हड़प्पा में एक शव को ताबूत में रख कर दफनाया गया है।
- शवों का सिर उत्तर एवं पाँव दक्षिण में रख कर दफनाया जाता था। अपवादस्वरूप रोपड़ में एक-एक शव पश्चिम-पूर्व, लोथल में पूर्व-पश्चिम और कालीबंगा में दक्षिण-उत्तर में दफनाया गया है।
- मोहनजोदड़ो तथा सुरकोटदा से कलश शवाधान का प्रमाण।
- कालीबंगा से एक और लोथल से तीन युग्म शवाधान का प्रमाण मिलता है।
- रोपड़ में एक कब्र में मालिक के साथ कुत्ते के दफनाए जाने का साक्ष्य मिला है।
- लोथल से ममी की आकृति प्राप्त हुई है।
- मोहनजोदड़ो से 42 मानव कंकाल मिले हैं। केनेडी की मान्यता है कि इसमें सिर्फ एक की मृत्यु गम्भीर चोट से और शेष की मृत्यु किसी अन्य कारण से हुई है। इन शवों का यथावत् अंतिम संस्कार नहीं हुआ है।
- राजनैतिक संगठन स्टुअर्ट पिग्गट ने हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो को सिंधु सभ्यता की जुड़वा राजधानी माना है।

कुछ प्रमुख धार्मिक प्रतीक

प्रतीक	महत्त्व
एक श्रृंग	शिव का रूप
स्वास्तिक	सूर्य उपासना का प्रतीक
बैल	शिव का वाहन
तावीज	भूत-प्रेत से सुरक्षा हेतु

योगी शिव	योगीश्वर
बकरा	बलि के लिए
नाग	पूजा के लिए
भैसा	शत्रुओं पर देवताओं की विजय का प्रतीक

विविध पुरातात्विक स्थलों से प्राप्त विशिष्ट सामग्री

हड़प्पा –

- **नदी -** रावी
- **खोजकर्ता -** दयाराम साहनी
- **वर्तमान स्थिति -** मोन्टगोमरी जिला (वर्तमान नाम शाहीवाल) पंजाब, पाकिस्तान
- **खोज का वर्ष** – 1923-25 ई.
- **अन्य तथ्य** –
  - प्रथम उल्लेख चार्ल्स मेन्सन द्वारा 1826 ई. में किया गया।
  - अलेक्जेन्डर कनिंघम ने यहाँ सभ्यता होने का निष्कर्ष निकाला।
  - तदोपरान्त 1926-27 ई. से 1933-34 ई. तक माधवस्वरूप वत्स एवं 1946 ई. में मार्टीमर ह्वीलर के निर्देशन में उत्खनन कार्य हुआ।
  - यह स्थल 5 किमी. की परिधि में बसा हुआ था, जो सैंधव सभ्यता का सबसे पहला ज्ञात स्थल/नगर है।
  - सर्वप्रथम 1826 ई. में चार्ल्स मेसन ने हड़प्पा के टीलों का उल्लेख किया था।
  - 1856 में कराची- लाहौर रेल लाइन, बिछाने के क्रम में यहां की ईंटों के प्रयोग करने का प्रयास किया गया तभी कुछ पुरावस्तुएँ प्राप्त हुई जिसे तत्कालीन और प्रथम सर्वेयर जनरल कनिंघम के पास भेज दिया गया। हालांकि इस समय तक ईंट चुराने वालों ने इसकी संरचना को काफी नष्ट कर दिया था।
- **उत्खनन से प्राप्त प्रमुख साक्ष्य**
  - हड़प्पा की एक मूर्ति में योनि से एक पौधा निकलता दिखाया गया है (उर्वरा देवी)।
  - शहर पश्चिमी दुर्ग और पूर्वी रिहायशी इलाका में विभाजित था। इसका दुर्ग चारों तरफ दीवार से घिरा हुआ था।
  - हड़प्पा के अधिकतर शहरो का साक्ष्य उत्तरी भाग से मिला है।
  - यहीं से अन्नागार मजदूरों के आवास आदि मिले हैं। यहाँ अन्नागार दुर्ग से बाहर अवस्थित है।
  - हड़प्पा से नृत्य मुद्रा वाली नवयुवक की प्रस्तर मूर्ति (काले पत्थर की) मिली है, जिसकी तुलना नटराज से की जाती है।
  - मोहनजोदड़ो के विपरीत हड़प्पा में पुरुष मूर्तियाँ अधिक हैं। सांप दबाए गरुड़ के चित्रण काली मोहर तथा मृद्भांड पर अंकित बच्चे को दूध पिलाती हिरनी प्राप्त हुई है।
  - आर-37-डी, कुल 57 कब्र मिले हैं। एक कब्र लकड़ी के ताबूत मिला है।

मोहनजोदड़ो

- **नदी -** सिन्धु
- **खोजकर्ता -** आर. डी. बनर्जी
- **वर्तमान स्थिति -** मोहनजोदड़ो, सिंध के लरकाना जिले में स्थित (पाकिस्तान)
- **खोज का वर्ष** – 1922 ई.
- **अन्य तथ्य** –
  - इसका अर्थ है मृतकों का टीला।
  - मोहनजोदड़ो के दुर्ग टीला को स्तूप टीला (कुषाणकालीन) कहा जाता है।
- **उत्खनन से प्राप्त प्रमुख साक्ष्य**
  - पवित्र स्नानागार / अन्नागार / सभाभवन / पुरोहित आवास भी यहां से प्राप्त हुए हैं।
  - अन्नागार मोहनजोदड़ो का सबसे बड़ा भवन है।
  - मोहनजोदड़ो की प्रमुख विशेषता उसकी सड़कें थीं।
  - मुख्य सड़क लगभग 9.15 मी. चौड़ी थीं, जिसे राजपथ की संज्ञा दी गई है।
  - सड़के सीधी दिशा में एक-दूसरे को समकोण पर काटती हुई नगर को अनेक वर्गाकार अथवा चतुर्भुजाकार खंडों में विभाजित करती थीं।
  - सड़कों के एक-दूसरे को समकोण पर काटने को "ऑक्सफोर्ड सर्कस" नाम दिया गया है।
  - प्रत्येक सड़क तथा गली के दोनों ओर पक्की नालियां बनाई गई थीं।
  - किसी-किसी स्थान पर बड़ी नालियों के बीच में गड्ढे भी बना दिए जाते थे, जिनमें नाली का कूड़ा- करकट एकत्र होता था।
  - नालियां ढकी होती थीं।
  - वृहद् स्नानागार (फर्श पक्का जिप्सम बिटुमिन का प्रयोग) के केन्द्रीय भाग में जलकुंड एवं उत्तर-दक्षिण में सीढ़ी है।
  - जलाशय के दक्षिणी-पश्चिमी छोर पर नाली है।
  - तीन ओर बरामदे तथा कई कमरे हैं। एक कमरे में पानी भरने के लिए कुँआ है।
  - काँस्य की नृत्य करती हुई नर्तकी की मूर्ति मिली। मोहनजोदड़ो से प्राप्त प्रसिद्ध नर्तकी' की कांस्य प्रतिमा पूर्णतः नग्न है। दायीं भुजा कमर पर टिकाए तथा कंधे तक चूड़ियों से भरी बायीं भुजा सीधी ओर लटकी है। यह ढलाई की लुप्त सिक्थ विधि (मधूच्छिष्ट) से निर्मित है।
  - मोहनजोदड़ो से कोई कब्रिस्तान नहीं मिला है, लेकिन 21 कंकाल मिले हैं- 14 घरों से, 6 मुख्य गली से, 1 दूसरी गली से।
  - यहाँ से हाथी का कपाल खंड प्राप्त हुआ है।

चान्हूदड़ो

- **नदी -** सिन्धु
- **खोजकर्ता -** गोपाल मजूमदार
- **वर्तमान स्थिति -** सिंध (पाकिस्तान)
- **खोज का वर्ष** – 1931 ई.
- **अन्य तथ्य** –
  - यहाँ से हड़प्पाकालीन तथा उत्तर हड़प्पा कालीन अवशेष मिले हैं।
  - मुख्यतः दस्तकार एवं कारीगर लोग रहते थे।
  - प्रमुख दस्तकारी कार्य है - मनका बनाना, हड्डी की वस्तु बनाना और मुद्रा बनाना।
- **उत्खनन से प्राप्त प्रमुख साक्ष्य**
  - ताँबे एवं काँसे के औजार भी मिले हैं।
  - **लिपिस्टिक, सुरमा ,उस्तरा** और **कंघा** का प्रमाण
  - पकी मिट्टी की पाइपवाली नालियाँ मिली हैं।
  - एकमात्र स्थल जहां से वक्राकार ईंटे मिली हैं।
  - एक मात्र नगर जहाँ दुर्ग नहीं हैं।

कालीबंगा

- **नदी -** घग्गर नदी
- **खोजकर्ता -** अमलानंद घोष
- **वर्तमान स्थिति -** राजस्थान के गंगानगर जिले में
- **खोज का वर्ष** – 1952 ई.
- **अन्य तथ्य** –
  - इसका अर्थ है काले रंग की चूड़ियाँ
  - दुर्ग एवं बस्ती दोनों अलग-अलग सुरक्षा दीवारों से घिरे हैं।
  - यहाँ से पूर्व हड़प्पा सभ्यता का साक्ष्य भी मिलता है।
  - जल निकास प्रणाली नहीं है, लेकिन लकड़ी के पाइपवाली नालियाँ मिली हैं।
  - भूकंप आने का प्राचीनतम् साक्ष्य मिलता है।
- **उत्खनन से प्राप्त प्रमुख साक्ष्य**
  - घर कच्ची ईंटों के बने हैं।
  - अलंकृत ईंट के भी प्रमाण मिलते हैं।
  - कच्ची ईंट के चबूतरे पर सात हवन कुंड तथा अग्नि वेदियां मिली है
  - दीवारो पर पलस्तर के साक्ष्य मिले हैं।
  - **जुते हुए खेत** का साक्ष्य (बस्ती के बाहर) मिला।
  - एक साथ दो फसल (चना के साथ सरसो) बोये जाने के साक्ष्य मिले हैं।
  - ऊँट की हड्डियाँ यहीं से मिली हैं।
  - सम्भवतः यहाँ मातृदेवी की उपासना लोकप्रिय नहीं थी।
  - बेलनाकार मुहरें मिली हैं जो मेसोपोटामिया के मुहर के समान हैं।
  - यहां से जलकपाली या मस्तिष्क शोधन बीमारी के प्रमाण मिले हैं।

लोथल

- **नदी -** भोगवा नदी
- **खोजकर्ता -** एस. आर. राव
- **वर्तमान स्थिति -** गुजरात के अहमदाबाद जिले में
- **खोज का वर्ष** – 1955-62 ई.

- **अन्य तथ्य** –
  - यहाँ पकी ईंटों से बना 214 x 36 मीटर का गोदीबाड़ा का जो साक्ष्य मिला है
  - नगर योजना हड़प्पा, मोहनजोदड़ो के समान है। इसलिए इसे लघु हड़प्पा या लघु मोहनजोदड़ो भी कहा जाता हैं।
- **उत्खनन से प्राप्त प्रमुख साक्ष्य**
  - यहाँ से सोने की हार, सेलखड़ी की मुहर, सीप एवं तांबे की चूड़ियाँ तथा मिट्टी के जार मिले है।
  - अग्निवेदिका के भी साक्ष्य मिले है।
  - फारस की एक मुहर मिली हैं।
  - अनाज पीसने की चक्की तथा चावल के साक्ष्य मिले हैं।
  - युगल शवाधान भी मिले हैं।
  - एक मृद्भांड पर चालाक लोमड़ी की कथा का उदाहरण मिलता है।

❑ **बनावली**

- **नदी -** रंगोई नाला
- **खोजकर्ता** – आर. एस. बिष्ट
- **वर्तमान स्थिति -** हरियाणा के हिसार जिले में
- **खोज का वर्ष** – 1955-62 ई.
- **अन्य तथ्य** –
  - यहाँ से सभ्यता के तीनों स्तर प्रकाश में आये हैं।
  - दुर्ग तथा निचले नगर में विभाजन नहीं, एक ही प्राचीरयुक्त घेरा है।
- **उत्खनन से प्राप्त प्रमुख साक्ष्य**
  - यहाँ से अग्नि वेदिका, मिट्टी का बना हल तथा जौ के दाने का साक्ष्य मिला है।
  - सड़कें न तो सीधी मिलती हैं और न ही एक दूसरे को समकोण पर काटती हैं।
  - नाली पद्धति का अभाव है।
  - यहाँ से चंडी के दो मुकुट भी मिले हैं।
  - नगर योजना शतरंज के बोर्ड या जाल के आकार का है।

❑ **रोपड़**

- **नदी -** सतलज
- **खोजकर्ता** – बी.बी.लाल
- **वर्तमान स्थिति -** पंजाब में
- **खोज का वर्ष** – 1950-55
- **अन्य तथ्य** –
  - स्वतंत्रता के पश्चात् सर्वप्रथम यहीं उत्खनन हुआ।
  - यहाँ से हड़प्पा पूर्व और हड़प्पा कालीन अवशेष मिले हैं।
  - उत्तर-पश्चिम भाग में कई समाधि स्थान मिले हैं।
  - शव को अण्डाकार गड्ढों में दफनाया जाता था।
- **उत्खनन से प्राप्त प्रमुख साक्ष्य**
  - कब्र से पके मिट्टी के गहने, शंख की चूड़ी, गोमेद के मनके तथा ताँबे की अंगूठी मिली है।
  - यहां से एक कब्रगाह में आदमी के साथ कुत्ते को दफनाये जाने का साक्ष्य मिला है।

❑ **सुतकागेंडोर**

- **नदी -** दाश्क नदी
- **खोजकर्ता** – ऑरेल स्टाइन
- **वर्तमान स्थिति -** बलूचिस्तान (पकिस्तान)
- **खोज का वर्ष** – 1927
- **अन्य तथ्य** –
  - मकरान समुद्र तट पर, दाश्क नदी के मुहाने पर स्थित है।
  - यह सभ्यता का सबसे पश्चिमी स्थल है।
  - यहाँ का दुर्ग एक प्राकृतिक चट्टान पर है जिसके चारों ओर तराशे पत्थरों की दीवार मिली है।
  - दीवार में बुर्ज तथा द्वार हैं।
- **उत्खनन से प्राप्त प्रमुख साक्ष्य**
  - यहाँ से मनुष्य की अस्थि, राख से भरा वर्तन, ताम्र निर्मित बाणाग्र तथा कुल्हाड़ी मिली है।

❑ **कोटदीजी**

- **नदी -** सिंधु
- **खोजकर्ता** – फजल अहमद
- **वर्तमान स्थिति -** सिंध प्रांत का खैरपुर पाकिस्तान
- **खोज का वर्ष** – 1953
- **अन्य तथ्य** –
  - मोहनजोदड़ो से 50 किमी. पूर्व में सिंधु के बाएं तट पर स्थित है।
  - यहाँ से प्राक् सिंधु तथा सिंधुकालीन सभ्यता के प्रमाण मिले हैं।
- **उत्खनन से प्राप्त प्रमुख साक्ष्य**
  - पत्थर के नींव पर बने मकान के प्रमाण मिले (मकान मिट्टी के) हैं।

❑ **माण्डा**

- **नदी -** चिनाब
- **खोजकर्ता** – जेपी जोशी
- **वर्तमान स्थिति -** जम्मू कश्मीर
- **खोज का वर्ष –1982**
- **अन्य तथ्य** –
  - चिनाब के दक्षिणी किनारे पर, सबसे उत्तरी स्थल है।
  - जम्मू-कश्मीर के अखनूर के पास है।
  - माण्डा में तीन सांस्कृतिक स्तर- प्राक् सैंधव, विकसित सैंधव तथा उत्तर सैंधव मिले हैं।
- **उत्खनन से प्राप्त प्रमुख साक्ष्य**
  - हड़प्पाकालीन मृद्भांड तथा मिट्टी के ठीकरे
  - चर्ट ब्लेड , हड्डी के नुकीले बाणाग्र , कांस्य निर्मित पेंचदार पिन , एक आधी-अधूरी मुहर के प्रमाण मिले हैं।

❑ **सुरकोटदा**

- **नदी -** सिन्ध
- **खोजकर्ता** – जगपति जोशी
- **वर्तमान स्थिति -** पाकिस्तान के सिन्ध प्रांत (कच्छ)
- **खोज का वर्ष** – 1964
- **अन्य तथ्य** –
  - कच्छ में अवस्थित है।
- **उत्खनन से प्राप्त प्रमुख साक्ष्य**
  - यहाँ पर बड़ी चट्टान से ढकी एक कब्र मिली है।
  - यहाँ से घोड़े की अस्थियाँ प्राप्त हुई हैं।
  - यहाँ से मिट्टी का पहियेदार बैल मिला है।

❑ **धौलावीरा**

- **नदी -** मानसर एवं मानहर नदियों के बीच
- **खोजकर्ता** – आर. एस. बिष्ट
- **वर्तमान स्थिति** – कच्छ, गुजरात
- **खोज का वर्ष** – 1990-91
- **अन्य तथ्य** –
  - यह गुजरात कच्छ के रन में स्थित है।
  - नगर तीन भागों दुर्ग, मध्यम एवं निचला नगर में विभाजित है।
  - यह नगर आयताकार आकार का है।
  - यहाँ से रेन वाटर हार्वेस्टिंग के साक्ष्य मिले हैं।
- **उत्खनन से प्राप्त प्रमुख साक्ष्य**
  - मध्यवर्ती भाग में तालाब तथा स्टेडियम के प्रमाण मिले हैं।
  - यहाँ की लिपि के वर्ण काफी बड़े हैं इसके साक्ष्य दस अक्षरों वाले पट से प्राप्त होते है।
  - यहाँ से घोड़े की कलाकृति मिली है।
  - बड़ी संख्या में पॉलिशदार श्वेत पाषाण मिले हैं।

❑ **रंगपुर**

- **नदी -** भादर नदी
- **खोजकर्ता** – एस. आर. राव

- **वर्तमान स्थिति -** काठियावाड़ में
- **खोज का वर्ष** – 1953-56
- **अन्य तथ्य** –
  - काठियावाड़ में भादर नदी के समीप स्थित है।
  - यहाँ से उत्तर हड़प्पा संस्कृति का साक्ष्य मिला है।
- **उत्खनन से प्राप्त प्रमुख साक्ष्य**
  - यहाँ से मातृदेवी की मूर्तियाँ और मुद्राएँ नहीं मिली हैं।
  - धान की भूसी तथा बाजरे का साक्ष्य मिले हैं।

❑ **दायमाबाद**

- **नदी -** प्रवरा नदी
- **खोजकर्ता** – एस. एन. देशपांडे
- **वर्तमान स्थिति -** अहमदनगर
- **खोज का वर्ष** – 1958-59
- **अन्य तथ्य** –
  - अहमदनगर जिले में प्रवरा नदी के बायें किनारे पर स्थित दक्षिणतम स्थल है।
- **उत्खनन से प्राप्त प्रमुख साक्ष्य**
  - सैंधव लिपि की एक मुहर
  - दो सींगों की आकृति युक्त बर्तन
  - युवा पुरुष का शवाघान, जिसकी कब्र के उत्तर की ओर एक पत्थर रखा गया है।
  - यहाँ से काँसे का रथ मिला है जिसमें दो बैल एवं एक गाड़ीवान भी है।

❑ **राखीगढ़ी**

- **नदी -** प्रवरा नदी
- **खोजकर्ता** – सूरजभान और आचार्य भगवान देव
- **वर्तमान स्थिति** - हरयाणा
- **खोज का वर्ष** – 1969 ई.
- **अन्य तथ्य** –
  - भारत में स्थित राखीगढ़ी सैंधव सभ्यता का सबसे बड़ा तथा विस्तृत स्थल है।
  - जिसका क्षेत्रफल लगभग 350 हेक्टेयर है।
- **उत्खनन से प्राप्त प्रमुख साक्ष्य**
  - यहां से हड़प्पा सभ्यता की तीनों अवस्थाएं प्राप्त होती हैं। यहां से तांबे के उपकरण तथा सैंधव लिपि में अंकित एक मुहर मिली है।

सिन्धु सभ्यता का पतन

- सिंधु घाटी सभ्यता (IVC) सबसे शुरुआती और सबसे उन्नत सभ्यताओं में से एक थी। यह लगभग 2600 ईसा पूर्व से 1900 ईसा पूर्व में आधुनिक पाकिस्तान और उत्तर-पश्चिम भारत के क्षेत्र में विस्तृत थी। आगे चलकर इस सभ्यता का पतन हो गया था।

❑ **सिंधु घाटी सभ्यता के पतन के कारक:**

- **पर्यावरणीय कारक:**
  - सिंधु घाटी सभ्यता सिंधु नदी के उपजाऊ क्षेत्र में फली-फूली थी। हालाँकि जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक आपदाओं की इसके पतन में महत्त्वपूर्ण भूमिका थी।
  - उदाहरण के लिये संभावित रूप से लंबे समय तक सूखे की अवधि यहाँ पर जल और भोजन सहित प्राकृतिक संसाधनों की कमी का कारण बनी होगी।
  - इसी तरह से भूकंप और बाढ़ से बुनियादी ढाँचे को नुकसान पहुँचने के साथ व्यापार नेटवर्क भी बाधित हुआ होगा।
  - इसके अलावा सिंधु नदी के मार्ग में परिवर्तन से मोहनजोदड़ो जैसे कुछ शहरों का पतन हुआ होगा।
  - इसके अलावा सरस्वती नदी के सूखने (जो सिंधु घाटी सभ्यता के लिये जल के मुख्य स्रोतों में से एक थी) से इस सभ्यता का पतन हुआ होगा।
  - जल संसाधनों की कमी से कृषि (अर्थव्यवस्था का आधार) प्रभावित हुई होगी।
- **आर्थिक कारक:**
  - सिंधु घाटी सभ्यता सुविकसित व्यापार और वाणिज्य प्रणाली वाली थी जिसमें समकालीन अन्य सभ्यताओं के साथ लंबी दूरी का व्यापार होता था।
  - हालाँकि आर्थिक कारक जैसे कि एक ही फसल पर अत्यधिक निर्भरता, व्यापार नेटवर्क में गिरावट और नए व्यापारिक मार्गों के उद्भव ने इस सभ्यता की आर्थिक स्थिरता को प्रभावित किया होगा।
  - इसके अलावा मृदा क्षरण या पर्यावरणीय कारकों से कृषि उत्पादकता में गिरावट से खादान्न की कमी होने के साथ आर्थिक गिरावट हुई होगी।
  - उदाहरण के लिये सिंधु घाटी सभ्यता और मेसोपोटामिया के बीच व्यापारिक नेटवर्क की गिरावट (जो इसके प्रमुख व्यापारिक भागीदारों में से एक था) ने इसके पतन में योगदान दिया होगा।
  - व्यापारिक नेटवर्क के पतन के कारण स्पष्ट नहीं हैं लेकिन ये राजनीतिक या आर्थिक कारकों से संबंधित हो सकते हैं।
- **सामाजिक कारक:**
  - सिंधु घाटी सभ्यता की पदानुक्रमिक सामाजिक संरचना थी। हालाँकि यह प्रणाली समय के साथ कम प्रभावी हुई होगी। परिष्कृत जल निकासी और सीवेज प्रणाली के साथ, सिंधु घाटी सभ्यता के शहर अत्यधिक योजनाबद्ध और संगठित थे।
  - हालांकि इस सभ्यता के अंत में बुनियादी ढाँचा का पतन होना शुरू हो गया था। ऐसा संसाधनों एवं जनशक्ति या प्रभावी नेतृत्व की कमी के कारण हुआ होगा।
- सिंधु घाटी सभ्यता का पतन संभवतः पर्यावरणीय, भौगोलिक, आर्थिक और सामाजिक कारकों से हुआ था। नदियों का सूखना, प्राकृतिक आपदाएँ, व्यापार नेटवर्क में गिरावट और सामाजिक एवं आर्थिक बुनियादी ढाँचे की गिरावट ने इस सभ्यता के पतन में भूमिका निभाई थी।
- हालाँकि अभी भी सिंधु घाटी सभ्यता के पतन के बारे में बहुत कुछ अज्ञात है लेकिन इसके पतन का अध्ययन करने से सभ्यताओं के उत्थान और पतन में योगदान करने वाले कारकों के संबंध में बहुमूल्य अंतर्दृष्टि मिल सकती है।

पतन के सन्दर्भ में विद्वानों के मत

विद्वान्	मत (कारण)
गार्डन चाइलड, ह्वीलर एवं स्टुअर्ट पिग्गट	बाह्य एवं आर्यों के आक्रमण
जॉन मार्शल, मैके	बाढ़
ओरल स्टीन, ए. एन घोष	जलवायु परिवर्तन
एम. आर साहनी, राइक्स, लैम्ब्रिक, डेल्स	भू-तात्विक परिवर्तन
जॉन मार्शल	प्रशासनिक शिथिलता, भूकम्प
के.यू.आर. कनेडी	महामारी
शाक्य एवं डेल्स, डी डी कौशाम्बी	सामूहिक हत्या, आग लगाकर
लैम्बिक	नदियों का मार्ग परिवर्तन
केयर सर्विस	पारिस्थितिकी असन्तुलन

सिन्धु सभ्यता की देन

- सिन्धु सभ्यता में प्रचलित अनेक चीजें ऐतिहासिक काल में भी निरन्तर जारी रहीं एवं कुछ का प्रचलन वर्तमान में भी है।

❑ **इसके कुछ प्रमुख उदाहरण है-**

- दशमलव पद्धति पर आधारित माप-तौल प्रणाली
- नगर नियोजन तथा नालियों की व्यवस्था
- बहुदेववाद का प्रचलन
- मातृदेवी की पूजा, शिव पूजा, वृक्ष पूजा, पशु पूजा, लिंग एवं योनि पूजा
- योग का प्रचलन
- जल का धार्मिक महत्त्व
- स्वास्तिक, चक्र, प्रतीक, तावीज, तन्त्र-मन्त्र का प्रयोग
- आभूषणो का प्रयोग
- बहुफसली कृषि व्यवस्था
- अग्नि पूजा या यज्ञ
- मुहरों का उपयोग
- इक्कागाड़ी एवं बैलगाड़ी
- आन्तरिक एवं बाह्य व्यापार आदि

वैदिक संस्कृति (1500-600)

- सिंधु सभ्यता के पतन के पश्चात भारतीय उपमहाद्वीप में एक नवीन संस्कृति का विकास हुआ। इसके विषय में हमें जानकारी 'वेदो' से प्राप्त होती है। अतः इस काल को 'वैदिक काल' या 'वैदिक संस्कृति' की संज्ञा दी जाती है।इसे 'आर्य संस्कृति' भी कहा जाता हैइ क्योंकि इसके प्रवर्तक आर्य लोग थे।
- हड़प्पा संस्कृति के पतन के लगभग 250 वर्षो बाद एक नवीन संस्कृति का उदय हुआ जिसे वैदिक संस्कृति कहते हैं।
- वैदिक संस्कृति की जानकारी का मुख्या श्रोत वेद हैं वेदो के रचयिता स्वयं को आर्य कहते थे। आर्य कोई जाति का शब्द नहीं बल्कि भाषा का शब्द हैं जिसका अर्थ श्रेष्ठ होता हैं।
- अध्ययन की सुविधा हेतु इस काल को राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक प्रवृत्तियों में हुए परिवर्तनों के आधार पर दो भागों में विभाजित किया गया है-
  - ऋग्वैदिक काल या पूर्ववैदिक काल (1500 ई. पू. से 1000 ई. पू. तक)
  - उत्तर वैदिक काल (1000 ई. पू. से 600 ई. पू. तक)

ऋग्वैदिक काल या पूर्ववैदिक काल

- वैदिक काल (लगभग 1500-600 ईसा पूर्व) को ऋग्वेदिक (लगभग 1500-1000 ईसा पूर्व) और उत्तर वैदिक (लगभग 1000-600 ईसा पूर्व) काल में विभाजित किया गया है, जिसमें सामाजिक और आर्थिक दोनों क्षेत्रों में महत्वपूर्ण बदलाव हुए।
- वैदिक कालीन भारतीय इतिहास जानने के दो प्रमुख स्रोत हैं-
  - पुरातात्विक स्रोत
  - साहित्यिक स्रोत

पुरातात्विक साक्ष्य

- वैदिक संस्कृति के पुरातात्विक साक्ष्य अति न्यून हैं। यद्यपि विद्वानों द्वारा विभिन्न मृद्भांडीय परंपराओं को इससे जोड़ने का प्रयास किया गया है।

ऋग्वैदिक पुरातात्विक साक्ष्य

- **मृद्भांड-**काले एवं लाल , ताम्र संचय , गेरूवर्णी मृद्भांड
- **गेरूवर्णी मृद्भांड**
  - गंगा-यमुना के दोआब में अधिक पाए गए हैं, जबकि सप्त सैंधव क्षेत्र में इनकी संख्या बहुत कम है।
  - इनका काल 2000-1500 ई.पू. के मध्य अनुमानित है।
  - खुवाई के स्थलों से मिली कुछ सामग्री जैसे कि पंजाब के तीन स्थलों एवं भगवानपुरा में 13 कमरों वाला एक मकान।
- **अभिलेख**
  - **बोगजकोई (मितन्नी) अभिलेख (1400 ई.पूर्व) -** इसमें हित्ती और मितन्नी राजा के मध्य हुई संधि के साक्ष्य के रूप में इन्द्र, मित्र, वरुण, नासात्य का उल्लेख जो वैदिक देवता के रूप में प्रचलित हुए।

उत्तरवैदिक पुरातात्विक साक्ष्य

- **चित्रित धूसर मृद्भांड**
  - ये मृद्भांड लौह अवस्था के सूचक हैं। इनका काल 1200-600 ई.पू. के बीच अनुमानित है।
- **उत्तरी काली पॉलिश वाले मृद्भांड**
  - यह विकसित लौह संस्कृति के परिचायक हैं। इनका संबंध मुख्यतया मौर्य युग से स्थापित किया जाता है।

Note:-

आर्य का मूल स्थान

- आर्य मूलतः कहा के निवासी थे इस विषय में विद्वानों में मतभेद हैं।
- कुछ विद्वान् इन्हे आर्कटिक क्षेत्र का मानते हैं तो अधिकतर विद्वान् इन्हे मध्य एशिया और भारतीय मूल का मानते हैं ।
- जर्मनी के इतिहासकार मैक्समूलर ने मध्य एशिया का स्वीकार किया हैं।
- बाल गंगाधर तिलक ने अपनी पुस्तक **"दी आर्कटिक होम ऑफ़ दा आयरन"** में आर्कटिक या उत्तरी ध्रुव प्रदेश का निवासी बताया।

आर्यो का निवास भारत	
भारत समर्थक विद्वान	**मूल निवास-स्थान**
डी.एस. त्रिवेदी	मुल्तान स्थित देविका
पं. गंगानाथ झा	ब्रह्मर्षि देश
एल.डी.कल्ल	कश्मीर या हिमालय
अविनाश चन्द्र	सप्तसैन्धव प्रदेश
आर्यो का निवास यूरोप	
यूरोप समर्थक विद्वान	**मूल निवास स्थान**
पेनका व हर्ट	जर्मनी
गार्डन चाइल्ड, पीक एवं नेहरिग	दक्षिणी रूस
पी. गाइल्स	हंगरी एवं डेन्यूब घाटी
डॉ. सम्पूर्णानन्द	आल्पस पर्वत के निकट यूरेशिया
आर्यो का निवास एशिया	
विद्वान	**मूल निवास-स्थान**
एडवर्ड मेयर	पामीर का पठार
जे.जी. रोड्स	बैक्ट्रिया
मैक्समूलर	मध्यएशिया
ब्रेन्डेस्टीन	यूराल पर्वत के दक्षिण में स्थित घास का मैदान

- **भारत में आर्यों का निवास स्थान**
  - ऋग्वैदिक आर्यों का निवास स्थान सप्त सैंधव क्षेत्र था।
  - सप्त सैंधव क्षेत्र की प्रमुख नदियों के प्राचीन तथा वर्तमान नाम इस प्रकार हैं-

प्राचीन नाम	वर्तमान नाम
सिंधु	**सिंध**
अस्किनी	चिनाब
शतुद्रि	सतलुज
वितस्ता	झेलम
विपासा	ब्यास
परुष्णी	रावी
सुरसती	सरस्वती
सदानीरा	गंडक
गोमती	गोमल
सुवास्तु	स्वात
कुभा	काबुल
दृषद्वती	घग्घर
क्रुभु	कुर्रम

❑ साहित्यिक साक्ष्य

- साहित्यिक स्रोतों में वेद ब्राह्मण , आरण्यक ,उपनिषद को शामिल किया जाता हैं।
- **वेद**
  - वेदो में सूक्तों, प्रार्थनाओं, स्तुतियों, मंत्रों-तंत्रों तथा यज्ञ संबंधी सूत्रों का संग्रह हैं।
  - भारतीय साहित्य में वेद सर्वाधिक प्राचीन हैं।
  - वेद का अर्थ 'ज्ञान' है।
  - वेदो के संकलनकर्ता-महर्षि कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास हैं।
  - वेदों को संहिता भी कहा जाता है, क्योंकि यह वेदव्यास द्वारा संकलित किए गए थे।
  - वेदों का एक नाम 'श्रुति' भी है, क्योंकि संकलित किए जाने से पूर्व यह गुरु-शिष्य परंपरा में सुनाए/कण्ठस्थ कराए जाते थे।
  - **वेदों की संख्या चार है-** ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद ,अथर्ववेद
  - **ऋग्वेद**
  - इसमें देवताओं की स्तुति में गाए गए मंत्रों का संग्रह है।
  - इसमें कुल 10 मंडल, 1028 सूक्त है।
  - 105523 मंत्र अथवा ऋचा या श्लोक हैं।
  - **ऋग्वेद के तीन पाठ मिलते हैं-**
    - **साकल-** इसका उल्लेख ऋग्वेद के 10वें मंडल में मिलता है।
    - **बालखिल्य-** इसका उल्लेख ऋग्वेद के 8वें मंडल में मिलता है। यह ऋग्वेद संहिता का परिशिष्ट है।
    - **वाष्कल-** दस मंडलों में दूसरे से सातवें मंडल तक प्राचीन माने जाते हैं। इन्हें वंश मंडल भी कहा जाता है, जबकि 1, 8, 9 तथा 10वां मंडल बाद में जोड़े गए माने जाते हैं।
  - **ऋग्वेद की विदुषी स्त्रियां** – लोपामुद्रा (विदर्भराज की कन्या तथा अगस्त्य ऋषि की पत्नी), शची, घोषा, पौलोमी, आपाला, विश्ववारा, मुद्गलानी, विशपला तथा काक्षावृति।

ऋग्वेद के विभिन्न मंडल		
मंडल	रचयिता	अन्य तथ्य
प्रथम	ऋषि मधुच्छंदा मेधातिथि एवं दीर्घतमा	
द्वितीय	गृत्समद	
तृतीय	विश्वामित्र	गायत्री मंत्र
चतुर्थ	वामदेव	कृषि से संबंधित मंत्र
पंचम्	अत्रि	
षष्ठम्	भारद्वाज	
सप्तम्	वशिष्ठ	वरुण देव को समर्पित है, दाशराज्ञ युद्ध का वर्णन
अष्टम्	कण्व एवं अंगिरस	
नवम्	अंगिरस व कश्यप	सोम को समर्पित
दशम्	विमदा, इन्द्र, शची, महासुक्ता	पुरुष सूक्त, हिरण्यगर्भ सूक्त

  - **ऋग्वेद में देवियां** - इंद्राणी, रोदसी, श्रद्धा, धृति, अदिति, उषा आदि हैं।
  - ऋग्वेद के दशम मंडल (पुरुष सूक्त) में चातुर्वर्ण्य समाज की कल्पना मिलती है।
  - इसमें आदि पुरुष के मुख से ब्राह्मण, भुजा से क्षत्रिय, जंघा से वैश्य एवं पैर से शूद्र वर्ण की उत्पत्ति का उल्लेख मिलता है।
  - ऋग्वेद वेदपाठी ब्राह्मणों की तुलना बरसाती मेंढ़कों से करता है।
  - विवाह को एक संस्था के रूप में विकसित करने का श्रेय ऋषि दीर्घतमा को जाता है।
  - ऋग्वेद में 'नियोग' तथा 'विधवा विवाह' का आभास मिलता है।
  - ऋग्वेद में विवाह संबंधी अनुष्ठान दसवें मंडल के सूर्य सूक्त में मिलता है।
  - ऋग्वेद का वेद संबंधी कार्य करने वाला व्यक्ति 'होता' कहलाता था। इसे होतृवेद भी कहा जाता है।
  - 'होता' का कार्य देवताओं को यज्ञ में आहूत करना तथा ऋचा-पाठ करते हुए स्तुति करना था।
  - **ऋग्वेद के ब्राह्मण** - ऐतरेय ब्राह्मण, कोषीतकी ब्राह्मण
    - ऐतरेय; कौशीतकी अथवा शांखायन ब्राह्मण ऋग्वेद से संबंधित हैं।
    - ऐतरेय ब्राह्मण में राज्य एवं राजा की उत्पत्ति संबंधी सिद्धांत दिया गया है।
    - ऐतरेय ब्राह्मण में विवरण - राजसूय यज्ञ , समुद्र एवं चतुर्युग (सत्, त्रेता, द्वापर, कलि)
    - ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार, पूर्व दिशा के राजा 'सम्राट', दक्षिण दिशा के राजा 'भोज', पश्चिम दिशा के राजा 'स्वराट' एवं उत्तर दिशा के राजा 'विराट' व मध्य क्षेत्र के शासक "राजा" कहलाते थे।
    - चारों दिशाओं को विजित करने वाला शासक 'एकराट' या 'सार्वभौम' कहलाता था।
    - ऐतरेय ब्राह्मण में "चरैवति-चरैवति" का सिद्धांत मिलता है।
  - **ऋग्वेद के उपनिषद:-** ऐतरेय उपनिषद, कोषीतकी उपनिषद
    - ऐतरेय ब्राह्मण का एक भाग है।
    - कौशीतकी ब्राह्मण के अंत के आरण्यक भाग को 'कौशीतिकी आरण्यक' एवं 'कौशीतिकी उपनिषद' कहते हैं।
  - **ऋग्वेद के आरण्यक :- ऐतरेय आरण्यक, कोषीतकी आरण्यक**

- **ऋग्वेद ने अन्य महत्वपूर्ण तथ्य**
  - इसके दस मंडल है जिसमें कुल 1028 सूक्त हैं जिसमें दूसरा सबसे प्राचीन एवं दूसरे से सातवें तक प्राचीन मंडल हैं जिसे गोत्र मंडल कहा जाता है।
  - आर्य कहीं से भी आए हों, जिस प्रदेश में वे निर्दिष्ट काल में मौजूद थे वहाँ से विभिन्न चरणों में पहुँचे थे।
  - वे कोई एक धार्मिक या नस्लीय समुदाय के नहीं बल्कि एक भाषा समुदाय के लोग थे जिनका केन्द्रीय स्थल ब्रह्मवर्त प्रदेश था।
  - इसका विस्तार सतलज से यमुना नदी के बीच था। इसकी पूर्वी सीमा तिब्बत और हिमाचल, पश्चिमी, अफगानिस्तान तथा उत्तरी, तुर्कमेनिस्तान एवं दक्षिणी सीमा अरावली थी।
  - आर्यों के सबसे महत्वपूर्ण कबीले तृत्सु वर्ग से भरत सम्बद्ध था जिसने पुरुष्णी (रावी) नदी के तट पर दसराश युद्ध में विजय प्राप्त किया, जिसमें वशिष्ठ इसके पुरोहित थे।
  - विश्वामित्र प्रतिद्वंद्वी सेना के पुरोहित थे, यद्यपि आरंभ में विश्वामित्र भी भरत कवीला के ही साथ थे।
  - ऋग्वेद में पंचजन के रूप में आर्यों के पांच कबीलों की पहचान की गयी है।
  - पुरू, यदु और तुर्वस, अणु, और द्रुह्यु। इन पाँचों के आलावा पाँच अनार्य कबीले थे अकीन्न, पक्थ, भलानश, विषाणीन, शिवि ।

- आर्यों का भौगोलिक ज्ञान इसके अलावा अपया, दृषद्वती (चौतांग), सरयू, यमुना, गंगा की चर्चा है। किंतु सबसे महत्वपूर्ण सिंधु नदी थी जिसका उल्लेख सर्वाधिक बार किया गया है।
- सबसे पवित्र नदी सरस्वती नदी थी जिसे नदीतमा कहा गया है एवं इसे नदियों की माता कहा जाता था। सम्भवतः इस नदी के तट पर मंत्रों की रचना की जाती थी।
- समुद्र ऋग्वेद में चार समुद्रों की चर्चा है। इसमें शायद दक्षिणी क्षेत्र के राजस्थान के समुद्र से इनका परिचय तर्कसंगत प्रतीत होता है।
- समुद्री व्यापार की भी चर्चा है। यद्यपि समुद्र से सामान्यतया विशाल जलराशि का ही तात्पर्य लगाया जाता है।
- पर्वत आर्य लोग हिमवंत (हिमालय), मूजवंत (जहाँ से सोमरस का पौधा मिलता था) से परिचित थे। उत्तर वैदिक काल में मैनाक, कौंच्च और त्रिककुद का उल्लेख भी प्राप्त होता है ये तीनों पूर्वी हिमालय में थे।
- उत्तर वैदिक काल में ही विंध्याचल पर्वत का उल्लेख किया गया है।

■ सामवेद

- इसमें देवताओं की स्तुति में गाए जाने वाले मंत्रों का संग्रह है।
- इसके कुल 18755 छंदों में से मात्र 99 छंद ही मौलिक हैं। शेष सभी ऋग्वेद से लिए गए हैं।
- इसके प्रथम आचार्य जैमिनीय हैं।
- सामवेद को 'भारतीय संगीत का जनक' माना जाता है।
- **सामवेद की तीन शाखाएं हैं,** इनके विभाजन का आधार पाठ-भेद है-
  - कौथुम
  - राणायनीय
  - जैमिनीय
- 'कौथुम' शाखा अधिक प्रचलित तथा प्रामाणिक है।
- सामवेद की ऋचाओं का सस्वर गान करने वाला 'उद्गाता' कहलाता था।
- पुराणों में सामवेद की सहस्त्र शाखाओं का उल्लेख है।"
- **सामवेद के दो माग है** - (i) पूर्वार्चिक तथा (ii) उत्तरार्चिका
- **सामवेद आरण्यक :-** जैमिनीय तथा छांदोग्य।
- **सामवेद के ब्राह्मण:-** पंचविश (तांड्य) ,जैमिनीय, छांदोग्य , षडविश
  - पंचविश ब्राह्मण को ताण्ड्य-ब्राह्मण या महा-ब्राह्मण भी जाता है।
  - इसमें वर्ण क्रम में क्षत्रियों को ब्राह्मणों के ऊपर रखा गया है।
  - षडविश ब्राह्मण को अद्भुत ब्राह्मण कहा जाता है।
  - यह पंचविश ब्राह्मण का परिशिष्ट है।
  - इसमें इंद्र-अहिल्या आख्यान मिलता है।
  - जैमिनीय ब्राह्मण में दधीचि की कथा मिलती है। इसका दूसरा नाम तलवकार ब्राह्मण भी है।
  - छांदोग्य ब्राह्मण में जन्म तथा विवाह से संबंधित अनुष्ठान स्तुतियां हैं। इनकी संख्या 1549 है। इनमें से 1474 मंत्र ऋग्वेद से लिए गए हैं।
- **सामवेद के उपनिषद :-**
  - सामवेद के प्रमुख उपनिषद छांदोग्य एवं केन है।
  - **छादोग्य उपनिषद:-**
  - सर्वाधिक प्राचीन उपनिषद है।
  - छांदोग्य उपनिषद में कहा गया है "सर्व खल्विदं ब्रह्म" (ब्रह्म ही सब कुछ) है
  - यह अद्वैतवाद का प्राचीनतम उदाहरण है।
  - इसमें देवकी नंदन कृष्ण का प्रथम उल्लेख मिलता है।
  - इसमें सत्यकाम-जावाल क्या, उद्दालक-आरुणि व श्वेतकेतु संवाद, जाबालि एवं कैकेय नरेश अश्वपति संवाद का उल्लेख मिलता है।
  - इसमें ओम् एवं पुनर्जन्म संबंधी सिद्धांत दिए गए है।
  - इसमें ब्रह्मचर्य, गृहस्थ एवं वानप्रस्थ के रूप में तीन आश्रमों का उल्लेख मिलता है।
  - इसमें सत् त्वम् अत्ति" का प्रथम उल्लेख है।

■ यजुर्वेद

- इसमें यज्ञ की विधियों का प्रतिपादन किया गया है।
- इसमें यज्ञ बलि संबंधी मंत्रों का वर्णन है।
- यजुर्वेद गद्य तथा पद्य दोनों में लिखा गया है।
- **यजुर्वेद के दो प्रधान रूप हैं -**
  - **कृष्ण यजुर्वेद-** इसकी चार शाखाएं है-काठक, कपिष्ठल, मैत्रायणी तथा तैत्तिरीय संहिता।
  - **शुक्ल यजुर्वेद-** इसे 'वाजसनेयी संहिता' भी कहते हैं, इसकी दो शाखाएं है- कण्व तथा मध्यान्दिन।
- शुक्ल यजुर्वेद के सभी मंत्र शुद्ध माने जाते हैं। अतः शुक्ल यजुर्वेद को ही अधिकांश विद्वान असली यजुर्वेद या वास्तविक यर्जुवेद मानते हैं।
- वाजसनेयी संहिता में केवल सूक्त है, गद्य का प्रयोग नहीं है।
- यजुर्वेद का अंतिम अध्याय 'ईशोपनिषद् अध्यात्म चितन से संबंधित है।
- यजुर्वेद में चारों वर्णों को वेद पढ़ने का अधिकार दिया गया है।
- यजुर्वेद में हाथियों को पालने का उल्लेख है।
- यजुर्वेद में यज्ञ संबंधी कार्य करने वाला 'अध्वर्यु' कहलाता था, जिसका कार्य इस वेद के मौलिक गद्य भाग को पढ़ना था।
- धनुर्वेद को 'यजुर्वेद का उपवेद' कहा जाता है।
- यजुर्वेद में सर्वप्रथम राजसूय तथा वाजपेय यज्ञ का उल्लेख मिलता है।
- **यजुर्वेद के ब्राह्मण**
  - शुक्ल यजुर्वेद का ब्राह्माण - शतपथ
  - कृष्ण यजुर्वेद का ब्राह्मण - तैत्तिरीय।
  - **शतपथ ब्राहाण (शुक्ल यजुर्वेद)**
  - शतपथ ब्राह्मण के रचनाकार याज्ञवल्क्य एवं प्राचीनतम भाष्यकार हरिस्वामी हैं।
  - इसे लघुवेद एवं 100 अध्यायों के कारण शतपथ कहा जाता है।
  - यह प्राचीनतम एवं सबसे बड़ा ब्राह्मण है।
  - इसका अंतिम कांड बृहदारण्यक उपनिषद है।
  - शतपथ ब्राह्मण में स्त्री को अर्द्धांगिनी कहा गया है।
  - इसमें ब्राह्मणों को सर्वश्रेष्ठ बताया गया है, साथ ही यह 'अस्पृश्य' शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख करता है।
  - इसमें मत्स्य न्याय का प्राचीनतम उल्लेख मिलता है।
  - **शतपथ ब्राह्मण में उल्लिखित कुछ प्रमुख कथा एवं आख्यान है-**
  - पुरुरवा-उर्वशी आख्यान (ऋग्वेद में भी मिलता है)
  - राम कथा
  - याज्ञवल्क्य - मैत्रेयी संवाद
  - जलप्लावन की कथा
  - राजा दुष्यंत एवं भरत की कथा प्राचीन भारत
  - **तैत्तिरीय ब्राह्मण**
  - तैत्तिरीय ब्राह्मण कृष्ण यजुर्वेद से संबंधित है।
  - इसमें स्त्रियों की स्थिति अपेक्षाकृत अच्छी दिखाई देती है।

- इसमें कहा गया हैं "पत्नी से विहीन पुरुष यज्ञ करने का अधिकारी नहीं होता"।
- इसमें नारी को 'श्री' कहा गया है।
- यह स्त्रियों को यज्ञोपवीत धारण करने का अधिकार देता है।
- इसमें सामवेद को सर्वश्रेष्ठ बताया गया है।
- तैत्तिरीय ब्राह्मण में उल्लिखित कुछ प्रमुख कथा एवं आख्यान है-
- इसमें अगस्त्य एवं प्रह्लाद की कथा मिलती है।
- इसमें यज्ञोपवीत का प्रथम वर्णन मिलता है।

○ **यजुर्वेद के उपनिषद -** बृहदारण्यक, श्वेताश्वर, महानारायणीय, तैत्तिरीय, मैत्रायणी, ईशोपनिषद एवं कठोपनिषद आदि हैं।

- बृहदारण्यक आरण्यक भी है।
- यह गद्य शैली में लिखा गया है।
- इसमें याज्ञवल्क्य-गार्गी संवाद मिलता है।
- इसमें प्रसिद्ध उक्ति "असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय" प्राप्त होती है।
- इसमें अजातशत्रु को काशी का शासक बतलाया गया है।
- इसमें अश्वमेध यज्ञ की विवेचना की गई है
- **तैत्तिरीय उपनिषद**
- तैत्तिरीय उपनिषद में सदा सत्य बोलो, खूब अन्न उपजाओ एवं अतिथि देवो भवः का उल्लेख मिलता है।
- इसे बुद्ध के अष्टांगिक मार्ग का स्रोत भी माना जाता है।
- **कठोपनिषद**
- यम तथा नचिकेता के संवाद का विस्तृत विवरण मिलता है।
- इस उपनिषद में शरीर की तुलना रथ से की गई है।
- **श्वेताश्वर उपनिषद**
- मोक्ष, माया एवं नवधा भक्ति का उल्लेख
- **मैत्रायणी उपनिषद**
- त्रिमूर्ति, चार आश्रमों तथा निराशावाद का उल्लेख किया गया है।

○ **यजुर्वेद आरण्यक**

- तैत्तिरीय आरण्यक
- बृहदारण्यक आरण्यक

■ अथर्ववेद

○ इसमें तत्कालीन लोक परंपराओं का संकलन, भूत-प्रेत, अंधविश्वास तथा विभिन्न प्रकार की औषधियों का उल्लेख मिलता है।
○ अथर्ववेद का ऐतिहासिक महत्त्व अन्य वेदों की अपेक्षा सर्वाधिक है।
○ **इसकी दो शाखाएं है -** पिप्पलाद , शौनक
○ शौनक शाखा अधिक प्रसिद्ध है, तथा उसे ही प्रामाणिक माना जाता है।
○ अथर्ववेद में कुल 20 मंडल तथा 730 सूक्त हैं।
○ इसमें लगभग 5987 मंत्र हैं, जिनमें से 1200 मंत्र ऋग्वेद से लिए गए हैं।
○ अथर्ववेद में राजा परीक्षित का उल्लेख है। अधर्ववेद में मगध तथा 'अंग' क्षेत्र में रोग फैलने की कामना की गई है। इसमें वैशाली तथा अयोध्या का उल्लेख है। अथर्ववेद में ऊंट गाड़ी तथा सन (सण) का उल्लेख है।
○ अथर्ववेद में एक महिला द्वारा दूसरा विवाह करने का संदर्भ उद्धृत है।
○ अथर्ववेद में ब्राह्मचर्य की महिमा वर्णित है तथा विद्याध्ययन पर प्रकाश डाला गया है। इसमें लोहे को कृष्ण अयस कहा गया है। अथर्ववेद को ब्रह्मवेद भी कहा जाता है।
○ **अथर्ववेद का ब्राह्मण**

- अथर्ववेद का एकमात्र ब्राह्मण 'गोपथ' है
- इसमें याज्ञिक अनुष्ठानों का वर्णन नहीं है।
- इसमें मान्धाता की कथा वर्णित है।
- इसमें गायत्री को चारों वेदों की माता कहा गया है।

○ **अथर्ववेद के उपनिषद**

- अथर्ववेद के उपनिषद 'मुंडक', 'प्रश्न' तथा 'मांडूक्य' हैं।
- भारत का राष्ट्रीय आदर्श वाक्य" सत्यमेव जयते" मुंडकोपनिषद में उल्लिखित है।

○ **अथर्ववेद आरण्यक**

- इसका कोई आरण्यक नहीं है

■ अन्य तथ्य

○ इसमें यज्ञ के 18 साधनों की अस्थिरता का वर्णन है।
○ इसमें यज्ञ की तुलना टूटी हुई नाव से की गई है।
○ इसमें वेदांत शब्द का प्रथम उल्लेख मिलता है।
○ मांडूक्य उपनिषद सबसे छोटा उपनिषद है।
○ प्रश्नोपनिषद को 'प्राणोपनिषद' भी कहा जाता है।
○ अथर्ववेद में यज्ञ का निरीक्षण करने वाला 'ब्रह्मा' कहलाता था।

■ **Note :-**
■ **वैदिक साहित्य का रचना क्रम**
○ **वैदिक संहिता-** (मन्त्र भाग)
○ **ब्राह्मण -**ग्रन्थ (गद्य में कर्मकाण्ड की विवेचना)
○ **आरण्यक-** (कर्मकाण्ड के पीछे के उद्देश्य की विवेचना)
○ **उपनिषद-** (परमेश्वर, परमात्मा-ब्रह्म और आत्मा के स्वभाव और सम्बन्ध का बहुत ही दार्शनिक और ज्ञानपूर्वक वर्णन)
○ **वेदाग़ -** शिक्षा, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, छंद, निरुक्त

❑ ब्राह्मण ग्रंथ

■ वैदिक संहिताओं के कर्मकाण्डीय पक्ष की व्याख्या हेतु इनकी रचना हुई है।
■ इनकी रचना प्रायः गद्य में हुई है।
■ ब्राह्मण ग्रंथों में राजा परीक्षित के बाद तथा बिंबिसार के पूर्व की घटनाओं का वर्णन है।
■ इसमें वैदिक मंत्रों, सूक्तों का अर्थ एवं उनके विनियोग तथा उत्पत्ति की कथाएं भी दी गई हैं।
■ इससे कर्मकांड तथा दर्शन संबंधी जानकारी मिलती है।

❑ आरण्यक

■ आरण्यकों का संबंध ब्रह्मविद्या, रहस्यवाद तथा यज्ञों की प्रतीकात्मकता से है।
■ ये अधिकांशतः ब्राह्मण ग्रंथों के परिशिष्ट के रूप में पाए जाते हैं।
■ यह वनों में रचे जाने के कारण 'आरण्यक' कहे गए हैं।
■ इसमें ज्ञानमार्ग पर अधिक बल दिया गया है।
■ वर्तमान में उपलब्ध सात प्रमुख आरण्यक हैं-ऐतरेय, तैत्तिरीय, माध्यन्दिन, शांखायन, मैत्रायणी, तलवकार तथा वृहदारण्यक।

❑ उपनिषद

■ उपनिषद' का शाब्दिक अर्थ होता है- किसी के निकट बैठना।
■ सबसे प्राचीन उपनिषद गद्यात्मक है व बाद के उपनिषद पद्यात्मक हैं।
■ ये भारतीय दार्शनिक विचारों के प्राचीनतम संग्रह हैं।
■ उपनिषदों को 'भारतीय दर्शन का स्रोत अथवा पिता माना जाता है।
■ मुक्तिकोपनिषद में उपनिषदों की कुल संख्या 108 बताई गई है।

- ये वेदों से संबंधित हैं।
- शंकराचार्य ने केवल दस उपनिषदों पर अपना भाष्य लिखा।
- वे ही प्राचीनतम एवं प्रामाणिक माने जाते हैं-
- उपनिषद है- 1. ईश, 2. केन, 3. कठ, 4. प्रश्न, 5 6. माण्डूक्य, 7. ऐतरेय. 8. तैत्तिरीय, 9 छांदोग्य, मुण्डक, 10. बृहदारण्यक।
- इनके अतिरिक्त कौषीतकी, श्वेताश्वर तथा मैत्रायणी उपनिषद भी प्राचीन है।

- **Note:-**
- ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा सामवेद को 'वेदत्रयी' कहा जाता है।
- वेदों की माषा, संस्कृति एवं लिपि ब्राह्मी है।
- यद्यपि ऋग्वेद की प्राचीनतम प्राप्त पांडुलिपि शारदा लिपि में रचित है।

ऋग्वैदिक और उत्तर वैदिक सामाजिक जीवन

❑ ऋग्वैदिक समाज

- ऋग्वैदिक समाज आर्यों के द्वारा अनार्यो पर विजय पर आधारित था, जिसमें विजेताओं को दास एवं दस्यु से घृणा करते पाते हैं।
- आर्य गौर वर्ण के लोग थे और सम्भवतः दास उन्हीं के समूह के थे, जो विभिन्न आरंभिक चरणों में आए लोग रहे होंगे, किंतु इनका कुछ हद तक अनार्यों से तालमेल हो गया था।
- अगस्त्य ऋषि को आर्य एवं अनार्य के मध्य समन्वयकर्ता के रूप में जाना जाता है।
- आर्यों का आरंभिक जीवन कबीलाई था, जो कुल अथवा गृह, ग्राम, विश् एवं जन् और संभवतः राष्ट्र में विभाजित था।
- व्यावहारिक स्तर पर जन जो कबीला का द्योतक है का महत्व सर्वाधिक रहा होगा क्योंकि ऋग्वेद में 'जन' शब्द का उल्लेख 275 बार मिलता है
- विश् जनता का द्योतक माना जाता है।
- उत्पादन में अधिशेष के साथ ही योद्धा वर्ग, पुरोहित एवं अन्य का विभाजन आरंभ हुआ।
- आर्थिक उत्पादन के साथ ही व्यक्तिगत संपत्ति की अवधारणा आरंभ होती है एवं लूट जो कि ऋग्वैदिक काल में आय का स्वीकृत स्रोत था, पर नियंत्रण की कवायद आरंभ हुई और इस तरह से वर्ण व्यवस्था की शुरुआत होती है।
- **वर्ण व्यवस्था**
  - **ऋग्वेद के आरंभ में तीन वर्णों** - ब्रहा, क्षत्र, विश (जन सामान्य) का उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद के दसवें मंडल के पुरुष सूक्त में सर्वप्रथम चारों वर्णों का उल्लेख मिलता है-
  - **ब्राह्मण-** यज्ञों को संपन्न कराने वाला
  - **क्षत्रिय-** क्षत (हानि) से रक्षा करने वाला
  - **वैश्य-** आर्थिक गतिविधियां संपन्न कराने वाला
    - इसे अन्यस्य बलिकृत (कर देने के कारण) कहा गया है।
  - **शूद्र-** उपर्युक्त तीनों वर्णों का सेवक
  - उल्लेखनीय है कि यह वर्ण-विभाजन कर्म पर आधारित था, जन्म पर नहीं।
  - लोगों द्वारा व्यवसाय अपनी योग्यता तथा पसंद के अनुसार अपनाए जाते थे।

- **Note:-**
- ऋग्वेद में एक ऋषि ने कहा है" मैं कवि हूं, मेरे पिता वैद्य हैं, मेरी माता चक्की चलाने वाली हैं। भिन्न-भिन्न व्यवसायों से जीविकोपार्जन करते हुए, हम एक साथ रहते हैं, जैसे पशु (अपने बाड़े में) रहते हैं।"
- ऋग्वैदिक काल में वर्ण व्यवस्था में पदक्रम तो स्पष्ट था पर यह व्यवस्था कर्म पर आधारित थी।

- **स्त्री-पुरुष संबध**
  - स्त्री-पुरुष में पुरुष की वरीयता स्पष्ट थी किंतु कालान्तर में स्त्रियों की दशा में जो गिरावट पाते हैं वह बुराईयाँ समाज में नहीं थीं।
  - परिवार में मुखिया की स्पष्ट प्रधानता थी। और पिता अपनी संतान को सजा देने का अधिकार रखता था।
  - पुत्री की तुलना में देवताओं से पुत्र की मांग की जाती थी।
  - जयेष्ठाधिकार का सूत्र यहाँ स्पष्ट होने लगा है क्योंकि सम्पत्ति के विभाजन में ज्येष्ठ पुत्र बड़ा हिस्सा पाता था।
  - स्त्रियों के विवाह की उम्र 16-17 वर्ष थी। स्पष्टतया बाल विवाह प्रचलित नहीं था एवं स्त्रियों को विवाह के पूर्व पुरुष से मिलने की इजाजत थी।
  - नियोग प्रथा से स्पष्ट है कि विधवा विवाह स्वीकृत था एवं सती प्रथा का संकेत नहीं मिलता है।
  - सामान्यतया एक पतित्व एवं एक पत्नित्व को ही बेहतर माना गया है लेकिन इसके कुछ अपवाद भी मिलते हैं।
  - स्त्रियों को उपनयन संस्कार का अधिकार था एवं कुछ विदुषी महिलाओं का नाम लिया जा सकता है जिन्हें **ऋषिका या ब्रह्मवादिनी** कहा जाता था।
    - उदाहरण- घोषा, अपाला, लोपामुद्रा, विश्वावरा, सिक्ता, कक्षावृत्ति
  - अमाजू स्त्रियाँ जो जीवनपर्यन्त विवाह नहीं करती थी पिता की सम्पत्ति की हिस्सेदार होती थीं।
  - स्त्रियाँ पति के साथ यज्ञ एवं उत्सवों में भागीदारी करती थीं, देवसमूह में भी उन्हें स्थान प्राप्त था लेकिन पुरुषों की प्रधानता थी।
  - राजनीतिक रूप से भी स्त्रियाँ सशक्त रही होंगी क्योंकि वह सभा एवं समिति में भागीदारी करती थीं।
- **विवाह**
  - विवाह एक संस्कार था जो ऋग्वेद के विवाह सूक्त से स्पष्ट होता है, अनुलोम एवं प्रतिलोम विवाह के कुछ उदाहरण मिलते हैं
  - 'विवाह' संस्था स्थापित हो चुकी थी। बाल विवाह प्रथा नहीं थी।
  - विवाह के लिए कहीं-कहीं वरण की स्वतंत्रता का भी उल्लेख मिलता है।
  - नियोग प्रथा तथा विधवा पुनर्विवाह प्रचलन में थे।
  - सामान्यतः एक विवाह प्रथा प्रचलित थी।
  - बहुपति प्रथा के भी कुछ संकेत मिलते हैं।
- **वस्त्र आभूषण**
  - ऋग्वेद से **वसन** (वस्त्र) में **अधिवास** (ऊपर के शरीर का वस्त्र) तथा **वासान** (निचले अंग का) का उल्लेख मिलता है।
  - अथर्ववेद से नीवी का उल्लेख मिलता है जो अंदर का वस्त्र रहा होगा।
  - ऊन, सूत एवं मृगचर्म का वस्त्र के साधन के रूप में प्रयुक्त किया जाता होगा एवं ऊन का इस्तेमाल सर्वाधिक होता था।
  - पुरुष दाढ़ी बनाते थे एवं बालों का जूड़ा बनाते थे। स्त्रियाँ चोटी बनाती थीं। **निष्क** (गले का आभूषण), रूक्म, प्रर्वत आदि आभूषण से सम्बद्ध शब्द थे
- **खान-पान**
  - शाकाहार एवं मांसाहार दोनों ही तरह के भोजन का प्रचलन था।
  - अश्वमेध यज्ञ के बाद घोड़े का मांस खाया जाता था एवं गाय को **अघन्या** कहा गया है जिसका मांस भक्षण सामान्यतः निषिद्ध था।
  - गाय की हत्या के लिए कठोर दण्ड का प्रावधान था, जैसे कि कभी-कभी मृत्युदंड का भी संकेत मिलता है।
  - रामशरण शर्मा ने गोघ्न से ऐसे अतिथि का अर्थ लगाया है जिसका स्वागत गौमांस से किया जाता था, किंतु आर्यों का प्रिय भोजन शाकाहार ही था और वह भी दूध एवं इससे निर्मित वस्तु जैसे : घृत, नवनीत, अमिक्षा, छाछ, दही आदि रहा होगा।

- पेय के रूप में सोमरस एवं सुरा का प्रयोग होता था, जिसमें सोमरस जो मूजवंत पर्वत पर पाया जाता था, यज्ञ के अवसर पर पीया जाने वाला मादक द्रव्य था जबकि सुरा सामान्य अवसरों पर प्रयुक्त होता था।

मनोरंजन

- संगीत, नृत्य, शिकार, पाशा, जुआ, रथ दौड़, आदि के माध्यम से जीवन की एकरसता समाप्त की जाती थी।

स्वास्थ्य

- व्याधि के लिए समान रूप से यक्ष्म शब्द प्रयुक्त होता था। अश्विनों को दिव्य चिकित्सक माना जाता था।
- ऋग्वेद में ही सम्भवतः शल्य चिकित्सा भी अस्तित्व में आ गई थी।

धार्मिक जीवन

वैदिक देवगण में महत्व के आधार पर ही स्तुति की गई है , जीवन का रहस्य, सृष्टि का उदय तथा मृत्योपरांत की परिकल्पना अस्पष्ट है। इस काल में बहुदेववाद का प्रचलन था।

प्रमुख देवता

- **इन्द्र**
  - सबसे महत्वपूर्ण देवता थे, जो यज्ञ के साथ संघर्ष करते वक्त आर्य सेना का नेतृत्व करते थे, इसीलिए इन्हें कलावंसक या फिर किला के राजा के तौर पर पुरंदर कहा जाता था।
  - ऋग्वेद में इंद्र को समस्त संसार का स्वामी बताया गया है तथा उसकी शक्ति की तुलना सिंह अथवा वृष से की गई है।
  - इंद्र बादल तथा वर्षा के देवता थे
  - ऋग्वेद के 250 सूक्तों में इंद्र की स्तुति है।
- **अग्नि**
  - अग्नि देवता एवं मनुष्य के बीच की कड़ी के रूप में पूजे जाते थे।
  - इनका महत्व धूप दीप नैवेद्य के माध्यम से देवताओं तक पहुंचाने के लिए एवं लौकिक रूप से जंगलों की सफाई के लिए विशेष रूप से रहा होगा।
  - प्रत्येक गृह में प्रचलित होने की वजह से इन्हें अतिथि देव भी कहा जाता था।
  - अग्नि ही मृतकों को पितृ एवं देवलोक में मृतकों के वाहक का कार्य करती थी।
  - ऋग्वेद के 200 सूक्तों में इंद्र की स्तुति है।
  - अग्नि 'आहुतियों का स्वामी' तथा 'धर्मों का प्रधान' था।
  - अथर्ववेद में अग्नि को 'प्रातःकाल उदित होने वाला मित्र' तथा 'सायंकाल का वरुण' कहा गया है।
- **वरुण /जल देवता**
  - यद्यपि इनका नामोल्लेख सिर्फ 30 बार हुआ लेकिन इन्हें इन्द्र के बाद का महत्वपूर्ण देवता माना जाता था जो सर्वद्रष्टा एवं सर्वव्यापी थे।
  - इन्हें पाशा फेंककर ऋतु की रक्षा करते हुए नैतिक नियमों को संरक्षित करना होता था, जिस आधार पर वरुण को **ऋतस्यगोपा** कहा जाता था।
  - इन्हें संतुष्ट करने के लिए यज्ञ एवं बलि ही काफी नहीं था बल्कि इसके लिए नैतिक नियमों का पालन अनिवार्य था।
  - वरुण सही मायने में इन्द्र के समान भ्रष्ट जीवन आचरण कभी नहीं करते थे।
  - ऋतु का पालन करने के लिए सभी जगह अपना गुप्तचर भेजते थे।
  - वरुण को असुर भी कहा जाता था जो अवेस्ता के देवता अहुरमज्दा के समान थे।
- **मित्र**
  - इन्हें प्रतिज्ञा का देवता माना जाता था, जिन्हें वरुण का मित्र एवं जल को उनका सहयोगी माना जाता था।
- **सोम**
  - औषधि एवं वनस्पति के देवता, जो स्वर्ग में बसते थे।
  - इन्हें चंद्रमा से भी संबंधित माना जाता था।
  - सोमरस जो अमृत के समान माना जाता था, के समान ही सोम, प्रफुल्लता एवं आनंद का देवता माना जाता था।
  - 14 सूक्तों में इसकी चर्चा की गई है
- **सूर्य**
  - ज्वालामय रथ पर सवार देवता प्रकाश देवता सवितृ भी सूर्य के ही एक रूप थे।
  - गायत्री मंत्र इन्हें ही समर्पित है जिसे वेद मंत्रों में पवित्रतम माना जाता है।
  - इन्हें सर्वदर्शी और स्पश कहा गया है।
- **पूषण**
  - यह भी सूर्यदेव ही हैं, जो आकाश में विचरण करते हुए भटके हुए यात्रियों को मार्ग दिखाते थे।
  - कालान्तर में पूषण को शूद्र का देवता मान लिया गया।
- **अश्विन्**
  - इन्हें नासात्य भी कहा जाता था। इनके कुछ विशिष्ट कार्य चिकित्सा, दुर्घटनाग्रस्त नाविकों की रक्षा, अपाहिजों को कृत्रिम पाँव प्रदान करना, युवतियों के लिए वर खोजना।
  - इन्होंने च्यवन ऋषि को फिर से जवान बना दिया था।
- **रुद्र**
  - इन्हें झंझा (आंधी) का प्रतीक माना जाता था
  - इनका आह्वान महामारी एवं विनाश से बचने के लिए किया जाता था।
- **विष्णु**
  - ये यज्ञ से संबद्ध एक गौण देवता थे, जिन्होंने तीन कदम में पूरी पृथ्वी को नाप लिया था।
  - इसके साथ कुछ देवियाँ भी थीं जिनका महत्व व दर्जा पुरुष देवता से कम था जैसे ऊषा (इसका रथ इन्द्र ने तोड़कर पराजित किया एवं अपमानित किया था।), अदिति (देवताओं की माता), निशा (रात्रि), अरण्यणि (जंगल), इला (आराधना की देवी), पुरमधि (उर्वरता की देवी), दिशान् (वनस्पति देवी)।
  - इस तरह से वैदिक धर्म बहुदेववाद पर टिका था जिसमें 33 देवताओं की आराधना की जाती थी।
  - **"एकम् सत्य विप्रा बहुधा वदन्ति"**। इस आधार पर कहा जाता है कि क्रमशः ऋग्वैदिक काल में ही एकेश्वरवाद का संकेत स्पष्ट होने लगा था।
  - कालान्तर में दयानंद सरस्वती ने दावा किया कि ऋग्वैदिक काल में एकेश्वरवाद ही था एवं पुरुषसूक्त में जिस प्रजापति की संकल्पना पाते हैं उसे ही उत्तरवैदिक काल में सृष्टि का स्रोत मान लिया गया।
  - जो भी हो वैदिक काल के आरंभिक चरण में यज्ञ की तुलना में प्रार्थना का ही विशेष महत्व था और यज्ञों के मंत्रोच्चारण की जादुई शक्ति की संकल्पना अभी विकसित नहीं हुई थी।

देवताओं को श्रेणी	देवता
आकाश के देवता	सूर्य (सबसे प्रमुख देवता), वरुण (जल का देवता, दण्ड विधाला), घौस (सृजन, स्वर्ग का देवता, सबसे प्राचीन मित्र), पूषन (पशुओ व शूदों के देवता), विष्णु (विश्व के पालनकर्ता व सरक्षक), सविता (अमरत्व का देवता), अदिति, ऊषा (प्रगति व उत्थान की देवी),

	अश्विन (रोगों को दूर करने वाला देवता), मित्र (प्रकाश का देवता) आदि।
अन्तरिक्ष के देवता	इन्द्र (पुरन्दर), मारुत (तूफान का देवता), रुद्र (पशुओं का देवता), पर्जन्य (वर्षा का देवता)।
पृथ्वी के देवता	अग्नि (यज, गृह के सर्वश्रेष्ठ देवता), सोम (वनस्पति का देवता), पृथ्वी (सृजन की देवी), बृहस्पति (यज के देवता), सरस्वती (विद्या की देवी)।

ऋग्वैदिक देवियाँ	
देवी	**कार्य**
सूर्या	सूर्य की पुत्री
इला	आराधना की देवी
सावित्री	सूर्य को प्रेरणा प्रदान करने वाली
पृथ्वी	जगत की माता
ऊषा	अरुणोदय की देवी
सिन्धु	नदी देवी
अदिति	देवों की महान देवी
पुरापाधि	उर्वरता की देवी
अरण्यानी	वन देवी
रात्रि	रात की देवी
दिशान	वनस्पति की देवी
आपः	जल की देवी

- **प्रमुख यज्ञ**
  - **वाजपेय यज्ञ**
    - राजा के रथदौड़ एवं खान-पान से संबंधित यज्ञ था।
  - **राजसूय यज्ञ**
    - राजा के सिंहासनारोहण से संबंधित था।
    - यह अभिषिक्त राजा द्वारा संपन्न किया जाता था।
    - इसमें धूत क्रीड़ा भी कर्मकांड का अंग मानी जाती थी।
  - **अश्वमेध यज्ञ**
    - राजा की चक्रवर्ती-विजय से संबंधित है।
    - सार्वभौम शासक ही अश्वमेध यज्ञ आयोजित कर सकता था।
  - **पुरुषमेध -**
    - मनुष्य की बलि से संबंधित है।
    - इसका प्रथम उदाहरण शतपथ ब्राह्मण में मिलता है।
    - तैत्तिरीय तथा वाजसनेयी संहिता में भी इसका उल्लेख मिलता है।
    - इसमें 11 अथवा 25 यज्ञकुंड बनाए जाते थे।
    - यह सोमयज्ञ के अंतर्गत अत्यंत विकृत एवं गर्हित यज्ञ था।
    - इस यज्ञ को संपन्न करने वाले ब्राह्मण और क्षत्रिय दोनों वर्ण के लोग होते थे।
  - **पंचमहायज्ञ**
    - इसके अंतर्गत पंचमहायज्ञ के अंतर्गत भूत यज्ञ, मनुष्य यज्ञ, पितृ यज्ञ, देवयज्ञ और ब्रह्म यज्ञ थे।
    - प्रत्येक गृहस्थ के लिए आवश्यक था।
    - इसका उल्लेख तैत्तिरीय आरण्यक में मिलता है।
- **ऋण**
  - तैत्तिरीय संहिता में तीन ऋणों का उल्लेख मिलता है, जिन्हें चुकाना आवश्यक है।
    - **देव ऋण :** मानवयोनि देवताओं का अनुग्रह है, अतः यज्ञ कर के इसे चुकाना जरूरी है।
    - **ऋषि ऋण :** गुरु से प्राप्त ज्ञान भी ऋण स्वरूप है, जिसे वेदों के अध्ययन व अध्यापन से चुकाया जाना चाहिए।
    - **पितृ ऋण :** इसे विवाह एवं संतानोत्पत्ति कर चुकाया जाता है।
  - यज्ञों में पशुबलि को प्राथमिकता दी जाती थी।
  - उपनिषदों में पुरोहितों के बढ़ते प्रभाव तथा यज्ञीय कर्मकांड और अनुष्ठान के विरुद्ध प्रतिक्रिया हुई
  - बहुदेववाद के स्थान पर अद्वैतवाद की स्थापना हुई। शतपथ ब्राह्मण में "अहं ब्रह्मास्मि" का उल्लेख मिलता है।

- **Note:-**
- ऋग्वेद में मंदिरों एवं मूर्तिपूजा का उल्लेख नहीं मिलता है।
- ऋग्वेद में सात पुरोहित एवं दो प्रधान पुरोहितों का उल्लेख है।
- **सात पुरोहित -** होत्र, ब्राह्मणच्छमसिंह, मैत्रावरुण, पोत्र, नेष्ट्र, अग्निध, अच्छावाक

❑ ऋग्वैदिक अर्थव्यवस्था

- **पशुचारण**
  - यह ऋग्वैदिक अर्थव्यवस्था का सर्वप्रमुख आधार था।
  - समाज, राजनीति एवं अर्थव्यवस्था से सम्बद्ध शब्दावलियों के आधार पर गाय का महत्व स्पष्ट होता है - आरंभिक आर्य खानाबदोश जीवन ही जीते थे, जो पशुचारण के अनुकूल था।
  - इसके साथ ही लूट के पशुओं के विभिन्न वितरण की विशेष चर्चा हुई है।
  - ऋग्वैदिक काल में व्याघ्र का उल्लेख नहीं मिलता। घोड़ा सबसे महत्वपूर्ण पशु था एवं गाय सबसे पवित्र ।
- **कृषि**
  - कृषि की जानकारी आर्यों को थी।
  - इन्हें विभिन्न ऋतुओं, फसल, कृषि उपकरण, उर्वरक एवं सिंचाई की जानकारी थी।
  - ऋग्वैदिक लोगों को पाँच ऋतुओं की जानकारी थी और कहा जाता है कि अश्विन् ने मनु को हल चलाना सिखाया। यद्यपि दास प्रथा पाते हैं लेकिन इनका कृषि में नहीं बल्कि गृह कार्यों में उपयोग रहा होगा।

कृषि से संबद्ध शब्दावली	
▪ उर्वरा / क्षेत्र	जुता हुआ खेत
▪ करिषु	खाद
▪ लांगल/अर/सीर	हल
▪ सीता	हल रेखा
▪ उर्दर	अन्न मापक पात्र
▪ कीवाश	हलवाहा
▪ कुल्या	नहर
▪ चक्र	रहट
▪ इक्षु	गन्ना

  - कृषि दूसरा प्रमुख व्यवसाय कृषि था।
  - ऋग्वेद के 24 श्लोकों में कृषि का उल्लेख है।
  - ऋग्वेद के मूल भाग में कृषि के महत्व के 3 शब्द हैं 'ऊर्दर', 'धान्य' एवं 'वपन्ति'।
  - 'कृषि' शब्द का 33 बार उल्लेख मिलता है।
- **शिल्प**

- धातु (सोना, ताम्र, काँस्य), लकड़ी, चर्म, वस्त्र आदि से सम्बद्ध शिल्प को विकसित होते पाते हैं।
- अयस् शब्द का उल्लेख है जो लोहा का नहीं बल्कि ताम्र का वाचक रहा होगा।

▪ वाणिज्य एवं व्यापार

- कुछ इतिहासकार अच्छे पैमाने पर व्यापार होने का निष्कर्ष निकालते हैं जो जल (यहाँ तक कि समुद्र मार्ग से) एवं थल दोनों मार्ग से होता था।
- सम्भवतः पणि जो कि अनार्य थे व्यापार कार्य से सम्बद्ध रहे होंगे।
- विविध शिल्पों से सम्बद्ध वस्तुओं का व्यापार होता होगा।
- विनिमय के साधन के रूप में निष्क एवं शतमान प्रयुक्त हुए हैं, किंतु मौद्रिक अर्थव्यवस्था नहीं रही होगी और वस्तु-विनिमय प्रणाली ही प्रचलित रही होगी जिसमें निष्क (स्वर्ण धातु) एवं गाय या घोड़ा अथवा दोनों का प्रयोग होता होगा।
- वित्तीय एवं महाजनी व्यवस्था प्रचलित रही होगी।
- वैकनाट शब्द का उल्लेख है जो ब्याज पर ऋण देने वालों (सूदखोरों) के लिए प्रयुक्त हुआ है।

❑ राजनैतिक स्थिति

- राजतंत्र ही प्रमुख विशेषता रही होगी, यद्यपि गणतंत्र का भी कुछ उल्लेख पाते हैं।
- राजतंत्र वंशानुगत था किंतु निरंकुश नहीं
- विदथ, सभा, समिति एवं गण जैसी संस्थाओं का उल्लेख कई बार हुआ है जो राजा की शक्तियों पर नियंत्रण रखते होंगे।
- समिति (आम लोगों की सभा) राजा का चयन करती थी। सम्भवतः यह चयन व्यावहारिक न होकर सैद्धांतिक महत्व का होगा जो एक औपचारिकता रही होगी।
- ऋग्वेद में दैवीय राजतंत्र का उल्लेख हुआ है।
- सभा राजकीय विषय पर चर्चा करने के अलावा न्यायाधिकरण का भी कार्य करती थी। सभा में स्त्रियाँ भाग नहीं लेती थी।
- ऋग्वेद में सभा (8 बार), समिति (9 बार), विदथ (122 बार) तथा गण जैसी संस्थाओं का उल्लेख मिलता है।
- ऋग्वेद की सबसे प्राचीन सस्था विदथ थी।
- राजा युद्ध का नेतृत्व करता था, सम्पत्ति का वितरण करता था एवं कबीले के जानोमाल की हिफाजत करता था।
- इसके बदले में राजा को बलि मिलता था जो इस काल में एक स्वैच्छिक भेंट था। अभी तक अधिशेष के अभाव में नियमित कर व्यवस्था का विकास नहीं हो पाया था जिसके अभाव में राजा नियमित सेना एवं व्यावसायिक नौकरशाही का विकास नहीं कर पाया था।

राजनीतिक शब्दावली	
राजा के लिए	गोपति
समय के लिए	गोधूलि
पुत्री के लिए	दुहिता
अतिथि के लिए	गोघ्न
गाय के लिए	अघन्य
युद्ध के लिए	गविष्टि

ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार शासन प्रणाली			
क्षेत्र	राज्य का नाम/शासन	राजा का नाम/उपाधि	यज्ञ
पूर्व	साम्राज्य	सम्राट	वाजपेय यज्ञ
पश्चिम	स्वराज्य	स्वराट	अश्वमेध यज्ञ
उत्तर	वैराज्य	विराट	पुरुषमेध यज्ञ
दक्षिण	भोज्य	भोज	सर्वमेध यज्ञ
मध्य देश	राज्य	राजा	राजसूय यज्ञ

- राजा का राज्याभिषेक राजसूय यज्ञ के द्वारा सम्पन्न होता था, जिसका विस्तृत वर्णन सर्वप्रथम ऐतरेय ब्राह्मण में मिलता है।
- राजसूय यज्ञ कराने वाले पुरोहित को 24000 गाय दान में दी जाती थी।
- राजा की सहायता के लिए उच्च कोटि के अधिकारी थे, जिन्हे **रत्निन** कहा गया है। शतपथ ब्राह्मण में 12 रत्निनों का उल्लेख है

शतपथ ब्राह्मण में उल्लिखित 12 रत्निन	
पुरोहित	**धर्मिक कार्य करना**
सेनानी	सेनापति
सूत	राजा का सारथी
ग्रामीण	ग्राम का प्रधान
भागदुध	कर संग्रहकर्ता
संग्रहीता	कोषाध्यक्ष
अक्षवाप	पासे के खेल में राजा का सहयोगी
रथकार	रथ निर्माण करने वाला
गोविकर्तन	जंगल विभाग का प्रधान
महिषी	मुख्य रानी
पालागल	विदूषक, दूत, मित्र
युवराज	राजकुमार

▪ न्याय व्यवस्था

- राजा के सहयोग के लिए प्रशासन का एक तंत्र था।
- प्रमुख अधिकारी तंत्र निम्नलिखित है- कोई स्पष्ट न्यायिक ढाँचे का दर्शन नहीं होता।
- गोहत्या के लिए मृत्युदंड के उल्लेख से स्पष्ट है कि कठोर दंड की व्यवस्था थी। दंड का एक रूप विशेष रुप से प्रचलित था, वह था हत्या के लिए 100 गायों का जुर्माना। यानि कि अर्थदंड प्रचलित था।
- ऋण न चुका पाने की दशा में व्यक्ति को ऋणदाता का दास बनाया जा सकता था।

❑ शिक्षा

- शिक्षा का प्रारंभ उपनयन संस्कार से होता था।
- यह बच्चों का दूसरा जन्म समझा जाता था। इसीलिए इस संस्कार के बाद उन्हें 'द्विज' की संज्ञा दी जाती थी।
- विद्या प्राप्ति का लक्ष्य धर्मनिष्ठा, ज्ञानार्जन, अर्जित ज्ञान की रक्षा, संतति, धन, दीर्घायुष्य एवं अमरत्व प्राप्त करना माना जाता था।
- मुख्यतः 25 वर्ष की आयु तक शिक्षा ग्रहण की जाती थी।
- जीवन पर्यंत शिक्षा प्राप्त करने वाले **ब्रह्मचारी नैष्ठिक** कहलाते थे।
- निश्चित समय तक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी **उपकुर्वाण** कहलाते थे।
- आश्रम में रहकर आजीवन शिक्षा ग्रहण करने वाली कन्याओं को **ब्रह्मवादिनी** कहा जाता था।
- विवाह पूर्व तक शिक्षा प्राप्त करने वाली कन्याएं **सधोदहा** या **साद्योवधू** कहलाती थीं।
- शिक्षा प्राप्ति के पश्चात गुरु आश्रम में ही समापवर्तन संस्कार का संपादन किया जाता था।
- जो ब्रह्मचारी बिना समापवर्तन संपन्न किए वापस चले जाते थे। उन्हें **खटवारूढ़** कहा जाता था।
- छांदोग्य उपनिषद में तत्कालीन पाठ्य विषयों का उल्लेख है- वेद, गणित, खनिज विद्या, तर्कशास्त्र, नीतिशास्त्र, सैन्य विज्ञान, ज्योतिष, ललित कला एवं शिल्प, विष विद्या, संगीत तथा आयुर्विज्ञान ।
- मुण्डक उपनिषद में अध्ययन के उपरोक्त विषयों को **अपराविद्या** कहा गया है।

- **पराविद्या** के अंतर्गत आत्मज्ञान अर्थात परमज्ञान की शिक्षा प्राप्त की जाती थी।
- स्त्रियों को शिक्षा दी जाती थी।

उत्तर वैदिक काल (1000-600 ई० पू०)

- उत्तर कालीन भारतीय इतिहास जानने के दो प्रमुख स्रोत हैं-
  - पुरातात्विक स्रोत
  - साहित्यिक स्रोत

पुरातात्विक स्रोत

- चित्रित धूसर मृद्भांड व लोहे के उपकरण महत्वपूर्ण हैं। उत्तरी दोआब में सैकड़ों स्थल मिले हैं।
- अतरंजीखेड़ा, जखेड़ा, हस्तिनापुर एवं नोह। अतरंजीखेड़ा की खुदाई से लौह उपकरण मिले हैं। यहीं से पहली बार कृषि से संबंधित लौह उपकरण प्राप्त हुए हैं।

साहित्यिक स्रोत

- यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण, अरण्यक और उपनिषद् ग्रंथ का प्रयोग किया जाता है।

सामाजिक जीवन

- इस काल में सामुदायिकता टूट रही थी।
- जन के स्थान पर कुल की प्रधानता होने लगी।
- गडपति उभरकर आ रहे हैं जो परिवार का प्रधान जान पड़ता है।
- चातुर्वर्ण व्यवस्था स्थापित होने लगी तथा इस काल में यह जन्म आधारित हो गयी।
- इस काल में कृषि अधिशेष बढ़ा जिससे विश और राजन्य के बीच तनाव उभरा। इसी तनाव के बीच से हमें क्षत्रिय एवं वैश्य के विकास का प्रमाण मिलता है।
- ढाँचा का सामान्य स्तर ऐसा था कि ब्राह्मण एवं क्षत्रिय का हित लगभग समान, वैश्य कर दाता थे तथा शूद्र की स्थिति कमजोर थी और वे सिर्फ सेवक हो सकते थे। इस प्रकार उत्पादन अधिशेष से सामाजिक जटिलता में वृद्धि हुई।
- गोत्र की अवधारणा पहली बार इसी काल में आयी।
- एक कुल के अर्थ में गोत्र शब्द सर्वप्रथम अथर्ववेद में प्रयुक्त हुआ है।
- शाब्दिक अर्थ गोष्ठ यानि वह स्थान जहाँ पूरे गोत्र का गोधन रखा जाता था। कालांतर में एक ही मूल पुरुष से उत्पन्न व्यक्ति एक गोत्र के कहे जाने लगे।
- प्रारंभ में गोत्र की अवधरणा ब्राह्मणों के लिए थी बाद में ब्राह्मणों द्वारा क्षत्रियों और वैश्यों को भी गोत्र दिये जाने लगे।
- इस काल में बहिर्गोत्रीय विवाह की अवधारणा मजबूत हुई, इससे एक तरफ कुल का बृहदाकार ढाँचा टूटा तथा दूसरी तरफ वधू दूर से आने के कारण इनका संपर्क दूर के क्षेत्र से बढ़ा। बाद में मूल पुरुष के पूर्वजों तथा प्रवर को भी ध्यान में रखा जाने लगा, जिससे वैवाहिक चयन सीमित हो गया।
- इस काल में स्त्रियों की आर्थिक गतिविधियों में भागीदारी घटी, परिणामतः उनकी स्थिति में गिरावट आयी।
- सभा एवं समिति में उनके प्रवेश पर रोक लगा दी गयी।
- इन सबके बावजूद नारी की स्थिति सूत्रकाल की तुलना में अच्छी थी।
- पुरुषों विशेषकर क्षत्रियों में बहुविवाह का प्रचलन था।
- इस काल में बाल विवाह के प्रमाण मिलने लगे तथा विधवा विवाह हतोत्साहित हुआ।
- सती प्रथा के सांकेतिक साक्ष्य मिलने लगे।
- नियोग के प्रमाण मिलते हैं।
- अंतर्जातीय विवाह का भी कुछ प्रचलन था।
- इस काल में विवाह ऐसा पवित्र संस्कार था जिसमें विच्छेद के लिए स्थान नहीं था।

महिलाओं की स्थिति

- महिलाओं की स्थिति में गिरावट आई।
- ऐतरेय ब्राह्मण में "पुत्री को सभी दुःखों का मूल" बताया गया है।
- ऐतरेय ब्राह्मण के ही अनुसार पुरुष अनेक पत्नियां रख सकता था, परंतु स्त्री हेतु बहुपतित्व वर्जित माना गया है।
- शतपथ ब्राह्मण स्त्रियों को शूद्र एवं श्वान की श्रेणी में रखता है।
- अथर्ववेद में बालिका के जन्म की निंदा मिलती है। इसमें तलाक का भी उल्लेख है।
- छांदोग्य उपनिषद में बाल विवाह का प्रथम उल्लेख मिलता है।
- इस काल में महिलाओं के उपनयन संबंधी अधिकार भी छीन लिए गए।
- मैत्रायणी संहिता में स्त्री की गणना द्यूत एवं मद्य के साथ की गई है।
- यद्यपि अभी भी महिलाओं का समाज में महत्व बना हुआ था।
- इस काल में मैत्रेयी, गार्गी एवं कात्यायिनी आदि विदुषी महिलाओं के उदाहरण मिलते हैं।
- विधवा विवाह एवं नियोग प्रथा इस काल में भी जारी रही।
- विधवा से उत्पन्न पुत्र देधिषत्य एवं दूसरे विवाह से उत्पन्न संतान पौनर्भव कहलाती थी।
- माता के नाम पर पुत्र का नामकरण संभव था। उदाहरण- सत्यकाम जाबालि ।
- शतपथ ब्राह्मण में ऋषि च्यवन तथा राजा शर्यात की पुत्री सुकन्या के विवाह का वर्णन है।

पुरुषार्थ

- उत्तर वैदिक काल में समाज की उन्नति के लिए पुरुषार्थ की अवधारणा सामने आई।
- पुरुषार्थ चार हैं- (i) धर्म, (ii) अर्थ, (iii) काम और (iv) मोक्ष
- चूंकि मोक्ष सबके लिए संभव नहीं था, अतः कालांतर में 'त्रिवर्ग' (धर्म, अर्थ एवं काम) की व्यवस्था की गई।
- आत्मा का ब्रह्म के साथ जुड़ना ही मोक्ष कहलाता है। यह मानव जीवन का परम लक्ष्य है।

आश्रम व्यवस्था

- उत्तर वैदिक काल में आश्रम व्यवस्था प्रारंभ हुई।
- आश्रम व्यवस्था में प्रवृत्ति एवं निवृत्ति मार्ग के बीच एक प्रकार का संतुलन था।
- आश्रम व्यवस्था का उद्देश्य मानव के प्रशिक्षण एवं आत्मानुशासन से था।
- **इस प्रशिक्षण की 4 अवस्थाएं थीं-**
  - **ब्रह्मचर्य-** जन्म से 25 वर्ष तक की आयु तक।
  - **गृहस्थ-** 25 से 50 वर्ष तक की आयु तक। इसी आश्रम में मानव पंचमहायज्ञ करता था।
  - **वानप्रस्थ-** 50 से 75 वर्ष की आयु तक। जब मनुष्य गृहस्थ जीवन त्याग कर वनों में निवास करता था और आत्मचिंतन में लीन रहता था।
  - **संन्यास आश्रम -** 75 से 100 वर्ष की आयु तक। जब मनुष्य ईश चिंता तथा मोक्ष प्राप्ति हेतु प्रयत्न करता था।
- प्रारंभिक उपनिषदों में केवल तीन आश्रमों (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ तथा वानप्रस्थ) का उल्लेख मिलता है; कालांतर में इसमें चौथा (संन्यास आश्रम) भी जोड़ा गया।
- सर्वप्रथम चारों आश्रमों का एक साथ उल्लेख **जाबालोपनिषद** में मिलता है।

आर्थिक जीवन

- उत्तर वैदिक काल में वज्रधारी इन्द्र 'इन्द्र सुनासिर' (हलधर) बन जाते हैं। यह पशुचारी व्यवस्था से कृषकीय व्यवस्था में संक्रमण का एक सांस्कृतिक प्रमाण प्रतीत होता है।
- इस काल के अंत तक कृषि में आंशिक स्तर पर ही सही, लोहे का प्रयोग शुरू हो गया।

- पुरोहित कृषि के लिए अनुष्ठान करते हैं जिससे साबित होता है कि कृषि को एक संस्कृति के रूप में विकसित करने का प्रयास हो रहा है।
- इस आधार पर देखते हैं कि पशुपालन अब द्वितीयक महत्त्व का कार्य रह जाता है। जीवन पद्धति स्थायी हो जाती है।
- अब दान-दक्षिणा में भी भूमि की मांग की जाने लगी। कुल मिलाकर हम कह सकते हैं कि भूमि के व्यक्तिगत स्वामित्व की अवधारणा इस काल में विकसित हुई।
- इस काल में कर्पास (कपास) का उल्लेख नहीं है, किंतु उर्णा (ऊन) शब्द का कई बार उल्लेख है। इस काल में धातु के बर्तन अधिक संख्या में बनने लगे थे।
- मकान अधिकतर लकड़ी के बनाये जाते थे। इस काल में उल्लिखित श्रेष्ठी शब्द एवं वाजसनेयी संहिता में उल्लिखित गण एवं गणपति शब्द का प्रयोग संभवतः व्यावसायिक संगठन के लिए हुआ है। मुख्य रूप से वस्तु विनिमय प्रणाली ही प्रचलित थी।
- सिक्के के रूप में निष्क, शतमान, पाद, कृष्णल का उपयोग होता था।
- वैदिक साहित्य में मना (सोने का सिक्का) एवं रयि (चाँदी का सिक्का) के प्रयोग का भी जिक्र है।
- बाट की मूलभूत इकाई वृष्णन, रत्तिका एवं गुंजा होती थी।
- रत्तिका को तुलाबीज की उपमा दी गयी है।

❑ **धार्मिक व्यवस्था**

- इस काल में ऋचाओं में जादुई शक्ति की संकल्पना उभरी।
- दैवीय शक्ति के आह्वान के लिए ऋचाओं के उच्चारण की विशेष पद्धति, सुर-लय का प्रयोग होने लगा।
- व्यक्तिगत पूजा की शुरुआत होती है यानि कबीलाई संरचना टूट रही है।
- अभी भी बहुदेववाद ज्यादा प्रचलित है। जो पुरोहित वर्ग के कारण है।
- पुरोहित उत्पादन की व्यवस्था को अनुकूलित करने हेतु कर्मकाण्डीय व्यवस्था पर बल देते हैं।
- कालांतर में इन्हीं पुरोहितों के बीच व्यक्तिगत और वर्गीय हित की संकल्पना उभर कर सामने आती है।
- पुरोहित अपने प्रभुत्व को बनाये रखने के लिए संस्कृति के कर्मकाण्डीय पक्ष पर ज्यादा बल देते हैं और इस तरह इनकी प्रक्रिया रूढ़ हो जाती है जो बदलते हुए परिवेश के मुताबिक अपने आप को ढाल नहीं पाती।
- कर्मकाण्ड की प्रधानता से यज्ञों में बड़ी संख्या में पशुओं की आवश्यकता हुई। इनके बलि से आर्थिक गतिविधि बाधित हुयी।
- अतः वैदिक यज्ञ पद्धति के विरुद्ध इस काल के अंत तक प्रतिक्रिया शुरू हुयी। अरण्यक ने यज्ञ के बदले तप पर बल दिया।
- उपनिषद् में मोक्ष की परिकल्पना रखी गयी और ज्ञान पर बल दिया गया।
- प्रेतात्माओं, जादू-टोने, इन्द्रजाल, वशीकरण में लोगों का विश्वास बढ़ा।
- आर्य एवं अनार्य विचारधाराओं के सम्मिश्रण के फलस्वरूप धर्म में अनेक तत्व प्रविष्ट कर गये; जैसे - अप्सरा, गंधर्व, नाग आदि की भी देव के रूप में कल्पना की जाने लगी।
- **ऋण**
  - चार प्रकार के ऋण- देवऋण, ऋषिऋण, पितृऋण एवं मानवऋण का उल्लेख मिलता है।
  - यजुर्वेद में ब्रह्मचर्य द्वारा ऋषिऋण से, यज्ञ द्वारा देवऋण से एवं संतान द्वारा पितृऋण से उऋण होने की बात है।
- **संस्कार**
  - स्मृतिकारों ने 16 संस्कारों की बात कही जो जीवन के सभी अवस्था से संबंधित था।
  - **जन्म से पहले के संस्कार** - गर्भाधान, पुंसवन् (पुत्र प्राप्ति हेतु), सीमांतोन्नयन् (गर्भ की रक्षा के लिए)।
  - **जन्म के बाद के संस्कार**- जातकर्म (जन्म के तत्काल बाद), नामकरण, निष्क्रमण (पहली बार बच्चा को घर से बाहर निकाला जाता था), अन्नप्रासन् (छठे महीने में), कर्णच्छेदन्, चूड़ाकर्म (मुण्डन), विद्यारंभ, उपनयन्, वेदारंभ (पहली बार गुरू के यहाँ जाता था), केशांत (पहली बार दाढ़ी-मूंछ बनवायी जाती थी), समावर्तन् (अध्ययन की समाप्ति के बाद विवाह)।
  - मृत्यु के बाद के संस्कार- अंत्येष्टि।
  - **श्राद्ध** - श्राद्ध प्रथा के प्रारम्भिक साक्ष्य सूत्र काल से ही प्राप्त होने लगते हैं।
- यज्ञ के अतिरिक्त दान भी दिया जाता था।
- **प्रमुख दान** - सामान्य दान, धर्म दान, विशिष्ट दान एवं महादान (स्वर्ण, घोड़ा, भूमि)।
- कभी-कभी किसी विशेष क्षेत्र में शिक्षा प्रसार के लिए विशिष्ट परिषद् स्थापित की जाती थी; जैसे पांचाल परिषद्।
- शिक्षा प्रसार के लिए सभाओं का भी आयोजन होता था। विदेह ने विद्वानों की एक सभा बुलाई थी।

❑ **राजनीतिक संगठन**

- इस काल में राज्य निर्माण की प्रक्रिया मुखर हुयी तथा यह महाजनपद की स्थिति तक पहुँच गई।
- राजा की स्थिति भी मजबूत हुयी तथा उसका पद लगभग वंशानुगत हो गया।
- इस काल में राज्य निर्माण के आवश्यक तत्व (नौकरशाही, गुप्तचर, सेना, न्याय आदि) का प्रमाण मिलता है।
- बड़े अधिकारीतंत्र को वेतन देने के लिए धन की आवश्यकता थी। इसलिए इस काल में बलि ने अनिवार्य कर का रूप धारण कर लिया।
- शक्ति बढ़ने के बावजूद भी राजा असीमित शक्ति का स्वामी नहीं था। उस पर सभा समिति एवं विभिन्न रत्नियों का प्रभाव रहता था।
- **राजा के सहायक**
- सेनानी, महिषि (रानी), क्षत्रिय या प्रतिहार (द्वारपाल), पुरोहित, युवराज, सूत (सारथी), ग्रामिणी, संग्राहित्रि (कोषाध्यक्ष), भागदुध (कर संग्राहक), अक्षवाप (पासा के खेल में राजा का सहयोगी), पालागल (विदूषक)
- इस काल में सभा अधिक महत्वपूर्ण हो गई, समिति का महत्व कम हो गया।
- गण तथा विदथ लगभग समाप्त हो गया।
- राजत्व का सिद्धांत ऐतरेय ब्राह्मण में विकसित हुआ।
- इस काल में ब्राह्मण तथा राजन्य अधिकांशतः राजकीय करों से मुक्त थे।
- .गोपथ ब्राह्मण में विभिन्न क्षेत्र के राजाओं द्वारा कराए जाने वाले यज्ञों का वर्णन है।
- राजा में दैवीय गुणों का अध्यारोपण किया जाने लगा।

उत्तर वैदिक कालीन विविध यज्ञ

यज्ञ	सन्दर्भ
राजसूय यज्ञ	यह यज्ञ राजा के राज्याभिषेक से सम्बन्धित था। इस यज्ञ में राजा के अभिषेक से पूर्व वरुण एवं इन्द्र का अभिषेक किया जाता था। इस यज्ञ का उद्देश्य राजा की शक्ति एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि करना होता था। इस यज्ञ के दौरान अक्षक्रीड़ा (पांसे का खेल) तया गोहरन (गाय को हांक कर लाना) आदि खेलों में राजा को विजेता बनाया जाता था। इस में 25 यूपों (स्तंभ) के प्रयोग का विधान था।
वाजपेय यज्ञ	इसका उद्देश्य राजा की शारीरिक एवं आत्मिक शक्ति में वृद्धि करना और उसे नवयौवन प्रदान करना था। इस यज्ञ में रथ दौड़

	का आयोजन होता था। इसका आयोजन राजा को अपने सहयोगियों तथा बन्धुओं से श्रेष्ठ दिखाने अर्थात् शक्ति प्रदर्शन के लिए किया जाता था। इसका सम्बन्ध खान-पान से भी था।
अश्वमेध यज्ञ	यह यज्ञ राजा की सार्वभौम सत्ता का प्रतीक होता था। राजा अपनी साम्राज्य सीमा के विस्तार के लिए इस यह का आयोजन करता था। इस यज्ञ में एक घोड़े को राजा के लोगों की देखरेख में स्वतंत्र छोड़ दिया जाता था। यदि किसी अन्य राजा द्वारा इस घोड़े को रोका जाता तो उसे यज्ञ सम्बद्ध राजा से बुद्ध करना पड़ता था। ध्यातव्य है कि यह यज्ञ विशेष पुरोहितों द्वारा सम्पन्न करवाया जाता था।
पुरुषमेध यज्ञ	इस यज्ञ में सोम का अत्यन्त घृणित एवं निन्दनीय स्वरूप दिखाई देता है। यह यज्ञ पाँच दिनों तक चलता था। इसमें ग्यारह या 25 यूप निर्मित किये जाते थे। इसका उल्लेख शतपथ और तैत्तिरीय ब्राह्मण ग्रंथों में मिलता है
अग्निष्टोम यज्ञ या ज्योतिष्टोम	यह यह पाँच दिनों तक चलता था। इसमें ग्यारह पशुओं की बलि दी जाती थी तया बारह शास्त्रों का प्रयोग होता था। इस यज्ञ में सोम रस का पान किया जाता था। सोमयज्ञ के अन्तर्गत उल्लिखित सात प्रकारों में प्रकृतियाग होने के कारण यह यज्ञ अति महत्वपूर्ण था।
सौत्रामणि यज्ञ	सौत्रामणि इन्द्र को समर्पित पशुयज्ञ है। सौत्रामणि यज्ञ में गोदुग्ध के साथ सुरा (मद्य) का भी प्रयोग होता था।

वैदिक काल में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

वैदिक साहित्य न केवल धर्म एवं दर्शन जैसे अमूर्त विषयों की तत्वमीमांसा करता है, अपितु चिकित्सा, सैन्य, स्थापत्य, गणित, भौतिकी, रसायन, ज्योतिष एवं खगोलशास्त्र आदि की भी जानकारी देता है।

❑ चिकित्सा विज्ञान

- अश्विन कुमार का उल्लेख देवताओं के चिकित्सक के रूप में किया गया है।
- उनके द्वारा च्यवन ऋषि को यौवनदान देने का उल्लेख मिलता है। आधुनिक च्यवनप्राश का मूल इसी आख्यान में है।
- उनके द्वारा अंग प्रत्यारोपण का उदाहरण मिलता है- जिसमें प्रमुख हैं- अथर्वणन का शीश प्रत्यारोपण, विशपला का कृत्रिम पैर इत्यादि।
- उनके द्वारा घोषा के कुष्ठ रोग के इलाज का वर्णन है।
- अथर्ववेद आयुर्वेद के ज्ञान के कारण विश्व का प्राचीनतम चिकित्सा ग्रंथ माना जाता है।
  - इसमें विभिन्न औषधियों का उल्लेख है।
  - इसमें विष ही विष को काटता है (विषस्य विषमौषधम) का सिद्धांत दिया गया है।
  - इसमें तम्मन नामक ज्वर की चर्चा है।
  - अथर्ववेद में कृमियों एवं इनसे उत्पन्न रोगों का विशद वर्णन है।
- ऋग्वेद का औषधि सूक्त भी इस संदर्भ में महत्वपूर्ण है।
- वैदिक काल में मानव शरीर की संरचना का भी ज्ञान था।

❑ गणित

- वैदिक काल में दशमलव पद्धति का ज्ञान था।
- यजुर्वेद में अयुत (दस हजार), नियुत (एक लाख) , समुद्र (1 अरब) एवं परार्ध (दस खरब) जैसी संख्याओं का उल्लेख है।
- विष्णु पुराण में वर्णित है कि एक स्थान से दूसरे स्थान का मान दस गुणा होता है।
- ऋग्वेद में अर्द्ध (1/2) एवं त्रिपद (3/4) जैसे भिन्नों का उल्लेख है।
- शुल्वसूत्र रेखागणित के प्राचीनतम प्रमाणों में से एक है।

❑ सैन्य प्रौद्योगिकी

- धनुर्वेद आयुध व युद्ध के संबंध में अच्छी तरह से परिभाषित नियमों का संकलन प्रस्तुत करता है।
- विभिन्न व्यूहों का वर्णन है। उदाहरण- पद्म, चक्र व वृश्चिक व्यूह आदि।
- प्रक्षेपास्त्रों समेत विभिन्न आयुधों का उल्लेख प्राप्त होता है।
- पुष्पक विमान जैसे- वायुयानों का वर्णन भी मिलता है। यद्यपि विभिन्न विद्वानों के मध्य इनकी वास्तविक उपस्थिति के संदर्भ में विवाद की स्थिति रही है।
- ऋग्वेद में दुर्गों को गिराने हेतु 'पुरचरिष्णु' यंत्र का उल्लेख मिलता है।
- तीव्र गति के रथों हेतु धुरी का प्रयोग किया गया।

❑ स्थापत्य शास्त्र

- ऋग्वेद में वरुण के 'सहस्त्र द्वार' महल का उल्लेख है।
- अथर्ववेद में गृहनिर्माण के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला गया है।
- ऋग्वेद में शारदी, (कच्ची ईंट), आयसी (धातु) एवं अश्ममयी (पाषाण) जैसे विभिन्न दुर्गों का उल्लेख मिलता है।
- वाजसनेयी संहिता में गरुण या बाज की आकृति वाली सुपर्णचिति वेदी आर्यों की वास्तु शास्त्र में निपुणता का सूचक है।
- अथर्ववेद का उपवेद शिल्पवेद (अथवा स्थापत्य वेद) वास्तु शास्त्र को ही समर्पित था।
- भगवान पुरा से पकी ईंटों द्वारा निर्मित 13 कक्षीय भवन प्राप्त होता है।

❑ खगोल शास्त्र

- ऋग्वेद के प्रथम मंडल के पहेलिका सूक्त में एक वर्ष में तीन ऋतुओं,12 चंद्रमाह एवं 360 दिन होने का उल्लेख है।
- इसी मंडल में सप्तऋषि नक्षत्र मंडल का भी उल्लेख है।
- अथर्ववेद में 28 नक्षत्रों एवं तैत्तिरीय संहिता में 27 नक्षत्रों का उल्लेख है।
- ऋग्वेद, यजुर्वेद एवं अथर्ववेद पृथ्वी द्वारा सूर्य की प्रदक्षिणा करने के सिद्धांत का प्रतिपादन करते हैं।
- ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार, सूर्य न कभी उदित होता है न ही कभी अस्त
- यजुर्वेद के अनुसार, चंद्रमा में स्वयं का प्रकाश नहीं होता, बल्कि वह सूर्य से प्रकाश प्राप्त करता है।

छठी शताब्दी ईसा पूर्व

- ब्राम्हण धर्म की याज्ञिक क्रियाये एवं प्रवृत्तिमूलक धार्मिक परम्पराये, विषमताओं एवं अन्यान्य रुढता का शिकार हो गयी थी।, इससे असंतुष्ट कुछ व्यक्तियों ने चिंतन-मनन के माध्यम से अरण्य में जाकर साहित्य का विकास किया और इसका अगला चरण आधारित ज्ञान परक दृष्टिकोण का विकास है
- इसने मानवजीवन का उद्देश्य अर्थात मोक्ष की प्राप्ति के लिए ज्ञान मार्ग का विकल्प प्रस्तुत किया, किंतु संस्कृत भाषा ही आधारित लोक साहित्य की एक प्रगतिशील व्याख्या थी, जो सामान्य लोगों को आकर्षित नहीं कर सकी।
- इस बीच आर्थिक जगत में कृषि, शिल्प, व्यापार आदि के विकास ने जनसंख्या में नगरीकरण का विकास, मुद्रा व्यवस्था का आरंभ आदि ने समाज में एक अलग वर्ग को जन्म दिया।
- ऐसी स्थिति में एक तरफ जहाँ उभरता हुआ शिल्पी व्यापारी वर्ग, गृहपति वर्ग असंतुष्ट था वही दूसरी तरफ राजा भी निरंतर ब्राह्मण परंपराओं के शिकंजे से मुक्त होना चाहता था, क्योंकि एक और जहाँ उन्हें ब्राह्मण को कर मुक्ति, अधिशेष में हिस्सा, न्यायिक श्रेष्ठ ओहदा आदि देना पड़ रहा था ,वहीं दूसरी ओर ब्राह्मण व्यवस्थाकार एवं विधि निर्माता की भूमिका निभा रहे थे क्योंकि धर्म न्याय का स्रोत समझा जाता था और ब्राह्मण इसके अगुआ।
- इन सबके अतिरिक्त सूद्र एवं महिला ब्राह्मण व्यवस्था के तहत पूर्णत: वंचित थे वह इससे मुक्ति चाहते थे।
- इसी संदर्भ में नैतिकतावादी धार्मिक सम्प्रदाय उभरकर आए जिनमें से कुछ ऐसे थे जो प्रत्यक्ष को प्रमाण मानते थे एवं कर्म पुनर्जन्म एवं ईश्वर जैसी किसी मान्यता को अस्वीकार करते थे।
- इस तरह के अनेक धार्मिक सम्प्रदाय उभरकर आए जो ब्राह्मण परंपरा से विलग नास्तिकतावादी दृष्टिकोण के थे।
- **बौद्ध ग्रंथ के अनुसार इस काल में 62 संप्रदाय अस्तित्व में थे। जिनमें प्रमुख है –**
- **पूरन कश्यप**
  - ये अक्रियावादी अथवा अकर्म के प्रचारक थे, यानि मनुष्य के अच्छे-बुरे कर्मों का कोई फल नहीं होता है।
  - उनका पुनर्जन्म में भी कोई विश्वास नहीं था।
- **मक्खलि गोशाल**
  - इन्हें नियतिवादी कहा जाता है।
  - पहले छह वर्षों तक महावीर के साथ रहे बाद में आजीवक नामक स्वतंत्र संप्रदाय स्थापित किए, जो लगभग 1000 ई. तक बना रहा।
  - इनके अनुसार 'संसार की प्रत्येक वस्तु भाग्य द्वारा पूर्व नियंत्रित एवं संचालित होती है'।
  - मनुष्य के जीवन पर उसके कर्मों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
  - ये भी ईश्वर की सत्ता में विश्वास नहीं करते थे।
  - बिंदुसार ने इस धर्म को संरक्षण दिया तथा अशोक व दशरथ ने गुफाएँ प्रदान की।
- **अजितकेस कम्बनिल**
  - उच्छेदवादी कहलाए।
  - ये संभवतः भारत के पहले भौतिकवादी चिंतक थे।
  - इनका मानना था कि अच्छे-बुरे कर्मों का कोई फल नहीं होता।
  - मृत्यु के बाद सब कुछ नष्ट हो जाता है। अतः जो इच्छा है वही करो। आगे चलकर इससे लोकायत दर्शन (प्रतिपादक चार्वाक) का विकास हुआ।
- **पकुध कच्चायन**
  - इन्हें नियतिवादी कहा जाता है।
  - इन्होंने सात तत्वों को नित्य बताया- पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, सुख, दुख और आत्मा
  - इन सातो तत्वों का न सृजन होता हैं न ही अंत
  - इससे परवर्ती वैशेषिक दर्शन का उद्गम माना जा सकता है।
- **संजय वेलट्ठिपुत्त**
  - ये अतिवादी या संदेहवादी थे।
  - इनका मानना था कि न तो यह कहा जा सकता है कि स्वर्ग या नरक है या फिर नहीं है।
  - इन्होने किसी मत को स्वीकार किया और न ही किसी का खंडन किया।
  - इसीलिए इनको कुलबुलाने वाला **सर्पमीन** कहा जाता हैं।
  - महात्मा बुद्ध के शिष्य सारि पुत्र एवं महामौद गल्यान इनके शिष्य थे।

प्रमुख संप्रदाय	संस्थापक
घोर अक्रियावादी	पूरण कश्यप
आजीवक	मक्खलिपुत्त गोसाल
उच्छेदवादी	अजितकेस कम्बलिन
नियतिवादी	पाकुधकच्चायन
अनिश्चयवादी	संजय बेलट्ठीपुत्त

जैन धर्म

❑ तीर्थंकर परिचय

- जैन धर्म में कुल 24 तीर्थंकर हुए।
- जैन शब्द संस्कृत के 'जिन' शब्द से बना है, जिसका अर्थ विजेता है।
- जैन संस्थापकों को तीर्थंकर जबकि जैन महात्माओं को निर्ग्रंथ कहते हैं।
- जैन धर्म में 63 शलाका पुरुषों की मान्यता है।
- जैन धर्म 'वेद' की प्रामाणिकता को नहीं मानता।
- 'सप्तमंगीनय सिद्धांत' के अनुसार, वेद वाक्य सर्वमान्य प्रमाण नहीं हो सकता।
- जैन धर्म के दो तीर्थंकरों ऋषभनाथ (प्रथम तीर्थंकर) एवं अरिष्टनेमि (22वें तीर्थंकर) का उल्लेख ऋग्वेद में पाया जाता है।
- महाभारत के अनुसार अरिष्टनेमि वासुदेव श्रीकृष्ण के संबंधी थे। संभवतः श्रीकृष्ण के चचेरे भाई थे।
- वायु पुराण तथा भागवत पुराण में ऋषभनाथ को 'नारायण का अवतार' कहा गया है।
- बौद्ध ग्रंथों में महावीर को निगण्ठनाथपुत्त कहा गया है।
- ऋषभनाथ जैन धर्म के 24 तीर्थंकरों में पहले थे।

❑ ऋषभनाथ

- **अन्य नाम** - आदिनाथ एवं वृषभनाथ
- **प्रतीक** - वृषभ
- ऋषभनाथ राजा थे तथा वह अपने पुत्र भरत के पक्ष में राज्य त्याग कर 'यति' बन गए थे।
- उनके एक पुत्र बाहुबली (गोमतेश्वर या गोम्मट) भी हैं, जिनकी विशाल प्रतिमा श्रवणबेलगोला में स्थापित है।
- इनका उल्लेख श्रीमद्भगवद्गीता में भी मिलता है।
- जैन परंपरा के अनुसार, ब्राह्मी लिपि का आविष्कार ऋषभदेव द्वारा किया गया। उन्होंने अपनी पुत्री ब्राह्मी (बम्भी) के नाम पर इस लिपि को ब्राह्मी कहा।

❑ **पार्श्वनाथ**

- 23वें तीर्थंकर
- **प्रतीक** - सर्पफण
- **पिता** - बनारस के इक्ष्वाकु वंशीय राजा अश्वसेन,
- **माता** - वामा,
- **पत्नी** - प्रभावती।
- ये महावीर से 250 वर्ष पूर्व हुए।
- 30 वर्ष की आयु में वैराग्य धारण किया।
- 83 दिन की तपस्या के बाद ज्ञान (कैवल्य) की प्राप्ति (सम्मेद पर्वत पर) हुयी। अगले 70 वर्ष तक उन्होंने अपने धर्म का प्रचार किया।
- 100 वर्ष की अवस्था में सम्मेद शिखर (पारसनाथ की पहाड़ी) पर शरीर त्यागा।
- इनके अनुयायियों को निग्रंथ कहा गया।
- पार्श्व ने चार व्रतों की चर्चा की
  - सत्य, अहिंसा, अस्तेय तथा अपरिग्रह, इसे चतुर्याम सिद्धांत कहा जाता हैं।
- महावीर के माता-पिता संभवतः पार्श्व के अनुयायी थे।

❑ **महावीर स्वामी (540 ई.पू. से 468 ई.पू.)**

- **प्रतीक** - सिंह
- **जन्म** - वैशाली के निकट कुंडग्राम में
- **पिता** - सिद्धार्थ (ज्ञात्रिक क्षत्रियों के संघ के प्रधान),
- **माता** - त्रिशला /विदेहदत्ता (वैशाली के लिच्छवि कुल के प्रमुख चेटक की बहन)।
- **पत्नी** - यशोदा (कुंडिय गोत्र की कन्या)।
- **पुत्री** - अणोज्जा (प्रियदर्शना)।
- **दामाद** - जामालि (महावीर का पहला शिष्य)
- **तपश्चर्या :-** गृह त्याग के तेरह महीने बाद वस्त्र त्याग दिया।
  - वे वैशाली होते हुए नालंदा गए, जहाँ मक्खलि गोशाल उनसे मिला तथा उनका शिष्य बन गया। किंतु 6 वर्ष बाद साथ छोड़ दिया।
  - 12 वर्ष की कठोर तपस्या के बाद **जम्भिकग्राम** के समीप **ऋजुपालिका** नदी के तट पर एक **साल** वृक्ष के नीचे उन्हें कैवल्य (ज्ञान) प्राप्त हुआ। इसके बाद वे **केवलिन** कहलाए।
- **महावीर की अन्य उपाधियाँ :-** जिन (विजेता) - समस्त इंद्रियों को जीतने के कारण , अर्हत् – योग्य , निग्रंथ- बंधन रहित
- **मृत्यु** - 468 ई.पू. में 72 वर्ष की अवस्था में पावापुरी नामक स्थान पर उन्होंने शरीर त्याग दिया।
- **धर्मप्रचार**
- कल्पसूत्र के अनुसार ज्योतिषियों ने महावीर के लिए भी चक्रवर्ती राजा या महान संन्यासी बनने की भविष्यवाणी की थी।
  - कैवल्य प्राप्ति के बाद तीस वर्षों तक समाज में अपने ज्ञान का प्रकाश फैलाया। महावीर भी बुद्ध के समान आठ महीने धर्मप्रचार करते जबकि वर्षा ऋतु में (चार महीने) विभिन्न नगरों में विश्राम करते थे।
  - **महावीर के शिष्य** - 11 प्रधान शिष्य **गणधर** कहलाये।
  - कल्पसूत्र में इनके नाम दिए गये हैं- इन्द्रभूति, अग्निभूति, वायुभूति (ये तीनो भाई थे), व्यक्त, सुधर्मन्, मण्डित, मोरियपुत्र, अंकपित, अचलभाता, मेतायं तथा प्रभास इन्द्रभूति
  - सुधर्मन को छोड़कर सभी गणधरों की मृत्यु महावीर के जीवनकाल में ही हो गई।
  - महावीर के मरणोपरांत सुधर्मन जैन संघ के अध्यक्ष बने।
  - अंतिम नंद राजा के समय संभूतिविजय तथा भद्रबाहु अध्यक्ष थे।
  - भद्रबाहु के नेतृत्व में अकाल के समय कुछ भिक्षु कर्नाटक चले गये यह दिगंबर कहलाये।
  - कुछ स्थूलभद्र के नेतृत्व में उत्तर भारत में ही रहे ये श्वेताम्बर कहलाये।
  - इससे जैन धर्म में मतभेद बढ़े।
  - **श्वेताम्बर** - इनके संतों को यति, साधु, आचार्य कहा गया
  - **दिगंबर** - इनके संतों को क्षुल्लक, ऐल्लक, निग्रंथ कहा गया
- **संघ (वसवि) :** पाँचवीं सदी में कर्नाटक में स्थापित मठों को वसवि कहते हैं।

❑ **जैन धर्म का सिद्धांत और ज्ञान तत्व**

- जैन धर्म के अनुसार समस्त विश्व जीव तथा अजीव नामक दो नित्य एवं स्वतंत्र तत्वों से मिलकर बना है।
- इसी आधार पर जैन दर्शन सांख्य दर्शन के सबसे करीब है।
- जीव चेतन तत्व है जबकि अजीव अचेतन जड़ तत्व है।
  - अजीव का विभाजन पाँच भागों में हुआ- पुद्गल, काल, आकाश, धर्म तथा अधर्म।
    - यहाँ धर्म तथा अधर्म गति तथा अगति का सूचक है।
    - पुद्गल से तात्पर्य उस तत्व से है जिसका संयोग तथा विभाजन किया जा सके।
    - इसका सबसे छोटा भाग अणु कहलाता है।
    - अणुओं में जीव निवास करते हैं।
    - समस्त भौतिक पदार्थ अणुओं के ही संयोग से निर्मित होता है।
    - पुद्गल का अर्थ है कर्म स्पर्श, रस, गंध तथा वर्ण ये सभी पुद्गल के गुण हैं।
- जैन धर्म के अनुसार सृष्टि कुछ शाश्वत् कानूनों के द्वारा परिचालित होती है।
- इस शाश्वत विश्व में अनेक चक्र होते हैं।
- उत्थान काल को उहसर्पिणी और पतन काल को अवसर्पिणी कहते हैं।
- प्रत्येक चक्र में 63 श्लाका पुरुष, 24 तीर्थंकर होते है

❑ **जैन धर्म का उद्देश्य**

- जैन धर्म का चरम लक्ष्य निर्वाण है।
- यह सत्कर्म एवं सन्मार्ग से ही संभव है।
- भौतिक तत्वों के विनाश और कर्म फल से मुक्ति ही जीव को निर्वाण की ओर प्रेरित करती है।
- जैन धर्म के सिद्धांतों में निवृत्तिमार्ग का प्रधान स्थान था, जिसके माध्यम से व्यक्ति जगत् के नाना प्रकार के व्याधियों और तृष्णाओं से विमुक्त हो जाता है।
- जैन ज्ञान तत्व के अंतर्गत कर्म का सिद्धांत महत्वपूर्ण है।
- सत् और असत् कर्म से ही बंधन और मुक्ति होती है।
- पाप और पुण्य मनुष्य के कर्मों से होते हैं, ईश्वर से नहीं। यानि ईश्वर को न मानकर मनुष्य के कर्म को प्रधानता दी गई है।
- कर्मों के कारण जीव आबद्ध रहता है।
- कर्मफल भोगने के लिए ही पुनर्जन्म होता है। अतः कर्मफल से मुक्त होना ही निर्वाण प्राप्त करना है।
- निर्वाण ही मोक्ष है जो कर्मफल की समाप्ति से ही संभव है।
- जैन धर्म में भी वेदांत के ही समान अज्ञान को बंधन का कारण माना गया है। इसके कारण कर्म जीव की ओर आकर्षित होने लगता है, इसे आस्रव कहते हैं।
- कर्म का जीव के साथ संयुक्त हो जाना बंधन है।
- मोक्ष के लिए महावीर ने तीन साधन आवश्यक बताए, जिसे त्रिरत्न कहा गया है।
  - सम्यक् दर्शन
  - सम्यक् ज्ञान

- सम्यक् चरित्र (Trick to learn Triratna – KFC (**K**nowledge , **F**aith, **C**onduct)

- **सम्यक् दर्शन**
  - जैन तीर्थकरों एवं उनके उपदेशों में दृढ़ विश्वास ही सम्यक् दर्शन या श्रद्धा है।
  - जैन धर्म में तत्व ज्ञान को पृथक-पृथक दृष्टिकोण से देखा जाता है क्योंकि प्रत्येक काल में या प्रत्येक दशा में जीव का ज्ञान एक नहीं हो सकता, वह भिन्न-भिन्न होता है।
  - जैन धर्म में इस दर्शन को **स्यादवाद** या **अनेकांतवाद** (सप्तभंगीन्याय) कहा गया है, जो ज्ञान की सापेक्षता का सिद्धांत है यानि सांसारिक वस्तुओं के विषय में हमारे सभी निर्णय सापेक्ष्य तथा सीमित होते हैं।
  - इस संसार का कोई भी पदार्थ नष्ट नहीं होता। सभी पदार्थ शाश्वत हैं।
  - नष्ट प्रतीत होने का कारण यह है कि कभी-कभी उनके रूप परिवर्तित हो जाते हैं किंतु उनका मूलतः विनाश नहीं होता। विनाश केवल परिवर्तन है।
  - जैन सिद्धांत स्यादवाद के सात निर्दिष्ट हैं - 1) है 2) नहीं है 3) है और नहीं है 4) कहा नहीं जा सकता 5) है किंतु कहा नहीं जा सकता 6) नहीं है और कहा नहीं जा सकता 7) है, नहीं है और कहा नहीं जा सकता।
- **सम्यक् ज्ञान :** जैन धर्म एवं उसके सिद्धांतों का ज्ञान ही सम्यक् ज्ञान है।
  - इसके पाँच प्रकार बताए गए हैं।
    - **मति -** इन्द्रियों द्वारा प्राप्त ज्ञान
    - **श्रुति -** सुनकर प्राप्त किया गया ज्ञान
    - **अवधि -** दिव्य अथवा अलौकिक ज्ञान
    - **मनःपर्याय -** अन्य व्यक्तियों के मन की बातें जान लेने का ज्ञान
    - **कैवल्य -** पूर्ण ज्ञान, जो केवल तीर्थंकरों को प्राप्त है। जैन दर्शन में कैवल्य प्राप्ति हेतु यति जीवन आवश्यक माना गया है।
- **सम्यक् चरित्र :** जो कुछ भी जाना जा चुका है और सही माना जा चुका है उसे कार्यरूप में परिणत करना ही सम्यक् चरित्र है। इसके अंतर्गत भिक्षुओं के लिए पाँच महाव्रत तथा गृहस्थों के लिए पाँच अणुव्रत बताए गए हैं।
  - **पाँच महाव्रत :-** जैन मत के अनुसार भिक्षुओ के लिए पाँच महाव्रतों का पालन आवश्यक बताया गया है। जो अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य हैं। ब्रह्मचर्य को महावीर स्वामी ने जोड़ा था।
  - **अणुव्रत -** ये गृहस्थ जीवन के संबंध में है, इनमें अतिवादिता एवं कठोरता का अभाव है। अणुव्रत उपनिषद् के विपरीत जैन धर्म की मान्यता है कि आत्मा की शुद्धि लंबे समय तक उपवास, अहिंसा और इंद्रियनिग्रह द्वारा संभव है। हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म के विपरीत जैन धर्म में सिर्फ संघ के सदस्यों के लिए कैवल्य का विधान है, सामान्य गृहस्थों के लिए नहीं।
- जैन धर्म में अधिक आराम और सुखी जीवन बिताने को अनुचित बताया गया है। पापों से मुक्त होने पर जीव समभाव में आता है तथा निर्वाण मार्ग की ओर अग्रसर होता है। **आचरांग सूत्र** में जैन साधुओं के लिए कठोर नियम बताए गए हैं।
- त्रिरत्नों का अनुसरण करने से कर्मों का जीव की ओर बहाव रुक जाता है जिसे **संवर** कहते हैं। इसके बाद पहले से जीव में व्याप्त कर्म समाप्त होने लगते हैं, इस अवस्था को **निर्जरा** कहा गया है। जब जीव से कर्म का अवशेष बिल्कुल समाप्त हो जाता है तब वह **मोक्ष** की प्राप्ति कर लेता है। महावीर ने मोक्ष के लिए कठोर तपश्चर्या एवं कायाक्लेश पर बल दिया। मोक्ष के पश्चात् जीव आवागमन के चक्र से छुटकारा पा जाता है तथा वह **अनंत चतुष्टय** (अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत वीर्य तथा अनंत सुख) की प्राप्ति कर लेता है लेकिन जैन धर्म में सर्वोच्च अवस्था की प्राप्ति सिर्फ भिक्षुओं को हो सकती है, अणुव्रतियों को नहीं।
- बुद्ध के समान महावीर ने भी वेदों की अपौरूषेयता को स्वीकार नहीं किया।
- जैन धर्म जाति व्यवस्था पर बहुत कठोर आक्रमण नहीं करता है। इसी तरह दास व्यवस्था पर भी आक्रमण नहीं, किंतु दासों के प्रति नरम व्यवहार अपनाने का आग्रह किया।
- कैवल्य की प्राप्ति सभी जाति के व्यक्ति कर सकते हैं।
- जैन धर्म में काया क्लेश के अंतर्गत उपवास द्वारा शरीर के अंत का भी विधान है। इसे श्वेतांबर 'संथारा' व दिगंबर 'सल्लेखना' कहते हैं।
- महावीर के अनुसार मनुष्य के तीन प्रकार हैं।
  - **अव्रती -** सांसारिक मोह-माया में पूर्णतः लिप्त रहने वाले ।
  - **अणुव्रती -** आंशिक रूप से दुष्कर्मों से अलग रहने वाले।
  - **सर्वव्रती -** जो पूर्णतः अनासक्त भाव से रहते हुए सच्चरित्रता और सत्य कर्म का अनुपालन करते हैं।

❑ जैन सम्मेलन

- जैन आगमों को सुव्यवस्थित करने के लिए जैन श्रवणों द्वारा तीन सम्मेलनों का अयोजन किया गया।

जैन संगीतियां			
समय/ सम्मेलन	स्थान	अध्यक्ष	परिणाम
प्रथम सम्मेलन /चतुर्थ सदी ई.पू.	पाटलिपुत्र	स्थूलभद्र	इसमें 12 अंगों का संकलन किया गया। इसे पाटलिपुत्र वाचना कहा जाता है। इस सम्मेलन में भद्रबाहु के अनुयायियों ने भाग नहीं लिया। यहाँ जैन धर्म का विभाजन श्वेताम्बर व दिगंबर में हो गया।
द्वितीय सम्मेलन / चौथी सदी में	मथुरा	आर्य स्कंदिल	यह श्वेताम्बर भिक्षुओं की सभा थी। इसे मथुरावाचना के नाम से जाना जाता है।
तृतीय सम्मेलन /512 ई.	वल्लभी	देवर्धि क्षमाश्रमण	इसमें सभी आगम साहित्य को लिपिबद्ध किया गया।

❑ जैन संप्रदाय

- चंद्रगुप्त मौर्य के समय मगध में अकाल पड़ा।
- भद्रबाहु अपने अनुयायियों के साथ दक्षिण मैसूर के पुण्णाट प्रदेश में बस गये। जबकि स्थूलभद्र पाटलिपुत्र में ही रहे।
- अकाल समाप्ति के बाद भद्रबाहु पाटलिपुत्र लौट आये, किंतु जैन संघ के नियमों को लेकर दोनों गुटों में मतवैभिन्य हो गया।
- स्थूलभद्र ने अपने अनुयायियों को सफेद वस्त्र धारण करने के निर्देश दिए, जबकि भद्रबाहु ने निर्वस्त्र रहने की शिक्षा अपने अनुयायियों को दी।
- इस प्रकार दो संप्रदाय विकसित हो गये - श्वेताम्बर और दिगम्बर।

श्वेतांबर-दिगंबर मुख्य अंतर	
श्वेतांबर	**दिगंबर**
इस संप्रदाय के लोग श्वेत वस्त्र धारण करते हैं।	पूर्णतः नग्न रहते हैं।
स्त्री के लिए मोक्ष प्राप्ति संभव है।	इसके अनुसार, स्त्री हेतु मोक्ष संभव नहीं है।
इस संप्रदाय के लोग ज्ञान प्राप्ति के पश्चात भोजन ग्रहण करने के पक्षधर हैं।	यह मत इसके विरुद्ध है।

इसके अनुसार महावीर स्वामी विवाहित थे।	इनके अनुसार महावीर स्वामी अविवाहित थे।
इसके अनुसार 19वें तीर्थंकर मल्लिनाथ स्त्री थे।	दिगंबर मतानुसार मल्लिनाथ पुरुष थे।
श्वेतांबर जैनियों को यति, आचार्य एवं साधु कहा गया।	दिगंबर जैनियों को झुल्लक, ऐल्लक और निग्रंथ की संज्ञा दी गई।
श्वेतांबरों का प्रमुख केंद्र गिरनार था।	दिगंबरों का केंद्र पुण्ड्रवर्धन (बंगाल) था।
श्वेताम्बर प्राचीन जैन ग्रंथों (आगमों) को मानते हैं	दिगम्बर जैन ग्रंथों (आगमों) को स्वीकार नहीं करते।
श्वेतांबर उपवास द्वारा शरीर के अंत के विधान को 'संथारा' कहते हैं	दिगंबर इसे 'सल्लेखना' कहते हैं।

Note:-

- **जैन** अनुश्रुतियों के अनुसार, मौर्य वंश के संस्थापक चंद्रगुप्त ने मैसूर के श्रवणबेलगोला नामक स्थान पर 'सल्लेखना' विधि से प्राणोत्सर्ग किए थे। राष्ट्रकूट शासक इंद्र चतुर्थ ने भी इसी विधि से कार्योत्सर्ग किया।

- **श्वेताम्बर के उपसंप्रदाय ये मुख्यतः तीन हैं।**
  - **पुजेरा / मूर्तिपूजा / डेरावासी / मंदिरमार्गी -** ये मूर्तियों को वस्त्र एवं आभूषण से सजाते थे।
  - **दुढिया / विस्तोला / स्थानकवासी / साधुमार्गी -** स्थानकवासी लोकासंप्रदाय से निकला है। अहमदाबाद के एक व्यापारी लोकाशाह ने मूर्तिपूजा का निषेध किया और लोका नामक नया संप्रदाय चलाया। उन्हीं के एक शिष्य विरजी ने स्थानकवासी संप्रदाय चलाया।
  - **घेरापंथी-** भिक्खन महाराज ने यह संप्रदाय चलाया। यह तेरह विशिष्ट बातों को मानता था।
- **प्रमुख श्वेताम्बर आचार्य:-** भद्रबाहु प्रथम, कुंदकुंदाचार्य, सिद्धसेन दिवाकर, हरिभद्र सुरी, मल्लवादी, अमयदेव, रत्नप्रभासूरी, हेमचन्द्र ।
- श्वेताम्बर संप्रदाय मथुरा, वल्लभी, कठियावाड़, राजस्थान, मध्य भारत, पंजाब, हरियाणा में प्रचलित था। अधिकांश जैन व्यापार एवं उद्योग में लगे थे। किंतु महाराष्ट्र एवं कर्नाटक में कुछ जैन खेती भी करते थे।

- **दिगम्बर के उपसंप्रदाय -** ये मुख्यतः चार हैं
  - **बीसपंथी -** मंदिरों में तीर्थंकरों की मूर्ति के अलावा क्षेत्रपाल, भैरव आदि की मूर्तियाँ रखते हैं एवं उन्हें फल-फूल व मिठाई अर्पित करते हैं।
  - **तेरापंथी -** मंदिर में केवल तीर्थंकरों की मूर्तियाँ रखते हैं।
  - **तारणपंथी -** यह तेरापंथ से जुड़ा हुआ है जिसे 15वीं सदी में तरणतारण स्वामी ने चलाया। ये लोग मूर्तियों की पूजा नहीं करते। जाति-पाति में विश्वास नहीं करते।
  - **यापणिक -** इसके अनुसार स्त्रियाँ भी निर्वाण प्राप्त कर सकती थीं।
- **कुछ प्रमुख दिगम्बर आचार्य :-** विद्यानंद, माणिक्यनंदिन, प्रभाचन्न, भट्टारक, लघुसामंतभद्र, , ज्ञानचंद्र, गुणरत्नसुरि, धर्मभूषण आदि ।
- दिगम्बर संप्रदाय दक्षिणी भारत विशेषकर कर्नाटक, दक्षिणी हैदराबाद, उत्तर भारत एवं मध्य भारत में प्रचलित था।
- **जैन धर्म के संरक्षक राजा –**
  - महापद्मनंद, चंद्रगुप्त मौर्य, संप्रति खारवेल, जयसिंह सिद्धराज, कुमारपाल, अमोघवर्ष, गंग एवं कदंब शासक, सोमेश्वर, राणा प्रताप ।
  - खारवेल ने खंडगिरि में जैन भिक्षु के लिए गुफा बनवाया।
- **प्रमुख जैन मंदिर हैं**
  - रणकपुर मंदिर (जोधपुर के पास)
  - आबू का दिलवाड़ा मंदिर (वास्तुपाल)

❑ **जैन धार्मिक ग्रंथ**

- जैनियों के धर्मोपदेश प्राकृत भाषा में दिए गए हैं।
- मध्यकाल में जैनियों ने संस्कृत भाषा अपनाई।
- जैनियों ने धार्मिक उपदेशों को अर्धमागधी भाषा में लिखकर प्रथम बार साहित्य को मिश्रित भाषा में लिखने का स्वरूप प्रदान किया।
- **आगम-** जैन साहित्य को आगम (सिद्धांत) कहा जाता है।
  - जो स्थान वैदिक साहित्य में वेद एवं बौद्ध साहित्य में त्रिपिटकों का है, वही स्थान जैन धर्म में आगमों का है।
  - जैन आगम में 12 अंग 11, 12 उपांग, 10 प्रकीर्ण (पैन्न), 4 मूलसूत्र, 1 नंदीसूत्र तथा 6 छैयसुत्त (छेद सूत्र) आते हैं। ये प्राकृत भाषा में लिपिबद्ध हैं।
  - इनमें जैन धर्म के उपदेश, विहार के जीवन, भिक्षुओं के कर्तव्य एवं यम, नियम आदि का वर्णन है।
- **चार मूलसूत्र हैं-** (1) दशवैकालिक (iii) षडावशयक (ii) उत्तराध्ययन (iv) पिंडानिर्युक्ति या पक्षिक सूत्र
  - अनुयोग सूत्र तथा नंदिसूत्र जैनियों का स्वतंत्र ग्रंथ है, जो एक प्रकार का विश्वकोश है।
  - उपर्युक्त सभी ग्रंथ श्वेतांबर संप्रदाय के लिए हैं। दिगंबर संप्रदाय के अनुयायी इनकी प्रामाणिकता को स्वीकार नहीं करते हैं।
- **अंग -** जैन आगम में 12 अंगों का प्रमुख स्थान है।
  - **आचारांग सूत्र -** इसमें जैन भिक्षुओं द्वारा पालन किए जाने वाले आचार-नियमों का संकलन है। यह भाषा की दृष्टि से प्राचीनतम आगम है।
  - **सूयग सूत्र -** इस आगम में अहिंसा एवं जैन तत्वमीमांसा के वर्णन के साथ क्रियावाद, अक्रियावाद एवं विनयवाद जैसे अन्य धार्मिक मतों का खंडन किया गया है।
  - **स्थानांग -** यह जैन तत्वमीमांसा के विभिन्न सिद्धांतों का उल्लेख करता है।
  - **समवायंग सूत्र -** इसमें भी जैन तत्वमीमांसा के विभिन्न सिद्धांतों का उल्लेख है, परंतु इस का दृष्टिकोण भिन्न है।
  - **भगवती सूत्र-** यह आत्मा, पदार्थ और अन्य संबंधित विषयों के सूक्ष्म ज्ञान की व्याख्या करता है।
    - इसमें महावीर के जीवन व अन्य समकालिकों के साथ उनके संबंधों का वर्णन है।
    - इसमें महावीर एवं मक्खलिपुत्त गोसाल के कटु संबंधों की जानकारी मिलती है।
    - इसमें वे अपने प्रिय शिष्य इंद्रभूति के साथ वार्तालाप को 36,000 प्रश्नोत्तर शैली में जैन सिद्धांतों का प्रतिपादन करते हैं।
    - इसमें **सोलह महाजनपदों** का वर्णन मिलता है।
    - इसके संकलनकर्ता **सुधर्मन** माने जाते हैं।
    - यह सबसे बड़ा अंग है।
  - **नायाधम्मकहा -** इसमें महावीर की शिक्षाओं का वर्णन कथा एवं पहेलियों के माध्यम से मिलता है।
  - **उवासग दसाओं -** यह महावीर के दस श्रावकों की आचार संहिता का वर्णन है।

- **अंतगडदसाओं तथा अणुत्तरोववाइय दसाओ** - इनमें प्रत्येक ग्रंथ दस-दस भिक्षुओं का वर्णन करता है, जिन्होंने तपोबल से स्वर्ग प्राप्त किया।
- **पण्हावागरणाई /प्रश्न व्याकरण-** पंच महाव्रतों व पंच महापापी के साथ अन्य नियमों का वर्णन है।
- **विवाग सूयम्-** यह कथाओं के माध्यम से अच्छे व बुरे कर्मों के परिणामों की व्याख्या करता है।
- **दिट्ठिवाय** - इसे सभी जैन संप्रदायों द्वारा तुप्त माना जाता है। अन्य जैन ग्रंथों के विवरणानुसार यह सभी आगमों में सबसे बड़ा था। इसके पांच भाग थे।

- **उपांग** - 12 अंगों से संबंधित एक-एक उपांग ग्रंथ है।।
- इनमें ब्रह्मांड का वर्णन, प्राणियों का वर्गीकरण, खगोल विद्या, काल विभाजन, मरणोत्तर जीवन का वर्णन आदि विषयों का उल्लेख प्राप्त होता है।
- 12 उपांग है - औपपातिक , जीवाभिगम , राजप्रश्नीय , प्रज्ञापना , चंद्र मज्ञप्ति , जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति , सूर्य प्रज्ञप्ति , निरयावलि , कल्पावतंसिका , पुष्पिका , पुष्प चूलिका , वृष्णि दशा

- **प्रकीर्ण** –
- **दस प्रकीर्ण** - चतु:शरण , वीरस्तव , देवेंद्रस्तव , आतुर प्रत्याख्यान , भक्ति परिक्षा, तंदुल वैतालिका , चंद्र वैध्यक , गणित विद्या , संस्तार , महाप्रत्याख्यान

- **छेद सूत्र** –
- **इनकी संख्या 6 है-** कल्प, पंचकल्प, निशीथ, महानिशीय, व्यवहार तथा आचार दशा।
- इनमें जैन-निक्षुओं के लिए विधि-नियमों का संकलन है।

❑ **जैन दर्शन में प्रयुक्त प्रमुख शब्द**

जैन दर्शन में प्रयुक्त प्रमुख शब्द	
संल्लेखना	उपवास द्वारा शरीर त्याग करना (आत्महत्या)
मति	इंद्रिय जनित ज्ञान।
श्रुति	श्रवण ज्ञान
अवधि	दिव्य ज्ञान।
मनःपर्याय	अन्य व्यक्ति के मन की बात जान लेना।
बसदि	कर्नाटक स्थित जैन मठ।
परिवह	कड़ाई(Sufferings)
साप्त	विश्वास योग्य पुरुषों का वाक्य।
साज	भोजनालय
मूल गुण	मुनियों तथा आर्यिकाओं के लिए कठोर नियम
अष्टमंगल	8 शुभ चिह्न
समोहा	जैन विहार
स्थानक या उपासरे	जैन मुनियों के वर्षावास का आश्रय।
निसिधी	जैन अनुयायियों की मृत्यु संबंधी कर्मकांड तथा पद्धतियां।

❑ **जैन धर्म का कला में योगदान**

- ओडिशा में उदयगिरि व खंडगिरि में खारवेल द्वारा निर्मित कराई गई गुफाएं प्राचीनतम जैन स्थापत्य है।
- एलोरा में इंद्रसभा गुफा, राजगीर में सोन भंडार एवं कौशांबी के पास प्रभोसा गुफाएं जैन धर्म से संबंधित हैं।
- जैन चित्रकला का प्राचीनतम उदाहरण सितान्वासल गुफा से प्राप्त होता है।
- प्रतिमाशास्त्र में कायोत्सर्ग मुद्रा जैन धर्म की देन है।
- मथुरा से प्राचीनतम जैन स्तूप तथा जैन मूर्ति के साक्ष्य मिलते हैं
- एहोल का नेघुटी मंदिर, खजुराहो के जैन मंदिर एवं माउंट आबू में दिलवाड़ा का जैन मंदिर आदि जैन मंदिर स्थापत्य कला के अद्भुत उदाहरण है।
- चाहुबली की गोमतेश्वर प्रतिमा इसी कायोत्सर्ग मुद्रा में है।

❑ **जैन तीर्थंकरो का निर्वाण स्थल**

- जैन धर्म के 24 तीर्थंकरों में से 20 तीर्थंकरों ने सम्मेद शिखर पर निर्वाण प्राप्त किया था।

- **तीर्थंकर - निर्वाण स्थल**
- ऋषभनाथ - अष्टापद
- बासुपूज्य - चंपापुरी
- नेमिनाथ - उर्जयन्त /गिरिपद
- महावीर - पावापुरी

अन्य जैन ग्रंथ एवं रचनाकार	
ग्रंथ	**रचनाकार**
कल्पसूत्र	भद्रबाहु
परिशिष्ट पर्वन	हेमचंद्र
न्यायावतार	सिद्धसेन दिवाकर
श्लोक वार्तिक	विद्यानंद स्वामी
पंचविंशतिका	पद्मनंदि
द्रव्य संग्रह	नेमिचंद्र

बौद्ध धर्म

- बौद्ध धर्म के प्रणेता गौतम बुद्ध (सिद्धार्थ) थे। गौतम इनके गौत्र का अविधान था।

❑ **जीवन परिचय**

- **जन्म** - कपिलवस्तु के समीप लुम्बिनी (आधुनिक रूमिन्नदेई)
- **पिता** - शुद्धोधन (कपिलवस्तु के शाक्यगण प्रधान)
- **माता** - मायादेवी (कोलिय गणराज्य की कन्या)
- **बचपन का नाम** - सिद्धार्थ
- **पालन-पोषण** - विमाता प्रजापति गौतमी
- **पत्नी** - यशोधरा (शाक्य कुल की कन्या)
- **पुत्र** – राहुल (**अर्थ** – बंधन)
- **घोड़े का नाम** - कंथक
- **सारथी का नाम** - चन्ना

❑ **बुद्ध के जीवन की महत्पूर्ण घटनाये**

- सिद्धार्थ के जन्म के समय **कालदेव** और **कौण्डिन्य** ने भविष्यवाणी की थी कि यह बड़ा होकर या तो बहुत बड़ा संन्यासी बनेगा या कोई चक्रवर्ती सम्राट बनेगा।
- सामान्य राजकुमार का जीवन जीते हुए बुद्ध के जीवन में भोग एवं इसकी विलासिता के बीच एक एकाकीपन था ।
- **चार विशिष्ट दृश्य का प्रभाव माना जाता है** - वृद्ध व्यक्ति, बीमार व्यक्ति, मृत व्यक्ति, निद्रंद्र संन्यासी।
- इन दृश्यों को देखने के पश्चात् गौतम बुद्ध भौतिक जीवन की वास्तविकता से परिचित हुए और संन्यास धारण किया।
- गौतम बुद्ध ने 29 वर्ष की आयु में गृह त्याग दिया, जिसे बौद्ध साहित्य में **महाभिनिष्क्रमण** कहा गया है।

- गौतम ने विभिन्न संन्यासियों से शिक्षा ग्रहण की। सर्वप्रथम वैशाली के पास **आलार कलाम** के आश्रम में तपस्या किया, जो **सांख्य दर्शन** के आचार्य थे। उनसे उन्होंने **उपनिषद्** की शिक्षा ग्रहण की।
- इसके बाद राजगृह में रूद्रक **रामपुत्त** से मिले और वहाँ **योग** की शिक्षा ली। किंतु वहाँ भी संतुष्ट नहीं हुए। तत्पश्चात् **उरुवेला (गया)** में पाँच ब्राह्मण के पास पहुँचे तथा निरंजना नदी के किनारे, **पीपल वृक्ष** के नीचे कठोर तपस्या आरंभ कर दी।
- छह वर्ष के पश्चात् कठोर तपस्या से असंतुष्ट गौतम कुछ नर्तकियों का गीत सुन मध्यमार्ग की ओर प्रेरित हुए।
- गौतम बुद्ध द्वारा सुजाता के हाथ से खीर खाने के कारण उनके पाँच ब्राह्मण साथी साथ छोड़कर सारनाथ चले गये।
- 35 वर्ष की आयु में वैशाख पूर्णिमा की रात को 49 दिन की साधना के बाद उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई। इस अवधि में असुर कामदेव (मार) ने तपस्या में व्यवधान भी डाला।
- ज्ञान प्राप्ति के बाद वे बुद्ध (प्रकाशमान, जागृत) कहलाए यानि उन्हें दुःख के कारणों का पता लग गया।
- **बुद्ध के अन्य नाम :** तथागत (वह जो सत्य को प्राप्त करे), शाक्यमुनि (शाक्यों का गुरू)
- सबसे पहले **तपस्सु** और **मलिक** नामक दो बंजारों को उपदेश देकर अपना अनुयायी बनाया।
- निर्वाण प्राप्त करने के बाद वे ऋषिपत्तन (सारनाथ) गये, जहाँ पाँच ब्राह्मण संन्यासियों (कौडिन्य, आज, अस्सजि, वप्प, भद्दीय) को पहला उपदेश दिया। यह घटना **धर्मचक्र प्रवर्तन** कहलाती है।
- सारनाथ से उरुवेला जाते समय भद्र सहित 30 धनी युवकों को अपना शिष्य बनाया।
- इसके बाद राजगृह गये जहाँ बिंबिसार ने बेणुवन दान किया तथा सारिपुत्र, मौदग्लायन्, उपालि, अभय आदि शिष्य बने। उन्होंने राजगृह में ही रहते हुए कपिलवस्तु की यात्रा की जहाँ अपने परिवार को दीक्षित किया तथा शाक्यों के नवनिर्मित संस्थागार का भी उद्घाटन किया।
- राजगृह के बाद **वैशाली** गये जहाँ लिच्छवियों द्वारा महावन में कूटाग्रशाला निर्मित कराया गया। यहीं पहली बार आनंद के कहने पर महिला को **(पहली महिला गौतमी प्रजापति, दूसरी महिला - आम्रपाली)** संघ प्रवेश की अनुमति मिली तथा उनके लिए भिक्षुणी संघ बना। उन्होंने श्रावस्ती में ही **अंगुलिमार नामक डाकू** को शिष्य बनाया।
- मल्ल की राजधानी पावा में चंद नामक लुहार की आम्र वाटिका में ठहरे जहाँ सुकरमद्दव खाने से **अमातिसार** हो गया।
- वहाँ से वे कुशीनगर पहुँचे, जहाँ 483 ई.पू. में 80 वर्ष की आयु में शरीर त्याग दिया। यह घटना **महापरिनिर्वाण** कहलायी।
- **निर्वाण का शाब्दिक अर्थ है :** बाती का बुझ जाना, यानि कामना का अंत होना।
- मृत्यु से पूर्व उन्होंने कहा 'सभी सांधातिक वस्तुओं का विनाश होता है, परिश्रम के साथ चेष्टा करो।'
- बुद्ध ने **सुभद्द** को उपदेश देकर अपना अंतिम शिष्य बनाया।
- बुद्ध ने अंतिम वर्षाकाल वैशाली में बिताया। मल्लों द्वारा उनका अंत्येष्टि संस्कार किया गया।
- उनके शरीर धातु के आठ भाग विभिन्न राजाओं को दिए गए, जिस पर स्तूपों का निर्माण किया गया।
  - **ये राजा हैं :-**
    - पावा तथा कुशीनारा के मल्ल
    - कपिलवस्तु के शाक्य
    - वैशाली के लिच्छवि
    - अलकल्प के बुलि
    - रामग्राम के कोलिय
    - पिप्पलिवन के मोरिय
    - बेठद्वीप के ब्राह्मण
    - मगधराज अजातशत्रु

❑ **बौद्ध दार्शनिक सिद्धांत**

- **बौद्ध मत के प्रमुख दार्शनिक सिद्धांत निम्नलिखित हैं –**
  - चार आर्य सत्य
    - **दुःखवाद -** संसार दुःखमय हैं
    - **दुःख समुदाय -** दुःख का कारण
    - **दुःख निरोध -** दुःख को रोका जा सकता हैं
    - **दुःख निरोधगामिनी प्रतिपदा -** दुःख रोकने का मार्ग
- **दुःखवाद -**
  - यह कर्मफल उत्पन्न करने वाले अज्ञानरूपी चक्र अर्थात् प्रतीत्य (इसके होने से)

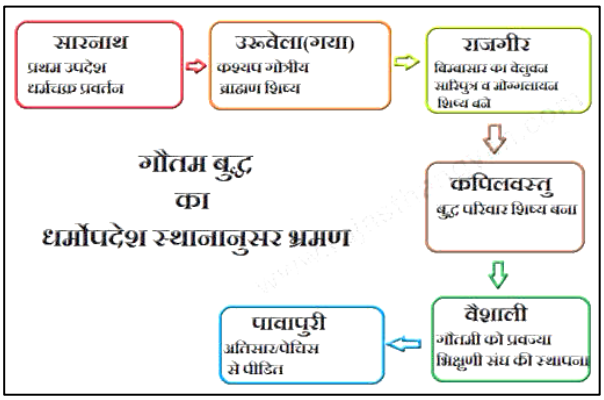

  समुत्पाद (यह उत्पन्न होता है) है। प्रतीत्य-समुत्पाद मध्यम मार्ग का परिचायक है।
  - यह वस्तुओं की परिवर्तनशीलता को मानता है तथा सापेक्ष कारणतावाद को स्थापित करता है। प्रतीत्य समुत्पाद में 12 चक्र हैं।
  - बौद्ध दर्शन का समस्त परवर्ती सिद्धांत प्रतीत्य समुत्पाद पर निर्भर है। इस सिद्धांत से कर्मवाद की स्थापना होती है।
- **दुःख समुदाय -** दुःख का कारण
  - द्वितीय आर्य सत्य (दुःख समुदाय) से प्रत्यीत्य-समुत्पाद का सिद्धांत प्राप्त होता है।
  - इसी से क्षणभंगवाद सिद्धांत की उत्पत्ति भी होती है।
  - प्रतीत्य-समुत्पाद का अर्थ है: प्रतीत्य (इसके होने से), समुत्पाद (अन्य की उत्पति)। यह कर्मफल उत्पन्न करने वाला अज्ञान रूपी चक्र है।
- **दुःख निरोध**
  - अविद्या तथा तृष्णा (आसक्ति) का त्याग दुःख दूर करने के रास्ते को सुगम करता है।
- **दुःख निरोधगामिनी प्रतिपदा-**
  - यह अष्टांगिक मार्ग द्वारा संभव है, जिन्हें तीन स्कंदों शील, समाधि तथा प्रज्ञा में बाँटा गया है।
  - शील तथा समाधि से प्रज्ञा की प्राप्ति होती है।
  - **आष्टांगिक मार्ग**
  - सम्यक् दृष्टिः वस्तुओं के यथार्थ स्वरूप का ज्ञान होना अर्थात् सुख के मिथ्यात्व का ज्ञान।
  - सम्यक् संकल्पः आर्य सत्यों के पालन का निश्चय।
  - सम्यक् वाक्ः असत्य न बोलना, किसी की निंदा या चुगली न करना, अप्रिय वचन न बोलना।
  - सम्यक् कर्मांतः अपने जीवन में हिंसा, स्तेय आदि बुरे कर्मों का परित्याग।

- सम्यक् आजीवः ईमानदारी से जीविकोपार्जन करना।
- सम्यक् व्यायामः बुरे विचारों को मन से बाहर निकालना तथा अच्छे विचारों को लाना।
- सम्यक् स्मृतिः वास्तविक ज्ञान के प्रति जागरूक बने रहना।
- सम्यक् समाधिः गहन ध्यान करना जिसकी अंतिम स्थिति में निर्वाण की अवस्था आ जाती है।
- **पंचमहाव्रत हैं-**
- अहिंसा
- अपरिग्रह
- असत्य न बोलना
- नशे का सेवन न करना
- ब्रह्मचर्य (दुराचार से दूर रहना)

- **चार ऋद्धिपाद-**
- छन्द (प्रबल इच्छा)
- वीर्य (पराक्रम)
- चित्त (चेतना)
- मीमांसा (विमर्श)
- **5 इंद्रियाँ-**
- श्रद्धा (बुद्ध, धम्म एवं संघ के प्रति श्रद्धा)
- वीर्य
- स्मृति
- समाधि
- प्रज्ञा
- **बौद्धधर्म के त्रिरत्न**
- बुद्ध
- धम्म
- संघ
- **अनात्मवाद -** आत्मा नहीं है।
- **क्षणिकवाद -** शरीर क्षणभंगुर है तथा पाँच स्कंधों - रूप, संज्ञा, वेदना, विज्ञान, संस्कार से बना है।
- **कर्मवाद -** कर्मफल शेष रहने पर पुनर्जन्म होता है।
- **अनीश्वरवाद -** ईश्वर की सत्ता अस्वीकार।
- **पंचशील :** हत्या, चोरी, व्यभिचार, असत्य, मादक द्रव्यों से दूर रहना।
- **सबसे पवित्र दिन है-** वैशाख पूर्णिमा- इसी दिन बुद्ध का जन्म, निर्वाण (ज्ञान प्राप्ति) तथा महापरिनिर्वाण (मृत्यु) हुई।
- **शंकराचार्य** पर बौद्ध धर्म के तर्क के प्रभाव के कारण ही उन्हें **प्रच्छन्न बौद्ध** कहा जाता है।

बौद्ध परिषद	वर्ष	स्थल	राजा	अध्यक्षता
प्रथम	483 ई.पू	राजगृह	अजातशत्रु	महाकश्यप उपाली
द्वितीय	383 ई.पू	वैशाली	कलासोका	सबकामी
तीसरी	236 ई.पू	पाटलिपुत्र	अशोका	मोगलीपुट्टा तिस्सा
चौथी	72 ई	कुंडलवन	कनिष्क	वसुमित्र

❑ **बौद्ध संघ-**

- ऋषिपत्तन (सारनाथ) में अपने प्रथम पाँच ब्राह्मण शिष्यों के साथ बुद्ध ने संघ की स्थापना की।
- संघ बुद्ध के सामाजिक संकल्पना का व्यावहारिक रूप है।
- यह लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ विकसित हुआ और इसमें मानवीय समतावाद पर बल दिया है।
- संघ में प्रवेश के लिए माता-पिता की अनुमति आवश्यक थी।
- 15 वर्ष से कम आयु वालों, अस्वस्थ (रोगी), विकलांग, चोरों, अपराधियों, दासों, राजा के सेवकों, सैनिकों, कर्जदारों को संघ में प्रवेश नहीं दिया जाता था।
- 15 वर्ष की अवस्था (न्यूनतम्) में श्रमणेर/श्रमण के रूप में संघ में प्रवेश दिया जाता था।
- गृहस् जीवन का त्याग **प्रवज्या** कहलाता था।
- इन्हें दस नियमों (शिक्षाप्रद) का पालन करना होता था।
- योग्यता होने पर बाद में उसे उपसंपदा के माध्यम से भिक्षु का दर्जा दिया जाता था।
- संघ का अध्यक्ष चयनित होता था। उसे संघ के सदस्यों के मतानुसार कार्य करना होता था एवं अत्यंत महत्वपूर्ण फैसले अध्यक्ष एक परिषद के साथ मिलकर करता था।
- संघ में कोई भी कार्य संपादित करवाने के लिए प्रस्ताव (नति/वृत्ति) पेश किया जाता था। सारी बातें मतदान पर निश्चित होती थीं। प्रस्ताव पाठ को **अनुसावन** कहते थे।
- विशेष अवसर पर होने वाली धर्मवार्त्ता को **उपोसथ** तथा **वस्स** (भिक्षुओं को वर्षाकाल में एक जगह स्थिर रहना पड़ता था, जिसे वस्स कहा जाता था) की समाप्ति पर होने वाली अपराध स्वीकृति को **पत्तिमोक्ख पवारण** कहते थे।
- बुद्ध ने किसी को भी अपना उत्तराधिकारी घोषित नहीं किया।

❑ **बुद्ध के प्रमुख शिष्य -**

- **आनंद-** बुद्ध के चचेरे भाई थे इनका प्रारंभिक नाम स्थविर था।
- भिक्षु बनने के बाद यह आनंद नाम से जाने गए इन्होने ही सुत्तपिटक की रचना की।
- इनकी निवेदन पर ही वैशाली में बुद्ध ने महिलाओं को संघ में प्रवेश दिया था।
- **उपालि -** विनयधर उपालि , उपालि भाषा के महान विद्वान थे
- इन्होने विनयपिटक की रचना की।
- यह नाई जाति से सम्बंधित थे।
- **महाकश्यप -** यह मगध के एक ब्राह्मण बौद्ध भिक्षु थे जिन्होंने प्रथम बौद्ध संगीति की अध्यक्षता की।
- **अंगुलिमाल -** यह श्रावस्ती के एक कुख्यात डाकू थे जो बाद में बौद्ध भिक्षु बन गए।
- **आम्रपाली -** यह वैशाली की नगरवधू थी जिसने अपने समस्त वैभव को बौद्ध भिक्षुओं को दान कर दिया और स्वयं बौद्ध धर्म को धारण किया।
- **कौण्डिन्य -** सारनाथ के धर्मचक्र परिवर्तन के समय कौण्डिन्य के साथ अन्य **चार भिक्षु -** अस्सजी , आंज , वप्प, और भद्दीय ने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया।

❑ **प्रसिद्ध बौद्ध दार्शनिक एवं विद्वान**

- **अश्वघोष -** कवि, नाटककार, संगीतकार, विद्वान तथा तर्कशास्त्री थे।
- बुद्धचरित (बुद्ध के जीवन पर आधारित महाकाव्य), सौन्दरानंद, सारिपुत्र प्रकरण (प्रथम नाटक) इनकी प्रमुख रचना है।
- **नागार्जुन-** शून्यवाद के नाम से प्रसिद्ध माध्यमिक धारा के प्रणेता।
- प्रथम सदी ईस्वी में चीन जाकर बौद्ध कृतियों का चीनी भाषा में अनुवाद किया।

- बौद्ध धर्म की महायान शाखा के अन्तर्गत सम्मिलित माध्यमिक या शून्यवाद मत में महात्मा बुद्ध के मध्यमार्ग को विकसित किया गया है।
- **असंग एवं वसुष-** दोनों भाई थे। पंजाब के बौद्ध भिक्षु थे।
- मूलतः सर्वास्तिवाद संप्रदाय से संबंधित थे।
- योगाचार धारा के प्रणेता मैत्रेयनाथ असंग के गुरू थे।
- **वसुबंधु -** अभिधम्मकोष तथा त्रिशिका (इसका ह्वेनसांग ने चीनी भाषा में अनुवाद किया) की रचना की।
- वसुबंधु ने चौथी सदी ईस्वी में नेपाल की यात्रा की।
- **दिगनाग-** पाँचवीं सदी के महान पाली विद्वान उनकी रचना विशुद्धिमग्ग को त्रिपिटक की कुंजी माना जाता है।
- पाँचवी सदी के महान बुद्धिजीवी, तर्कशास्त्र के प्रवर्तक थे।
- मध्यकालीन न्याय के जनक के रूप में प्रसिद्ध है।
- **आर्यदेव, शांतिदेव, संतरक्षित, कमलशील-** शून्यवाद के विद्वान थे।
- **धर्मकीर्ति-** सातवीं सदी के एक महान बौद्ध नैयायिक थे। वे सूक्ष्म दार्शनिक चिंतक तथा भाषा वैज्ञानिक थे।

❑ **बौद्ध धर्म के अष्ट महास्थान**

- **अष्ठमहास्थान :-** लुम्बिनी, बोधगया, सारनाथ, कुशीनगर, श्रावस्ती, संकाशी, राजगृह एवं वैशाली।
- इन आठों स्थल को अष्ट महास्थान कहा जाता है।
- बुद्ध ने धर्म प्रचार के दौरान सबसे ज्यादा समय श्रावस्ती में बिताया।
- पश्चिमी भारत के अधिकांश स्थल शैल निर्मित गुफाओं के रूप में हैं।

❑ **बुद्ध से संबंधित प्रतीक चिन्ह -**

- उनके जीवन से जुड़े चार पशु प्रमुख हैं।
- **हाथी -** बुद्ध के गर्भ में आने का प्रतीक
- **सांड -** यौवन
- **घोड़ा -** गृह त्याग
- **शेर -** समृद्धि
- **बोधिवृक्ष और नीचे में वज्रासन -** ज्ञान की प्राप्ति
- **चक्रम -** पदयात्रा का प्रतीक
- **चक्र-** धर्मचक्र प्रवर्तन
- **स्तूप -** मृत्यु का प्रतीक
- हीनयान में उनका प्रतिनिधित्व निम्नलिखित प्रतीकों के माध्यम से किया जाता था।

❑ **बौद्ध धर्म को राजकीय संरक्षण और प्रसार**

- बिम्बिसार , अजातशत्रु, प्रसेनजित, प्रधोत आदि ने संरक्षण दिया।
- आगे चलकर अशोक ने इसके प्रचार के लिए विदेशों में प्रचारक भेजे।
- बौद्ध विद्वान अश्वघोष, वसुमित्र, पार्श्व, कनिष्क के समकालीन थे। इसी समय इसका प्रचार चीन हुआ।
- चीनी यात्री फाह्यान (फो-क्यो-की), इवेनसांग (सी-यू-की), शुंगयून, इत्सिंग बौद्ध धर्म से प्रभावित थे।
- ह्वेनसांग के अनुसार हर्ष महायान संप्रदाय का अनुयायी था।
- पाल शासक बौद्ध धर्म के अंतिम महान संरक्षक थे। इसी समय बौद्ध धर्म में तंत्रवाद का विकास हुआ।
- धर्मपाल ने **विक्रमशिला विश्वविद्यालय** की स्थापना की जबकि देवपाल **नालंदा विश्वविद्यालय** का संरक्षक था।
- 12वीं सदी में तुर्की आक्रमण के साथ बौद्ध धर्म का अंत हो गया। तुर्कों ने नालंदा, विक्रमशिला, ओदंतपुरी को लूटा।

❑ **बौद्ध संप्रदाय-**

- **स्थविरवादी -**परंपरावादी सबको बुद्धत्व प्राप्त नहीं हो सकता था। इसका मुख्य पीठ कश्मीर में था।
- द्वितीय संगीति के बाद स्थविरवादी को ही महासांघिक हीनयानी कहने लगे।
- इन्हे थेरवादी भी कहा जाता था।
- **महासांघिक -** प्रत्येक व्यक्ति में बुद्धत्व प्राप्ति की स्वाभाविक शक्ति है।
- इसका प्रधान केन्द्र मगध में था। बाद में महासांघिकों ने ही महायान के उदय का मार्ग प्रशस्त किया।
- **हीनयान -** बुद्ध की मूल शिक्षा में विश्वास, मूर्तिपूजन में अविश्वास (प्रतीक चिन्हों की पूजा)।
- इसकी प्रमुख शाखा - सर्वस्तिवाद, सौतांत्रिक, सामित्य।
- बाद में भारत में इसकी लोकप्रियता समाप्त हो गई, पर श्रीलंका, वर्मा, कम्बोडिया, लाओस तथा थाइलैंड में यह विकसित हुआ।
- **समित्य :** हीनयान की सबसे आगे की धारा जो बौद्ध धर्म के अनात्मवाद को अस्वीकार करते हुए मानता है कि आत्मा है और इसी का पुनर्जन्म होता है।
- **वैभाषिक -** वैभाषिक संप्रदाय इसका आधार विमाषाशास्त्र नामक बौद्ध ग्रंथ है।
- इसकी उत्पत्ति का केंद्र कश्मीर में माना जाता है।
- इसका सर्वाधिक प्रचार गांधार में हुआ।
- इस मत को बाह्य प्रत्यक्षवाद भी कहा जाता है, जिसके अनुसार बाह्य जगत का ज्ञान प्रत्यक्ष से ही संभव है।
- **इसके आचार्य हैं-** वसुमित्र, बुद्धदेव, धर्मत्रात् और घोषक।
- **सौतांत्रिक -** इसका मुख्य आधार वैभाषिक के प्रतिकूल सूत्त है अतः इसे सौतांत्रिक कहा गया।
- चित्त एवं बाह्यजगत की सत्ता विद्यमान है। किंतु इसका प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं हो सकता।
- इसका ज्ञान हम अपने ही मन में बने प्रतिबिम्ब के आधार पर करते हैं।
- वाह्य वस्तु का प्रतिविम्ब मन में बनता है, इसी से बाह्य सत्ता का बोध होता है।
- **इसके प्रमुख आचार्य -** कुमारलाट, श्रीलाभ और यशोमित्र।
- **महायान-** इसकी उत्पत्ति ग्रीक आदि आक्रमण, ईसाई प्रभाव, ब्राह्मण संशोधनवाद, विस्तार की अपेक्षा, दार्शनिक आधार की आवश्यकता के मद्देनजर हुई।
- इसे बोधिसत्वयान भी कहा जाता है।
- इसका अर्थ बृहतयान अर्थात् अधिकाधिक प्राणियों को निर्वाण सुख की प्राप्ति का महापथ गृहस्थों के लिए भी संभव।
- कालांतर में पूजा-पाठ भी करने लगे (मूर्ति पूजा भी)।
- इसमें सुखावति (स्वर्ग) की परिकल्पना भी उभरकर आयी, जिसके अभिभावक अमिताभ हैं।
- **माध्यमिक या शून्यवाद -** प्रतिपादक नागार्जुन (पुस्तक माध्यधिककारिका)।
- इस मत के प्रवर्तक नागार्जुन हैं। इनकी प्रसिद्ध रचना माध्यामिक कारिका एवं प्रज्ञापारमितासूत्र हैं।
- प्रज्ञापारमितासूत्र में महात्मा बुद्ध के मध्यममार्ग का विकास दिखता है।
- नागार्जुन के अनुसार "यदि संसार मिथ्या है, तो निर्वाण भी मिथ्या है।"
- इस चिंतन को शून्यवाद या सापेक्षतावाद भी कहा जाता है।
- इस दर्शन को आइंटिन के सापेक्षवाद का पूर्वगामी भी माना जाता है।
- **इस मत के अन्य विद्वान हैं-** चंद्रकीर्ति, शांतिदेव , आर्यदेव, शांतिरक्षित
- **योगाचार या विज्ञानवाद :-** तीसरी शताब्दी ई. में **मैत्रेय** द्वारा स्थापित किया गया।
- शून्यवाद के ही समान यह भी बाह्य वस्तु की सत्ता को अस्वीकार करता है किंतु चित्त की सत्ता को मानता है।

- चित्त को ही विज्ञान मानता है जिसमें बाह्य सत्ता के अस्तित्व की प्रतीति मात्र होती है। चित्त की प्रवृत्ति ही पुनर्जन्म का कारण है।
- **इसके अन्य विद्वान-** असंग (इनकी पुस्तक सूत्रालंकार), वसुबन्धु, धर्मकीर्ति, स्थिरमति, दिगनाग (बौद्ध तर्कशास्त्र के जनक) आदि थे।

- **वज्रयान बौद्ध :-** इसके तहत प्रज्ञापारमिता बुद्ध एवं बोधिसत्व को उनकी कल्पित पत्नियों के साथ संयुक्त कर दिया गया और उनकी पत्नियां उनकी शक्ति बन गई। अतः उन्हें प्रसन्न करने के लिए उन देवियों की पूजा आरंभ हुई।
- वामाचार / योनाचार आदि के माध्यम से विभिन्न क्रिया विधि द्वारा आराध्य को प्रसन्न करने की चेष्टा होने लगी।
- 8वीं सदी के लगभग यह बंगाल में लोकप्रिय रहा जिसे बंगाल के पाल शासकों का संरक्षण मिला।
- इसकी प्रधान देवी तारा (बुद्ध की पत्नी) थी। इसके आलावा कुछ मामूली महत्व की देवियाँ भी थीं। जिनके नाम पर कबीलाई प्रभाव झलकता है जैसे योगिनी, डाकिनी, पिशाचिनी आदि।
- **वज्रयान के प्रमुख देवता-** हेरूक (शिव के समान), यमारि (यम), साम्य / जम्भव (कुबेर के समान),
- **प्रमुख पुस्तक :-** मंजुश्री मूलकल्प एवं गुह्यसमाज (असंग को गुह्यसमाज का रचयिता) हैं।
- वज्रयान का एक समुदाय 10वीं शताब्दी ईस्वी में कालचक्रयान के नाम से उभरा मान्यता है कि मंजुश्री प्रवर्तक हैं तथा कालचक्र परम देवता हैं।
- बंगाल में ही सहजयान सम्प्रदाय विकसित हुआ।

❑ **अन्य प्रमुख संप्रदाय**

- **सहजयान -** इसके प्रतिपादक महासिद्ध 'सरह' माने जाते हैं।
- इसका विकास पाल शासकों के काल में हुआ।
- **कालचक्र यान -** इसके प्रवर्तक मंजुश्री माने जाते हैं।
- इसके प्रमुख देवता श्री कालचक्र हैं, जिसके कारण इसका नाम कालचक्र यान पड़ा।
- इस संप्रदाय की प्रमुख पुस्तक सुचंद्र रचित **'विमलप्रभा'** है।
- **पूर्व शैल -** इनका वर्णन अशोक के अभिलेखों में भी मिलता है।
- यह महासांघिकों की शाखा थी।
- **भादयानीय संप्रदाय -** वशिष्ठिपुत्र पुलुमावी के नासिक गुहालेख में गौतमीपुत्र शातकर्णि की मां द्वारा इस संप्रदाय को दान दिए जाने का उल्लेख मिलता है।
- इसके प्रमुख केंद्र नासिक एवं कन्हेरी थे।

❑ **बोधिसत्व**

- बोधिसत्व महायान द्वारा प्रस्तुत आदर्श है।
- बोधिसत्व वह है, जिसने बुद्धत्व की प्राप्ति हेतु आवश्यक बोधचित्त (सहज इच्छा व करुणा) विकसित कर लिया है।
- यद्यपि स्वयं की मोक्ष प्राप्ति के बाद भी वह दूसरे प्राणियों की मुक्ति हेतु निरंतर प्रयासरत है।
- जातक कथाओं के अनुसार बुद्ध अपने पूर्वजन्मों में बोधिसत्व थे।
- बोधिसत्व द्वारा 10 पारमिताओं एवं दस भूमियों को पार करना आवश्यक है।
- बोधिसत्व को महासांधिकों द्वारा उपपादुक (स्वतः उत्पन्न) एवं सर्वास्तिवादियों द्वारा जरायुज माना जाता है।
- **बौद्ध धर्म में वर्णित प्रमुख बोधिसत्व हैं-**
- **अवलोकितेश्वर :-**
- इनका विशेष गुण करुणा है।
- इनका प्रतीक कमल है।
- इन्हें प्रधान बोधिसत्व माना जाता है।
- महायानी ग्रंथ करण्डव्यूह में इनकी महानता का वर्णन मिलता है।
- अवलोकितेश्वर की समुद्री यात्राओं के संरक्षक देवता के रूप में भी पूजा जाता है।
- कंबोडिया के थेरवादी संप्रदाय में अवलोकितेश्वर लोकेश्वर के नाम से जाने जाते हैं।
- दक्षिण-पूर्वी एशिया में कई बार उन्हें नारी रूप में भी वर्णित किया गया है।
- अजंता की गुफा 1 में चित्रित अवलोकितेश्वर सर्वश्रेष्ठ मित्तिचित्रों में से एक है।
- कन्हेरी की गुफा संख्या 90 में अवलोकितेश्वर का चित्रम बुद्ध मंडल के साथ एवं गुफा संख्या 41 में एकादशमुखी (11 मुख) के रूप में मिलता है।
- बाघ गुफा में भी इनका अंकन प्राप्त होता है।

- **मंजुश्री :-**
- यह बुद्धि की प्रत्वरता के प्रतीक हैं।
- इनके एक हाथ में खड्ग तथा दूसरे हाथ में प्रज्ञापारमितासूत्र नामक ग्रंथ है।
- इन्हें भावी बुद्ध मैत्रेय का शिक्षक माना जाता है।
- इनका अंकन अजंता की गुफा में मिलता है।

- **वज्रपाणि:-**
- यह इंद्र के समान वज्रधारण करते हैं।
- इन्हें पाप एवं असत्य का शत्रु माना जाता है।
- इनमें गौतम बुद्ध के साथ ही बेरोचन, अक्षोभ्य, अमिताभ, रत्नसंभव एवं अमोघसिद्धि समेत पांचों तथागतों की शक्तियां समाहित है।
- अम्बड्ड सुत्त वज्रपाणि का उल्लेख करता है।

- **सामंत भद्र–**
- यह ध्यान एवं आचरण से संबंधित है।
- बुद्ध, मंजुश्री एवं सामंत भद्र को सम्मिलित रूप से शाक्यमुनि त्रिमूर्ति कहा जाता है।
- इनकी दस शपथों का वर्णन महावैपुत्य कुद्धावतंसक सूत्र में मिलता है।

- **क्षितिगर्भ –**
- इनकी परिकल्पना एक ऐसे भिक्षु के रूप में की गई है. जिन्होंने तब तक बुद्धत्व न प्राप्त करने की शपथ ली है, जब तक कि नरक पूरी तरह से खाली न हो जाए।
- इन्हें नरक का अधिष्ठाता देवता भी माना जाता है।
- इन्हें एक आदर्श कारागृह नियामक के रूप में भी माना जाता है।

- **अमिताभ -**
- इन्हें संसार के अधिपति के रूप में दर्शाया गया है।
- यह स्वर्गिक बोधिसत्व है।
- सुखापती व्यूह नामक ग्रंथ में अमितान एवं उनके स्वर्ग का उत्तेव है।
- महायान में स्वर्ग को सुखावती एवं नरक को अवधि की संज्ञा दी गई है।
- इन्हें अनंत प्रकाश एवं जीवन से संबंधित बुद्ध माना जाता है।

- **आकाशगर्भ –**
- यह क्षितिगर्भ के जुड़वाँ भाई माने जाते हैं।
- इन्हें आकाश एवं महाभूत से संबंधित माना जाता है।
- इनका एक अन्य नाम गगन गज्ज है।

- **तारा –**
- यह वज्रयान संप्रदाय से संबंधित है।
- यह कार्यसिद्धि एवं सफलता हेतु आवश्यक गुणों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

- **वसुधरा –**
- यह घन, समृद्धि एवं ख्याति से संबंधित है।
- यह बोधिसत्व नेपाल में लोकप्रिय हैं।

- **भैषज्य राज-**

○ कमल सूत्र (लोटस सूत्र) के अनुसार, यह औषधि एवं उपचार के अधिष्ठाता है।
○ इन्हें औषधिराज भी कहा जाता है।
○ चंद्रप्रभा एवं सूर्यप्रभा नामक बोधिसत्व इनके सहायक है।
▪ **स्कंद-**
○ यह बौद्ध विहारों एवं बुद्ध की शिक्षाओं के रक्षक है।
▪ **सीतातपत्र-**
○ यह अलौकिक खतरों से रक्षा करते हैं।
○ इनकी पूजा महायान के साथ-साथ वज्रयान में भी लोकप्रिय है।
▪ **सर्वनिवारणाविष्कम्भिन्-**
○ ये ध्यान में आने वाले किसी भी प्रकार के व्यवधान के निवारण हेतु उत्तरदायी बोधिसत्व है।
▪ **महास्थानामाप्त –**
○ यह बुद्धि के प्रतीक है। इनके नाम का अर्थ "महान शक्ति की प्राप्ति है। इनका वर्णन लोटस सूत्र, सुंरगम सूत्र आदि में मिलता है।
▪ **मैत्रेय-**
○ सत्य है जिनका अभी जन्म होना बाकी है। यह 'पीड़ित उद्धारक' संकल्पना के प्रतिनिधि है। यह दयालु बोधिसत्व है। यह कलश धारण करते हैं। यह इकलौते बोधिसत्व है, जिनकी मान्यता हीनयान एवं महायान दोनों में समान रूप से मिलती है।
○ माना जाता है कि यह गौतम बुद्ध के महापरिनिर्वाण के 4000 वर्ष बाद जन्म लेंगे।
○ **लॉफिंग बुद्धा** को मैत्रेय का प्रतीक माना जाता है।
○ अनितान सूत्र एवं लोटस सूत्र आदि बौद्ध ग्रंथों में इनका नाम अजित भी बताया गया है।
○ गांधार कला में निर्मित बोधिसत्व मूर्तियों में सर्वाधिक संख्या मैत्रेय प्रतिमाओं की है।
○ महायान में 8 महान बोधिसत्यों की अवधारणा है
○ तिबाती बौद्ध धर्म में त्रिदेव की तरह ही बोधिसत्वों की त्रिमूर्ति का प्रचलन है।
○ **ये बोधिसत्य हैं-** अवलोकितेश्वर (विष्णु के समान), मंजुश्री (ब्रह्मा के समान), वज्रपाणि (शिव के समान)
○ महायान शाखा में बोधिसत्व की अवधारणा उभरी।

हीनयान एवं महायान में अंतर

हीनयान	महायान
हीनयान का शाब्दिक अर्थ है- निम्न मार्ग।	महायान का शाब्दिक अर्थ है- उत्कृष्ट मार्ग।
यह दुखवादी दर्शन है जो मानता है कि इच्छा आदि को त्याग कर धम्मचक्र परिवर्तन सुत्त के अनुसार अर्हत की प्राप्ति कर सकते हैं	यह एक उदारवाद दर्शन है जो मानता है कि स्वयं को मोक्ष प्रदान करना अपर्याप्त है। सभी को मोक्ष मिल सकता है अतः इस आधार पर उन्होंने बोधिसत्व की संकल्पना विकसित की
यह व्यक्तिवादी धर्म है। इसके अनुसार, प्रत्येक व्यक्ति को अपने प्रयत्नों से ही मोक्ष प्राप्त करना चाहिए।	इसमें परोपकार एवं परसेवा पर बल दिया गया। इसका उद्देश्य समस्त मानव जाति का कल्याण है।
हीनयान बुद्ध को भी एक शिक्षक के रूप में देखते हैं एवं उनके प्रतीक सम्बद्ध स्थल को ही महत्व देते हैं।	महायानी बुद्ध को देवता मानते हैं और उनकी मूर्ति पूजा करते हैं
भाषा- पाली	भाषा- संस्कृत
यह मूर्तिपूजा एवं भक्ति में विश्वास नहीं करते है।	यह मूर्तिपूजा एवं भक्ति में विश्वास करते है।
बुद्ध मानव के रूप में मानते हैं	बोधिसत्व (बुद्ध प्राक् रूप) के रूप में मानते हैं
यह आत्मा एवं पुनर्जन्म में विश्वास नहीं करते है।	यह आत्मा एवं पुनर्जन्म में विश्वास करते है।
इसकी साघन पद्धति अत्यंत कठोर है तथा यह भिक्षु जीवन का समर्थक है।	इनके सिद्धांत सरल एवं सर्व-साधारण के लिए सुलभ हैं।
इसका आदर्श 'अर्हत' पद को प्राप्त करना है।	इसका आदर्श 'बोधिसत्व' है।
इसके प्रमुख संप्रदाय हैं- वैमाषिक तथा सौत्रांतिक।	इसके प्रमुख संप्रदाय हैं- शून्यवाद (माध्यमिक) तथा विज्ञानवाद (योगाचार)।
प्रसार- मुख्यतः भारत में रहा।	**प्रसार -** भारत मध्य एवं दक्षिण एशिया के साथ ही संपूर्ण विश्व में
हीनयान त्रिकाय की संकल्पना का खंडन करता है।	महायान त्रिकाय (धर्मकाय, निर्माणकाय एवं संभोगकाय) का समर्थक है।
हीनयानी आत्मा को नहीं मानते हैं।	महायानी आत्मा को मानते हैं।

▪ **Note :-**
▪ **त्रिकाय -** धर्मकाय, निर्माणकाय एवं संभोगकाय
▪ दीघ निकाय, सुत्तपिटक का एक निकाय है। इसमें राजनीतिक प्रवृत्तियों की उत्पत्ति के सन्दर्भ में जानकारी मिलती है।
▪ विभाषाशास्त्र' ग्रन्थ में बौद्ध सिद्धान्तों की परिभाषा मिलती है।
▪ **अभिधम्मपिटक** में बौद्ध धर्म का दार्शनिक पक्ष उद्घाटित हुआ है। इसके संकलनकर्ता मोग्गलिपुत्त तिस्स हैं।
○ 'यमक' बुद्ध पिटक अर्थात् अभिधम्मपिटक से सम्बन्धित है। इसकी रचना पालि भाषा में की गई थी। यमक का सम्बन्ध थेरवादी बौद्ध सम्प्रदाय से है। यमक में बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों का वर्णन मिलता है तथा साथ ही इसमें महात्मा बुद्ध के उपदेशों का संकलन है। इसमें दार्शनिक सिद्धान्तों का वर्णन है। यह प्रश्नोत्तर शैली में है। अभिधम्मपिटक में सात ग्रन्थ हैं- धम्मसंगणि, विभंग, धातुकथा, पुग्गलपंचति, कथावत्थु, यमक तथा पट्ठान।

❑ बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म की तुलना

▪ बौद्ध एवं जैन दोनों ही धर्म छठी शताब्दी ई.पू. से प्रारंभ हुए
▪ दोनों ही द्वितीय नगरीकरण प्रसूत सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं आर्थिक संक्रियाओं का परिणाम थे।
▪ दोनों के प्रमुख प्रवर्तक गौतम बुद्ध एवं महावीर भी समकालीन थे।
▪ विनय पिटक महावीर व बुद्ध को समकालीन बताता है।
▪ दीघ निकाय के सामन्नफलसुत्त एवं जैन ग्रंथ स्थानंग के अनुसार भी ये समकालीन थे।
▪ बौद्ध ग्रंथों में महावीर को निगन्थनाथपुत्त कहा गया है और उनकी मृत्यु बुद्ध से पहले होने का वर्णन भी मिलता है।
▪ मज्झिमनिकाय में बुद्ध व महावीर की भेंट तथा बुद्ध द्वारा महावीर की प्रशंसा का उल्लेख है।

❑ बौद्ध एवं जैन धर्म में समानता

- दोनों धर्मों का लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति।
- दोनों धर्मों में कर्मवाद, अहिंसा, अस्तेय, सदाचार आदि गुणों पर विशेष बल।
- दोनों धर्म उपनिषदों के चिंतन् से प्रभावित।
- दोनों ही गृहस्थ धर्मावलंबियों हेतु नियमों में छूट का प्रावधान करते हैं।
- दोनों ही क्षत्रियों को ब्राह्मणों पर वरीयता देते हैं।
- दोनों ही वर्णव्यवस्था के विरोधी थे। इन्होंने कर्म को ही सामाजिक प्रतिष्ठा का आधार माना।
- दोनों ही व्यापारी वर्ग को प्रोत्साहन देते थे।
- दोनों ही धर्मों ने संसार को दुःखों से भरा माना है।
- दोनों ही धर्म अनीश्वरवादी हैं।
- दोनों ही धर्म पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं।
  - बौद्ध धर्म में पुनर्जन्म का विश्लेषण मिलिंदपन्हो में मिलता है।
- दोनों ही धर्मों में ज्ञान एवं ध्यान को आवश्यक माना गया।

बौद्ध एवं जैन धर्म में असमानताएं	
जैन धर्म	**बौद्ध धर्म**
जैन धर्म कण-कण में आत्माजीव की सत्ता मानता है	बौद्ध धर्म आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार नहीं किया है।
महावीर के अनुसार, मोक्ष या निर्वाण मृत्यु के पश्चात ही संभव है	गौतम बुद्ध ने कहा कि निर्वाण जीवन के दौरान संभव है
महावीर ने अतिशय काया-क्लेश एवं नग्नता पर बल दिया	गौतम बुद्ध ने 'अति' का विरोध करते हुए मध्यम मार्ग का उपदेश दिया।
महावीर द्वारा संपूर्ण जगत को शाश्वत एवं नित्य माना गया	बुद्ध के अनुसार संसार क्षणमंगुर एवं अस्थिर है।
जैन धर्म बहुसांसारिक संकल्पना पर मौन है।	बौद्ध धर्म बहुसांसारिक संकल्पना को मानता है
प्रसार - मुख्यतः भारत में ही	**प्रसार** - पूरे विश्व में
भाषा- प्राकृत	**भाषा**- पाली
जैन धर्म अहिंसा पर अत्यधिक बल देता है।	बौद्ध धर्म अहिंसा के पक्षधर हैं, परंतु जैन धर्म से कम।

❑ बौद्ध धर्म की देन

- अहिंसा का सिद्धांत
- सामाजिक समता की संकल्पना
- स्त्रियों को धार्मिक मठों में प्रवेश
- कला स्थापत्य
- विभिन्न देशों में भारतीय संस्कृति का प्रसार
- चक्रवर्ती राज्य की संकल्पना
- दासों के प्रति मानवीय व्यवहार का दृष्टिकोण
- व्यावसायिक विकास में योगदान
- मूर्ति पूजा

❑ बौद्ध दर्शन से सम्बंधित शब्दावली -

शब्द	अर्थ
पत्तिमोक्ख	अपराधों का प्रायश्चित
उपोषद	धर्म विशेष के विषयों पर चर्चा
पवारण	वर्षाकाल की समाप्ति के बाद नए सत्र के प्रारम्भ
विनय धर	संघ का प्रमुख
नत्ति	संघ की सभा में प्रस्तुत प्रस्ताव
भू-मस्किम	बहुमत से पारित हुआ प्रस्ताव
अनुसावन	संघ की सभा में प्रस्ताव का पाठ
अधिकरण	प्रस्ताव पर मतभेद
पाराजिक	गंभीरतम 4 अपराध (संभोग, चोरी, हत्या, आध्यात्मिक उपलब्धि की झूठी घोषणा)
गुल्हक	गुप्त मतदान
विवतक	प्रत्यक्ष मतदान
शलाका ग्राहक	मतदान अधिकारी
उपसंपदा	बौद्ध संघ में प्रवेश
संघाराम	भिक्षुओं का आवास
उदकसाटि	भिक्षुणियों के वस्त्र
प्रव्रज्या	गृहस्थ जीवन का त्याग

❑ बौद्ध धर्म के त्रिपिटक

पिटक	संकलनकर्ता	महत्वपूर्ण तथ्य
विनय पिटक	उपालि	नियमों का संग्रह, सबसे छोटा पिटक
सुत्त पिटक	आनंद	बुद्ध के उपदेश
अभिधम्म पिटक	मोग्गलिपुत्त तिस्स	बौद्ध दर्शन

❑ बौद्ध धर्म के पतन के कारण

- सम्राटों का संरक्षण न मिलना
- बौद्ध भिक्षुओं का पतित जीवन
- बौद्ध संघों में स्त्रियों का प्रवेश
- बौद्ध धर्म का सम्प्रदाओं में विभक्त होना
- भाषा में परिवर्तन
- देवस्तुति एवं मूर्ति पूजा का प्रारम्भ
- गृहस्थ धर्म की अवहेलना
- नास्तिकता
- विदेशियों के आक्रमण।

❑ बौद्ध मुद्राएँ

- बौद्ध मुद्राएँ निम्नलिखित हैं
- **अभय** मुद्रा
  - महात्मा बुद्ध की यह मुद्रा शान्ति, सुरक्षा, दयालुता एवं भयमुक्तता का प्रतीक है।
- **भूमि** स्पर्श **मुद्रा**
  - बुद्ध की यह मुद्रा भाव-भंगिमा बोधगया में उनके ज्ञान प्राप्ति (प्रबोधन) की संकेतक है।
- **धर्मचक्र मुद्रा**
  - बुद्ध की यह मुद्रा उनके जीवन काल के उन महत्त्वपूर्ण क्षणों के ऊपर केन्द्रित है, जब वे प्रबोधन के पश्चात् सारनाथ के कुरंग उपवन में पहली बार धर्मोपदेश दे रहे थे।
- **ध्यान मुद्रा**
  - बुद्ध की यह मुद्रा बुद्ध द्वारा संघ के अच्छे नियमों एवं विधानों के लिए समाधिपूर्ण एवं संकेन्द्रण की भाव-भंगिमा को प्रदर्शित करती है।
- **वरद मुद्रा**
  - बुद्ध की यह मुद्रा अभिलाषा, सच्चाई, दया एवं परोपका जैसे कार्यों की ओर संकेत करती है।
- **बज्र मुद्रा**

- यह मुद्रा ज्ञान की भाव-भंगिमा का संकेतक है।

- **वितर्क मुद्रा**
- यह मुद्रा बुद्ध की शिक्षा के विचार विमर्श एवं उसके प्रसारण की संकेतक है।

- **ज्ञान मुद्रा**
- यह मुद्रा बुद्ध के अँगूठे के स्पर्श से चक्र के निर्माण औ हथेली से सीने को स्पर्श द्वारा प्रदर्शित करती है।

- **करना मुद्रा**
- बुद्ध की यह मुद्रा आसुरी शक्तियों के निष्कासन और बाधाओं को समाप्त करने (जैसे वीमारी और कमजोरी या नकारात्मक विचारों) की ओर संकेत करती है।

प्राचीन बौद्ध विश्वविद्यालय		
विश्वविद्यालय	संस्थापक	अवस्थित
नालन्दा	कुमारगुप्त प्रथम	बिहार
विक्रमशिला	धर्मपाल	बिहार
सोमापुरी	धर्मपाल	बंगाल
ओदन्तपुरी	गोपाल	बिहार
बल्लभी	भट्टारक	गुजरात

❑ अन्य सम्प्रदाय

- बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार, छठी सदी ई. पू. में भारत में लगभग 62 सम्प्रदाय थे, जिनमें कुछ प्रमुख सम्प्रदाय निम्नलिखित थे

सम्प्रदाय	संस्थापक	मुख्य विचार
भौतिकवादी	अजित-केस-कम्बलिन	अच्छे या बुरे कर्मों का कोई फल नहीं होता, अधिकतम सुख प्राप्त करना चाहिए।
अक्रियावादी	पूरण कश्यप	'न तो कर्म होता है और न पुनर्जन्म'
आजीवक	मक्खलि गोशाल	आत्मा को अनेकानेक पुनर्जन्मों के पूर्व निर्धारित अटल चक्र से गुजरना ही पड़ता है।
नियतिवादी	पकुध कच्चायन	सब कुछ पूर्व से ही निश्चित है।
अनिश्चियवादी	संजय वेलिट्ठपुत्र	न तो यह कहा जा सकता है कि स्वर्ग या नरक है या फिर नहीं है।

- उत्तरवैदिक काल के पश्चात् भारत में जो महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिला वह है द्वितीय नगरीय क्रांति ।
- कृषि अधिशेष ने अनेक शिल्पों को जन्म दिया इससे व्यापार वाणिज्य को बढ़ावा मिला।
- इसी समय भारत में आहत मुद्रा का चलन प्रारंभ हुआ इससे भी व्यापार वाणिज्य में तेजी आयी।
- अनेक व्यापारिक वर्गों की उपस्थिति इसी तथ्य की ओर संकेत करती है इस भौतिक विकास में द्वितीय नगरीकरण को मजबूत आधार प्रदान किया।
- इसी समय भारत में राजनैतिक स्तर पर अनेक छोटे-छोटे जनपद, महाजनपद के रूप में परिवर्तित होने लगे।
- इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप सोलह महाजनपदों का स्वरूप निश्चित हुआ। इन जनपदों के उदय ने भी द्वितीय नगरीकरण को बढ़ावा दिया।
- इसके अतिरिक्त लोहे का कृषि उपकरणों के रूप में प्रयोग भी द्वितीय नगरीय क्रांति के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है।

वैष्णव धर्म एवं शैव धर्म

❑ वैष्णव धर्म/ भागवत धर्म

- भागवत धर्म का उद्भव मौर्योत्तर काल में हुआ। इस धर्म के विषय में प्रारम्भिक जानकारी उपनिषदों में मिलती है।
- इस धर्म के सस्थापक वासुदेव कृष्ण थे जो वृष्णि वंशीय यादव कुल के नेता थे।
- भगवत गीता के अनुसार भगवत धर्म का उपदेश सर्प्रथम कृष्ण द्वारा सूर्य को दिया गया इसे **अष्टांगिक योग** कहा जाता हैं।
- वासुदेव की पूजा का सर्वप्रथम उल्लेख भक्ति के रूप में पाणिनि के समय ई० पू० पाँचवी सदी में मिलता है।
- छान्दोग्य उपनिषद में श्री कृष्ण का उल्लेख सर्वप्रथम मिलता है। उसमें कृष्ण को देवकी पुत्र वे ऋषि घोरा अंगिरस का शिष्य बताया गया है।
- बाह्मण धर्म के जटिल कर्मकाण्ड एवं यज्ञीय व्यवस्था के विरुद्ध प्रतिक्रिया स्वरूप उदय होने वाला पहला सम्प्रदाय भागवत सम्प्रदाय था।
- वासुदेव कृष्ण के भक्त या उपासक भागवत कहलाते थे।
- एक मानवीय नायक के रूप में वासुदेव के देवीकरण का सबसे प्राचीन उल्लेख पाणिनी की अष्टाध्यायी से प्राप्त होता है।
- वासुदेव कृष्ण को वैदिक देव विष्णु का अवतार माना गया। बाद मे इनका समीकरण नारायण से किया गया। नारायण के उपासक पांचरात्रिक कहलाए।
- भागवत धर्म सम्भवत सूर्य पूजा से सम्बन्धित है।
- भावगत धर्म का सिद्धान्त भगवद्गीता में निहित है।
- वासुदेव-कृष्ण सम्प्रदाय सांख्य योग से सम्बन्धित था। इसमें वेदान्त, सांख्य और योग के विचारधाराओं के दार्शनिक तत्वों को मिलाया गया है।
- वाराह, कूर्म व मत्स्य अवतार को प्रजापति के रूप में उल्लेख किया गया है।
- जैन धर्म गन्ध **उत्तराध्ययन सूत्र** में वासुदेव जिन्हें केशव नाम से भी पुकारा गया है को 22वें तीर्थंकर अरिष्टनेमि का समकालीन बताया गया है।
- भागवत सम्प्रदाय के मुख्य तत्व भक्ति और अहिंसा है।
- भगवतगीता में प्रतिपादित 'अवतार सिद्धान्त' भागवत धर्म की महत्वपूर्ण विशेषता है।
- मत्स्य पुराण में विष्णु के अवतारों के क्रम में कृष्ण के स्थान पर 'बुद्ध' को स्थान दिया गया है।
- भागवत सम्प्रदाय के नायकों का विवरण वायु पुराण में निम्नलिखित उपास्यों के रूप में मिलता है-
  - **संकर्षण-** रोहिणी पुत्र
  - **वासुदेव-** देवकी पुत्र
  - **प्रद्युम्न -** रुक्मणी पुत्र (विदर्भराज की कन्या)
  - **साम्ब -** जाम्बवती पुत्र
  - **अनिरुद्ध -** प्रद्युम्न पुत्र
- **ऐतरेय ब्राह्मण** में विष्णु का उल्लेख सर्वोच्च देवता के रूप में किया गया है।
- भगवान विष्णु को अपना इष्टदेव मानने वाले भक्त वैष्णव कहलाए तथा तत्सम्बन्धी धर्म वैष्णव कहलाया।
- भागवत से वैष्णव धर्म की स्थापना विकास क्रम की एक धारा है।
- विष्णु के अधिकतम अवतारों की संख्या 24 है पर मत्स्यपुराण में दस अवतारों का उल्लेख मिलता है।
- इन अवतारों में कृष्ण का नाम नहीं है क्योंकि कृष्ण स्वयं भगवान के साक्षात् स्वरूप है।
- **प्रमुख दस अवतार निम्न हैं-** मत्स्य, कूर्म (कच्छप), वाराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, बलराम, बुद्ध और कल्कि (कलि)।
  - विष्णु के अवतारों में 'वराह अवतार सर्वाधिक लोकप्रिय था।
  - वराह का प्रथम उल्लेख **ऋग्वेद** में है।।
  - नारायण, नृसिंह एव वामन दैवीय अवतार माने जाते हैं और शेष सात मानवीय अवतार माने जाते हैं।
  - अवतारवाद का सर्वप्रथम स्पष्ट उल्लेख **भगवद्गीता** में मिलता है।

- परम्परानुसार शूरसेन जनपद के अंधक, वृष्णि संघ में कृष्ण का जन्म हुआ था और वे अंधक, वृष्णि संघ के प्रमुख भी थे।
- कालान्तर में पाँच वृष्णि- नायकों (वीरों), संकर्षण (बलदेव), वासुदेव कृष्ण प्रद्युम्न, साम्ब, अनिरुद्ध की पूजा की जाती थी।
- वासुदेव कृष्ण सहित चार वृष्णि वीरों की पूजा की **चतुर्वर्यूह** के रूप में कल्पना की गई है।
- चतुर्वर्यूह पूजा का सर्वप्रथम उल्लेख विष्णु संहिता में मिलता है
- **चतुर्वर्यूह के चार प्रमुख देवता**
  - संकर्षण
  - प्रद्युम्न
  - अनिरुद्ध
  - साम्ब

- **पाञ्चरात्र -** यह वैष्णव धर्म का प्रधान मत था। इस मत का विकास लगभग तीसरी शती ई०पू० में हुआ।
- नारद के अनुसार पाञ्चरात्र में परमतत्व, मुक्ति, युक्ति, योग और विषय (संसार) जैसे पांच पदार्थ हैं इसलिए यह पाञ्चरात्र कहा गया है।
- पाञ्चरात्र के मुख्य उपासक नारायण विष्णु थे।
- **पाञ्चरात्र व्यूह के प्रमुख**
  - वासुदेव
  - लक्ष्मी
  - संकर्षण
  - प्रद्युम्न
  - अनिरुद्ध
- साम्ब (सूर्य पूजा से सम्बन्धित था) पाञ्चरात्र व्यूह में नहीं आते हैं जबकि चतुर्यूह में आते हैं।
- दक्षिण भारत में भागवत धर्म के उपासक **अलवार** कहे जाते थे।
- अलवार अनुयायियों की विष्णु अथवा नारायण के प्रति अपूर्व निष्ठा और आस्था थी।
- वैष्णव धर्म का गढ़ दक्षिण में तमिल प्रदेश में था।
- 9वीं और 10वीं शताब्दी का अंतिम चरण अलवारों के धार्मिक पुनरुत्थान का उत्कर्ष काल था।
- इन भक्ति आन्दोलन में **तिरुमंगाई, पेरिय अलवार, स्त्री संत अण्डाल** तथा **नाम्मालवार** के नाम विशेष उल्लेखनीय है।
- 'नारायण' का प्रथम उल्लेख **'शतपथ ब्राह्मण'** में मिलता है।
- मेगस्थनीज ने कृष्ण को **'हेराक्लीज'** कहा।

❑ **वैष्णव धर्म के सिद्धान्त एवं शाखाएँ**

वैष्णव धर्म के सिद्धान्त एवं शाखाएँ			
प्रमुख सम्प्रदाय	मत	आचार्य	समय
वैष्णव सम्प्रदाय	विशिष्टाद्वैत	रामानुज	12वीं शताब्दी
ब्रह्म सम्प्रदाय	द्वैतवाद	माधव (आनंदतीर्थ)	13वीं शताब्दी
रूद्र सम्प्रदाय	शुद्धाद्वैत	विष्णु स्वामी / बल्लभाचार्य	13वीं शताब्दी
सनक सम्प्रदाय	द्वैताद्वैत	निम्बार्क	13वीं शताब्दी

- प्रतिहार के शासक मिहिर भोज ने विष्णु को निगुण और सगुण दोनों रूपों में स्वीकार करते हुए 'हृषीकेश' कहा।
- केरल का सन्त राजा कुलशेखर विष्णु का भक्त था।

- **Note :-**
- भगवत गीता मूलतः महाभारत के छठवें पर्व भीष्म पर्व का भाग है।
- यह महाभारत के युद्ध के समय भगवान श्री कृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया उपदेश है।
- इसमें 18 अध्याय तथा 700 छन्द है। इसका प्रथम अंग्रेजी अनुवाद चार्ल्स विल्किंस ने 1785 ई. में लंदन में किया था।
- इसकी प्रस्तावना गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग ने लिखा था।
- गाँधी जी ने इसे 'विश्वमाता' कहकर सम्बोधित किया है।
- सर्वप्रथम इसी में अवतारवाद का विवरण प्राप्त होता है।
- इसमें ज्ञानयोग, भक्तियोग तथा कर्मयोग का अद्भुत समन्वय मिलता हैं।

शैव धर्म

❑ **शैव धर्म**

- शैव धर्म की शुरुआत शुंग-सातवाहन काल में हुई थी और गुप्त काल में यह चरम पर पहुंचा था।
- इसके अनुयायी शिव को सर्वोच्च शक्ति मानकर उनकी पूजा करते हैं।
- इसकी शिक्षाएं वेदों, उपनिषदों, शैव लघु उपनिषदों, और आगमों पर आधारित हैं।
- इसके अनुयायियों को शैव या नयनार कहा जाता है।
- इसमें कई उप-संप्रदाय हैं, जैसे कि पाशुपत, कापालिक, कालमुख, लिंगायत, शाक्त, नाथ, दसनामी, और नाग।
- इसके अनुयायी भगवा या सफ़ेद वस्त्र पहनते हैं।
- इसके अनुयायी भभूति और चंदन का तिलक लगाते हैं और रुद्राक्ष माला पहनते हैं।
- इसमें समाधि देने की परंपरा है।
- इसके अनुयायी चंद्रमा पर आधारित व्रत-उपवास करते हैं।
- इसके अनुयायियों के मंदिर को शिवालय कहते हैं।
- शैवमत का मूलरूप ऋग्वेद में रुद्र की आराधना में हैं।
- 12 रुद्रों में प्रमुख रुद्र ही आगे चलकर शिव, शंकर, भोलेनाथ और महादेव कहलाए।
- **शैव धर्म के पांच मंत्र (पंचमंत्र) बताए जाते हैं-**
- ईशान (शिव का मस्तक),
- तत्पुरुष (शिव का मुख),
- घोर (शिव का हृदय),
- कामदेव (शिव का गुह्य अंग),
- संद्योजात (शिव का पाद)।
- **शैव धर्म तीन मूल पदार्थों में विश्वास करता है-**
- पति - शिव ही पति है।
- पशु - जीवात्मा ही पशु है।
- पाश - यह जीवात्मा का बंधन है।
- शैव धर्म के अनुसार, पाश हटने के बाद जीव चैतन्य शिव बन जाता है।
- **पाश से मुक्ति के चार उपाय हैं-** विद्या ,योग ,क्रिया ,तप
- **शैव धर्म के त्रिरत्न हैं-**
- शिव (कर्ता)
- शक्ति (कारण)
- बिंदु (उपादान)
- इन तीनों के सम्मिलित योग से ही ज्ञान प्राप्ति संभव है।

❑ **शैव सम्प्रदाय**

- **महाभारत में माहेश्वरों (शैव) के चार सम्प्रदाय बतलाए गए हैं:**
  - शैव
  - पाशुपत
  - कालदमन
  - कापालिक।
- **पाशुपत**
  - शैवों का सबसे प्राचीन सम्प्रदाय है जिसकी उत्पत्ति ई. पू. दूसरी शताब्दी में हुई थी।
  - पुराणों के अनुसार इस सम्प्रदाय की स्थापना लकुलीश अथवा लकुली नामक ब्रह्मचारी ने की थी।
  - इस सम्प्रदाय के अनुयायी लकुलीश को शिव का अवतार मानते हैं।
  - लकुलीश का जन्म गुजरात में कायावरोहण नामक स्थान पर हुआ था।
  - इन्होंने ईसा पूर्व दूसरी सदी में पाशुपत सम्प्रदाय की स्थापना की थी।
  - इस सम्प्रदाय के लोग अपने हाथ में एक लकुट या दण्ड धारण करते थे, जिन्हें शिव का प्रतीक माना जाता था।
  - इसका प्राचीनतम अंकन कुषाण शासक हुविष्क की एक मुद्रा पर मिलता है।
- **कालामुख संप्रदाय** –
  - शिवपुराण में इन्हें महाव्रतधर कहा गया है।
  - नर-कपाल में भोजन करना, सुरा पीना तथा मानव-चिता- भस्म का शरीर पर लेपन इनके कर्म थे।
- **कापालिक संप्रदाय**
  - इस संप्रदाय के ईष्टदेव- भैरव थे तथा इसका केंद्र- श्री शैल नामक स्थान पर था।
  - इस संप्रदाय में भैरव को नरबलि तथा सुरा का भोग लगाया जाता था।
  - सिर पर बड़े बाल, रुद्राक्ष की माला एवं शरीर पर श्मशान की भस्म लगाना आदि इनके प्रमुख लक्षण थे।
  - कापालिकों का उल्लेख भवभूति कृत **'मालती माधव'** ग्रंथ में किया गया है।
  - अघोरी एक अन्य वाममार्गी शैव संप्रदाय था।
- **शैवाद्वैत संप्रदाय**
  - संस्थापक शंभूदेव तथा श्रीकंठ शिवाचार्य थे।
  - श्रीकंठ ने शैवाद्वैत को दार्शनिक रूप में प्रस्तुत किया। शैवाद्वैत संप्रदाय को शिव विशिष्टाद्वैत भी कहा जाता है।
  - इस संप्रदाय में 'परमशिव' को ब्रह्म माना गया है।

❑ **अन्य शैव सम्प्रदाय**

- **कश्मीरी शैव मत**
  - इस संप्रदाय के संस्थापक वसुगुप्त।
  - यह विशुद्ध ज्ञानमार्गी और दार्शनिक संप्रदाय है, जिसमें कापालिकों के घृणित आचारों का निषेध किया गया।
- **लिंगायत / वीरशैव संप्रदाय**
  - इसके प्रवर्तक बसव थे
  - इन्हें नंदी का अवतार माना जाता है।
  - यह कलचुरि नरेश के मंत्री थे।
  - लिंगायत शिवलिंग को चांदी के सम्पुट में रखकर गले में धारण करते है।
  - लिंग और नंदी की पूजा करते हैं।
  - वे पुनर्जन्म के सिद्धांत को नहीं मानते हैं।
  - अक्का महादेवी इस संप्रदाय की प्रमुख महिला संत थीं।
  - लिंगायत ब्राह्मण विरोधी थे तथा मूर्तिपूजा, वर्णाश्रम व जाति प्रथा आदि को नकारते हैं।
  - ये दाह संस्कार के विरोधी हैं तथा शवों को दफनाते हैं।
  - लिंगायत निष्काम कर्म में विश्वास रखते हैं।
  - **इस सम्प्रदाय के 5 महापुरुष माने जाते हैं**-रेणुकाचार्य, दारुकाचार्य, एकोरामाचार्य, पंडिताराध्य और विश्वाराध्य। इस मत में निष्काम कर्म को प्रधानता दी गई है।
- **नाथ पंथ अथवा योगिनी कौल संप्रदाय**
  - इसके प्रवर्तक मत्स्येंद्र नाथ थे
  - इनकी क्रियाएं वज्रयानी बौद्धों से मिलती-जुलती हैं।
  - इसमें शिव को आदिनाथ मानते हुए नौ नाथों को दिव्य पुरुष की मान्यता दी गई है।
  - इनकी साधना पद्धति में नारी का प्रधान स्थान है।
  - दसवी-ग्यारहवीं सदी में गोरखनाथ ने इसका व्यापक प्रचार किया। नाथ पंथी योगियों से ही सूफियों ने हठ योग सीखा।

❑ **शैव धर्म का विकास**

काल	विकास सम्बंधित तथ्य
हड़प्पा काल	शैव धर्म सैंधव सभ्यता से ही मिलना प्रारंभ हो जाती है। मोहनजोदड़ो से पद्मासन मुदा में त्रिमुखी योगी को मार्शल ने शिव देवता बताया है।
वैदिक काल	ऋग्वेद में शिव को 'रुद्र' बताया है। उहुत मुद्राओं पर वृषभ तथा नंदि पद के विद्ध मिलते हैं।
मौर्योत्तर काल	कुषाणों के सर्वाधिक सिक्के शैव धर्म से ही संबंधित हैं। कनिष्क एवं हविष्क के सिक्कों पर शिव का उल्लेख मिलता है। वासुदेव शैव मतायलंबी था। शक शासक भोग एवं पहलय शासक गोष्योफर्नीस की मुद्राओं पर शिवांकन मिलता है।
गुप्त काल	शिव का पहला उल्लेख हरिषेण रचित प्रयाग प्रशस्ति में गंगा अवतरण के रूप में मिलता है। गुप्तकालीन कवि कालिदास ने 'कुमारसंभव' और रघुवंश में शिव की महिमा का गान किया है। कुमारगुप्त प्रथम के समय में खोह तथा करमदंडा में शिवलिंग की स्थापना हुई। गुप्त काल में नचना कुवार में पार्वती मंदिर तथा मूमरा में शिव मंदिर का निर्माण कराया गया। कुमारगुप्त के सिक्कों पर मयूर पर बैठे कार्तिकय की आकृति मिलती है। स्कंदगुप्त ने शिव के सम्मान में वृषभ प्रकार के सिक्के चलवाए।
वर्द्धन काल	बौद्ध धर्म अपनाने से पहले हर्ष वर्द्धन शैव था। मधुबन ताम्रपत्र से हर्ष की उपाधि तथा शैव होने का उल्लेख मिलता है। हर्ष का दरबारी कवि बाणभट्ट शैव थे हर्ष का समकालीन, गौड़ नरेश शशांक भी कट्टर शैव था। मेगस्थनीज ने शिव को 'डायनीसस' कहा हैं। पतंजलि, मौर्य सम्राटों द्वारा शिव व स्कंद की प्रतिमाएं बनाकर बेचे जाने का उल्लेख करते हैं।
राजपूत काल	राजपूत काल में चंदेलों ने खजुराहो में कन्दरिया महादेव का मंदिर बनवाया। कलचुरि, परमार, प्रतिहार, सेन, चंदेल, चेदि, गहड़वाल आदि राजपूत शासकों ने समय-समय पर शिव की आराधना की थी।

राष्ट्रकूट	कृष्ण प्रथम ने एलोरा में प्रसिद्ध शिव मंदिर का निर्माण करवाया
पाल शासक	नारायण पाल ने बौद्ध होते हुए भी एक सहस्री शिव मंदिरों का निर्माण करवाया। विग्रहपाल ने भी शिव मंदिर बनवाया। पाल राजाओं ने पाशुपत संप्रदाय के लिए शिवालयों की स्थापना की। पाल युग में असम, बंगाल और उड़ीसा में अनेक शिव मंदिर बने।
चालुक्य शासक(गुजरात)	भीम प्रथम ने सोमनाथ के प्रस्तर मंदिर का निर्माण करवाया। महमूद गजनवी द्वारा तोड़ दिए जाने पर कुमारपाल ने सोमनाथ के मंदिर का पुनर्निर्माण करवाया।
दक्षिण भारत	दक्षिण भारत में शैव धर्म का प्रचार-प्रसार करने वाले प्रमुख नयनार संत थे

- **Note:-**
- शिव की प्राचीनतम मूर्ति चेन्नई के निकट रेन्निगुंटा के गुण्डिमल्लम से मिली **'गुण्डिमलमलिंग'** है।
- प्रमुख नयनार संत थे-सुंदरमूर्ति, अप्पार, तिरुग्नन सम्बन्दर, माणिक्कवाचगर, नाम्बिआन्दार नाम्बि आदि।
- श्वेताश्वर उपनिषद में कहा गया है कि न सत् है न असत् है केवल शिव है।
- शैव धर्म से संबंधित द्वादश ज्योतिर्लिंग हैं -सोमनाथ, नागेश्वर (द्वारका के समीप), केदारनाथ, विश्वनाथ (काशी), वैद्यनाथ, महाकालेश्वर (उज्जैन), ओंकारेश्वर (म.प्र.), भीमेश्वर (नासिक), त्र्यम्बकेश्वर (नासिक), घुश्मेश्वर (राजस्थान), मल्लिकार्जुन (आंध्र प्रदेश), रामेश्वरम्।

❑ शिव की प्रतिमाएँ

- शैव सम्प्रदाय के महत्वपूर्ण अंग हैं, और प्रत्येक प्रतिमा एक विशेष रूप और शक्ति को दर्शाती है। नीचे शिव की प्रमुख प्रतिमाओं का विवरण दिया गया है:

▪ सोम स्कंद प्रतिमा

- सोमस्कंद में भगवान शिव अपनी पत्नी पार्वती के साथ, अपने पुत्र कुमार कार्तिकेय (जो सोम के रूप में प्रसिद्ध हैं) के साथ दिखते हैं। यह प्रतिमा शिव के पारिवारिक रूप को दर्शाती है, जो उनके सम्पूर्ण ब्रह्मांडीय दृष्टिकोण और जीवन के संतुलन का प्रतीक है।

▪ दक्षिणामूर्ति

- दक्षिणामूर्ति शिव का एक प्रसिद्ध रूप है, जिसमें वे अपने शिष्यों को ज्ञान देते हुए बैठे होते हैं। इस रूप में शिव एक योगी के रूप में दिखते हैं, और यह ज्ञान, ध्यान, और ब्रह्मज्ञान के प्रतीक के रूप में पूजा जाता है।
- **प्रमुख दक्षिणामूर्ति -** लोपाक्ष मंदिर में शिव की मूर्ति
- दक्षिणामूर्ति को आमतौर पर एक शांत मुद्रा में दर्शाया जाता है।

▪ कल्याण सुंदर

- कल्याण सुंदर रूप में शिव और पार्वती की सुंदर युगल छवि को दर्शाया जाता है। है।
- एलोरा गुफा में शिव की कल्याण सुंदर प्रतिमा स्थित हैं।
- कल्याण सुंदर रूप में भगवान शिव और पार्वती की जोड़ी को सामाजिक और पारिवारिक आदर्श के रूप में पूजा जाता है।

▪ भिक्षाटन

- भिक्षाटन रूप में शिव एक भिखारी के रूप में दिखाई देते हैं, जो नग्न अवस्था में, भिक्षाटन करते हुए होते हैं। इस रूप में शिव को संसार के अस्थिरता और माया से परे एक असली योगी के रूप में दर्शाया जाता है।

▪ नटराज

- नटराज भगवान शिव का प्रसिद्ध रूप है जिसमें वे तांडव नृत्य करते हुए दिखाई देते हैं। यह रूप शैव सम्प्रदाय में सबसे प्रसिद्ध है, और यह सृजन, पालन और संहार के चक्र को प्रदर्शित करता है।
- नटराज की प्रतिमा में शिव एक नृत्य मुद्रा में होते हैं, जिसमें एक पैर स्थिर और दूसरा उठाया हुआ होता है, और चार हाथों में वे आग, डमरू, अभय मुद्रा और आशीर्वाद प्रदान करते हैं।
- शिव का यह चतुर्भुज रूप हैं।
- इस प्रतिमा का प्रारम्भ पल्लव काल में हुआ और चोल काल में यह विकास की पराकाष्ठा पर पहुंची।

▪ अर्धनारीश्वर

- अर्धनारीश्वर में शिव और पार्वती का संयुक्त रूप होता है। इसमें भगवान शिव के एक आधे शरीर पर पार्वती का रूप दिखाया जाता है, जिससे यह प्रतीत होता है कि शिव और पार्वती एक-दूसरे में समाहित हैं।
- यह रूप पुरुष और महिला, योग और भोग, सृजन और संहार के संतुलन का प्रतीक है, और यह दिखाता है कि भगवान शिव और पार्वती दोनों एक ही सत्ता के दो पहलू हैं।
- कुमारगुप्त के काल में इस शैली को अधिक लोकप्रियता मिली।

▪ त्रिपुरांतक

- त्रिपुरांतक रूप में शिव तीन महान शहरों, त्रिपुर का संहार करते हैं। यह रूप शिव की सर्वशक्तिमानता और ब्रह्मांड में विध्वंस करने की शक्ति को दर्शाता है।
- सर्वप्रथम राजराज प्रथम ने इसकी स्थापना बृहदेश्वर मंदिर में की थी।

▪ हरीहर प्रतिमा

- हरिहर प्रतिमा में भगवान शिव और विष्णु का सम्मिलित रूप होता है। यह रूप दोनों देवताओं के एकता का प्रतीक है, जिसमें आधा शरीर शिव का और आधा विष्णु का होता है।
- बादामी की गुफाओ में इसकी प्राचीनतम प्रतिमा मिलती हैं।

❑ दक्षिण भारत में शैव धर्म का प्रारंभ:

- शैव धर्म की जड़ें दक्षिण भारत में बहुत पुरानी हैं।
- यहां शिव की पूजा व्रत, अनुष्ठान और तपस्या के रूप में प्रारंभिक काल से ही होती रही है।
- यह भूमि शिव के विविध रूपों की उपासना और धार्मिक ध्यान का गढ़ रही है।
- दक्षिण भारत में शैव धर्म का प्रमुख प्रचार तीर्थ और मंदिरों के माध्यम से हुआ।
- इन मंदिरों में शिव की पूजा के विभिन्न रूपों को प्रतिष्ठित किया गया और लोक समाज में भी शैव धर्म का व्यापक प्रभाव पड़ा।

▪ दक्षिण शैव संतों का योगदान:

- संतों और भक्तों ने शैव धर्म के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विशेष रूप से नयनमार संतों का योगदान उल्लेखनीय है।
- **आदिगुरु शंकराचार्य (788 A.D.-820 ई.)**
  - **जन्म :** कालडी ग्राम (केरल)
  - **मृत्यु :** केदारनाथ (उत्तराखण्ड)
  - **गुरु :** गोविन्द योगी
  - **मठ :-** उत्तर दक्षिण पूर्व और पश्चिम
    - **ज्योर्तिमठ :** बद्रीधाम (उत्तर)
    - **श्रृंगेरीमठ :** रामेश्वरम् (दक्षिण)
    - **गोवर्धनमठ:** जगन्नाथपुरी (पूर्व)
    - **शारदामठ** : द्वारिका पुरी (पश्चिम)
- **नयनमार**
  - नयनमार (शैव संत) ने भगवान शिव की भक्ति में अपने जीवन को समर्पित किया और उनका काव्य शैव भक्ति को लोकप्रिय बनाने में सहायक रहा।
  - **इनके प्रमुख संत** - कवियारासि, तीरुणा, संत तिरुनावुकारसार, और अम्बा थे।
  - **इनके प्रमुख महिला संत -** कारइक्काल अम्मईयार, मंगयरक्करसियार व इसइननियार हैं।

- इन शैव संतों ने कैवल्य योग, उपासना, और शिव तंत्र के माध्यम से शैव धर्म का प्रचार किया। उन्होंने शिव के लिंग रूप की पूजा, साथ ही शिव के अन्य रूपों जैसे नटराज, भिक्षाटन, और दक्षिणामूर्ति को भी भक्तों के बीच प्रसारित किया।

- **नयनारों के प्रमुख ग्रंथ हैं-**
  - **तीवरम-** इसमें नयनारों के भजनों का संकलन है।
  - **तिरुवाशगम-** यह नयनार संत मणिक्कवाचगर के भक्ति गीतों का संकलन है।
  - **पेरियपुराणम-** यह 63 नयनारों की गाथा है, जिसका संकलन नम्बी अंडार नम्बी द्वारा किया गया है।
  - **तिरुत्तोष्कार तिरुवन्तति-** नम्बी अंदार नंबी रचित इस ग्रंथ में संतों के चरित्र का वर्णन है।
  - **तिरुमुरई-** यह नयनार संतों की अंतिम कृति है।
- शैव एवं पाशुपत संप्रदाय के प्रारंभिक साहित्य को 'आगम' कहा जाता है।
- आगमों की संख्या 14 एवं भाषा तमिल है।
- इनका रचना काल लगभग 1400 ई. के आस-पास है।
- 'आगम' शैव धर्म की बाइबिल के नाम से भी जा है।

चोल साम्राज्य और शैव धर्म:

- चोल साम्राज्य (9वीं से 13वीं शताब्दी) के दौरान शैव धर्म का सबसे अधिक विकास हुआ।
- इस साम्राज्य ने शिव के मंदिरों को प्रायोजित किया और शैव धर्म के लिए एक सशक्त संस्थान स्थापित किया।
- चोलों ने प्रमुख शिव मंदिरों का निर्माण किया, जैसे कि बृहदेश्वर मंदिर (तंजावुर), उद्धनलूर और गंगईकोंडा चोलपुरम।
- इन मंदिरों में शिव की पूजा का महत्व बढ़ा और उन्होंने शैव धर्म की धारा को मजबूत किया।
- चोल सम्राटों ने शिव के लिंग रूपों की पूजा को बढ़ावा दिया और देवालयों में लिंग पूजा के अनुष्ठान को प्रोत्साहित किया।

शाक्त धर्म

शाक्त धर्म

- इस सम्प्रदाय में शक्ति को इष्ट देवी मानकर पूजा की जाती थी।
- शाक्त सम्प्रदाय का शैव मत के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है।
- इस आदि शक्ति या देवी की पूजा का स्पष्ट उल्लेख महाभारत में प्राप्त होता है।
- पुराणों के अनुसार शक्ति की उपासना मुख्यतया काली और दुर्गा की उपासना तक ही सीमित है।
- वैदिक काल में उमा, पार्वती, अम्बिका, हेमवती, रुद्राणी और भवानी जैसे नाम मिलते हैं।
- ऋग्वेद के 'दशम मण्डल' में एक पूरा सूक्त ही शक्ति की उपासना से संबन्धित है; जिसे तान्त्रिक देवी सूक्त कहते हैं।
- चौसठ योगिनी का मन्दिर (जबलपुर) शाक्त धर्म के विकास और प्रगति को प्रमाणित करने का साक्ष्य उपलब्ध है।
- उपासना पद्धति - शाक्तों के दो वर्ग हैं- कौलमार्गी और समयाचारी।
- कौल मार्गी पंचमकार की उपासना करते हैं; जिसमें मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन है, जो 'म' से प्रारम्भ होते हैं।
- देवी की उपासना तीन रूपों में की जाती थी।
- **ये रूप हैं-** सौम्य रूप, उग्र और काम प्रधान रूप।
- सौम्य रूप- उमा पार्वती लक्ष्मी
- उग्र रूप- - चंडी दुर्गा भैरवी कपाली
- काम प्रधान रूप- कामाख्या
- शाक्त धर्म से संबंधित प्रमुख मंदिर
- वैष्णो देवी का मंदिर (जम्मू)
- विंध्यवासिनी देवी का मंदिर (विंध्याचल)
- चौसठ योगिनी का मंदिर, (भेड़ाघाट, मध्य प्रदेश)
- पार्वती मंदिर (नाचना कुठार, मध्य प्रदेश)
- कामाख्या मंदिर (असम)
- दक्षिणेश्वर काली मंदिर (कोलकाता)

Chapter- छठीं शताब्दी ई.पू. में भारत की राजनैतिक स्थिति

सोलह महाजनपद

- सोलह महाजनपद, प्राचीन भारत की बड़ी राजनीतिक-भौगोलिक इकाइयां थीं.
- इन महाजनपदों का उल्लेख **बौद्ध ग्रंथ अंगुत्तर निकाय** और **जैन ग्रंथ भगवती सूत्र में** मिलता है.
- इन महाजनपदों की स्थापना छठी शताब्दी ईसा पूर्व में हुई थी.
- इन महाजनपदों में मगध, कोशल, अवंती, पांचाल कुछ महत्वपूर्ण महाजनपद थे.
- इन महाजनपदों का विस्तार आधुनिक अफ़ग़ानिस्तान से बिहार तक सिंधु-गंगा के मैदानों और हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों से दक्षिण में गोदावरी नदी तक था.
- **सोलह महाजनपदों का उत्तर से दक्षिण तक का क्रम** - गंधार , कंबोज , कुरु , पञ्चाल , मगध, वज्जि, मल्ल, काशी , कोशल ,विदेह, अंगा , वर्ध , चेदि , द्रविड, शूरसेन , अष्टक

❑ गांधार

- **राजधानी -** तक्षशिला
- **क्षेत्र -** अफ़ग़ानिस्तान और पाकिस्तान
- **शासक -** महाभारत काल में गांधार के राजा शकुनि
- **अन्य तथ्य** –
  - गांधार का अस्तित्व 600 ईसा पूर्व से 11वीं सदी तक रहा ।
  - गांधार के प्रमुख नगरों में पुरुषपुर (आधुनिक पेशावर) भी शामिल था ।
  - गांधार शब्द का अर्थ सुगंध होता है ।
  - ऋग्वेद में गंधार के निवासियों को गंधारी कहा गया है ।
  - धृतराष्ट्र की पत्नी गांधारी यहाँ की राजकुमारी थी ।
  - गांधार में कुषाण शासकों के दौरान बौद्ध धर्म बहुत फला-फूला ।
  - बाद में मुस्लिम आक्रमण के कारण गांधार का पतन हो गया ।
  - 870 ईस्वी में अरब सेनापति **याकूब एलेस** ने इसे अपने कब्ज़े में कर लिया ।

❑ कंबोज

- **राजधानी -** हाटक / राजपुर
- **क्षेत्र -** कश्मीर पकिस्तान
- **अन्य तथ्य** –
  - कंबोज महाजनपद, प्राचीन भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में स्थित था. यह क्षेत्र आजकल अफ़ग़ानिस्तान और पाकिस्तान में आता है.
  - कंबोज के कुछ और महत्वपूर्ण शहरों में काबुरा और पुष्कलावती शामिल थे.
  - कंबोज के लोगों को युद्धप्रिय माना जाता था.
  - कंबोज के लोगों में कई महान दार्शनिक, कवि, और वैज्ञानिक पैदा हुए.
  - कंबोज का उल्लेख पाणिनी के अष्टाध्यायी में भी मिलता है.
  - कंबोज का उल्लेख रामायण, महाभारत, राजतरंगिणी, रघुवंश, बौद्ध ग्रंथ, जैन ग्रंथ, पुराण, और पालि साहित्य में भी मिलता है.
  - कंबोज का विस्तार उत्तर में कश्मीर से हिंदूकुश तक था.
  - शाक्य वंश में कंबोज के औपमन्यव नामक आचार्य का उल्लेख है.
  - कंबोज के 'वार्ताशस्त्रोपजीवी' संघ का उल्लेख कौटिल्य के अर्थशास्त्र में मिलता है.

❑ कुरु

- **राजधानी** – इंद्रप्रस्थ (हस्तिनापुर)
- **क्षेत्र -** मेरठ और दक्षिण पूर्व हरियाणा
- **शासक -** कौरव
- **अन्य तथ्य** –
  - कुरु जनपद उत्तर और दक्षिण दो भागों में बंटा हुआ था.
  - दक्षिण कुरु, उत्तर कुरु से ज़्यादा प्रसिद्ध था.
  - कुरु जनपद पश्चिम में सरहिंद के पास के इलाकों से लेकर दक्षिण-पश्चिमी पंजाब और उत्तर प्रदेश के कुछ पश्चिमी ज़िलों तक फैला हुआ था.
  - महाभारत के मुताबिक, कुरु की सीमा उत्तर में सरस्वती और दक्षिण में दृषद्वती नदियों तक थी.
  - कुरु जनपद के इतिहास का विस्तृत वर्णन महाभारत और पुराणों में मिलता है.
  - कुरुवंश के शासक "कौरव" भी कहे जाते थे.
  - कुरुक्षेत्र को धर्मक्षेत्र या शाकद्वीप के नाम से भी जाना जाता था.

❑ पांचाल

- **राजधानी -** अहिच्छत्र (उत्तरी पांचाल), काम्पिल्य (दक्षिणी पांचाल)
- **क्षेत्र -** उत्तर प्रदेश
- अन्य तथ्य –
  - यह उत्तर में हिमालय के भाभर क्षेत्र से लेकर दक्षिण में चर्मनवती नदी के उत्तरी तट के बीच के मैदानों में फैला हुआ था।
  - इसके पश्चिम में कुरु, मत्स्य तथा सुरसेन राज्य थे और पूर्व में नैमिषारण्य था।
  - बाद में यह दो भागों में बाँटा गया- उत्तरी पांचाल, दक्षिणी पांचाल

❑ मगध

- **राजधानी** – गिरिव्रज/ राजगृह
- **क्षेत्र -** बिहार
- **शासक -** अजातशत्रु
- **अन्य तथ्य** –
  - मगध के बारे में सबसे पहले उल्लेख अथर्ववेद में मिलता है.
  - मगध में बृहद्रथ वंश के बृहद्रथ और जरासंध जैसे प्रतिष्ठित राजा हुए.
  - मगध में तांबे और लोहे के विशाल भंडार थे.
  - मगध में उपजाऊ मिट्टी थी और यहां पर्याप्त बारिश होती थी.
  - मगध में जनसंख्या ज़्यादा थी, जिसका इस्तेमाल कृषि, खनन, शहरों के निर्माण, और सेना में किया जाता था.
  - मगध ने गंगा घाटी के व्यापार मार्गों और बंगाल की खाड़ी के समुद्री मार्गों पर नियंत्रण किया.
  - मगध, वत्स और अंग के बीच स्थित था, जिससे इन दोनों महाजनपदों के साथ व्यापार में आसानी हुई.
  - मगध के ऐतिहासिक व्यक्ति: जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर महावीर का जन्म मगध के एक राजसी परिवार में हुआ था.
  - मगध में शारिपुत्र और मौद्गल्यायन जैसे बुद्ध के प्रमुख शिष्य भी हुए

❑ वज्जि

- **राजधानी -** वैशाली
- **क्षेत्र -** बिहार के उत्तरी हिस्से में
- **अन्य तथ्य** –
  - लिच्छवी और व्रज इसके प्रमुख जातीय समूह थे।
  - वज्जि, लिच्छवियों समेत कई पड़ोसी कुलों का संघ था.
  - वज्जि के गणराज्य बनने के बाद, इसका राज्य-संचालन अष्टकुल या आठ गणतांत्रिक कुलों के हाथों में था. इनमें लिच्छवी सबसे महत्वपूर्ण था.
  - **वज्जि, गणतंत्र के दुनिया के सबसे पुराने उदाहरणों में से एक है.**
  - वैशाली, बौद्ध और जैन धर्म में भी पूजनीय है. यह भगवान बुद्ध का पसंदीदा स्थान और भगवान महावीर का जन्मस्थान था.
  - वैशाली, अपने पुरातात्विक स्थलों के लिए जानी जाती है. इनमें स्तूप, स्तंभ, और प्राचीन खंडहर शामिल हैं.

❑ मल्ल

- **राजधानी -** कुशीनगर, पावा
- **क्षेत्र -** उत्तर प्रदेश
- **शासक -** इक्ष्वाकु

- **अन्य तथ्य** –
  - मल्ल गणराज्य में लोकतांत्रिक व्यवस्था थी और गौतम बुद्ध की मृत्यु यहीं पर हुई थी।
  - मल्ल एक गणराज्य था।
  - मल्ल शब्द का अर्थ संस्कृत में पहलवान होता है।
  - मल्ल महाजनपद में कुलीनतंत्र या गणतंत्र शासन था।
  - मल्ल महाजनपद की दो शाखाएं थीं:
    - एक शाखा की राजधानी कुशीनारा थी, जो वर्तमान में कुशीनगर है।
    - दूसरी शाखा की राजधानी पावा थी, जो वर्तमान में फ़ाज़िलनगर है।
  - मल्ल महाजनपद में मैथिली भाषा बोली जाती थी।
  - मल्ल महाजनपद के बारे में जानकारी अंगुत्तर निकाय में मिलती है।
  - गौतम बुद्ध और महावीर स्वामी ने निर्वाण के लिए मल्ल महाजनपद को ही चुना था।
  - बुद्ध की मृत्यु कुशीनारा में हुई थी और उन्होंने पावापुरी में निर्वाण प्राप्त किया था।

❑ **काशी**

- **राजधानी** - वाराणसी
- **क्षेत्र** - उत्तर प्रदेश के वाराणसी क्षेत्र में
- **शासक** - ब्रह्मदत्त
- **अन्य तथ्य** –
  - काशी विश्वप्रसिद्ध धार्मिक स्थल है और भगवान शिव का प्रमुख तीर्थ स्थल है।
  - काशी महाजनपद की राजधानी थी. यह वरुणा और असी नदियों के बीच बसा था.
  - काशी, बुद्ध से पहले के सोलह महाजनपदों में सबसे शक्तिशाली था.
  - काशी के राजा बृहद्रथ ने कोसल पर जीत हासिल की थी, लेकिन बाद में बुद्ध के समय में राजा कंस ने काशी को कोसल में मिला लिया.
  - बौद्ध धर्म का प्रचार मुख्य रूप से काशी में सिद्धार्थ गौतम ने शुरू किया था.
  - सोलह महाजनपदों का उल्लेख बौद्ध ग्रंथ अंगुत्तर निकाय और जैन ग्रंथ भगवती सूत्र में मिलता है.

❑ **कौशल**

- **राजधानी** - अयोध्या और श्रावस्ती
- **क्षेत्र** - आधुनिक गोरखपुर के पास
- **शासक** - प्रसेनजित, विदुदभ (विरुद्धक)
- **अन्य तथ्य** -
  - कौशल को भगवान राम के पुत्रों के नाम पर जाना जाता है.
  - कुरुक्षेत्र युद्ध में कोसल साम्राज्य की भागीदारी बहुत बड़ी थी.
  - चौथी सदी ईसा पूर्व में मगध ने कौशल पर अपना अधिकार कर लिया था
  - यह महाजनपद वर्तमान उत्तर प्रदेश के पश्चिमी हिस्से में था, और इसकी राजधानी श्रावस्ती थी।

❑ **अवंती**

- **राजधानी** - उज्जयिनी और महिष्मती
- **क्षेत्र** - मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र में
- **शासक** – प्रद्योत
- **अन्य तथ्य** –
  - उज्जयिनी ने बाद में मौर्य साम्राज्य के समय महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
  - अवंती, भारत का एक प्राचीन और शक्तिशाली साम्राज्य था.
  - अवंती को नर्मदा नदी ने दो भागों में बांटा था:
    - उत्तरी अवंती, जिसकी राजधानी उज्जयिनी थी
    - दक्षिणी अवंती, जिसकी राजधानी महिष्मती थी
  - महावीर और बुद्ध के समय में, उज्जयिनी ही अवंती की राजधानी थी.
  - अवंती, बौद्ध धर्म का एक महत्वपूर्ण केंद्र था.
  - बाद में, अवंती मगध साम्राज्य का हिस्सा बन गया.

❑ **अंग**

- **राजधानी** - चम्पा (वर्तमान मुंगेर)
- **क्षेत्र** - बिहार के क्षेत्र में
- **शासक** - महासेनगुप्त
- **अन्य तथ्य** –
  - यह राज्य बौद्ध काल में महत्वपूर्ण था और यहां के शासक प्रसिद्ध थे।
  - अंग महाजनपद का उल्लेख महाभारत और अथर्ववेद में मिलता है.
  - अंग महाजनपद की राजधानी चंपा थी. यह गंगा और चंपा नदियों के संगम पर बसा था.
  - अंग महाजनपद को दक्षिण-पूर्व एशिया का वाणिज्यिक केंद्र माना जाता था.
  - अंग महाजनपद, मगध के पूर्व में स्थित था.
  - अंग महाजनपद के प्रमुख नगर चंपा (बंदरगाह) और अश्वपुर थे.
  - बिम्बिसार के शासनकाल में मगध साम्राज्य ने अंग महाजनपद पर कब्ज़ा कर लिया था.
  - महाभारत काल में अंग महाजनपद, कर्ण का राज्य था

❑ **मत्स्य**

- **राजधानी** - विराटनगर
- **क्षेत्र** - राजस्थान के जयपुर-अलवर के आस-पास के क्षेत्र में
- **शासक** -विराट
- **अन्य तथ्य** –
  - महाभारत काल में मत्स्य महाजनपद का शासक विराट था. ऐसा माना जाता है कि इसी ने जयपुर से 85 किलोमीटर दूर विराटनगर या विराटपुर (वर्तमान बैराठ) बसाया था और इस नगर को मत्स्य जनपद की राजधानी बनाया था

❑ **चेदि**

- **राजधानी** - सुक्तिमति
- **क्षेत्र** - बुंदेलखंड क्षेत्र में
- **शासक** - शिशुपाल
- **अन्य तथ्य** –
  - यह राज्य मध्य प्रदेश के यमुना नदी के दक्षिण में केन नदी के किनारे स्थित था.
  - ऋग्वेद में चेदियों का उल्लेख है.
  - चेदियों की दो बस्तियां थीं, एक नेपाल के पहाड़ों में और दूसरी कौशांबी के पास बुंदेलखंड में.
  - मध्यकाल में, चेदि की दक्षिणी सीमाएं नर्मदा नदी के तट तक फैली हुई थीं.

❑ **वत्स**

- **राजधानी** - कौशाम्बी
- **क्षेत्र** - राजस्थान के चिरावा ज़िले में
- **शासक** - राजा उदयन
- **अन्य तथ्य** –
  - वत्स को वंश के नाम से भी जाना जाता था.
  - वत्स, गंगा और यमुना नदियों के संगम पर स्थित था.
  - वत्स, छठी शताब्दी ईसा पूर्व में एक शक्तिशाली रियासत थी.
  - वत्स के राजा उदयन ने बौद्ध धर्म को राज्य धर्म बनाया था.
  - वत्स और अवंती के राजवंशों के बीच शक्ति की स्पर्धा थी.
  - वत्स राज्य, मगध नरेश शिशुनाग की जीत के बाद मगध राज्य का हिस्सा बन गया.

❑ **सूरसेन**

- **राजधानी** - मथुरा

- **क्षेत्र -** उत्तर प्रदेश के पश्चिमी हिस्से में
- **शासक -** अवन्तिपुत्र
- **अन्य तथ्य –**
  - शूरसेन, मथुरापुरी के प्राचीन यदुवंशी राजा थे.
  - शूरसेन के पुत्र वसुदेव, भगवान श्रीकृष्ण के पिता थे.
  - यह भगवान कृष्ण की पवित्र भूमि थी.
  - शूरसेन जनपद का नाम, मधुरापुरी (मथुरा) के शासक लवणासुर के वध के बाद, शत्रुघ्न ने अपने बेटे शूरसेन के नाम पर रखा था.
  - बौद्ध ग्रंथ **अंगुत्तर निकाय** में भी सुरसेन का ज़िक्र मिलता है.
  - प्राचीन यूनानी लेखक मेगस्थनीज़ ने भी **सोरासेनोई** और उसके शहरों, **मेथोरा** और **क्लिसोबरा** का ज़िक्र किया है

❑ **अश्मक**

- **राजधानी** – पोटल/पोटली
- **क्षेत्र -** भारत के दक्षिणी हिस्से में
- **शासक -** अरुण
- **अन्य तथ्य –**
  - यह महाजनपद व्यापारिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण था।
  - इसमें आज के आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, और महाराष्ट्र के क्षेत्र शामिल थे.
  - अश्मक महाजनपद पर भगवान श्रीराम के वंशज यानी इक्ष्वाकु वंश के राजा राज करते थे.
  - अश्मक महाजनपद की स्थापना इक्ष्वाकु वंश के अश्मक नाम के राजा ने की थी.
  - अश्मक महाजनपद, गोदावरी नदी और नर्मदा नदी के बीच स्थित था.
  - पाणिनि ने भी अश्मिकाओं का उल्लेख किया है.
  - मार्कंडेय पुराण और ब्रह्म संहिता में अश्मिकाओं को उत्तर-पश्चिम में रखा गया है.
  - अश्मक को अस्सक भी कहा जाता है.
  - आज अश्मक को ट्रांवकोर (त्रिवांकुर) के नाम से जाना जाता है.

- **Note:-**
- सोलह महाजनपदों में मगध सबसे शक्तिशाली था।
- सोलह महाजनपदों में अश्मक एकमात्र दक्षिण भारत में स्थित था।
- बुद्ध के समय 10 गणतन्त्र राज्य थे। जिसमें 8 वज्जि संघ के तथा 2 मल्ल के अन्तर्गत थे।
- 10 गणतन्त्र :- कपिलवस्तु के शाक्य, सुमसुमार गिरि के मग्ग, अलकप्प के बुलि, केसपुत्त के कालाम, रामगाम्र के कोलिय, कुशीनारा के मल्ल, पावा के मल्ल, पिप्पलिवन के मोरिय, वैशाली के लिच्छवि, मिथिला के विदेह।
- बुद्ध काल का सबसे बड़ा तथा शक्तिशाली गणराज्य वैशाली का लिच्छवि गणराज्य था।
- बुद्धकालीन चार शक्तिशाली राजतन्त्र कोशल, मगध, वत्स एवं अवन्ति थे।
- अंग और मगध वर्णन अथर्ववेद में किया गया हैं।

मगध का उत्कर्ष

- पुराणों के अनुसार मगध पर सर्वप्रथम बार्हद्रथ वंश का शासन था। इसी वंश के जरासंध ने गिरिव्रज / राजगृह को अपनी राजधानी बनाई। इसके बाद क्रमशः प्रद्योतवंश, शिशुनागवंश, नंदवंश का शासन स्थापित हुआ। मगध के उत्कर्ष में यहाँ कि भौगोलिक स्थिति, लोहे की उपलब्धता, प्रगतिशील समाज एवं भौतिक उन्नति ने प्रमुख भूमिका निभाई। मगध पर शासन करने वाले प्रमुख वंश निम्नलिखित हैं।

❑ **हर्यक वंश (544 ई.पू. से 412 ई.पू.)**

- इस वंश को पितृहन्ता वंश भी कहा जाता है। इस वंश प्रमुख तीन शासक हुए।

- **बिम्बिसार / श्रेणिक (544 से 492 ई०पू०)**
  - बिम्बिसार मगध साम्राज्य की महत्ता का वास्तविक संस्थापक था। बिम्बिसार ने अपने साम्राज्य को मजबूती देने के लिए वैवाहिक संबंध की नीति अपनाई। इसके प्रमुख वैवाहिक संबंध निम्नलिखित थे
  - क्षेमा (मद्र देश की राजकुमारी) - इस संबंध के द्वारा अपने प्रतिद्वंदी अवन्ति के शक्ति पर संतुलनकारी नियंत्रण स्थापित किया । उसके अवन्ति के राजा प्रद्योत के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध थे। बिम्बसार ने राजवैद्य जीवक (माता सालवति) को उनके पांडु रोग के उपचार के लिए भेजा था। बिम्बिसार ने अंग को (राजा ब्रह्मदत्त के समय) पराजित कर मगध में मिला लिया।
  - बिंबिसार बुद्ध के मित्र एवं संरक्षक थे। विनयपिटक के अनुसार बुद्ध से मिलने के बाद बौद्ध धर्म ग्रहण किया तथा उसे **बेलुवन नामक** उद्यान प्रदान किया।
- **अजातशत्रु / कुणिक (492 से 460 ई.पू.)**
  - उसने अपने पिता के साम्राज्यवादी नीति को आगे बढ़ाया।
  - बुद्ध के चचेरे भाई देवदत्त के बहकावे में आकर अजात शत्रु ने अपने पिता को कारागार में डाल दिया था।
  - इसे वैदेहीपुत्र भी कहा जाता था।
  - अजात शत्रु का संघर्ष कोशल वज्जि और मल्ल गणराज्य से हुआ था।
  - वैशाली के लिच्छवि वज्जि संघ का भाग होने के कारण बहुत - शक्तिशाली थे। इसलिए अजातशत्रु को उनके विरुद्ध भेदनीति अपनानी पड़ी।
  - अजातशत्रु ने अपने मंत्री **'वस्सकार'** को भेजकर वज्जि संघ में फूट डलवाया और वज्जियों से राज्य की सुरक्षा हेतु पाटलिपुत्र में एक दुर्ग का निर्माण करवाया। इसी युद्ध में अजातशत्रु ने पहली बार **रथमूसल** (टैंक जैसा कोई अस्त्र) और **महाशिलाकंटक** (शिला प्रक्षेपास्त्र) का प्रयोग किया था।
  - आजीवक संप्रदाय के प्रमुख मक्खलिपुत्त गोसाल इसी युद्ध के दौरान मारे गए थे।
  - 16 वर्ष के लम्बे संघर्ष के बाद अन्ततः अजातशत्रु की विजय हुई। लिच्छवियों के साथ-साथ पराजित राज्यों- **काशी, विदेह, मल्ल** आदि पर भी मगध का आधिपत्य कायम हो गया।
    - कोशल के राजा प्रसेनजित की मृत्यु के पश्चात अजातशत्रु के नेतृत्व में मगध उत्तर भारत की सर्वोच्च शक्ति के रूप में स्थापित हुआ।
- **उदयिन या उदयभद्र (460 से 444 ई.पू.) –**
  - इसे पितृहंता कहा गया है।
  - गंगा व सोन के संगम पर कुसुमपुर या पाटलिपुत्र नगर की स्थापना। उसने इसी स्थान पर अपनी राजधानी स्थानांतरित किया।
- इस वंश का अंतिम शासक **नागदशक** था, जिसे पुराणों में दर्शक कहा गया है।

❑ **शिशुनाग वंश (412 से 344 ई.पू.)**

- अंतिम हर्यक शासक दर्शक के मंत्री शिशुनाग को जनता ने राजा चुना।
- **शिशुनाग**
  - बौद्ध साहित्य के अनुसार, राजा नागदशक को नागरिकों के द्वारा निष्कासित कर दिया गया। फिर नागरिकों ने एक सभा बुलाई और शिशुनाग को शासक नियुक्त किया।
  - इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि अवन्ति को मगध में मिलाना था। शिशुनाग ने वज्जियों के ऊपर कठोर नियंत्रण रखने के लिए वैशाली को अपनी दूसरी राजधानी बनाया, जो बाद में उसकी प्रधान राजधानी बनी।
- **कालाशोक**
  - इसने अपनी राजधानी पुनः पाटलिपुत्र में स्थानांतरित कर ली। इसके काल में वैशाली में द्वितीय बौद्ध संगीति हुई।
  - इस संगीति में विभेद उत्पन्न होने के कारण यह दो सम्प्रदायों स्थविर एवं महासांघिक में बँट गया।

- इस वंश का अन्तिम शासक नन्दिवर्द्धन (महानन्दिन) था।

❑ **नंद वंश (344 से 324-23 ई.पू.)**

- शिशुनाग वंश का अंतिम शासक नंदिवर्द्धन या महानंदिन था, जिसके बाद महापद्मनंद ने नंद वंश की स्थापना की।
- अनुश्रुतियों के अनुसार महापद्मनंद नाई था।
- **महापद्मनंद**
  - इसने एकछत्र एवं एकराट उपाधियाँ भी धारण की। हाथीगुम्फा अभिलेख में उसे कलिंग के कुछ क्षेत्र का स्वामी बताया गया है।
  - **महापद्मनंद की अन्य उपाधियाँ-** पुराणों में उसे 'एकच्छत्र पृथ्वी का राजा', **'अनुल्लंघितशासक' 'भार्गव (अपरोपरशुराम** या द्वितीय परशुराम) के समान **सर्वक्षत्रान्तक',' एकराट' , 'कलि का अंश'** आदि की उपमा प्रदान की गई है।
  - उसने अपने जैन मंत्री कल्पक की सहायता से सभी क्षत्रियों का नाश किया।
  - महापद्मनंद के साम्राज्य की अंतिम सीमा पश्चिम में **व्यास नदी** तक थी।
  - महापद्मनन्द मगध का सबसे शक्तिशाली शासक था। इसने सर्वप्रथम कलिंग की विजय की तथा वहाँ एक नहर खुदवाई जिसका उल्लेख कलिंग नरेश खारवेल ने अपने हाथीगुम्फा अभिलेख में किया है। इसी अभिलेख से यह भी पता चलता है कि वह कलिंग से एक जैन प्रतिमा उठा लाया था।
  - पाणिनी महापद्मनंद का मित्र था।
- **घनानंद**
  - यह इस वंश का अंतिम शासक था जो सिकंदर का समकालीन था।
  - यूनानी स्रोतों में उसे **अग्रमीज** कहा गया है।
  - **भद्रशाल** उसका सेनापति था।
  - घनानंद एक लोभी शासक था जिसे धन संग्रह का व्यसन था।
  - वह अत्याचारी था तथा छोटी-छोटी वस्तुओं पर भारी कर लगाकर जनता से बलपूर्वक धन वसूल करता था।
  - नंदों ने उत्तर भारत में सर्वप्रथम एकछत्र शासन की स्थापना की तथा मगध को राजनैतिक तथा आर्थिक दृष्टि से अत्यंत समृद्धशाली राज्य बना दिया।
  - **इस काल के अन्य विद्वान :-** वर्ष, उपवर्ष, वररुचि, कात्यायन। नंद जैन मत के पोषक थे।
  - घनानन्द के समय 325 ई.पू. में सिकन्दर ने पश्चिमोत्तर भारत पर आक्रमण किया था।
  - 323 ई.पू. में चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने गुरु चाणक्य की साहयता से घनानन्द की हत्या कर मौर्यवंश के शसन की नींव डाली।

भारत पर विदेशी आक्रमण

❑ **ईरानी आक्रमण**

- छठी सदी ई.पू. के मध्य साइरस द्वितीय ने ईरान में हखामनी साम्राज्य की स्थापना की।
- साइरस द्वितीय (558 से 529 ई. पू.) ने हिंदुकुश पर्वत श्रेणियों के दक्षिण वासी कई राजाओं को अपने अधीन किया।
- यूनानी लेखकों हेराडोट्स, एरियन तथा स्ट्रैबो के अनुसार पश्चिम एशिया के सर्वाधिक शक्तिशाली शासक साइरस (कुरुष) ने जेड्रोसिया के रेगिस्तानी मार्ग से होकर भारत पर आक्रमण करने का असफल प्रयास किया। इसे ही भारत पर प्रथम ईरानी आक्रमणकर्ता माना जाता है।
- **डेरियस प्रथम (दारा प्रथम)**
  - सप्तसिंधु, गंधार, सिंधु का उल्लेख उसके प्रांत के रूप में हुआ है।
  - भारत पर आक्रमण करने में प्रथम सफलता दारा प्रथम को प्राप्त हुई, जो साइरस का उत्तराधिकारी था।
  - दारा प्रथम के तीन अभिलेखों **हेबिस्तून, पर्सिपोलिस** एवं **नक्शेरुस्तम** से यह सिद्ध होता है, कि उसी ने सर्वप्रथम सिन्धु नदी के तटवर्ती भारतीय भू-भागों को अधिकृत किया।
  - हेरोडोटस के अनुसार अधिकृत भारतीय भू-भाग पारसीक साम्राज्य का बीसवाँ प्रान्त बना। कम्बोज एवं गान्धार पर भी इसका अधिकार था।
  - दारा तृतीय को यूनानी शासक सिकन्दर द्वारा परास्त कर दिये जाने पर भारत पर पारसीक (ईरानी) आधिपत्य समाप्त हो गया।

❑ **ईरानी आक्रमण का प्रभाव**

- भारत के पश्चिमोत्तर प्रदेश में खरोष्ठी (दाई से बाई ओर लिखी जाने वाली) नामक नई लिपि का जन्म हुआ, भारत में क्षत्रप शासन प्रणाली का विकास हुआ।
- समुद्री मार्ग की खोज से विदेशी व्यापार को प्रोत्साहन ।
- पश्चिमोत्तर भारत में दायीं से बायीं ओर लिखी जाने वाली खरोष्ठी लिपि का प्रचार।
- ईरानियों की आरमेइक लिपि का प्रचार-प्रसार।
- अभिलेख उत्कीर्ण करने की प्रथा प्रारम्भ।
- ईरानियों की 'क्षत्रप' शासन प्रणाली का शक-कुषाण युग में पर्याप्त विकास।

❑ **यूनानी आक्रमण**

- ईरानियों के पश्चात् भारत पर यूनानियों के द्वारा आक्रमण किया गया
- **सिकंदर**
  - यह मैसीडोनिया के क्षत्रप फिलिप द्वितीय का पुत्र था। इसने 326 ई.पू. में भारत पर आक्रमण किया।
  - तक्षशिला के शासक आम्भी ने समर्पण कर मदद देना स्वीकार किया।
  - सिंधु नदी को पार कर झेलम व चिनाब के मध्यवर्ती प्रदेश के शासक पोरस को **झेलम/वितस्ता/हाइडेस्पीज** के युद्ध में पराजित किया। बाद में उसकी वीरता से प्रभावित होकर इस क्षेत्र को पोरस के अधिकार में छोड़ दिया।
  - व्यास नदी के आगे उसकी सेना ने आगे बढ़ने से इंकार कर दिया। सिकंदर वापस लौट गया। लौटते वक्त बेबीलोन में उसकी मृत्यु हो गई। उसने पश्चिमोत्तर भारत के अनेक छोटे-छोटे राज्यों को जीतकर इन भागों में राजनीतिक एकता की स्थापना की

❑ **यूनानी आक्रमण के प्रभाव**

- भारत तथा पश्चिमी देशों के बीच व्यापारिक संबंध और दृढ़ हो गया। इससे लोगों का भौगोलिक ज्ञान और अधिक विस्तृत हो गया।
- भारत में यूनानी मुद्राओं के अनुकरण पर उलूक शैली के सिक्के ढाले गए। इस प्रकार भारतीय मुद्रा निर्माण कला का विकास हुआ।
- व्यापारिक संपर्क ने नगरीकरण की प्रक्रिया को तीव्रतर कर दिया। भारतीय शासन पद्धति भी प्रभावित हुई।
- भारतीय कला भी प्रभावित हुई। गंधार कला शैली यूनानी कला से ही प्रभावित थी।
- सिकंदर के साथ कई लेखक तथा इतिहासकार आये। उनके ग्रंथ इतिहास के पुनर्निर्माण में सहायक बने। अर्थात् यूनानी आक्रमण से भारतीय तिथिक्रम की गुत्थी सुलझ गयी।
- यूनानी दार्शनिक पाइथागोरस पर भारतीय दर्शन का प्रभाव स्पष्ट था।

छठी सदी ईसा पूर्व व्यवस्था

❑ **प्रशासनिक व्यवस्था**

- **राजत्व**
  - राजा की शक्ति में वृद्धि हुई क्योंकि स्थायी सेना एवं रक्त संबंध से पृथक नौकरशाही की स्थापना हुई।
  - राजा की शक्ति में वृद्धि के परिणामस्वरूप राजत्व की अवधारणा आयी।
  - इस काल में राज्य के अंतर्गत बहुत सी अनार्य जनजाति शामिल हो रही थी। अब कर का भुगतान करने वाले नये आर्थिक समूहों का निर्माण हो रहा था। अतः

करारोपण प्रणाली नियमित हो गई। अब बलि, शुल्क और भाग जैसे कर पूरी तरह स्थापित हो गए।

- **इस युग में करारोपण से जुड़े कई अधिकारियों की चर्चा होने लगी:-** बलिसाधक, शौल्किक (शुल्काध्यक्ष), रज्जुग्राहक (भूमि की माप करने वाला), द्रोणमापक (अनाज तौल का निरीक्षण करने वाला)। अब सभा और समिति जैसी कबायली संस्थाएँ टूट गयीं और उसका स्थान परिषद् ने ले लिया, जिसमें ब्राह्मण प्रमुख होते थे।
- राजकीय मुहर का प्रथम प्रयोग इसी युग में शुरू हुआ।

■ **न्याय**

- लेखन कला के विकास के साथ प्रशासन में दक्षता आयी। कानून और अदालत का प्रथम विकास इसी युग में हुआ। कविलाई कानून का स्थान जाति कानूनों ने ले लिया।

■ **ग्राम प्रशासन**

- प्रशासन के छोटी इकाई के रूप में कुल के स्थान पर ग्राम स्थापित हुआ। ग्राम से ऊपर की इकाईयों की चर्चा भी समकालीन ग्रंथों में की गई है।
- **ये हैं-** खरवटक (200 ग्राम का संघ), द्रोणमुख (400 ग्राम का संघ), पत्तन (व्यापार या खानों का केन्द्र), मंतभ (10000 ग्राम का संघ), नगर निगम (व्यापारियों की बस्ती), राजधानी आदि।
- ब्राह्मण तथा सेट्ठियों को पारितोषिक के तौर पर राजस्व ग्राम दिये जाते थे (ऐसा करने के लिए राजा को अपने बांधवों से अनुमति नहीं लेनी पड़ती थी, जबकि उत्तर वैदिक काल में यह अनिवार्य था)। इस काल में प्रायः प्रत्येक ग्राम के लोग आत्मनिर्भर थे ।

■ **सेना**

- राजतंत्र में राजा की स्थाई सेना होती थी, जबकि गणतंत्र में कबाईलियों की अपनी-अपनी सेना थी।

■ **नगरों का विकास**

- सैंधव नगरों के पतन के पश्चात् सर्वप्रथम इसी काल के ग्रंथों में हम नगरों का विवरण पाते हैं।
- यह नगरीकरण अधिशेष उत्पादन (जो गंगा घाटी में लौह उपकरणों के कृषि क्षेत्र में उपयोग के कारण संभव हुआ), शिल्प एवं उद्योग-धंधों के विकास, व्यापार-वाणिज्य की प्रगति, सिक्कों के निर्माण आदि का परिणाम था। साथ ही साथ इस काल के राजनैतिक एवं धार्मिक परिस्थितियों ने भी इस प्रक्रिया को प्रोत्साहन दिया।

❑ **अर्थव्यवस्था**

■ कृषि बौद्धकाल में कृषि ही जीविका का प्रमुख स्रोत था। इस समय लोहे के उपकरणों का आविष्कार हो जाने से गंगा घाटी में उत्पादन आवश्यकता से अधिक होने लगा। लोगों का तकनीकी ज्ञान भी पर्याप्त विकसित हो गया। धान की रोपाई विधि का भी ज्ञान हो गया था। ये सभी तंत्र कृषि के अधिशेष उत्पादन के लिए उत्तरदायी थे।

■ **शिल्प तथा व्यवसाय**

- जातक ग्रंथों में 18 प्रकार के शिल्पों का जिक्र है।
- **कुछ प्रमुख हैं -** बढ़ई, लोहार, चर्मकार, जुलाहा (तंतुवाय), हाथी दाँत का काम करने वाला (दंतकारविधि), रंगरेज।
- इस काल में शिल्पों का न केवल विशिष्टीकरण हुआ बल्कि शिल्पों का क्षेत्रीयकरण भी हुआ।
- पाँचवीं सदी ई.पू. में आहत सिक्के (धातु के टुकड़े) का प्रयोग शुरू हुआ।
- इन सिक्कों पर हाथी, मछली, सांड, अर्धचंद्र की आकृति बनाई जाती थी।
- आरंभ में आहत सिक्के चाँदी के बनाये जाते थे, बाद में ताँबे के भी।
- वेतन और मूल्य का भुगतान सिक्के के रूप में शुरू हो गया।
- **इस काल के प्रमुख सिक्के हैं :-** कर्षापण, पाद, माशक, काकणिक, सुवर्ण (निष्क)।

■ **व्यावसायिक संगठन**

- विभिन्न व्यवसायियों के अपने संगठन थे, जिन्हें श्रेणी कहा जाता था। श्रेणी एक ही प्रकार के व्यवसाय या उद्योग करने वाले व्यक्तियों की संस्था थी। श्रेणियों के संगठन में सर्वोच्च स्थान अध्यक्ष का था जिसे श्रेष्ठिन (सेट्ठी), ज्येष्ठक अथवा प्रमुख कहा जाता था।
- व्यापारियों की श्रेणी का प्रधान सार्थवाह कहा जाता था। श्रेष्ठी को परामर्श देने के लिए एक सभा होती थी। कभी-कभी इनका पद आनुवांशिक होता था।
- श्रेणियों के पास कार्यकारी तथा न्यायिक दोनों ही अधिकार थे। वे बैंक का काम भी करते थे। वस्तुओं के नाप-तौल, मूल्य निश्चय, मजदूरी आदि भी तय करते थे। उनकी अपनी सेना भी होती। थी।
- श्रेणी के नियमों को श्रेणीधर्म कहा गया है। किसी भी स्त्री के बौद्ध संघ की सदस्यता के लिए। उन्हें अपने पति के अतिरिक्त पति से संबंधित संघ की अनुमति भी लेनी पड़ती थी।
- विभिन्न श्रेणियों के बीच भंडागारिक नामक अधिकारी एकता स्थापित करता था। बड़े नगरों के व्यापारियों की बड़ी श्रेणियाँ थीं, जिनके प्रधान को महाश्रेष्ठि कहा जाता था। कालांतर में श्रेणियाँ विभिन्न जातियों के रूप में परिणत हो गई। बुद्धकाल में व्यवसाय प्रायः आनुवांशिक होते थे।

■ **व्यापार तथा वाणिज्य**

- इस काल में वाणिज्य व्यापार विकसित अवस्था में थी। प्रमुख व्यापारिक मार्ग श्रावस्ती से प्रारंभ होकर पूर्व में राजगृह तथा उत्तर-पश्चिम में तक्षशिला तक तथा श्रावस्ती से दक्षिण-पश्चिम में प्रतिष्ठान तक। पश्चिम की ओर व्यापारिक मार्ग सिंध तथा सौवीर तक जाते थे।
- व्यापार की प्रमुख वस्तुएँ रेशम, मलमल, अस्त्र-शस्त्र, कालीन, हाथी दाँत के उपकरण, आभूषण थीं।
- भृगुकच्छ, सोपारा (पश्चिमी तट पर), ताम्रलिप्ति (पूर्वी तट पर) प्रमुख बंदरगाह थे।
- व्यापारियों को आंतरिक तथा बाह्य दोनों ही प्रकार के व्यापारिक माल पर चुंगी देना पड़ता था। आंतरिक माल पर 1/20 भाग तथा बाहर जाने वाले पर 1/10 भाग। इस समय विनिमय के माध्यम के रूप में सिक्कों का प्रचलन हो गया था।
- बौद्ध ग्रंथों में सिक्के के लिए कहापण शब्द का प्रयोग तांबे का कार्षापण 146 ग्रेन तथा चाँदी का कार्षापण 180 ग्रेन के वजन का होता था। इन्हें आहत सिक्का कहा गया है।

❑ **सामाजिक दशा**

■ **वर्ण**

- व्यवस्था सांस्कृतिक एवं भौतिक प्रसार ने वर्ण व्यवस्था के क्षेत्र में भी अनेक परिवर्तनों को जन्म दिया। यद्यपि वर्ण व्यवस्था का बाह्य स्वरूप पहले की तरह ही बना रहा।

■ **ब्राह्मण**

- इस काल के समाज में परंपरागत वर्ण-व्यवस्था में कठोरता आने लगी तथा जातिगत बंधन एवं भेदभाव स्पष्ट हो गए। वर्ण का आधार कर्म के स्थान पर जन्म को माना गया।
- यज्ञ की। प्रतिष्ठा के साथ समाज में ब्राह्मणों का दर्जा सर्वश्रेष्ठ हो गया। एक ही अपराध हेतु चारों वर्णों के लिए अलग-अलग सजाएँ निर्धारित थीं, ब्राह्मण को सबसे कम तथा शूद्रों को सबसे अधिक।

■ **क्षत्रिय**

- यह वर्ण भी ब्राह्मणों के समान अपनी रक्तशुद्धि पर गर्व करने लगे। इस काल के युद्ध में लोहे के उपकरण के प्रयोग होने से क्षत्रिय वर्ण की प्रतिष्ठा काफी बढ़ गई।

■ **वैश्य**

- कृषि तथा उत्पादन में वृद्धि से वैश्य वर्ण की आर्थिक क्षमता भी बढ़ गई और बड़े-बड़े गृहपति अस्तित्व में आये।

- **शूद्र**
- शूद्रों की स्थिति बिगड़ती गई। पाणिनी ने इन्हें दो वर्गों में विभाजित किया - अनिर्वासित तथा निर्वासित। द्विजों (ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य) का शूद्रों के साथ भोजन और विवाह निषिद्ध था। बुद्ध एवं महावीर जन्म के स्थान पर कर्म आधारित जाति व्यवस्था के पक्षपाती थे।

- **दास प्रथा**
- इस काल में दास प्रथा प्रचलित थी। पंद्रह प्रकार के दासों का उल्लेख प्राप्त होता है। यद्यपि दासों का अर्थव्यवस्था में विशेष योगदान नहीं था। क्योंकि दासों को मुख्यतः घरेलू कार्यों। में ही लगाया जाता था।

- **परिवार**
- परिवार के मुखिया के अधिकारों में वृद्धि हुई। वह अपने पुत्र को संपत्ति के अधिकार से वंचित कर सकता था।
- स्त्रियों की स्थिति सामान्यतः स्त्रियों की स्थिति में गिरावट आई। वे पुरुषों के अधीन कर दी गई, उत्तराधिकार में भी उनके साथ भेद-भाव बरता जाने लगा। आपस्तंव ने उसी दशा में पुत्री को पिता की संपत्ति का उत्तराधिकारी माना जब उसका कोई सपिण्ड उत्तराधिकारी न हो। इस काल में दहेज प्रथा का भी प्रचलन शुरू हुआ। इस काल में कुछ विदुषी महिलाओं का भी जिक्र है जिनके द्वारा रचित कविताओं का संकलन थेरीगाथा में किया गया है।

- **विवाह**
- बौद्ध साहित्य से पता चलता है कि सगोत्र विवाह समाज में होते थे। बहुपत्नी प्रथा भी प्रचलित थी। महिलाओं से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण शब्द :- कन्या विवाह के योग्य हो जाए), पतिव्रा (अपनी इच्छा से पति चुनने वाली कन्या)। कुमारी (अविवाहित कन्या), वर्या (जिस समय कन्या विवाह योग्य हो जाये)

- **सती प्रथा**
- इस काल में सती प्रथा का साहित्यिक साक्ष्य मिलता है, जब एक ग्रीक लेखक उत्तर-पश्चिम के कठ जाति में इस प्रथा के प्रचलित होने का उल्लेख करता है। महाभारत में भी पांडु की पत्नी माद्री के सती होने का उल्लेख है।

- **शिक्षा तथा साहित्य**
- बौद्ध काल तक भारत में लेखन कला का पूर्ण विकास हो गया था। पश्चिमोत्तर भागों में हखामनी राजाओं ने आरमाइक लिपि का प्रचलन करवाया, जिससे आगे चलकर खरोष्ठी लिपि का उद्भव हुआ। इस समय बौद्धविहार तथा कुछ अन्य व्यावसायिक नगर शिक्षा के केन्द्र थे ।

- **तक्षशिला**
- सबसे प्रमुख केन्द्र, यहाँ यूनान से भी विद्यार्थी आते थे। जातक ग्रंथों के अनुसार, यहाँ 18 शिल्पों की शिक्षा दी जाती थी। पाणिनी, जीवक, कौटिल्य ने यहीं शिक्षा प्राप्त की थी। बनारस - यह संगीत शिक्षा के लिए प्रसिद्ध था।
- ब्राह्मण ग्रंथों में इस समय सूत्रों की रचना की गई। प्रमुख सूत्रकार हैं- गौतम, बौधायन, आपस्तंव । साहित्यिक कृतियों में पाणिनी का अष्टाध्यायी (व्याकरण पर सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ) महत्वपूर्ण है। पाणिनी पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत में स्थित सालातुर का निवासी था।

- **कला तथा स्थापत्य**
- अब भवनों के निर्माण में पकाई हुई ईंटों तथा पाषाण का प्रयोग होने लगा (पक्के कुँओं का भी साक्ष्य)।
- राजगृह, उज्जैन, कौशाम्बी की खुदाई से पाषाणों से बने महल के प्रमाण- मिले हैं।
- इस समय मगध का प्रसिद्ध वास्तुकार महागोविन्द था, जिसके निर्देशन में राजगृह के प्रासाद का निर्माण हुआ।

मौर्य (321.184 ई.पू.)

मौर्या इतिहास के स्रोत

- साहित्यिक स्रोत
- पुरातात्विक स्रोत
- विदेशी विवरण

❑ साहित्यिक स्रोत -

- पुराण, कौटिल्य का अर्थशास्त्र, मुद्राराक्षस (विशाखदत्त) , कथासरित्सागर (सोमदेव), वृहत्कथामंजरी (क्षेमेन्द्र) तथा महाभाष्य (पतंजलि) आदि से जानकारी मिलती है।
- इनमें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अर्थशास्त्र है जो मौर्य प्रशासन के अतिरिक्त चन्द्रगुप्त मौर्य के व्यक्तित्व पर भी प्रकाश डालता है।
- बौद्ध ग्रन्थों में दीपवंश, महावंश , दिव्यावदान आदि महत्त्वपूर्ण हैं।
- जैन ग्रन्थों में कल्पसूत्र (भद्रबाहु) एवं परिशिष्ट पर्वन (हेम चन्द्र)।

❑ विदेशी विवरण

- स्ट्रैबो, डियोडोरस, प्लिनी, एरियन ने अपनी रचनाओं से मौर्य कालीन इतिहास की जानकारी मिलती है।

❑ पुरातात्विक स्रोत-

- अशोक के अभिलेख , शक महाक्षत्रप रुद्रदामन के जूनागढ़ लेख, काली पालिस वाले मृदभाण्ड तथा चाँदी व ताँबे के पंचमार्क (आहत सिक्के) आदि से भी मौर्य कालीन इतिहास की जानकारी मिलती है।

❑ साहित्यिक स्रोत -

- **पुराण**
  - पुराणों में मौर्यों को 'असुर' की संज्ञा देते हुए शूद्र वर्ण का माना गया है।
  - विष्णु पुराण एवं श्रीधर स्वामी रचित उसकी टीका इस संदर्भ में प्रमुख है।
- **अर्थशास्त्र**
  - **रचनाकार -** कौटिल्य
  - **मूल नाम -** विष्णुगुप्त
  - **अन्य नाम -** चाणक्य
  - इसके प्रमुख प्रतिपाद्य विषय - राजा, राज्य व राजनीतिक व्यवस्था इत्यादि हैं।
  - इसमें राज्य के आर्थिक स्रोतों के बारे में तो चर्चा है, परन्तु यह तत्कालीन आर्थिक व्यवस्था का वर्णन नहीं करता।
  - कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' की तुलना मैकियावली के 'प्रिंस' से प्रायः की जाती है।
  - चाणक्य को पुराणों में द्विजर्षभ (श्रेष्ठ ब्राह्मण) कहा गया है।
  - जैन ग्रंथों के अनुसार, चाणक्य , चंद्रगुप्त के बाद बिंदुसार का भी प्रधानमंत्री रहा।
  - अर्थशास्त्र राजशासन के उपर लिखी गई सर्वप्रमुख रचना है।
  - इसकी प्रथम हस्तलिपि 1904 में पंडित शामशास्त्री ने खोजी।
  - इसकी भाषा संस्कृत है तथा यह गद्य तथा पद्य दोनों में तथा अन्य पुरुष शैली में लिखी गई है।
  - अर्थशास्त्र का संकलन अंतिम रूप से तीसरी सदी में हुआ।
  - इस पुस्तक में तात्कालिक आर्थिक एवं राजनीतिक विचारधाराओं का बेहतर विश्लेषण प्रस्तुत किया है।
  - अर्थशास्त्र में पाटलिपुत्र, चंद्रगुप्त या किसी भी मौर्य शासक की चर्चा नहीं है।
  - यह नगर प्रशासन तथा सैनिक प्रशासन की परिषदों का भी उल्लेख नहीं करता है।
  - अर्थशास्त्र में 15 अधिकरण, 180 प्रकरण तथा 6000 श्लोक हैं।
  - अर्थशास्त्र मूलतः राजनीतिशास्त्र की पुस्तक है।
  - इसमें राज्य के सप्तांग सिद्धांतों का वर्णन है।
  - इस सिद्धांत में कौटिल्य ने राज्य की तुलना मनुष्य के शरीर से करते हुए उसे 7 तत्वों से निर्मित माना है।
    - **स्वामी (राजा) -** यह शीश के तुल्य है।
    - **अमात्य -** यह राजा की आंखें हैं।
    - **जनपद (राज्य क्षेत्र) -** यह राज्य की 'जंघाएं' हैं।
    - **दुर्ग -** राज्य की 'भुजाएं' माना है।
    - **कोष (खजाना) -** राज्य का मुख है।
    - **दण्ड (सैन्य शक्ति) -** राज्य का मस्तिष्क है।
    - **मित्र -** राज्य हेतु 'कान' के समान है।
- **विशाखदत्त की मुद्राराक्षस**
  - मुद्राराक्षस, विशाखदत्त द्वारा संस्कृत में एक ऐतिहासिक नाटक है जो भारत में राजा चंद्रगुप्त मौर्य की सत्ता में चढ़ाई के बारे में बताता है।
  - मुद्राराक्षस की ऐतिहासिक प्रामाणिकता कुछ हद तक शास्त्रीय हेलेनिस्टिक (यूनानी मत) स्रोतों में इतिहास की इस अवधि के विवरण के अनुसार समर्थित है: द वायलंट रुल ऑफ नंद (नंद का अत्याचारी शासन), द अनर्सपेशन ऑफ चंद्रगुप्त (चंद्रगुप्त का बलापहार), मौर्य साम्राज्य का गठन और सिकंदर के विजय से उत्तर-पश्चिम के राज्यों के साथ विभिन्न युद्ध।
- **बौद्ध ग्रंथों**
  - बौद्ध ग्रंथों में मौर्य इतिहास का विस्तृत वर्णन मिलता है।
  - दीपवंश, महावंश एवं महावंश की वसत्थपकासिनी टीका आदि सिंहली बौद्ध स्रोत, मौर्यों के उदय एवं साम्राज्य निर्माण पर पर्याप्त प्रकाश डालते हैं।
  - दिव्यावदान, मिलिंदपन्हो एवं तिब्बती लामा तारानाथ द्वारा रचित साहित्य भी मौर्य इतिहास जानने के स्रोत हैं।
- **जैन ग्रंथों**
  - जैन ग्रंथों से भी मौर्यों का इतिहास जानने में सहायता प्राप्त होती है।
  - इस संदर्भ में प्रमुख जैन ग्रंथ हैं- कल्पसूत्र, परिशिष्टपर्वन, जिनप्रभसूरि रचित विविध तीर्थ कथा, हरिभद्रसूरि की वृहत्कथाकोश, श्रीचंद्र लिखित कथाकोश

❑ विदेशी विवरण

- स्ट्रैबो, डियोडोरस, प्लिनी, एरियन ने अपनी रचनाओं में इंडिका का सहारा लिया।
- **मेगस्थनीज की इंडिका**
  - सिकंदर के सेनापति सेल्यूकस द्वारा चन्द्रगुप्त के दरबार में भेजा गया यूनानी राजदूत, जो पाटलिपुत्र में 304-299 ई. पू. तक रहा।
  - मेगस्थनीज अपने विवरण में भारत की भौगोलिक स्थिति के बारे में बताता है। यहाँ की भूमि उर्वर है एवं लोग आत्मनिर्भर हैं।
  - चन्द्रगुप्त मौर्य की राजधानी पाटलिपुत्र (पॉलिब्रोथा) है।
  - यह पूर्वी भारत का सबसे बड़ा नगर है। यहाँ के प्रशासन का विस्तृत वर्णन करते हुए बताता है कि दंड विधान कठोर है। परिणामतः चोरी की घटनाएँ कम होती हैं। समान्यतया लोग घरों तथा संपत्ति का रखवाली नहीं करते हैं।
  - भारतीय दार्शनिकों का विवरण दिया तथा ब्राह्मण साधुओं की प्रशंसा की।
  - भारतीय यूनानी देवता डियोनिसियस (शिव), हेराक्लीज (कृष्ण) की पूजा करते हैं। लोग नैतिक दृष्टि से उत्कृष्ट हैं। वे न तो सूद लेते हैं न देते हैं। सादगी का जीवन जीते हैं तथा वे वीर व सत्यवादी हैं।

- मेगस्थनीज ने कुछ भ्रामक विवरण दिये हैं अकाल कभी नहीं पड़ता तथा भारत में दास व्यवस्था नहीं है।
- **समाज सात भागों में बँटा है :-** दार्शनिक, कृषक, शिकारी (पशुपालक), शिल्पी (कारीगर), योद्धा, निरीक्षक (गुप्तचर) और अमात्य (सभासद)।
- भारतीय लेखन कला से अनभिज्ञ हैं (नियार्कस पहले ही लिख चुका था कि भारतीय एक प्रकार के कपड़ा पर लिखते थे)।

■ **डियोडोरस-** इसका भारत विषयक विवरण सबसे प्रारंभिक यूनानी विवरण है।

■ **स्ट्रैबो**

- **पुस्तक -** विश्व भूगोल, चन्द्रगुप्त की महिला अंगरक्षकों का उल्लेख करता है।
- सेल्यूकस व चन्द्रगुप्त के बीच वैवाहिक संबंध की चर्चा करता है।
- भारत के भौगोलिक स्थिति की भी जानकारी देता है।

■ **प्लिनी**

- पुस्तक - नेचुरल हिस्ट्री ।

■ **एरियन**

- सिकंदर के अभियान तथा भारत के भूगोल और सामाजिक जीवन के बारे में सबसे अच्छा विवरण लिखा ।

■ **प्लुटार्क**

- चन्द्रगुप्त का युवावस्था में सिकंदर से मिलने का जिक्र किया।
- प्लूटार्क ने लिखा है कि चन्द्रगुप्त ने 6 लाख सेना लेकर समूचे भारत पर अपना आधिपत्य स्थापित किया था।

❑ **पुरातात्विक स्रोत-**

■ **अशोक के अभिलेख**

- अशोक का इतिहास मुख्यतः उसके अभिलेखों से ही ज्ञात होता है।
- ये राज्यादेश के रूप में जारी किए गए हैं। अधिकांश अभिलेख प्राकृत भाषा तथा ब्राह्मी लिपि में हैं।
- उत्तर पश्चिम के अभिलेख **खरोष्ठी** एवं **आरमाइक लिपि** में हैं।
- अफगानिस्तान के अभिलेख आरमाइक व यूनानी दोनों भाषा में है।
- ये अभिलेख सामान्यतः राजमार्गों के किनारे स्थापित हैं।
- इनसे अशोक के जीवन, आंतरिक व विदेश नीति, राज्य विस्तार का विवरण आदि मिलता है।
- सर्वप्रथम 1750 में टीपेंथलर ने अशोक की लिपि का पता लगाया।
- 1837 में सर्वप्रथम जेम्स प्रिंसेप ने ब्राह्मी लिपि को पढ़ा।
- 1915 से मास्की अभिलेख से अशोक की पहचान प्रियदर्शी नाम से हुई।
- निट्टूर, उदेगोलम, गुर्जरा, के लेख में भी अशोक के नाम दिए गए हैं।
- डी.आर. भण्डारकर ने केवल अभिलेखों के आधार पर ही अशोक का इतिहास लिखने का प्रयास किया।
- अशोक के अभिलेखों में एकमात्र लेखक **चापड़** का उल्लेख मिलता है।

■ **अशोक के कुछ अभिलेख मूल स्थान से हटाए गए हैं :-**

- **मेरठ, टोपरा, स्तंभ शिलालेख-** फिरोजशाह तुगलक द्वारा दिल्ली लाया गया।
- **कौशाम्बी स्तंभलेख-** अकबर द्वारा इलाहाबाद लाया गया।
- **वैराट अभिलेख -** कनिंघम द्वारा कलकत्ता लाया गया ।
- अशोक के अभिलेखों को कई वर्गों में बाँटा जाता है, जो निम्न हैं - **शिलालेख, स्तंभलेख, गुहालेख ।**
- यह 14 विभिन्न लेखों का एक समूह है जो आठ भिन्न-भिन्न स्थानों से 14 बृहद् शिलालेख प्राप्त हुए हैं। **ये हैं -**
  - **शाहबाजगढी :-** पेशावर - पाकिस्तान, खरोष्ठी लिपि दाएँ से बाएँ पढ़ी जाती है।
  - **मानसेहरा:-** हजारा जिला - पाकिस्तान, खरोष्ठी लिपि में।
  - **कालसी :-** देहरादून
  - **गिरनार :-** जूनागढ़ - गुजरात, इसमें रुद्रदामन व स्कंदगुप्त के भी लेख हैं। यहाँ सुदर्शन झील थी, जिसका निर्माण और जीर्णोद्धार चन्द्रगुप्त के समय पुष्यगुप्त, अशोक के समय तुषास्क, रुद्रदामन के समय सुविशाख तथा स्कंदगुप्त के समय चक्रपालित ने करवाया।
  - **धौली :-** तोसाली (पुरी जिला) - उड़ीसा ।
  - **जौगढ़ :-** समापा (गंजाम जिला) - उड़ीसा ।
  - **एर्रगुडि :-** कर्नूल जिला - आंध्र प्रदेश ।
  - **सोपारा:-** थाणे जिला -महाराष्ट्र ।
  - **धौली- जौगढ़** के शिलालेखों पर 11वाँ, 12वाँ और 13वाँ लेख नहीं है। उनके स्थान पर दो अन्य लेख हैं जिसे पृथक कलिंग प्रज्ञापन कहा गया है। यह समापा के महामात्रों को संबोधित है।

■ **बृहद् शिलालेख में वर्णित विषय**

- **प्रथम बृहद् शिलालेख :-** इसमें पशु हत्या पर रोक (राजकीय पशुशाला में मात्र तीन पशु मोर व एक मृग मारे जाने जानकारी), समाज (उत्सव) का निषेध नये प्रकार के उत्सव की शुरुआत।
- **दूसरा बृहद् शिलालेख :-** समाज कल्याण से संबंधित कार्य (मनुष्य एवं पशुओं के लिए चिकित्सालय बनवाने, मार्ग निर्माण, कुँआ खुदवाने, वृक्षारोपण, जड़ी-बूटी लगवाने) का उल्लेख है।
- चोल, पाण्ड्य, सतियपुत्र, केरलपुत्र, श्रीलंका एवं यूनानी राजा एंटियोकस और उसकी पड़ोसी भूमि पर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करवाने का जिक्र है।
- **तीसरा बृहद् शिलालेख**
- राज्याभिषेक के 12वें वर्ष में जारी किया गया। लोगों में धर्म की शिक्षा देने हेतु युक्त, रज्जुक, प्रादेशिक जैसे अधिकारी को पाँचवें वर्ष दौरा (अनुसंधान) का आदेश इस शिला लेख मे दिया गया है।
- ब्राह्मणों-श्रमणों, मित्रों-संबंधियों के प्रति उदार भाव, माता-पिता का सम्मान करना तथा सोच-समझ कर धन का व्यय और संचय करने का सुझाव दिया गया है।
- **चौथा बृहद् शिलालेख**
- यह 12वें वर्ष जारी किया गया। भेरीघोष के बदले धम्मघोष की बात की गई है। ब्राह्मण एवं श्रमणों के प्रति आदर दिखाये जाने तथा पशु हत्या को बहुत हद तक रोके जाने का दावा किया गया है।
- **पाँचवां बृहद् शिलालेख**
- धम्ममहामात्र (धम्म की स्थापना, धम्म की वृद्धि और लोगों के कल्याण और सुख के लिए कार्य) नामक अधिकारी की चर्चा की गई है।
- **छठा बृहद् शिलालेख**
- धम्ममहामात्र को आदेश दिया गया है कि वह राजा के पास किसी भी समय सूचना ला सकता है।
- **सातवाँ बृहद् शिलालेख**
- सभी संप्रदायों के लिए सहिष्णुता की बात की गई है। अशोक ने अपने इस शिलालेख में 'अल्प व्यय तथा अल्प संग्रह' को धम्म का अंग माना है।
- **आठवाँ बृहद् शिलालेख**
- सम्राट धम्म यात्रा , बोधि वृक्ष के भ्रमण (ब्राह्मण एवं संन्यासी का दर्शन, दान, वृद्धों का दर्शन, सोना बाँटना, सम्मेलन, धम्म प्रचार) का उल्लेख है।
- **नवम् बृहद् शिलालेख**
- मंगल कार्यों (जन्म, विवाह आदि) के अवसरों पर आयोजन
- समारोहों की निंदा की गई है। दास व सेवकों के प्रति शिष्टाचार की बात की गई है (कालसी) व गिरनार में नवें शिलालेख के पाठ में भिन्नता है।

- **दसवाँ बृहद् शिलालेख-**
- ख्याति एवं गौरव की निंदा, तथा धम्म निति की श्रेष्ठता पर बल
- **ग्यारहवाँ बृहद् शिलालेख**
- धम्म नीति (धम्म विजय) की व्याख्या की गई है। इसमें दास व सेवकों के प्रति अच्छा व्यवहार, माता-पिता का आज्ञा पालन, उदारता, प्राणियों के प्रति अहिंसा, पड़ोसियों में धम्म प्रचार की बात कही गई है।
- **बारहवाँ बृहद् शिलालेख**
- विभिन्न संप्रदायों के बीच सहिष्णुता पर बल दिया गया है।
- **तेरहवाँ बृहद् शिलालेख**
- इसमें राज्याभिषेक के 8 वर्ष बाद कलिंग विजय (एक लाख मरे, डेढ़ लाख निष्कासित, कलिंग मगध साम्राज्य का अंग बना) का वर्णन है। और अशोक द्वारा युद्ध के बाद पश्चाताप का उल्लेख किया गया है।
- **इस शिलालेख में निम्नलिखित शासकों की चर्चा की गई है**
  - **अंतियोक** - सीरिया का राजा एंटियोकस द्वितीय थियोस
  - **तुरमय**- मिश्र का टॉलेमी द्वितीय फिलाडेल्फस
  - **अंतिकीन** - मेसीडोनिया का एंटिगोनस गोनाटास
  - **मग** - सीरियाई नरेश मगस्
  - **अलिकसुंदर** - एपिरस का अलेक्जेंडर या कोरिन्थ का अलेक्जेंडर।
- इसी लेख में दक्षिण में चोल, पाण्ड्य, ताम्रपर्णी (श्रीलंका) पर भी धम्म विजय की सूचना मिलती है। उन लोगों का भी उल्लेख है जो उनके विजित राज्य में रहते हैं तथा जहाँ उसने धम्म प्रचार किया। ये है यवन, कम्बोज, नाभक, नाभपक्ति, भोज, गंधार, आटविक राज्य पितनिक, आन्ध्र, परिन्द, अपरांत ।

- **Note :-**
- पृथक कलिंग शिलालेख-। में अशोक ने इस शिलालेख में घोषणा कि सभी मनुष्य मेरी संतान हैं।

प्रमुख लघु शिलालेख	
इनमें अशोक के व्यक्तिगत जीवन की जानकारी मिलती है। इनके प्राप्ति स्थल हैं	
रूपनाथ	जबलपुर - मध्यप्रदेश
गुर्जरा	दतिया जिला - मध्यप्रदेश
भाब्रू	जयपुर राजस्थान इसमें अशोक ने बुद्ध, धम्म, संघ के प्रति आस्था व्यक्त की।
मास्की	रायचूर जिला - कर्नाटक
ब्रह्मगिरि	चित्तलदुर्ग जिला - कर्नाटक।
जटिंगरामेश्वर	चित्तलदुर्ग जिला कर्नाटक।
एर्रगुडि	कर्नूल जिला - आंध्रप्रदेश।
अहरौरा	मिर्जापुर जिला- उत्तरप्रदेश,
उडेगोलम	बेल्लारी - कर्नाटक।

- **स्तभ लेख-**
- इनमें धम्म एवं प्रशासनिक बातों का उल्लेख है। इन लेखों की संख्या सात है, जो : भिन्न भिन्न स्थानों में पाषाण स्तंभ पर उत्कीर्ण पाए गए हैं, ये हैं
- **दिल्ली-टोपरा:-** सहारनपुर, फिरोजशाह तुगलक दारा दिल्ली लाया गया। इस पर अशोक के सातों अभिलेख उत्कीर्ण है जबकि शेष पर केवल छः ही उत्कीर्ण है।
- **दिल्ली-मेरठ :-** मेरठ, फिरोजशाह तुगलक द्वारा दिल्ली लाया गया।
- **लोरिया अरेराज :–** चम्पारण, बिहार |
- बिहार शीर्ष कमलाकार (ऊपर में उत्तर की ओर मुँह किए हुए सिंह की मूर्ति, शीर्ष के नीचे राजहंसों की पंक्ति)।
- **रामपुरवा:-** चम्पारण बिहार, इसके शीर्ष पर नटुआ बैल है।
- **प्रयाग :-** रानी का अभिलेख (अशोक की रानी कारुवाकी, पुत्र तीवर का जिक्र) नाम से विख्यात है। पहले कौशाम्बी में था, अकबर द्वारा इलाहाबाद किले में रखवाया गया। इस पर समुद्रगुप्त, बीरबल व जहाँगीर का भी अभिलेख अंकित है।

- **इन स्तभ लेखों में वर्णित विषय निम्न हैं:-**
- **प्रथम स्तभ लेख :-** धम्म प्रचार, अंतः महामात्र का उल्लेख,
- **दूसरा स्तभ लेख :-** अच्छा काम करने, दया, दान, पशु को जीवन दान देने का उल्लेख
- **तीसरा स्तभ लेख:-** आत्मनिरीक्षण पर जोर, क्रूरता, निष्ठुरता, पाप का अंत करने का उल्लेख
- **चौथा स्तभ लेख :-** मृत्यूदंड प्राप्त कैदी को तीन दिन की मुहलत दिये जाने का जिक्र।
- **पाँचवा स्तंभ लेख :-** राज्याभिषेक के 26 वर्ष बाद प्राणियों के वध पर रोक।
- **छठा स्तभ लेख :-** राज्याभिषेक के 12 वर्ष बाद धम्मलेख उत्कीर्ण करवाने का उल्लेख।
- **सातवां स्तभ लेख :-** धर्म प्रचार हेतु वृक्ष लगवाने, कुएँ खुदवाने, धम्ममहामात्रों के कई श्रेणियों, रज्जुक का उल्लेख
- **लघु स्तभ लेख**
- **लघु स्तभ लेख -** अशोक की राजकीय घोषणाएँ जिन स्तंभों पर उत्कीर्ण हैं, उन्हें साधारण तौर पर लघु स्तंभ लेख कहा जाता है। ये निम्नलिखित हैं
- **साँची (काकणाव) लेख-** रायसेन जिला मध्यप्रदेश, इसे संघभेद अभिलेख भी कहते हैं (बौद्ध संघ में फूट डालने वाले भिक्षु भिक्षुणियों को चेतावनी)।
- **सारनाथ लेख-** वाराणसी उत्तर प्रदेश अशोक अपने महामात्रों को संघभेद रोकने का आदेश देता है।
- **कौशाम्बी लेख-** इलाहाबाद के समीप - उत्तर प्रदेश अशोक अपने महामात्रों को संघभेद रोकने का आदेश देता है।
- **रुम्मिनदेई लेख-** नेपाल के तराई में (राज्याभिषेक के 20वें वर्ष शाक्यमुनि के जन्मभूमि पर जाने का जिक्र सम्राट ने भाग की राशि कुल उत्पादन का 1/8 किया, जबकि बलि को समाप्त किया)।
- **निग्लीवा लेख -** नेपाल की तराई में (राज्याभिषेक के 14वें वर्ष 13 वर्ष बाद कनकमुनि के स्तूप के विस्तार का उल्लेख) स्थित है।
- **अशोक के कुछ अन्य अभिलेख**
- **शरेकुना का द्विभाषी अभिलेख -** कंधार अफगानिस्तान, यूनानी व अरमाइक लिपि में।
- **बराबर गुफा अभिलेख-** गया जिला बिहार, अशोक द्वारा आजीवक साधुओं को निवास हेतु गुफा-दान का विवरण।
- अशोक के अभिलेखों में उसका नाम देवानाम प्रिय मिलता है केवल गुर्जरा, मास्की, उदयगोलम एवं नेत्र अभिलेख में ही अशोक नाम प्राप्त होता है।
- **मौर्यों से संबंधित अन्य अभिलेख**
- **सोहगौरा अभिलेख-** गोरखपुर जिला - उत्तर प्रदेश, चंद्रगुप्त मौर्यकालीन, लिपि- ब्राह्मी, भाषा प्राकृत, (अकाल से निपटने का राजकीय प्रयास)।
- **महास्थान अभिलेख -** दीनाजपुर - बांग्लादेश, चंद्रगुप्त मौर्यकालीन, लिपि - ब्राह्मी, भाषा प्राकृत. (अकाल से निपटने का राजकीय प्रयास)।

- **रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख -** संस्कृत भाषा का प्रथम अभिलेख (150 ई.), लिपि - ब्राह्मी सुदर्शन झील के पुनरुद्धार - चंद्रगुप्त मौर्य और अशोक दोनों के द्वारा।
- **दशरथ का नागार्जुनी गुफा अभिलेख -** नागार्जुनी गुफाओं के शिलालेखों के मुताबिक, दशरथ मौर्य ने इन गुफाओं को आजीविक संप्रदाय के अनुयायियों को समर्पित किया था
- इन गुफाओं की दीवारों पर बने ग्रेनाइट के काम की वजह से, इनकी तकनीक को 'मौर्य पॉलिश' कहा जाता है
- **लयमान का अभिलेख-** जलालाबाद - अफगानिस्तान, आरमाइक लिपि में है। मृद्भांड एवं आहत सिक्के - उत्तरी चमकदार काले मृदभांड (NBPW) इस काल की विशेषता हैं। कुम्हरहार, बुलंदीबाग (पटना) से राजप्रासाद के अवशेष मिले हैं। खुदाई में आहत मुद्रायें मिलीं जो चाँदी, तांबे की बनी थी। इन पर वृक्ष, सूर्य, चंद्रमा, पर्वत, पशु-पक्षी, अंकित हैं।

मौर्यकालीन राजनीतिक इतिहास

❑ चन्द्रगुप्त मौर्य

- मौर्यवंश का संस्थापक, उसकी उत्पत्ति को लेकर विवाद है।
- राजकीलम खेल खेलते समय कौटिल्य ने उसे देखा तथा उसे 1000 कार्यापण में खरीदा।
- तक्षशिला में इसने प्रारंभिक शिक्षा पाई, जहाँ का आचार्य कौटिल्य स्वयं था।
- चन्द्रगुप्त मौर्य के अन्य नाम - **सैण्ड्रोकोट्स, एण्ड्रोकोट्स, सैण्ड्रोकोट्ज़**
- प्रारंभिक विजय पंजाब तथा सिंध में प्राप्त की।
- परिशिष्टपर्वन तथा मुद्राराक्षस के अनुसार हिमालय क्षेत्र का शासक पर्वतक (संभवतः पोरस) ने इस अभियान में चन्द्रगुप्त की सहायता की।
- जस्टिन चंद्रगुप्त की सेना को "डाकुओं का गिरोह" कहता है।
- 317 ई.पू. में पश्चिमी पंजाब का अंतिम यूनानी सेनानायक यूडेमस भारत छोड़ने को बाध्य हुआ।
- प्लूटार्क का यह मानना है कि चन्द्रगुप्त 6 लाख सेना की सहायता से जम्बूद्वीप को रौंद डाला।
- ऐप्पियानस के अनुसार 305 ई.पू. में ग्रीक क्षत्रप सेल्यूकस से युद्ध हुआ। बाद में संधि हुई तथा वैवाहिक संबंध बने।
- सेल्यूकस ने अपनी पुत्री 'हेलेना' का विवाह चंद्रगुप्त मौर्य से कर दिया।
- स्ट्रैबो के अनुसार, सेल्यूकस ने 'एरियाना' के प्रदेश चंद्रगुप्त को विवाह संबंध के फलस्वरूप दिए।'
- सेल्यूकस ने चंद्रगुप्त को एरियाना का क्षेत्र दिया जिसमें एरिया (हेरात), अर्कोसिया (कंधार), पेरिपेनिसडाई (काबुल), जेड्रोसिया (बलूचिस्तान) शामिल था। प्लूटार्क के अनुसार बदले में चंद्रगुप्त ने 500 हाथी दिए।
- रुद्रदामन के अभिलेख से पता चलता है कि चन्द्रगुप्त पश्चिमी भारत को जीता तथा पुष्यगुप्त को वहाँ का गवर्नर नियुक्त किया। इसी ने सुदर्शन झील का निर्माण करवाया।
- जैन स्रोतों के अनुसार उसके शासन के अंतिम 12 वर्ष में भीषण अकाल पड़ा, के पक्ष में सिंहासन त्याग कर भद्रबाहु की शिष्यता ग्रहण कर ली तथा उसके साथ श्रवणबेलगोला (मैसूर) चला गया। जहाँ जैनों के उपवास पद्धति (सल्लेखना) द्वारा प्राण त्याग दिया।
- जस्टिन के अनुसार, चंद्रगुप्त से संधि एवं अपने पूर्वी राज्य को शांत कर सेल्यूकस एण्टीगोनस (301 ई. पू.) से युद्ध करने चला गया। संधि स्वरूप सेल्यूकस ने अपने राजदूत मेगस्थनीज को चंद्रगुप्त के पास भेजा जो संभवतः 304 से 293 ई. पू. के मध्य पाटलिपुत्र स्थित मौर्य दरबार में रहा।
- यह भारत आने वाला प्रथम राजदूत था।
- संगम ग्रंथ 'अहनानुरू' एवं 'पुरनानुरू' से चंद्रगुप्त की दक्षिण विजय की जानकारी मिलती है।
- अशोक के अभिलेख चंद्रगुप्त की दक्षिण विजय का समर्थन/पुष्टि करते हैं।
- मौर्यों की दक्षिण भारत विजय का उल्लेख करने वाले तमिल कवि थे-
  - **मामूलनार -** इन्होंने नंद राजाओं द्वारा पाटलिपुत्र में कोष एकत्रित करने एवं मौर्यों द्वारा दक्षिण की विजय का वर्णन किया है।
  - परंगोर्नार
  - कल्लिल अन्तिग्यनार

❑ बिन्दुसार (298 से 273 ई.पू.)

- **माता -** दुर्धरा,
- **पिता -** चन्द्रगुप्त मौर्य
- **बिंदुसार के अन्य नाम-** सिंहसेन (जैन ग्रंथ) , अमित्रघात (पतंजलि के महाभाष्य), अमित्रोकेट्स (एथनियस ने) , अलिट्रोकेड्स (स्ट्रैबो ने) , भद्रसार (वासु पुराण), वारिसार (अन्य पुराणों में)
- **अन्य तथ्य**
  - इसके काल में कुछ विद्रोह हुए।
  - तक्षशिला विद्रोह को दबाने हेतु अपने पुत्र अशोक को भेजा। दूसरा विद्रोह दबाने अपने पुत्र सुसीम को भेजा।
  - बिन्दुसार की सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि इन विद्रोहों के बावजूद वह पिता से प्राप्त विशाल साम्राज्य को अक्षुण्ण बनाये रखा।
  - बिन्दुसार के पश्चिमी-यूनानी राज्यों से अच्छे संबंध थे, कई राजदूत इसके दरबार में आये।
    - **डाइमेकस (सीरिया के शासक) :-** एंटियोकस प्रथम का दूत।
    - **डायनोसियस (मिस्र के शासक) :-** टॉलेमी द्वितीय का राजदूत था।
  - एथेनियस के अनुसार वह सीरिया के राजा एंटियोकस प्रथम से पत्र द्वारा तीन वस्तुओं की मांग की:- मीठी मदिरा, सूखी अंजीर, एक दार्शनिक, जिसमें प्रथम दो राजा ने भेज दिया और दार्शनिक भेजने में असमर्थता व्यक्त किया क्योंकि यूनानी कानूनों के अनुसार दार्शनिकों का विक्रय नहीं किया जा सकता था।
  - बिन्दुसार ने साम्राज्य को प्रांतों में विभाजित किया। प्रत्येक प्रांत में कुमार (उपराजा) नियुक्त किया।
  - दिव्यावदान के अनुसार अशोक अवन्ति का उपराजा था।
  - प्रशासनिक कार्यों हेतु अनेक महामात्रों की भी नियुक्ति की।
  - बिन्दुसार की सभा में 500 सदस्यों वाली एक मंत्रिपरिषद थी जिसका प्रधान **खल्लाटक** था।
  - बौद्ध ग्रंथ 'दिव्यावदान' के अनुसार, बिंदुसार ने अपने सबसे बड़े पुत्र सुमन अथवा सुसीम को तक्षशिला तथा अशोक को उज्जैन का प्रांताध्यक्ष नियुक्त किया था।
  - 'दिव्यावदान' के अनुसार, तक्षशिला में हुए विद्रोह को सुमन द्वारा न दबा पाने पर वहां शांति स्थापना के लिए अशोक को भेजा गया।
  - इसके पश्चात अशोक स्वाश (खश) 19 राज्य गया। बिंदुसार के समय में भी भारत का पश्चिमी यूनानी राज्यों के प्राथ मैत्री-संबंध बना रहा।
  - 'थेरवाद' परंपरा के अनुसार, 'बिंदुसार ब्राह्मण धर्म का अनुयायी था।'
  - कुछ विद्वान उसे आजीवक संप्रदाय का अनुयायी बताते हैं। पुराणों के अनुसार बिंदुसार का राज्यकाल 2520 वर्ष एवं 'महावंश' के अनुसार 27 वर्ष था।
  - 21 पुराणों के अनुसार बिंदुसार ने दो समुद्रों (अरब सागर तथा बंगाल की खाड़ी) के बीच का क्षेत्र जीत लिया था।

❑ अशोक (269-232 ई.पू.)

- **पिता -** बिंदुसार
- **माता -** सुभद्रांगी

- **पत्नियाँ -** पद्मावती (कुणाल की माता), असंधिमित्रा (अग्रमहिषी), देवी या महादेवी (महेन्द्र तथा संघमित्रा की माता), तिष्यरक्षिता (दिव्यावदान में उल्लेख), कारुवाकी (तीवर की माता प्रयाग लेख में वर्णित)।
  - प्रयाग अभिलेख या रानी का अभिलेख में अशोक की रानी-कारूवाकि का उल्लेख है जो किसी शिलालेख में अशोक की किसी भी रानी का एकमात्र प्रमाण है। यह तीवर की मां थी। 'तीवर' का उल्लेख भी प्रयाग अभिलेख में हुआ है।
  - 'असंधिमित्रा' अशोक की पटरानी थी। इसकी मृत्यु के पश्चात तिष्यरक्षिता पटरानी बनीं। पद्मावती - यह 'कुणाल' की मां थी।
- **पुत्र -** महेन्द्र, तीवर, कुणाल, जालोक (राजतरंगिणी में उल्लेख)
- **पुत्रियाँ** - संघमित्रा, चारूमति
- **राज्याभिषेक**
  - 269 ई. पू. (राज्यारोहण के चार वर्षों पश्चात)
  - राज्यारोहण के पूर्व अशोक उज्जैन (अवंति) एवं तक्षशिला का प्रांतीय शासक था।
- **उपाधि -** देवानांपियदसि, 'चंड अशोक' (बौद्ध ग्रंथ), 'बुद्ध शाक्य' (मास्की अभिलेख), महाराजकुमार (पानगोरारिया अभिलेख), 'मगधाधिराज' (भाबू लेख), 'अशोक वर्द्धन' (विष्णु पुराण) , 'प्रियदर्शी राजा' (बराबर गुहालेख), 'अशोक' (मास्की, गुर्जरा, नेत्तूर एवं उडेगोलम लघु शिलालेखों में), देवानांपिय प्रियदर्शी (रुम्मिनदेई व गिरनार में), 'देवानांपिय' (दीपवंश, महावंश एवं 12वें व 13 वें शिलालेख में)
- **अन्य तथ्य-**
  - पिता के शासनकाल में वह अवन्ति का उपराजा था।
  - पिता की बीमारी का समाचार सुनकर पाटलिपुत्र आया।
  - दिव्यावदान के अनुसार बिंदुसार मरते समय सुसीम को राजा बनाना चाहता था, किंतु मंत्री राधागुप्त की सहायता से अशोक शासक बन गया।
- **अशोक का साम्राज्य-**
  - अभिषेक के 8वें वर्ष (261 ई.पू.) कलिंग के विरुद्ध युद्ध किया। इस युद्ध तथा उसके परिणामों की चर्चा 13वें शिलालेख में है।
  - दक्षिण के साथ व्यापारिक संबंध के लिए कलिंग पर विजय आवश्यक था।
  - इस विजय के बाद मौर्य साम्राज्य की पूर्वी सीमा बंगाल की खाड़ी तक विस्तृत हो गई।
  - अशोक के अभिलेखों के आधार पर उसका साम्राज्य आसाम तथा सुदूर दक्षिण को छोड़कर पूरे भारतवर्ष में फैला था।
  - राजतरंगिणी के अनुसार, अशोक का कश्मीर पर अधिकार था। वह कश्मीर का प्रथम मौर्य शासक था।
  - ह्वेनसांग के अनुसार अशोक ने ही श्रीनगर की स्थापना की।
  - अशोक के विदेशी राज्य से भी संबंध थे। 13वें शिलालेख में 5 यवन राज्यों में धर्मप्रचारक भेजने का उल्लेख करता है।
  - मिस्र नरेश टॉलमी फिलाडेल्फस ने अशोक के दरबार में राजदूत भेजा था।
  - अशोक ने ही सर्वप्रथम विश्व को **'जीओ और जीने दो'** तथा **'राजनीतिक हिंसा धर्म के विरुद्ध है'** का पाठ पढ़ाया।
  - 13वें शिलालेख में अशोक ने आटविक जनजातियों को बल प्रयोग करने की चेतावनी दी।
- **अशोक की धार्मिक नीति**
  - अशोक के काल के प्रमुख धार्मिक समूह ब्राह्मण, श्रमण, बौद्ध, आजीवक एवं अन्य शासन के प्रारंभिक दिनों में ब्राह्मण धर्म का अनुयायी था।
  - राजतरंगिणी के अनुसार वह शिव का उपासक था।
  - दीपवंश के अनुसार वह सभी धर्म के विद्वानों का सम्मान करता था।
  - अशोक शासन के चौथे वर्ष निग्रोथ नामक भिक्षु (उसके भाई सुमन का पुत्र) से प्रभावित होकर बौद्ध धर्म के प्रभाव में आया तत्पश्चात् मोग्गलिपुत्रतिस्स के प्रभाव में आया।
  - उपगुप्त ने उसे बौद्ध धर्म में दीक्षित किया। भाव लघु शिलालेख में स्वयं को बुद्धशाक्य कहा।
  - भाब्रू शिलालेख में त्रिरत्न (बुद्ध, धम्म, संघ) में अपना विश्वास प्रकट किया।
  - अशोक आजीवन उपासक ही रहा। भिक्षु अथवा संघाध्यक्ष कभी नहीं बना।
- **धर्म यात्राएँ**
  - राज्याभिषेक के 10वें वर्ष बोधगया, 14वें वर्ष निग्लीवा गया
  - 20वें वर्ष लुम्बिनी गया। चूँकि यहाँ भगवान बुद्ध का जन्म हुआ था अतः उसे बलिमुक्त घोषित किया तथा भाग का 1/8 लेने की घोषणा की।
  - अनुश्रुतियाँ अशोक को 84 हजार स्तूपों का निर्माता बताती हैं।
  - दीपवंश व महावंश के अनुसार अशोक के समय में पाटलिपुत्र में तृतीय बौद्ध संगीति हुई जिसकी अध्यक्षता मोग्गलिपुत्ततिस्स ने की।
  - अशोक धार्मिक मामले में सहिष्णु था, बराबर पहाड़ी पर आजीवक संन्यासियों के लिए गुफा बनवाया।
- **अशोक का धम्म :-** अपनी प्रजा के नैतिक उत्थान के लिए अशोक ने जिन आचारों की संहिता प्रस्तुत की उसे उसके अभिलेखों में धम्म कहा गया है।
- मौर्य सम्राट अशोक महान की धार्मिक नीति थी
- यह नैतिक नियमों का एक संग्रह था, जिसमें सभी धर्मों की अच्छी बातें शामिल थीं
- अशोक स्वयं बौद्ध धर्म को मानने वाले थे, लेकिन उन्होंने किसी दूसरे धर्म के प्रति अनादर या असहिष्णुता नहीं दिखाई
- **अशोक के धम्म से जुड़ी कुछ खास बातें:**
  - अशोक का धम्म, सर्वसाधारण के लिए मानवधर्म था.
  - अशोक ने धम्म को लोकप्रिय बनाने के लिए कई कदम उठाए.
  - अशोक ने पशु-पक्षियों की हत्या पर रोक लगा दी थी.
  - राज्य और विदेशी राज्यों में मानव और पशुओं के लिए अलग चिकित्सा व्यवस्था की गई थी.
  - अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए दूतों और प्रचारकों को विदेशों में भेजा था.
  - अशोक ने विभिन्न मतों और सम्प्रदायों के प्रति उदारता की नीति अपनाई थी.
  - अशोक ने अपने शिलालेखों में मनुष्यों को आदर्श जीवन जीने की सीखें दी थीं.
  - अशोक के शिलालेख, बौद्ध धर्म के अस्तित्व के सबसे पुराने प्रमाणों में से हैं.
  - अशोक के शिलालेख, आधुनिक भारत, अफ़ग़ानिस्तान, पाकिस्तान, और नेपाल में पाए जाते हैं.
- **साम्राज्य विस्तार**
  - अशोक के अभिलेखों के आधार पर उसके साम्राज्य की सीमा का निर्धारण किया जा सकता है।
  - उत्तर-पश्चिम में - पाकिस्तान के पेशावर जिले में स्थित शाहबाजगढ़ी तथा हजारा जिले में स्थित मानसेहरा।
  - कन्दहार के समीप 'शरेकुना' तथा 'लघमान' से अशोक के अरामेइक लिपि के लेख मिले हैं।
  - इससे पता चलता हैं उसके साम्राज्य में हिंदुकुश, एरिया (हेरात), जेड्रोसिया तथा अराकोसिया (कंधार) सम्मिलित थे।
  - चीनी यात्री ह्वेनसांग ने कपिशा में अशोक के स्तूप का उल्लेख किया है।
  - उत्तर में कालसी (उत्तराखंड) तथा रुम्मिनदेई एवं निग्लीया से प्राप्त अभिलेखों से ज्ञात होता है कि उत्तर में हिमालय क्षेत्र का एक बड़ा भाग उसके साम्राज्य का अंग था।

- दक्षिण में मास्की, ब्रह्मगिरि, सिद्धपुर, जटिंग-रामेश्वर (सभी कर्नाटक) से उसके अभिलेख प्राप्त होते हैं।
- ओडिशा में धौली तथा जौगढ़ से अशोक के शिलालेख प्राप्त हुए हैं।
- कश्मीरी कवि कल्हण की राजतरंगिणी से ज्ञात होता है कि कश्मीर पर अशोक का अधिकार था।

अशोक द्वारा भेजे गए धर्म प्रचारक	
धर्म प्रचार	**राज्य**
मज्झन्तिक	कश्मीर तथा गांधार
महारक्षित	यवन देश
मज्झिम	हिमालय देश
महादेव	महिषमंडल
रक्षित	वनवासी
महेंद्र तथा संघमित्रा	श्रीलंका

अशोक के 13वें अभिलेख में वर्णित विदेशी शासक		
अभिलेखीय नाम	**यूनानी नाम**	**देश**
अंतियोक	एंटीयोकस-II	सीरिया
अंतकिनी	एंटीगोनस गोनाटस	मेसीडोनिया
अलिकसुंदर	एलेक्जेंडर	एपिरस
तुरमय	टॉलमी फिलाडेल्फस-II	मिस्र
मग	मैगस	साइरीन

❑ परवर्ती मौर्य शासक

- **कुणाल**
  - अशोक के बाद कुणाल गद्दी पर बैठा। जैन, बौद्ध स्रोतों के अनुसार कुणाल अंधा था।
  - राजतरंगिणी के अनुसार, कश्मीर में अशोक का उत्तराधिकारी जालोक हुआ। वह शैव था।
- **दशरथ**
  - पुराण के अनुसार, वह अशोक का पुत्र था। उसने नागार्जुनी पहाड़ी (गया जिला) में आजीवकों के लिए तीन गुफा निर्मित करवाया।
  - वह भी अशोक की तरह देवानांप्रिय की उपाधि धारण करता था।
- **संप्रति**
  - दशरथ का पुत्र संप्रति, यह श्वेताम्बर जैन धर्म का संरक्षक था
  - इसे सुहस्तिन नामक आचार्य ने जैन धर्म में दीक्षित किया।
- **बृहद्रथ**
  - बृहद्रथ को अंतिम मौर्य सम्राट कहा गया है। उसके सेनापति पुष्यमित्र ने 184 ई.पू. मेंसेना का निरीक्षण करते समय धोखे से उसकी हत्या कर गद्दी हथिया ली।

मौर्य साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था

❑ राजत्व का सिद्धांत

- अर्थशास्त्र की राजत्व अवधारणा के अनुसार, राजपद व्यक्ति, चरित्र और मानवीय व्यवहार से ऊपर होता है। इसमें पहली बार चक्रवर्ती शब्द का स्पष्ट प्रयोग हुआ है।
- चक्रवर्ती क्षेत्र में हिमालय से हिंद महासागर तक का भू-भाग शामिल था।
- इस काल तक राज्य की सप्तांग विचारधारा (सात अंगों को मिलाकर राष्ट्र बनता है) मजबूत हो गई थी, राजा , मंत्री , मित्र , कर , सेना , दुर्ग , भूमि / देश / जनता ,
- अर्थशास्त्र में शत्रु को आठवाँ तत्व माना गया।
- कौटिल्य के अनुसार, राजा इसमें सबसे महत्वपूर्ण है, जबकि आचार्य भारद्वाज ने मंत्री को सर्वश्रेष्ठ बताया।
- **मौर्य प्रशासन** - सम्राट> प्रांत >मण्डल> आहार> स्थानीय> द्रोणमुख> खार्वटिक> संग्रहण> ग्राम
- **केन्द्रीय अधिकारी तंत्र**
  - **राजा**
  - केन्द्रीय शासन व्यवस्था का सर्वोच्च शास्त्र तथा राजा के न्याय में विरोध होने पर राजा का न्याय ही प्रमाणिक माना जाता था। मेगस्थनीज के अनुसार राजा की दिनचर्या अत्यंत कठोर थी। वह दिन में नहीं सोता था।
  - **मंत्रिण**
  - राजा अपने अमात्यों में से मंत्री नियुक्त करता था। ये मंत्री एक छोटी उपसमिति के सदस्य होते थे, जिसे मन्त्रिण कहा जाता था। इसमें कुल तीन-चार सदस्य होते थे (संभवतः युवराज, प्रधानमंत्री, सेनापति, सन्निधाता)।
  - राजा द्वारा मुख्यमंत्री तथा पुरोहित के चुनाव में उनके चरित्र की भलीभांति जाँच (उपधा परीक्षण) की जाती थी।
  - अर्थशास्त्र के अनुसार राजा को सचिवों की नियुक्ति करनी चाहिए व उनसे मंत्रणा
  - शासन की सुविधा के लिए केन्द्रीय प्रशासन अनेक विभागों में बंटा हुआ था। प्रत्येक विभाग को तीर्थ (18) कहा जाता था। अधिकांश जगह पर तीर्थ के लिए महामात्र शब्द ही मिलता है।
  - **रूपदर्शक** नामक अधिकारी मुद्रा परखने का काम करता था

❑ प्रांतीय प्रशासन

- चन्द्रगुप्त मौर्य ने शासन की सुविधा हेतु अपने विशाल साम्राज्य को चार प्रान्तों में विभाजित किया। इन प्रान्तों को चक्र कहा जाता था।
- इन प्रान्तों का शासन सीधे सम्राट द्वारा नियंत्रित न होकर उसके प्रतिनिधि द्वारा संचालित होता था।
- आशोक के समय में प्रान्तों की संख्या चार से बढ़कर पाँच हो गई।
  - उत्तरापथ -तक्षशिला
  - दक्षिणापथ - सुवर्णगिरि
  - अवन्तिराष्ट्र - उज्जयिनी
  - कलिंग - तोसली
  - मध्यदेश - पाटलिपुत्र
- प्रांतों के राज्यपाल प्रायः राजकुल से संबंधित राजकुमार होते थे। इन्हें कुमार / आर्यपुत्र/राज्यपाल कहा जाता था।
- राज्यपाल को प्रांतीय शासन में सहायता देने के लिए एक मंत्रिपरिषद् होती थी।
- यह प्रांतीय शासकों की निरंकुशता पर नियंत्रण रखती थी, क्योंकि इनका सम्राट से सीधा संबंध होता था।
- **साम्राज्य का विभाजन** - प्रांत >मंडल>आहार/विषय> स्थानीय>द्रोणमुख>खार्वटिक> संग्रहण में था।
- प्रत्येक प्रांत कई मंडलों में विभक्त था।
- संग्रहण का प्रधान अधिकारी गोप था। वह जनपद तथा ग्रामीण प्रशासन में मध्यस्थ का काम करता था।
- **उसके प्रमुख कार्य :-** लेखा का कार्य, सामान्य प्रशासन कार्य, जनगणना का कार्य, पशुधन का हिसाब रखना ।
- स्थानिक एक अन्य अधिकारी था जो भू-राजस्व का वसूली करता था। वह सीधे प्रादेशिक के अधीन था।

मौर्यकालीन उच्चाधिकारी		
तीर्थ	**सम्बन्धित विभाग**	**कार्य एवं अन्य तथ्य**

पुरोहित	प्रधानमंत्री , धर्म विभाग	'अग्रामात्य' भी कहा जाता था। चंद्रगुप्त का प्रधानमंत्री कौटिल्य, बिंदुसार का कौटिल्य और खल्लाटक एवं अशोक का राधागुप्त थे।
सेनापति	सैन्य मंत्री	सैन्य संगठन, युद्ध तथा संधि विग्रह में राजा को परामर्श देना।
युवराज	राजा का उत्तराधिकारी	यह राजा का उत्तराधिकारी था।
समाहर्ता	राजस्व विभाग का प्रधान (वित्त मंत्री)	राजकीय करों को एकत्र करता था।
सन्निधाता	राजकीय कोषाध्यक्ष	राज्य की आय-व्यय का ब्यौरा और कोष इसके अधीन रहता था।
प्रदेष्टा	फौजदारी (कंटक शोधन) न्यायालय का प्रधान न्यायाधीश	राज्य को नैतिक अपराधों से मुक्त रखना।
नायक	युद्ध क्षेत्र में सेना का संचालक अथवा नगर रक्षा का अध्यक्ष	यह सेना का संचालन करता था।
कर्मान्तिक	उद्योगों एवं कारखानों का अध्यक्ष	आधुनिक उद्योग एवं वाणिज्य (व्यापार) का कार्य
दण्डपाल या प्रशस्त	सैन्य सामग्री जुटाने वाला।	पुलिस अधिकारी सेना की समस्त आवश्यकताओं जैसे- रसद, शस्त्र आदि की पूर्ति का प्रबंध करता था।
व्यावहारिक	दीवानी (धर्मस्थीय) न्यायालयों का प्रमुख।	इसे 'धर्मस्थ' भी कहते थे।
नागरक (पौर)	नगर का प्रमुख अधिकारी या नगर कोतवाल	पुरों और नगरों की व्यवस्था का प्रबंध करता था।
दुर्गपाल	राजकीय दुर्ग रक्षकों का अध्यक्ष	देश के भीतर के दुर्गों की रक्षा, व्यवस्था आदि देखना
अन्तपाल/सेना प्रबंधक	सीमावर्ती दुर्गों का रक्षक	सीमांत प्रदेशों के दुर्गों व छावनियों की देखभाल
आटविक	वन विभाग का प्रधान	वनो की देख-रेख करना
दौवारिक	राजमहलों की देखरेख करने वाला प्रधान	राजप्रासादों की देख-रेख करना
आन्तर्वंशिक	अन्तःपुर का अध्यक्ष	राजा की निजी अंगरक्षक सेना का सर्वोच्च अधिकारी। यह अंतःपुर का भी निरीक्षण करता था।
मंत्रिपरिषदाध्यक्ष	परिषद का अध्यक्ष	मंत्रिपरिषद की देख-रेख करना

मौर्य कालीन 28 अध्यक्ष	
विभाग	**अन्य तथ्य**
गणिकाध्यक्ष	वेश्याओं का निरीक्षक।
सीताध्यक्ष	कृषि विभाग का अध्यक्ष
गो-अध्यक्ष	पशुपालन विभाग का अध्यक्ष
विवीताध्यक्ष	चारागाहों की सुरक्षा तथा हिंसक प्राणियों से पशु-सुरक्षा का अध्यक्ष
सूत्राध्यक्ष	व्यवसायों के विभाग का अध्यक्ष
सूनाध्यक्ष	बूचड़खाने का अध्यक्ष।
अश्वाध्यक्ष	घोड़ों के विभाग का अध्यक्ष
हस्त्याध्यक्ष	हाथियों के विभाग का अध्यक्ष
पण्याध्यक्ष	वाणिज्य विभाग का अध्यक्ष
पौतवाध्यक्ष	माप-तौल विभाग का अध्यक्ष
शुल्काध्यक्ष	सीमा शुल्क विभाग का अध्यक्ष
लक्षणाध्यक्ष	टकसाल का अध्यक्ष
नवाध्यक्ष	जहाजरानी विभाग का अध्यक्ष
पत्यध्यक्ष	युद्ध में व्यूह निर्माण आदि हेतु उत्तरदायी।
मुद्राध्यक्ष	पासपोर्ट विभाग का अध्यक्ष
अकराध्यक्ष	खान विभाग का अध्यक्ष
कुप्याध्यक्ष	वन एवं वन संपदा प्रमुख।
मानाध्यक्ष	दूरी एवं समय मापन के साधनों से संबंधित था।
अक्षपटलाध्यक्ष	यह महालेखाकार होता था।
पत्तनाध्यक्ष	यह बंदरगाहों का प्रमुख था।
सुराध्यक्ष	यह आबकारी विभाग का प्रमुख था।
कोष्ठगाराध्यक्ष	यह कोठार का अध्यक्ष था।
आयुधगाराध्यक्ष	यह हथियारों के गोदाम का प्रमुख था।
सुवर्णाध्यक्ष	यह स्वर्ण भंडार का अध्यक्ष था।
लौह अध्यक्ष	यह धातु विभाग का अध्यक्ष था।
खन्यध्यक्ष	सामुद्रिक खानों का अध्यक्ष
रथाध्यक्ष	रथों के विभाग का अध्यक्ष
लवणाध्यक्ष	नमक के व्यापार पर नियंत्रण

❑ मौर्यकालीन न्याय-व्यवस्था

- मौर्यकाल में दण्ड या न्याय का आधार ग्रन्थ कौटिल्य का अर्थशास्त्र बन गया था।
- इस समय ग्राम पंचायतों का अधिकारी ही न्यायधीश होता था। बड़े-बड़े नगरों में भी कुछ न्यायालय होते थे।
- लगभग चार सौ गाँवों के न्यायालय द्रोण मुख कहलाते थे। इन सब से ऊपर स्थानीय अथवा जिले का न्यायालय था। इसके अतिरिक्त स्वयं सम्राट् का भी एक पृथक न्यायालय होता था। लगभग चार सौ।
- गाँवों के न्यायालय द्रोण मुख कहलाते थे। इन सब से उपर स्थानीय अथवा जिले का न्यायलय था। इसके अतिरिक्त स्वयं सम्राट् का भी एक पृथक न्यायलय होता था।
- बड़े-बड़े अपराधों को साहस कहा जाता था और साहसपूर्ण कार्यो के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के दण्ड विधान थे।
- सम्राट सर्वोच्च न्यायाधीश होता था। वह सभी प्रकार के मामलों की सुनवाई का अंतिम अदालत था। सबसे नीचे ग्रामीण न्यायालय होता था।
- पाटलिपुत्र के केन्द्रीय न्यायालय और ग्रामीण न्यायालय के अतिरिक्त अन्य सभी न्यायालय दो वर्गों में विभाजित थे :- धर्मस्थीय (दीवानी), कंटकशोधन (फौजदारी)।

○ धर्मस्थीय - धर्मस्थ या व्यावहारिक

- यह न्यायालय नागरिकों के पारस्परिक विवादों को निपटारा करते थे।
- इन्हें दीवानी अदालत (न्यायालय) कहा जाता था।

- चोरी, डाके व लूट के मामले, जिन्हें 'साहस' कहा जाता था, धर्मस्थीय न्यायालय में पेश होते थे।
- कुबचन, मान-हानि, मार-पीट सम्बन्धी मामले भी धर्मस्थीय न्यायालय में लाये जाते थे, जिन्हें 'वाक पारुष्य' या 'दण्डपारुष्य' कहा जाता था।

○ कंटकशोधन - प्रदेष्टि
- राज्य तथा नागरिकों के मध्य होने वाले विवाद का निर्णय करते थे
- ये फौजदारी अदातलतें थीं।

- दंड विधान अत्यंत कठोर थे। सामान्य अपराधों में आर्थिक जुर्माना होता था।
- कारीगरों के अंग को क्षति पहुँचाने पर तथा कर चोरी करने पर मृत्युदंड दिया जाता था।
- अपराध में प्रमाण न मिलने पर जल, अग्नि तथा विष द्वारा दिव्य परीक्षायें ली जाती थीं।
- दंड का निर्णय अपराधी के जाति के अनुसार होता था। ब्राह्मण को शुद्र की तुलना में कम दंड मिलता था। ब्राह्मण विद्रोहियों को जल में डुबाकर मृत्युदंड दिया जाता था।
- मौर्यों के पास शक्तिशाली नौसेना भी थी। अर्थशास्त्र में नवाध्यक्ष नामक अधिकारी का उल्लेख हुआ है। सेनापति युद्ध विभाग का प्रधान अधिकारी होता था। युद्ध क्षेत्र में सेना का संचालन नायक नामक अधिकारी करता था।
- सीमांत प्रदेश की रक्षा सुदृढ़ दुर्गों के द्वारा की जाती थी। अंतपाल नामक अधिकारी दुर्गों का अध्यक्ष होता था।
- **मौर्य काल में न्याय व्यवस्था के चार आधार थे**

○ धर्म, व्यवहार, चरित्र एवं राज शासन। उस समय सारे विवाद उक्त आधारों पर निर्णीत होते थे। चाणक्य का मत है कि "यदि राजा किसी निरपराध को दण्ड दे तो उससे तिगुना दण्ड उसे स्वयं भुगतना होगा।"

- संक्षेप में, हम यह कह सकते हैं कि भारत में न्याय-व्यवस्था बेदकाल से ही प्रारम्भ हो गयी थी तथा वह कुछ परिवर्तनों के साथ उत्तरोत्तर विकसित होती रही।
- यद्यपि आज की न्याय-व्यवस्था या दण्डनीति पर धर्मशास्त्रों का कोई हाथ नहीं हैं पर प्राचीन भारत की न्याय-व्यवस्था पूर्णताया शास्त्रीय विधानों पर आधारित थी। वह निष्पक्ष एवं विवेकाश्रित थी।

❑ नगर प्रशासन

- प्रमुख नगरों का प्रशासन नगरपालिकाओं द्वारा चलाया जाता था।
- नगर में कानून व्यवस्था बनाए रखने की जिम्मेवारी **नागरक** की थी। इसका दर्जा आधुनिक मजिस्ट्रेट के समान था।
- **प्रमुख कार्य :-** स्वच्छता तथा जल उपलब्ध कराना, मिलावट की रोकथाम करना, सरायों की देख रेख करना, राशन बंटवाना, आग से सतर्कता आदि।
- नागरक के दो सहायक अधिकारी थे **- गोप व स्थानिक।**
- मेगस्थनीज ने पाटलिपुत्र के प्रशासन की जानकारी दी है। इसने नगर के अधिकारियों को एस्टिनोमई कहा है। यह पाँच-पाँच सदस्यों वाली छः समितियों के माध्यम से चलाई जाती थी।
- **छह समितियां निम्नलिखित थी –**

○ **प्रथम समिति -** उद्योग शिल्पों का निरीक्षण
○ **द्वितीय समिति -** विदेशियों की देखरेख
○ **तृतीय समिति -** जन्म-मरण का लेखा-जोखा
○ **चतुर्थ समिति -** व्यापार/वाणिज्य
○ **पंचम समिति -** कार्य निर्मित वस्तुओं के विक्रय का निरीक्षण
○ **छठी समिति-** बिक्रीकर वसूल करना

- नगर में अनुशासन रखने तथा अपराधी मनोवृत्ति का दमन करने हेतु पुलिस व्यवस्था थी। इन्हें **रक्षिण** कहा जाता था।
- **युनानी स्रोतों से ज्ञात होता है कि तीन प्रकार के अधिकारी होते थे-**

○ **एग्रोनोमोई -** जिलाधिकारी (मार्ग निर्माण का एक विशेष अधिकारी)
○ **एण्टीनोमोई -** नगर आयुक्त
○ सैन्य अधिकारी

❑ ग्राम प्रशासन

- यह प्रशासन की सबसे छोटी इकाई थी। इसका अध्यक्ष ग्रामणी (अवैतनिक) कहलाता था। उसका निर्वाचन ग्रामवासियों द्वारा होता था। उसकी सहायता के लिए ग्रामवृद्धों की एक परिषद् होती थी, जिसमें ग्राम के प्रमुख व्यक्ति होते थे।
- यह परिषद् न्याय, ग्राम की भूमि का प्रबंध करने, सिंचाई का प्रबंध करने का कार्य करती थी।
- राज्य सामान्यतः ग्रामों के शासन में हस्तक्षेप नहीं करता था।
- रज्जुक मौर्य शासन में अधिकारी होते थे। रज्जुकों का उल्लेख अशोक के चौथे स्तम्भ लेख में मिलता है। ग्रामीण जनपदों की देखभाल के लिए रज्जुकों की नियुक्ति की जाती थी। इनके पास कर संग्रह के साथ-साथ न्यायिक शक्तियाँ भी थीं। अशोक के अभिलेखों में प्रादेशिक, महामात्र, प्रतिवेदक तथा ग्रामिक का भी उल्लेख मिलता है।

❑ गुप्तचर विभाग

- मौयों के पास एक कुशल गुप्तचर विभाग था, जो महामात्यापसर्प नामक अमात्य के अधीन रखा गया था। गुप्तचरों को अर्थशास्त्र में **गूढ़पुरूष** कहा गया है जबकि यूनानी लेखकों ने उन्हें निरीक्षक तथा ओवरसियर्स कहा है।
- अर्थशास्त्र में दो प्रकार के गुप्तचरों का उल्लेख है

○ **संस्था :-** एक ही स्थान पर कार्य करने वाले
○ **संचरा :-** भ्रमणशील गुप्तचर ।

- **नर-गुप्तचरों** को सन्ती, तिष्णा तथा सरद कहा जाता था
- **स्त्री-गुप्तचरों** को वृषली, भिक्षुकी तथा परिव्राजक कहा जाता था।
- अर्थशास्त्र से पता चलता है कि वेश्याएँ भी गुप्तचरों के पद पर नियुक्त होती थीं।
- गुप्तचर के प्रमुख कार्य मंत्रियों पर नजर रखना, सरकारी कर्मचारी की गतिविधि पर नजर रखना, आम जनता की भावनाओं को जानना, विदेशी शासकों की गुप्त गतिविधियों का पता लगाना।
- गुप्तचर के अतिरिक्त शांति व्यवस्था बनाए रखने तथा अपराधों की रोकथाम के लिए पुलिस भी थी, जिसे अर्थशास्त्र में रक्षिन् कहा गया है।

राजस्व व्यवस्था

- कौटिल्य द्वारा राजस्व के सात स्रोतों का वर्णन किया गया है।
- उसने इन्हें आय शरीर कहा है।
- ये स्रोत निम्नलिखित हैं- राजस्व के प्रमुख साधन निम्नलिखित थे-

○ दुर्ग- नगरों से प्राप्त आय
○ राष्ट्र- ग्रामों से प्राप्त
○ खनि- खनन उद्योग से प्राप्त
○ सेतु- फल-फूल-शाक पर कर
○ वन- वनों से प्राप्त
○ व्रज- पशुधन से प्राप्त
○ वणिक पथ- यह स्थल एवं जल मार्ग पर कर

- इसमें जनपद निवेश नीति का वर्णन है।
- राज्य के आय विभाग का देखभाल सन्निधाता करता था।
- समाहर्ता नामक पदाधिकारी करों को एकत्र करने तथा आय-व्यय का लेखा-जोखा रखने के लिए उत्तरदायी होता था।

- स्थानिक तथा गोप निचले स्तर पर करों को एकत्र करता था।

मौर्या कालीन कर व्यवस्था	
कर	**अन्य तथ्य**
भूमिकर	यह 'भाग' कहलाता था। यह उपज का 1/6 हुआ करता था। • राज्य के अधीन भूमि से होने वाली आय 'सीता' कहलाती थी।
बलि	'भाग' के अतिरिक्त कृषकों से लिया जाने वाला उपकर (Cess) था।
विष्टि	बेगार (Forced labour)
प्रणय	आपातकालीन कर
पिंडकर	गांव पर सामूहिक रूप से लगाया जाने वाला कर।
हिरण्य	नगद कर।
तरदेय	पुल पार करने पर लगने वाला कर।
निष्क्राम्य	निर्यात कर
प्रवेश्य	आयात कर
सेतु	फल, फूल एवं सब्जियों पर लगने वाला कर।
परहीनक	चराई कर
उदयक भाग	राज्य द्वारा लिया जाने वाला सिंचाई कर।
उत्संग	प्रजा द्वारा राजा को उपहार।
पार्श्व	व्यापारी के अधिक लाभ पर वसूले जाने वाला कर।
अतिवाहिका	मार्ग दर्शन का कर।
गुल्म देय	सैनिकों का शुल्क।
रज्जु	माप के समय लिया जाने वाला कर।

❑ व्यय के स्रोत

- सैनिक संगठन, सिंचाई व सार्वजनिक कार्य, सड़क निर्माण, शिक्षण संस्था, सार्वजनिक मनोरंजन, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य राज्य बाढ़, अकाल के समय जनता की सहायता करता था।
- सड़कों की मरम्मत व सराय भी बनाए जाते थे। शिलालेख में मनुष्य व मवेशी दोनों के लिए चिकित्सालय बनवाने का उल्लेख है।
- बृहद् नौकरशाही को वेतन देने के लिए राजकीय कोष में पर्याप्त धन की आवश्यकता थी, जो उन्नत राजस्व व्यवस्था के माध्यम से ही संभव था।
- राज्य की आय का मुख्य स्रोत भूमि कर था, जिसे भाग कहा जाता था। कर निर्धारण के लिए भूमि की माप रज्जु के पैमाने से की जाती थी। राज्य के आय के अन्य साधन शुल्क, चुंगी, बिक्री कर, व्यापारिक मार्गों, सड़क तथा घाटों पर लगने वाला कर, अनुज्ञा शुल्क, राजा की व्यक्तिगत भूमि से होने वाली आय सीमा जुर्माना।
- मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था मौर्य काल के विस्तृत प्रशासनिक व्यवस्था को देखकर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि अर्थव्यवस्था काफी उन्नत रही होगी। अर्थव्यवस्था का आधार कृषि, पशुपालन और व्यापार था, जिसे सम्मिलित रूप से अर्थशास्त्र में वार्ता कहा गया है।

❑ कृषि

- अधिकांश जनता के जीवन का आधार कृषि थी। भूमि पर राजा तथा कृषक दोनों के अधिकार के प्रमाण मिलते हैं।
- मौर्य काल में दो तरह की भूमि होने का पता चलता है एक देवमात्रक एवं दूसरा अदेवमात्रक।
- वर्षा पर आधारित भूमि को देवमात्रक एवं सिंचाई के कृत्रिम साधनों पर आधारित कृषि भूमि को अदेवमात्रक कहा जाता था।
- इस समय भूमि अत्यंत उपजाऊ थी।
- मुख्यतः धान, गेहूं, जौ, साग-सब्जी आदि का उत्पादन किया जाता था।
- कौटिल्य के अर्थशास्त्र में कृषि से संबंधित क्रियाओं का विस्तृत वर्णन मिलता है।
- कृषि स्वतंत्र किसानों द्वारा किये जाने के साथ-साथ राज्य द्वारा भी करवाया जाता था।
- राज्य द्वारा खेती करवाए जाने वाले भूमि को सीताभूमि कहा जाता था।
- इससे संबंधित अधिकारी सीताध्यक्ष कहलाते थे।
- मेगास्थनीज के अनुसार मौर्य काल में भारत में कही भी अकाल नहीं पड़ा।
- कौटिल्य कैले अर्थशास्त्र में वर्ष में बोई जाने वाली तीन प्रकार की फसलों का उल्लेख मिलता है।
- इसमें चावल को सबसे अच्छा एवं गन्ने की खेती को सबसे कम महत्वपूर्ण बताया गया है।
- यह राजकीय भूमि थी तथा वह भूमि जिससे राजा को राजस्व प्राप्त होता था।
- अर्थशास्त्र में नई भूमि पर कृषि के विकास को प्रोत्साहन देने की बात की गई है ताकि राजस्व में वृद्धि हो। इसके लिए घने बसे हुए क्षेत्रों से लोगों को अन्य क्षेत्रों में बसने के लिए प्रोत्साहन दिया जाता था।
- पहली बार इसी काल में शूद्रों को बड़े पैमाने पर कृषि कार्य में लगाया गया।
- **प्रमुख फसलें** - चावल, मोटा अनाज, तिल, काली मिर्च, केसर, दाल, गेहूँ, अलसी, सरसों, सब्जी, फल, गन्ना। फलों में अनार तथा अंगूर का भी उल्लेख हुआ है।
- **दुर्भिक्ष एवं सिंचाई**
  - मेगस्थनीज के अनुसार, अधिकांश भूमि सिंचित थी तथा भारत में कभी अकाल नहीं पड़ते। इसके विपरीत जैन स्रोतों में 12 वर्ष के अकाल का उल्लेख है।
  - सोहगौरा तथा महास्थान अभिलेख में अकाल के समय राज्यकोष्ठागार से अनाज वितरण का उल्लेख है। बिना वर्षा के उपजाऊ भूमि को अदेवमातृक कहा गया है।
  - अर्थशास्त्र में अच्छा प्रशासन उसे कहा गया है जिसमें किसान कृषि कार्य के लिए वर्षा के पानी पर निर्भर न हो।
  - इसमें सिंचाई के साधन के रूप में पोखर, बाँध तथा नहर की चर्चा की गई है।
  - राज्य की ओर से सिंचाई का प्रबंध सेतुबंध कहलाता था। सिंचाई पर अलग से कर लिया जाता था। इसे उदकभाग कहते थे, जो उपज का 1/5 से 1/3 तक होता था।
  - सिंचाई सुविधा के लिए चंद्रगुप्त ने सौराष्ट्र में सुदर्शन झील बनवाया (पुष्यगुप्त ने निर्माण शुरू करवाया तथा तुषाष्क ने पूरा करवाया)।
  - वन एवं उपवन अर्थशास्त्र में दो प्रकार के वन का उल्लेख है
- **हस्तिवन**
  - वैसा वन जहाँ से हाथी प्राप्त होता था। हाथी पर राज्य का एकाधिकार था, क्योंकि इसका प्रयोग लड़ाई में होता था।
- **द्रव्यवन**
  - इस वन से अनेक प्रकार की लकड़ी, लोहा, ताँबा आदि धातु प्राप्त होती थी। जंगलों का सैनिक दृष्टि से भी महत्व था। कौटिल्य के अनुसार, एक ऐसा वन जिसमें नदी भी हो, राजा की शत्रुओं से रक्षा कर सकता है।
- **पशुपालन**
  - प्रमुख पशु- गाय, बैल, भेंड़, बकरी, भैस, गधा, ऊँट, सूअर, कुत्ता आदि। मेगस्थनीज के अनुसार हाथी, घोड़ा पालने का एकाधिकार राज्य के पास था।

Note :-

सुदर्शन झील से संबंधित तथ्य

- **शासक** -चंद्रगुप्त मौर्य
  - **गवर्नर** - पुष्यगुप्त

- **विशेष** - पलासिनी एवं सुवर्ण- सिकता नदी को कृत्रिम बांध द्वारा जोड़कर झील का निर्माण
- **शासक** - अशोक
- **गवर्नर** - तुषास्फ
- **विशेष** - पानी निकास हेतु नहर निर्माण
- **शासक** - रुद्रदामन
- **गवर्नर** - सुविशाख
- **विशेष** - रुद्रदामन द्वारा निजी कोष से जीर्णोद्धार कराया गया।
- **शासक** - स्कंदगुप्त
- **गवर्नर** - पर्णदत्त
- **विशेष** - पर्णदत्त के पुत्र चक्रपालित द्वारा जीर्णोद्धार

आर्थिक दशा

- इस काल में वाणिज्य व्यापार उन्नत अवस्था में था।
- व्यापार में वृद्धि का प्रमुख कारण - नई बस्तियों का विस्तार, संचार व्यवस्था का विकास, यातायात का विकास, राजाओं की शांतिपूर्ण नीति, यूनानियों से मित्रतापूर्ण संबंध।

❑ व्यापार

- मौर्य काल में व्यापार जल एवं स्थल दोनों मार्ग से होता था।
- आन्तरिक एवं वैदेशिक व्यापार उन्नतावस्था में था।
- मेगस्थनीज ने एग्रोनोमई नामक मार्ग निर्माण अधिकारी का उल्लेख किया है, जो मार्गों की देखभाल करता था।
- इस समय भारत का बाह्य व्यापार रोम, सीरिया, फारस, मिस्र तथा अन्य पश्चिमी देशों के साथ होता था।
- यह व्यापार पश्चिमी भारत में भृगुकच्छ तथा पूर्वी भारत में ताम्रलिप्ति से बन्दरगाहों द्वारा किया जाता था।
- **आन्तरिक व्यापार के प्रमुख केन्द्र** - तक्षशिला, काशी, उज्जैन, कौशाम्बी, पाटलिपुत्र तथा तोसली आदि थे।
- व्यापारिक जहाजों का निर्माण इस काल का प्रमुख उद्योग था।
- **व्यापारिक मार्ग**
  - **प्रथम मार्ग**- बंगाल के ताम्रलिप्ति से पश्चिमोत्तर भारत में पुष्कलावती तक (उत्तरापथ)।
  - **दूसरा मार्ग**- पश्चिम में पाटल से पूर्व में कौशाम्बी के समीप उत्तरापथ मार्ग से मिलता था।
  - **तीसरा मार्ग**- दक्षिण में प्रतिष्ठान से उत्तर में श्रावस्ती तक
  - **चौथा मार्ग**- भृगुकच्छ से मथुरा । जिसके मार्ग में उज्जयिनी पड़ता था।
- कौटिल्य ने दक्षिण-मार्ग श्रावस्ती से प्रतिष्ठान (गोदावरी) को अधिक लाभदायक बताया है, क्योंकि दक्षिण से बहुमूल्य व्यापार की वस्तुएं जैसे मुक्ता, मणि, हीरे, सोना, शंख इत्यादि इन्हीं मार्गों से आते थे।

❑ प्रमुख बंदरगाह

- भृगुकच्छ, सोपारा (पश्चिमी तट पर), ताम्रलिप्ति (पूर्वी तट पर)।
- ताम्रलिप्ति से श्रीलंका के लिए जहाज खुलता था।
- कौटिल्य ने स्थल मार्ग की अपेक्षा जल मार्ग अधिक महत्वपूर्ण माना, क्योंकि जल मार्ग में सुरक्षा को कम खतरा था तथा यह भूमि परिवहन से सस्ता था।
- जल यात्रा में भी समुद्र की तुलना में नदियों को ज्यादा महत्व दिया। मार्ग में व्यापारियों को हुए नुकसान की क्षतिपूर्ति राज्य करता था।
- पश्चिम एशिया व मिश्र के साथ व्यापारिक संबंध थे। भारत को सीपी, गती, रंग, लकड़ी का निर्यात होता था।
- व्यापार के ऊपर राज्य का नियंत्रण था। पण्याध्यक्ष विकीका करत था। वह वस्तुओं का मूल्य निर्धारित करता था।
- देशी वस्तु पर 4 प्रतिशत तथा आयातित वस्तु पर 10 प्रतिशत कर लिया जाता था।

❑ शिल्प एवं उद्योग

- इस काल में शिल्पों का अत्यधिक विकास हुआ।
- इसके दो प्रमुख कारण थे - वाणिज्य व्यापार में वृद्धि, स्वतंत्र प्रतिस्पर्धा से बचने के लिए कारीगर और शिल्पी का अपने-अपने गिल्ड स्थापित करना।
- इस काल तक कई शिल्प आधारित जातियों का विकास हो चुका था
- तंतुवाय (जुलाहा), रजकार (धोबी), सुवर्णकार (सोनार), चर्मकार, कमर (लोहार), कुड़क (बढ़ई)।
- राज्य की ओर से विविध प्रकार की वस्तुओं को बनाने के लिए औद्योगिक केन्द्र स्थापित किए जाते थे।

❑ कपड़ा बुनना

- इस युग का प्रमुख उद्योग था। अर्थशास्त्र के अनुसार, मथुरा, अपरांत (कोकण), कलिंग, काशी, बंग, वत्स, महिष (महिष्मति) सूती वस्त्र के लिए प्रसिद्ध थे।
- धातु कर्म भी उन्नत स्थिति में था, लोग धातुओं को गलाने तथा शुद्ध करने की कला से परिचित थे।

❑ श्रेणी एवं महाजनी व्यवस्था

- उद्योग धंधों की संस्थाओं को **श्रेणी** कहा जाता था। जातक ग्रंथों में 18 प्रकार के श्रेणियों का उल्लेख है,
- **प्रमुख श्रेणी**- धातुकर्मी, बढ़ई, कुम्भकार, चर्मकार, चित्रकार, बुनकर
- श्रेणियों के अपने न्यायालय होते थे जो व्यापार व्यवसाय संबंधी झगड़ों का निपटारा करते थे।
- श्रेणी न्यायालय का प्रधान **महाश्रेष्ठी** कहलाता था।
- सरकारी अधिकारियों द्वारा श्रेणियों का पंजीकरण किया जाता था।
- इस काल में **महाजनी व्यवस्था** के भी प्रमाण मिलते हैं।
- अर्थशास्त्र के अनुसार, ब्याज की दर 15 प्रतिशत वार्षिक होती थी।
- कुछ परिस्थितियों में यह 60 प्रतिशत वार्षिक थी, इसे **व्यवहारिकी** कहा जाता था।
- यह समुद्री जहाज पर लदे हुए सामानों पर लिया जाता था, क्योंकि इसे डूबने का खतरा था।
- कौटिल्य के अनुसार, विशेष परिस्थितियों में सरकारी कोष से भी कर्ज लिया जा सकता था।

❑ मुद्रा व्यवस्था

- मौर्य काल में आहत मुद्राएँ प्रचलित थीं।
- इन पर सूर्य, पर्वत, वृक्ष, मानव, खरगोश, कुत्ता, बिच्छू, सांप आदि की आकृतियाँ ठप्पा मारकर खोदी जाती थी।
- सिक्के सोने, चांदी तथा तांबे के बनते थे।
- ये सिक्के शासकों, सौदागरों एवं निगमों द्वारा चलाए जाते थे, जिन पर इनके स्वामित्व सूचक चिन्ह लगाये जाते थे। इस काल में सोने के सिक्के का प्रचलन कम था।
- अधिकतर आहत मुद्रा चांदी की बनी होती थी। बाद में तांबे के भी सिक्के बनने लगे।
  - **चांदी का सिक्का** - कार्षापण, पण
  - **सोने का सिक्का**- सुवर्ण, पाद
  - **तांबे का सिक्का**-माषक, काकणी

- कौटिल्य ने मुख्यतः पण, माषक का उल्लेख किया। अधिकतर व्यापार चांदी के पण के माध्यम से होता था। वेतन भी इसी के माध्यम से दिया जाता था।
- अर्थशास्त्र में राजकीय टकसाल का भी उल्लेख किया गया है, जिसका अधीक्षक लक्षणाध्यक्ष था। रूपदर्शक मुद्राओं का परीक्षण करने वाला अधिकारी था।

मौर्यकालीन सामाजिक व्यवस्था

- मौर्य काल तक आते-आते वर्णाश्रम व्यवस्था को एक निश्चित आधार प्राप्त हो चुका था।
- वर्ण कठोर होकर जाति के रूप में बदल गये, जिसका आधार जन्म था।
- मेगस्थनीज ने भारतीय समाज को सात वर्गों में बांटा - **दार्शनिक, कृषक, पशुपालक, कारीगर, योद्धा, निरीक्षक और मंत्री** ।
- इसके अनुसार, कोई भी व्यक्ति न तो अपनी जाति के बाहर विवाह कर सकता था न ही उससे भिन्न पेशा अपना सकता था।
- दार्शनिक इसके अपवाद थे, वे किसी भी वर्ग के हो सकते थे।
- देश की जनसंख्या का एक बहुत बड़ा भाग कृषकों का था। इनमें बड़ी संख्या शूद्रों की थी।
- कृषकों के बाद संख्या में सबसे अधिक क्षत्रिय थे। वे केवल सैनिक कार्य करते थे।
- कृषक, कारीगर, व्यापारी सैनिक कर्तव्यों से मुक्त रहते थे।
- कारीगरों का समाज में काफी सम्मान था।

❑ दास प्रथा

- अर्थशास्त्र के अनुसार शूद्रों को कृषि, पशुपालन, वाणिज्य, शिल्प की अनुमति दी गई। उन्हें आर्य कहा गया तथा म्लेच्छों से भिन्न बताया गया है।
- कौटिल्य ने अनेक **वर्णसंकर** जातियों का उल्लेख किया।
  - अम्बष्ट, निषाद, पार्शव, उग्र, मागध, वैदेहक, सूत, कुटक, पुक्कुस, वेन, चांडाल, स्वापक आदि।
- चांडाल, स्वापक, म्लेच्छ को छोड़कर सभी को शूद्र माना गया। इन वर्गों को **अंतवसायी** कहा गया।
- मेगस्थनीज के अनुसार, दास प्रथा विद्यमान नहीं थी, किंतु बौद्ध ग्रंथ में चार प्रकार के दासों की चर्चा है।
- अर्थशास्त्र से पता चलता है कि दासों को संपत्ति रखने तथा बेचने का अधिकार था। वे खेती का काम भी करते थे।
- कौटिल्य के अनुसार, आर्य (आर्यों में शूद्र भी) कभी किसी का दास नहीं हो सकते। अधिकांशतः युद्धबंदी या म्लेच्छ लोग होते थे।
- कौटिल्य ने आठ प्रकार के दासों का उल्लेख किया है।
  - **ध्वजाहत-** युद्ध में जीता हुआ दास।
  - **उदर दास-** पेट पालने हेतु बना दास।
  - **गृह जात -** घर में दासी द्वारा उत्पन्न दास।
  - **दायागत-** पैतृक संपत्ति के रूप में प्राप्त दास।
  - **लब्ध-** दान में प्राप्त दास ।
  - **क्रीत-** खरीदा हुआ दास।
  - **आत्म विक्रयी-** स्वयं को बेच देने वाला दास।
  - **अहितक -** ऋण के बदले में धरोहर स्वरूप रखा गया दास।
  - **दंड प्रणीत-** दंड स्वरूप बनाया गया दास।

❑ स्त्रियों की दशा

- बुद्धयुग की तुलना में स्त्रियों की स्थिति कुछ सुधरी।
- इस काल में भी समाज में संयुक्त परिवार की प्रथा थी।
- इस काल में स्मृतियों में वर्णित विवाह के आठों प्रकार प्रचलित थे।

विवाह के प्रकार

विवाह	महत्वपूर्ण तथ्य
ब्रह्म	कन्या के वयस्क होने पर उसके माता-पिता द्वारा योग्य वर को खोजकर विवाह किया जाता था।
दैव	यज्ञ करने वाले पुरोहित के साथ कन्या का विवाह कर दिया जाता था।
आर्ष	कन्या के पिता द्वारा यज्ञ कार्य हेतु एक अथवा दो गाय के बदले में अपनी कन्या का विवाह किया जाता था।
प्रजापत्य	वर स्वयं कन्या के पिता से कन्या माँगकर विवाह करता था।
आसुर	कन्या के पिता द्वारा धन के बदले में कन्या का विक्रय किया जाता था।
गन्धर्व	कन्या तथा पुरुष प्रेम अथवा कामुकता के वशीभूत होकर विवाह कर लेते थे
पैशाच	सोई हुई अथवा विक्षिप्त कन्या के साथ सहवास कर विवाह किया जाता था।
राक्षस	बलपूर्वक कन्या को छीनकर या अपहरण कर, उससे विवाह किया जाता था।

- तलाक की अनुमति भी थी, किंतु यह पति-पत्नी के सम्मति के बिना संभव नहीं था। पहले चार प्रकार के विवाह में तलाक नहीं होता था। विधवा विवाह एवं नियोग की अनुमति थी।
- विवाहिता स्त्री के उपहार तथा आभूषण उसकी अपनी संपत्ति (स्त्रीधन) मानी जाती थी। पति के अत्याचार के विरुद्ध वे न्यायालय में जा सकती थी।
- अंतर्जातीय विवाह का भी प्रचलन था (अनुलोम व प्रतिलोम दोनों)।
- स्वतंत्र रूप से वेश्यावृत्ति करने वाली स्त्रियाँ **रूपाजीवा** कहलाती थीं।
- राज्य जिन गणिकाओं के प्रशिक्षण पर खर्च करता था, वे राज्य के नियंत्रण में कार्य करती थीं।
- राज्य की ओर से अनेक प्रकार के उत्सवों एवं मेलों का आयोजन किया जाता था।
- स्त्री कलाकार रंगोपजीवनी तथा पुरुष कलाकार रंगोपजीवी कहलाते थे।
- मौर्यकालीन भारतीय अच्छे वस्त्रों एवं आभूषणों के शौकीन थे।
- समाज मे विधवा विवाह प्रचलित था।
- कुछ विधवाएँ स्वतन्त्र रूप से जीवन-यापन करती थी, जिन्हे छन्दवासिनी कहा जाता था।
- अर्थशास्त्र में सती प्रथा का कोई उल्लेख नहीं मिलता, जबकि कुछ यूनानी लेखको ने उत्तर-पश्चिम में सैनिकों की स्त्रियों के सती होने का उल्लेख किया है।

❑ शिक्षा एवं साहित्य

- तक्षशिला शिक्षा का प्रधान केन्द्र था।
- **अन्य शिक्षा केंद्र** - तक्षशिला उज्जैनी तथा वाराणसी थे।
- शिक्षण संस्थाओं में शूद्रों का प्रवेश निषिद्ध था।
- मौर्यकाल में साधारण जन की भाषा **पालि** थी, जबकि शिक्षित समुदाय संस्कृत बोलते थे।
- **इस काल के महत्वपूर्ण ग्रंथ** - अर्थशास्त्र, कात्यायनी, कृत वर्तिका (अष्टध्यायी पर टीका), सुबंधु की वासवदत्ता आदि ।
- त्रिपिटक का संकलन भी इसी समय हुआ। अभिधम्म पिटक में मोग्गलिपुत्ततिस्स द्वारा कथावत्थु जोड़ा गया, जबकि भद्रबाहु ने कल्पसूत्र की रचना की

❑ मनोरंजन के साधन

- रथदौड़, घुड़दौड़, सांड़युद्ध, हस्तियुद्ध आदि।
- नट, नर्तक, गायक, वादक, मदारी, चारण, विदूषक, मनोरंजन किया करते थे।

- प्रजा विहार, समाज एवं प्रवहणों के माध्यम से मनोरंजन करती थी।
- प्रवहण एक प्रकार के सामूहिक समारोह को कहते थे।
- इसके अतिरिक्त प्रमुख मनोरंजन कलाकार थे-
  - प्लवक- रस्सी पर नाचने वाले।
  - सौमिक - मदारी।
  - कुहक - जादूगर ।
  - कुशीलक- तमाशे वाला।

❑ **भोजन**

- इस काल में गेहूँ, चावल, जौ, फल, दूध, मांस का प्रयोग किया जाता था।

धार्मिक स्थिति

- वैदिक धर्म मौर्य युग में प्रधान धर्म था। इस युग में मूर्तिपूजा का महत्वपूर्ण स्थान हो गया तथा मूर्तियाँ मंदिरों में स्थापित होने लगीं।
- वैदिक धर्म का बोलबाला समाज के उच्च वर्गों में था।
- इस काल में यज्ञ होता था, क्योंकि अर्थशास्त्र में राजप्रासाद के नजदीक बनी हुयी यज्ञशाला का उल्लेख मिलता है।
- यज्ञों के अवसर पर पशुओं की बलि भी दी जाती थी।
- ब्रह्मा, इन्द्र, यम, स्कंद (सेनापति) की मूर्तियाँ बनवाकर नगर के चारों द्वार पर स्थापित किए जाते थे।
- पतंजलि ने धन के लिए देवताओं की प्रतिमा बनाकर बेचे जाने की बात कही।
- ब्राह्मणों का एक वर्ग संन्यासियों का था, जिसे श्रमण कहा जाता था।
- इस काल में बुद्ध को देवता मानकर उनकी धातु एवं प्रतीकों की पूजा की जाने लगी।
- यूनानी लेखकों ने हेराक्लीज (कृष्ण) की पूजा का उल्लेख किया।

कला स्थापत्य

- इस काल से पहले कलात्मक वस्तुओं के निर्माण में लकड़ी, मिट्टी, ईंट तथा घास-फूस का प्रयोग होता था।
- सर्वप्रथम इसी काल में कला के क्षेत्र में पाषाण का प्रयोग किया गया।
- ईस्वी पूर्व 200 से 300 ईस्वी के बीच कला की निम्न विशेषताएं थीं।
  - कला संबंधी गतिविधियों का संबंध धर्म से था।
  - सभी धर्मों में मूर्तिपूजा का प्रचलन तेजी से बढ़ा।
  - स्तूपों, चैत्यों और विहारों के निर्माण को लोकप्रियता मिली।
  - स्तूपों को सजाने के लिए प्राकृतिक दृश्य भी अंकित किए जाते थे।
  - विदेशी संस्कृति से संपर्क के कारण कलाकृतियों में गैर भारतीय कला की भी छाप मिलती है।
- मौर्यकालीन कला को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है - **लोककला और दरबारी /राजकीय कला**

❑ **लोककला**

- जिसमें स्वतंत्र कलाकारों द्वारा लोक रुचि की वस्तुओं का निर्माण किया गया, जैसे- परखम की यक्ष-यक्षिणी प्रतिमाएँ, मिट्टी की मूर्तियाँ, दीदारगंज की चामरग्रहणी, बेसनगर की यक्षिणी, आदि।
- बुलंदीबाग तथा कुम्हरहार (पटना) की खुदाई से लकड़ी के विशाल भवनों के अवशेष मिले हैं।
- बुलंदीबाग से नगर के परकोटे के अवशेष तथा कुम्हरहार राजप्रासाद के अवशेष मिले हैं। फाह्यान ने भी आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा था कि 'इसे संसार के मनुष्य नहीं बना सकते, यह देवताओं द्वारा बनाया गया लगता है'।

❑ **दरबारी /राजकीय कला**

- **स्तंभ**
  - ये मौर्ययुगीन वास्तुकला का सबसे अच्छा उदाहरण हैं। यह बलुआ पत्थर से निर्मित हैं। जो चुनार से प्राप्त किए जाते थे। यह एकाश्म पत्थर से निर्मित हैं तथा इसके ऊपर काली लेप लगाई गई है।
  - स्तंभ के ऊपर अवांगमुखी कमल बनाया जाता था। कुछ इतिहासकार इसे उल्टा हुआ घंटा मानते हैं और इसी आधार पर इसे ईरानी कला से प्रभावित मानते हैं।
  - सारनाथ में अवांगमुखी कमल के ऊपर एक चौकी बनी है, उस चौकी पर चार पशुओं की आकृति (सिंह, अश्व, हाथी, बैल) और चार छोटे-छोटे चक्र हैं।
  - विभिन्न **स्तंभों के ऊपर के अंकित पशु-**
    - लौरिया अरेराज - गरूड़ की आकृति
    - बसाढ़ - सिंह
    - संकिसा - हाथी
    - रामपुरवा - नटुआ बैल
    - साँची, सारनाथ - एक साथ चार सिंह
    - लौरिया नंदनगढ़ - सिंह
  - सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ सारनाथ का है, जो धर्मचक्रपरिवर्तन को रेखांकित करता है।
  - सिंहों के मस्तक पर महाधर्मचक्र स्थापित था, जिसमें मूलतः 32 तीलियाँ थीं।
  - इस स्तंभ पर चार पशुओं गज, अश्व, बैल तथा सिंह की आकृतियाँ बनी हैं, जिन्हें चलती हुई अवस्था में दिखाया गया है।
  - मौर्य काल के बाद पत्थर को कलात्मक अभिव्यक्ति का आधार बनाया गया।
  - **वास्तुकला के क्षेत्र में दो प्रकार के निर्माण हुए-** आवासीय संरचना और धार्मिक स्मारक।
  - अधिकांश रिहायशी मकान लकड़ी के बने थे।
  - मिलिन्दपन्हों में खन्दक, चाहरदीवारी, प्रवेशद्वार, बुर्ज, गलियों, बाजारों, बागों और मंदिरों से युक्त एक नगर का उल्लेख है।
  - फाह्यान ने अपने वृतांत में पुरुषपुर के एक तेरह मंजिली इमारत के बुर्ज का उल्लेख किया है।
- **राजप्रासाद :-**
  - पटना के समीप कुम्रहार गांव में स्थित चंद्रगुप्त का राजप्रासाद मौर्य स्थापत्य कला का अद्भुत उदाहरण है।
  - कुम्रहार में राजप्रासाद तथा लकड़ी की दीवार के अवशेष प्रकाश में लाने का श्रेय स्पूनर को है।
  - मौर्य राजप्रासाद लगभग 700 वर्षों तक रहा। इसकी पुष्टि चौथी सदी ईस्वी में फाहियान के उल्लेख से होती है।
- **पाटलिपुत्र नगर :-**
  - मेगस्थनीज ने पाटलिपुत्र का विस्तृत वर्णन किया है। पाटलिपुत्र नगर गंगा नदी के तट पर एक समानांतर चतुर्भुज के रूप में विस्तृत था। यह 64 दरवाजों वाली लकड़ी की दीवार से घिरा था।
  - स्ट्रैबो, एरियन तथा अन्य यूनानी लेखकों की कृतियों में इसका उल्लेख मिलता है।
- **नगर निर्माण**
  - अशोक ने कश्मीर में 'श्रीनगर' तथा 'नेपाल' में 'ललित पाटन' नगरों का निर्माण करवाया।
  - कल्हण के अनुसार, अशोक द्वारा वितस्ता नदी के तट पर श्रीनगर की स्थापना की गई। उसने यहां अशोकेश्वर मंदिर का निर्माण कराया।
  - अशोक ने अपनी पुत्री चारुमती के साथ नेपाल भ्रमण के दौरान ललित पाटन की स्थापना की।
  - चारुमति द्वारा अपने पति देवपाल के नाम पर यहां देवपत्तन नगर बसाया
- **स्तूप**

- यह अर्धवृत्ताकार होता था। उसका ऊपरी हिस्सा हर्मिका कहलाता जहाँ पर बुद्ध या किसी अन्य धार्मिक व्यक्ति का अवशेष रखा जाता था।
- मध्य में लकड़ी का एक खम्भा होता था और खम्भों के ऊपर तीन छतरियाँ होती थीं जो सम्मान, श्रद्धा और उदारता का प्रतीक थीं।
- **साँची का स्तूप (रायसेन जिला म.प्र.)**
  - प्रारंभिक निर्माण अशोक द्वारा कराया गया। यहाँ तीन स्तूप हैं ।
  - महास्तूप में भगवान बुद्ध के अवशेष हैं
  - इसमें अशोक कालीन धर्म प्रचारकों के अवशेष हैं
  - इसमें बुद्ध के दो शिष्य सारिपुत्र तथा मोद्गल्यायन के अवशेष हैं
  - शुंग काल में इस स्तूप में वेदिका का निर्माण किया गया।
  - महास्तूप के दक्षिणी द्वार पर एक वक्तव्य है जिसके अनुसार यह प्रवेशद्वार राजा शातकर्णी द्वारा दान में दिया गया था।
  - इस स्तूप में बुद्ध के जन्म, बोधिसत्व की प्राप्ति, धर्मचक्र प्रवर्तन, महापरिनिर्वाण के चित्र बने हैं। आरंभिक चरणों में बुद्ध का प्रतिनिधित्व प्रतीकों के माध्यम से हुआ। बाद में बुद्ध की प्रतिमा भी बनने लगी। यहाँ जंगली जानवरों का चित्र बुद्ध के उपासक के रूप में बनाया गया है।
- **भरहुत का स्तूप (सतना जिला म.प्र.)**
  - भरहुत स्तूप का निर्माण संभवतः मौर्य राजा अशोक ने करवाया था
  - भरहुत स्तूप, मध्य प्रदेश के सतना ज़िले में स्थित एक गाँव में है.
  - यह स्तूप बौद्ध कला के अनोखे चरण का उदाहरण है.
  - इस स्तूप को पत्थर की रेलिंग से घेरा गया है.
  - रेलिंग पर जटिल राहतें बनी हैं, जिनमें जातक कथाओं और बौद्ध धर्म से जुड़े दूसरे विषयों को दिखाया गया है.
  - रेलिंग और प्रवेश द्वारों पर नक्काशी आम लोगों, भिक्षुओं, और भिक्षुणियों के योगदान को दर्शाती है.
  - भरहुत स्तूप की खोज मेजर जनरल अलेक्ज़ेंडर कनिंघम ने 1873 में की थी.
  - स्तूप से मिली कलाकृतियां कोलकाता के भारतीय संग्रहालय और प्रयागराज के संग्रहालय में रखी गई हैं.
- **अमरावती स्तूप (गुंटूर जिला आंध्र प्रदेश)**
  - यह सफेद संगमरमर से बना है, जो नगर प्रमुख व जनता के सहयोग से बनवाया गया।
  - इसका जीर्णोद्धार पुलुमावी के समय किया गया।
  - यहाँ बोधिवृक्ष, धर्मचक्र, जातक कथाओं का चित्रण है।
  - तोरण की वेदिका पर चार शेरों को अंकित किया गया है।
  - यहाँ भी बाद में बुद्ध की प्रतिमा बनने लगी।
- **नागार्जुनी स्तूप (कृष्णा नदी के तट पर)**
  - यह अमरावती के स्तूप जैसा है।
  - यहाँ का महास्तूप गोलाकार है।
  - इस स्तूप की प्रमुख विशेषता आयकों का निर्माण है।
  - आयक एक विशेष प्रकार का चबूतरा होता है।
  - इसका निर्माण इक्ष्वाकु रानियों की प्रेरणा से हुयी है।

- **चैत्य**
- बौद्ध एवं जैन दोनों पूजा-अर्चना के लिए चैत्यों व विहारों का निर्माण करते थे। यह एक प्रकार का पूजा कक्ष था, जिसके केन्द्र में एक स्तूप होता था।
- इसमें एक लंबा आयताकार कक्ष होता था, जिसका अंतिम छोर अर्धगोलाकार होता था।
- इसके अग्र भाग में घोड़े के नाल के आकार की खिड़की बनी होती थी, इसे चैत्य खिड़की कहा जाता था।
- चैत्यगृह को वस्तुतः बौद्ध धर्म का देवालय कहा जा सकता है।
- इसका आकार ईसाई गिरिजाघरों से बहुत कुछ मिलता-जुलता है।
- अधिकांश चैत्य पश्चिमी भारत में बनवाएँ गए.- भाजा, कार्ले, कोंडाने, नासिक, बेडसा, चिटाल्डो, अजंता, कन्हेरी, पीतलखोरा, जुन्नार।

- **विहार**
- चैत्य गृहों के समूह ही भिक्षुओं के रहने हेतु आवास बनाए गए, जिन्हें **विहार** कहा गया।
- **पश्चिमी भारत के प्रमुख विहार-** भाजा. बेडसा, अजंता, पीतलखोरा, नासिक, कार्ले ।
- पूर्वी भारत के प्रमुख विहार विशाल- उदयगिरि कई गुफायें, दोमंजिला रानीगुम्फा सबसे और खंडगिरि ।
- कार्ले का चैत्यगृह सबसे बड़ा और सुरक्षित दशा में है।
- इसका निर्माण करवाने का दावा वैजयन्ती का श्रेष्ठी भूतपाल करता है।
- कन्हेरी का चैत्यगृह कार्ले के ही अनुकरण पर बना है।

- **मूर्तिकला**
- मूर्तिकला के तीन केन्द्र थे- **गंधार, मथुरा व अमरावती।**
- शुगकाल में जैन धर्म में मूर्तिपूजा शुरू हो गई थी।
- लोहानीपुर (पटना) से प्राप्त सिरविहीन नग्न मूर्ति की साम्यता तीर्थंकर से की जाती है।
- हाथीगुम्फा अभिलेख से ज्ञात होता है कि पूर्वी भारत के जैनियों के बीच मौर्य काल से पहले मूर्तिपूजा शुरू हो गई थी।
- सर्वप्रथम साँची, भरहुत, बोधगया की दीवारों पर उभारदार मूर्तियाँ बनीं।
- **गांधार कला**
  - यूनानी कला के प्रभाव से देश के पश्चिमोत्तर प्रदेशों में कला की जिस नवीन शैली का उदय हुआ उसे ही गांधार शैली कहा जाता है।
  - इस शैली में भारतीय विषयों को यूनानी ढंग से व्यक्त किया गया। इस पर रोमन कला का प्रभाव भी स्पष्ट है।
  - इस शैली की मूर्तियाँ जलालाबाद, हड्डा, बामियान, बेग्राम, तक्षशिला से प्राप्त हुयी है।
  - इस कला के अंतर्गत अधिकांश चित्र बुद्ध एवं बोधिसत्वों के बनाएँ गए।
  - बोधिसत्व मूर्तियों में सबसे अधिक मूर्ति मैत्रेय की हैं, कुछ मूर्तियाँ अवलोकितेश्वर व पद्मपाणि की भी हैं।
  - मूर्तियाँ काले स्लेटी पाषाण, चुने तथा पकी मिट्टी से बनी है, जो ध्यान, पद्मासन, धर्मचक्रप्रवर्तन, वरद और अभय मुद्रा में हैं।
  - गांधार कला का सर्वोत्तम नमूना तपस्यारत बुद्ध हैं, जिसमें उपवास के कारण शरीर अत्यंत क्षीण हो गया है।
  - गांधार शैली की मूर्तियों में मानव शरीर के यथार्थ चित्रण की ओर विशेष ध्यान दिया गया है।
  - बुद्ध की वेष-भूषा यूनानी है, पैरों में जूते हैं, प्रभा मंडल सादा तथा अलंकरण रहित है और शरीर से अत्यंत सटे दिखने वाले झीने वस्त्रों का अंकन हुआ है, सिर पर घुंघराले बाल हैं, यानि कुल मिलाकर बुद्ध की मूर्तियाँ यूनानी देवता अपोलों के जैसी लगती हैं।
  - इस शैली में कुछ देवी मूर्तियाँ भी मिलती हैं - हारीति, रोमा।
  - हारीति को मातृदेवी के रूप में पूजा जाता था तथा वह सौभाग्य व धन-धान्य की अधिष्ठात्री मानी जाती थी।
- **मथुरा कला**

- इसका विकास संभवतः दूसरी शताब्दी ई.पू. में हुआ। यह लगभग चार शताब्दी तक कायम रही।
- कनिष्क, हुविष्क तथा वासुदेव के काल में इसका सर्वोत्कृष्ट विकास हुआ। इस कला में बौद्ध, जैन एवं ब्राह्मण धर्म के अनुयायियों के लिए मूर्तियाँ बनाई गयी हैं। इस कला में भी गांधार कला की तरह कुषाण काल के राजा तथा सामंतों की मूर्तियाँ बनाई गई हैं।
- मथुरा कला में मुख्यतः लाल बलुआ पत्थर का उपयोग होता था।
- **बुद्ध की प्रतिमाएँ संभवतः सबसे पहले मथुरा में बनी।**
- यह मुख्यतः दो मुद्राओं में हैं - खड़े और बैठे हुए।
- बैठी हुई मूर्तियों में कटरा (मथुरा) से प्राप्त मूर्ति उल्लेखनीय है, जिसमें बुद्ध को भिक्षु वेश धारण किए हुए दिखाया गया है।
- जैन मूर्तियाँ मथुरा स्थित कंकाली टीला से मिला है। यह दो प्रकार की हैं - खड़ी मूर्तियाँ (कायोत्सर्ग मुद्रा), बैठी हुई मूर्तियाँ (पद्मासन मुद्रा) ।
- मथुरा से शिव, लक्ष्मी, सूर्य, बलराम की भी मूर्तियाँ मिलीं।
- कुषाण काल में कार्तिकेय, विष्णु, सरस्वती, कुबेर की भी मूर्तियाँ बनीं।
- इस काल में चतुर्मुखी लिंग का निर्माण होने लगा।
- कुबेर का संबंध मदिरा या मदिरापान से दिखाया गया है।
- मथुरा से कनिष्क की एक सिर रहित मूर्ति मिली है, जिस पर **'महाराजाधिराज देवपुत्रो कनिष्को'** अंकित है। यह खड़ी मुद्रा में है, घुटने तक कोट पहने हुए है, पैरों में जूते हैं।
- सारनाथ से भी कुषाण काल की एक बोधिसत्व की विशाल मूर्ति मिली है।

○ **अमरावती कला**

- पूर्वी दक्कन में कृष्णा-गोदावरी की निचली घाटी में अमरावती कला केन्द्र का विकास हुआ।
- इसे सातवाहन, इक्ष्वाकु शासकों, अधिकारियों, व्यापारियों ने संरक्षण दिया।
- बौद्ध धर्म से प्रभावित यह कला 150 ई.पू. से 350 ई. तक फलती-फूलती रही।
- अमरावती में बुद्ध द्वारा एक मतवाले हाथी को वश में किए जाने की कथा उत्कीर्ण है।
- मूर्तियाँ उजले संगमरमर से बनाई गयी हैं।
- इस कला में भी राजा, राजकुमारों को चित्रित किया गया है,
- **प्रमुख हैं-** राजा उनके व उनके रानी की कहानी।
- मुख्य केन्द्र :- नागार्जुनकोंडा, अमरावती, गोली, घंटशाल, जागेवपाटा (आरंभिक यहीं से मिलता है)।

मौर्य साम्राज्य का योगदान

- शैलकृत स्थापत्य निर्माण का प्रारंभ हुआ।
- वलय कूपों का निर्माण सर्वप्रथम मौर्यकाल से प्रारंभ हुआ।
- इस काल में नार्दर्न ब्लैक पॉलिश्ड वेयर प्रकार के मृद्भांडों का प्रचलन बढ़ा।
- इस्पात बनाने की कला मौर्य युग में ही पल्लवित हुई।
- मौर्यों की प्रशासनिक व्यवस्था ने एक आदर्श प्रारूप प्रस्तुत किया।
- मौर्य काल में चिकित्सा के क्षेत्र में भी प्रगति दिखती है।
- उदाहरणार्थ अर्थशास्त्र में महिला चिकित्सकों एवं पोस्टमार्टम आदि का वर्णन मिलता है।

मौर्य साम्राज्य का पतन

- बृहद्रथ मौर्य वंश का अन्तिम शासक था, जिसकी हत्या उसके ब्राह्मण सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने 185 ई. पू. में कर दी थी।
- मौर्य साम्राज्य जैसे विस्तृत साम्राज्य के पतन के लिए किसी एक कारण का होना पर्याप्त नहीं है।
- स्पष्ट साक्ष्यों के अभाव में विद्वानों ने अलग-अलग मत हैं।

○ हरप्रसाद शास्त्री - धार्मिक नीति (ब्राह्मण विरोधी नीति)

○ हेमचन्द्र राय चौधरी - अहिंसक एवं शान्तिप्रिय नीति

○ डी. डी. कौशाम्बी - आर्थिक कारण

○ डी. एन. झा - कमजोर उत्तराधिकारी

○ रोमिला थापर - अत्यधिक केन्द्रीकृत शासन व्यवस्था , अधिकारी तन्त्र का अप्रशिक्षित होना।

मौर्योत्तर काल

बृहद्रथ मौर्य वंश का अन्तिम शासक था, जिसकी हत्या उसके ब्राह्मण सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने 185 ई. पू. में कर दी थी,और फिर शुरू हुआ विकेंद्रीकरण एवं विदेशी आक्रमणों के झंझावतों से जूझने का वह काल जिसे स्मिथ ने अपने सुप्रसिद्ध ग्रंथ **"अर्ली हिस्ट्री ऑफ इंडिया"** में **"भारतीय इतिहास का अंधयुग"** कहा है।

मौयर्योत्तरकालीन इतिहास के स्रोत

- साहित्यिक स्रोत
- पुरातत्विक स्रोत

❑ साहित्यिक स्रोत

- बौद्ध ग्रन्थ
  - दिव्यावदान, ललित विस्तार एवं आर्य मंजूश्री मूलकल्प
  - दिव्यावदान में पुष्यमित्र शुंग द्वारा अशोक के 84 हजार स्तूपों के तोड़े जाने का उल्लेख है।
- गार्गी संहिता
  - यह पुस्तक ज्योतिषशास्त्र से सम्बन्धित हैं
  - इसमें यवन आक्रमण का उल्लेख है।
- महाभाष्य
  - यह पतंजलि द्वारा रचित हैं
  - इस पुस्तक से पुष्यमित्र शुंग के राज्यकाल की प्रमुख घटनाओ का वर्णन है।
- हर्षचरित
  - बाणभट्ट द्वारा रचित हैं
  - इस ग्रन्थ में मौर्य शासक बृहद्रथ का उसके सेनापति पुष्यमित्र शुंग द्वारा हत्या का वर्णन मिलता है।
- मालविकाग्निमित्रम्
  - कालिदास द्वारा रचित हैं
  - इस पुस्तक का सम्बन्ध शुगकालीन घटना से है।
  - इसमें वसुमित्र द्वारा यवनों की पराजय का वर्णन है।
- नेचुरल हिस्ट्री
  - यह पुस्तक 77 ई.पू. में प्लिनी द्वारा लैटिन भाषा में लिखी गयी हैं।
  - इसमें भूमध्यसागरीय देशों से भारतीय व्यापार का वर्णन मिलता है।

❑ पुरातत्विक स्रोत

- अभिलेख
  - नानाघाट अभिलेख
    - इससे भूमिदान का पहला अभिलेखीय प्रमाण मिलता है।
    - यह अभिलेख सातवाहन शासक शातकर्णी प्रथम की पत्नी नागानिका से सम्बन्धित है।
  - बेसनगर का लेख
    - यह यवन राजदूत हेलियोडोरस से सम्बन्धित है।
    - इससे मध्य भारत में वैष्णव धर्म की स्थिति का पता चलता है।
  - अयोध्या का लेख
    - इसका सम्बन्ध पुष्यमित्र के राज्यपाल धनदेव से है
    - इसमें पुष्यमित्र शुंग द्वारा किए गए दो अश्वमेध यज्ञों का वर्णन है।
  - जूनागढ़ अभिलेख
    - इसका सम्बन्ध रुद्रदामन से है।
    - यह संस्कृत भाषा का पहला अभिलेख है।
    - यह चम्पू शैली (गद्य तथा पद्य का मिश्रण) में लिखा गया है।
- **सिक्के**
  - इस काल में सिक्को पर तिथिक्रम अंकित किया जाने लगा था।
  - शुग काल की मुद्राएँ अहिच्छत्र, अयोध्या, कौशाम्बी व मथुरा से प्राप्त हुई हैं, इनसे उस समय की ऐतिहासिक जानकारी मिलती है।

मौर्योत्तरकाल के प्रमुख राजवंश

- **मौर्योत्तर कालीन इतिहास दो भागों में विभक्त किया जा सकता है**
  - मौर्यों के पतन के पश्चात उदित छोटे- छोटे देशी राज्य।
    - **देशी राजवंश -** शुंग वंश, कण्व वंश, सातवाहन वंश, चेदि वंश,
  - विदेशी आक्रमण के फलस्वरूप स्थापित विदेशी राज्य ।
    - **विदेशी राजवंश -** हिन्द-यवन (इण्डो-ग्रीक), शक, पार्थियन, कुषाण वंश,

शुंग वंश

- **वर्ष -** 187 ई. पू. से 73 ई. पू.
- **संस्थापक -** पुष्यमित्र शुंग
- **अंतिम शासक-** देवभूति
- **कुल शासक-** 10
- **राजधानी-** पाटलिपुत्र

❑ पुष्यमित्र

- अंतिम मौर्य सम्राट बृहद्रथ का प्रधान सेनापति, जिसने उसकी हत्या कर शुंग वंश की स्थापना की।
- राजा बनने के पश्चात भी पुष्यमित्र ने 'सेनापति' की पदवी ही बनाए रखी तथा स्वयं को राजा घोषित नहीं किया। और सेनानी उपाधि का प्रयोग किया।
- पुष्यमित्र के काल को वैदिक प्रतिक्रिया अथवा वैदिक पुनर्जागरण का काल भी कहा जाता है।
- महाभाष्य, गार्गी संहिता तथा मालविकाग्निमित्रम् में शुंग काल में यवनों के आक्रमण की चर्चा है।
- मालविकाग्निमित्रम् के अनुसार वसुमित्र (अग्निमित्र का पुत्र) ने यवनों को पराजित किया।
- पुष्यमित्र का साम्राज्य उत्तर में हिमालय से दक्षिण में बरार तथा पश्चिम में पंजाब से पूर्व में मगध तक था।
- राजधानी पाटलिपुत्र ही थी, किंतु विदिशा का राजनैतिक तथा सांस्कृतिक महत्व बढ़ता जा रहा था।
- धनदेव के अयोध्या अभिलेख में पुष्यमित्र द्वारा दो अश्वमेघ यज्ञ कराने का उल्लेख है। इन यज्ञों के पुरोहित पतंजलि थे
  - इसमें पुष्यमित्र को बौद्धों का शत्रु तथा स्तूपों एवं विहारों का विनाशक तथा बौद्धों का संहारक बताया गया है।
- इसके विपरीत पुष्यमित्र शुंग को भरहुत स्तूप बनवाने का श्रेय दिया जाता है। उसने साँची स्तूप में एक रेलिंग लगवाया।
- पुष्यमित्र शुंग के काल में पतंजलि ने **'महाभाष्य'** एवं **'मनु'** ने 'मनुस्मृति' की रचना की।
- शुंग काल में ही **'महाभारत'** के **'शांतिपर्व'** और **'अश्वमेध पर्व'** का परिवर्धन हुआ।

❑ अग्निमित्र

- पुष्यमित्र शुंग के पश्चात् उसका पुत्र अग्निमित्र शासक बना, जिसने आठ वर्षों तक शासन किया।

- अग्निमित्र ने विदिशा को अपनी राजधानी बनाया था।
- पुष्यमित्र के समय ही अग्निमित्र विदिशा का गोप्ता (उपराजा) था।
- अग्निमित्र कालिदास के नाटक मालविकाग्निमित्रम् का मुख्य नायक है।
- इस नाटक में विदर्भ की राजकुमारी मालविका और अग्निमित्र के प्रेम-प्रसंग का विवरण दिया गया है।

❑ **वसुमित्र**

- इसी के नेतृत्व में शुंगों ने यवनों को पराजित किया।

❑ **भागवत (भागभद्र)**

- जिसके दरबार में तक्षशिला के राजा एंटियालकीड्स का दूत हेलियोडोरस आया, जिसने बेसनगर में गरूड़ स्तंभ बनवाया।
- इस स्तंभ पर दंभ (आत्मनिग्रह), छत्र, त्याग और अप्रमाद शब्द अंकित हैं।

❑ **देवभूति (देवभूमि)**

- अंतिम शासक, जिसकी हत्या उसके अमात्य वसुदेव कण्व ने कर दी।

कण्व वंश (75-30 ई.पू.)

- संस्थापक - वसुदेव कण्व
- अंतिम शासक - सुशर्मा
- पुराणों में कण्व वंश के राजाओं को शुंगभृत्य कहा गया है।
- यह ब्राह्मण वंश था।
- लगभग 45 वर्ष के 'कण्व शासनकाल' में चार राजाओं ने राज किया जो निम्नलिखित हैं-
- **इस वंश में कुल चार शासक हुए-** वसुदेव, भूमिमित्र, नारायण, सुशर्मा।

❑ **वसुदेव**

- यह कण्व वंश का संस्थापक था, जिसने अंतिम शुंग शासक देवभूति की हत्या कर राज्य सत्ता प्राप्त की।
- इसने 9 वर्ष शासन किया।

❑ **भूमिमित्र**

- कण्व वंश से प्राप्त कुछ सिक्कों पर भूमिमित्र उत्कीर्ण है

❑ **सुशर्मा**

- यह कण्व वंश का अंतिम शासक था।
- सातवाहन शासक सिमुक द्वारा इसकी हत्या कर दी गई।

- **Note:-**
- इस वंश के शासकों ने भी शुंगों द्वारा प्रारम्भ की गई वैदिक एवं संस्कृत संरक्षण की परम्परा को जारी रखा।
- इसके सम्बन्ध में हर्षचरित से जानकारी प्राप्त होती है।

सातवाहन

- **संस्थापक** - सिमुक (शिमुक) या 'सिंधुक'
- **राजभाषा** - प्राकृत
- **प्रमुख विशेषता** - अपने साथ मातृनामों (माताओं के नाम) का प्रयोग करते थे।
- **सातवाहन (शालिवाहन) का शाब्दिक अर्थ** - "शालि (सिंह) है वाहन जिसका"।
- पुराणों में सातवाहन वंश को 'आन्ध्रजातीय' अथवा 'आन्ध्रभृत्य कहा गया है।
- ऐतरेय ब्राह्मण में भी 'आन्ध्रजन' का उल्लेख है।

- **Note:-**
- प्लिनी के अनुसार, "आन्ध्र बहुत शक्तिशाली थे, उनके पास बहुत अधिक संख्या में गांव एवं 30 शहर थे। उनकी सेना में एक लाख पैदल सैनिक, दो हजार अश्वारोही तथा एक हजार हाथी थे।"

❑ **सिमुक (60-37 ई.पू.)**

- सिमुक ने कण्व वंश के अंतिम शासक सुशर्मा की हत्या कर इस वंश की स्थापना की।
- जैन गाथाओं के अनुसार उसने जैन तथा बौद्ध मंदिरों का निर्माण करवाया।
- इसकी राजधानी प्रतिष्ठान (पैठन) थी।

❑ **शातकर्णी प्रथम**

- शातकर्णी की उपाधि धारण करने वाला प्रथम सातवाहन शासक।
- अन्य उपाधियाँ- दक्षिणाधिपति, वेणाकटकस्वामी, एकब्राह्मण, वेदों का आश्रयदाता या अगमाननिलय।
- शातकर्णि प्रथम का नाम सांची स्तूप के एक द्वार पर भी मिलता है।
- उसका विवाह नयनिका (नागनिका) से हुआ।
- नागनिका द्वारा स्थापित कराए गए 'नानाघाट शिलालेख' या रानी के शिलालेख में उसे 'दक्षिणापथ का अधिस्वामी' तथा 'अप्रतिहत चक्र का एक चालक' बताया गया है। इसको कलिंग नरेश खारवेल के आक्रमण का भी सामना करना पड़ा।
- शातकर्णी प्रथम ने दो अश्वमेघ तथा एक राजसूय यज्ञ करवाया।
- इसकी मृत्यु के समय पुत्र अल्पवयस्क था। अतः पत्नी नयनिका ने संरक्षक के रूप में शासन किया।
- शातकर्णि प्रथम ने अश्वमेध यज्ञ के पश्चात अपनी रानी के नाम पर 'अश्व आकृति युक्त' रजत मुद्राएं उत्कीर्ण करायी थीं।
- उसकी विधवा रानी नागनिका ने विधवा होने के बावजूद वैदिक बलि यज्ञों का आयोजन किया।

❑ **गौतमीपुत्र शातकर्णी (106-130 ई.)**

- **माता** - गौतमी बलश्री,
- **इसके अभिलेख** - दो नासिक में तथा एक कार्ले में।
- इसने शक वंशी शासक नहपान व उसावदात्त को हराया। उसे शक, यवन, पहलवों को हरानेवाला तथा क्षहरातों का उन्मूलन करने वाला कहा गया है।
- इसका साम्राज्य उत्तर में मालवा, कठियावाड़ से दक्षिण में कृष्णा नदी तक, पूर्व में विदर्भ से पश्चिम में कोंकण तक था।
- नासिक प्रशस्ति के अनुसार उसका घोड़ा तीन समुद्रों का पानी पीता था।
- इस प्रशस्ति में उसे राम, केशव, अर्जुन, भीम, जन्मेजय के समान तेजस्वी बताया गया।
- गौतमीपुत्र ने नासिक जिला में वेणकटक नामक नगर बनवाया।
- उसक काल दक्षिणापथ में वैदिक धर्म/ब्राह्मण धर्म के पुनरुत्थान का काल था।
- इसके सीसे तथा पोटी के सिक्कों के अग्रभाग में हाथी तथा पृष्ठभाग पर बड़ी पत्तीयुक्त वृक्ष का अंकन हैं
- **प्रमुख उपाधियां**
  - एक-ब्राह्मण ,अद्वितीय ब्राह्मण , आगमनिलय (वेदों का आश्रयदाता) , क्षत्रिय दपमानदर्मक , वर्णव्यवस्था का रक्षक , अवियन मातु सुसाकरस (अनवरत मातृ सेवा में रत) आदि
- नासिक अभिलेख के अनुसार, गौतमीपुत्र ने बौद्ध भिक्षुओं को 'अजकालकीय' ग्राम दान के रूप में दिया, जो पहले नहपान के दामाद उसवदात (ऋषभदत्त) के नियंत्रण में था।
- गौतमीपुत्र शातकर्णि द्वारा शक विजय के उपलक्ष में 'वेणाकटक' नगर (नासिक, महाराष्ट्र) की स्थापना की गई।
- शकों से उत्तरी महाराष्ट्र, कोंकण, विदर्भ, सौराष्ट्र तथा मालवा जीत लिए।

❑ **वशिष्ठिपुत्र पुलुमावी (130-159 ई.)**

- गौतमीपुत्र का उत्तराधिकारी, यह शक शासक तथा रुद्रदामन का समकालीन था, जिससे उसका संघर्ष हुआ।

- रुद्रदामन अपने गिरनार लेख में सातवाहन को पराजित करने का दावा करता है। किंतु कन्हेरी लेख से पता चलता है कि पुलुमावी का विवाह रुद्रदामन की पुत्री से हुआ।
- **उपाधियां -** पुलुमावी को अमरावती लेख में **"दक्षिणापथेश्वर"** , पौलोमैओस (टॉलमी)
- इसी काल में अमरावती स्तूप का संवर्धन हुआ।
- इसके सीसे के सिक्कों के अग्रभाग पर चैत्य आकृति तथा पृष्ठभाग पर उज्जैनी चिन्ह अंकित है।

❑ **यज्ञश्री शातकर्णि**

- इस वंश का अंतिम महान शासक, इसके सिक्के के अग्रभाग पर दो मस्तूल वाले जहाज, का अंकन है।
- सोपारा से इसके यज्ञ नामधारी सिक्के मिले हैं।
- **सातवाहन संस्कृति का मुख्य केन्द्र-** प्रतिष्ठान, गोवर्धन, वैजयन्ती था।
- सातवाहनों के पतन के बाद महाराष्ट्र में आभीर, आंध्र में इक्ष्वाकु, कुन्तल में चुटु, विदर्भ में वाकाटक तथा दक्षिणी पूर्वी क्षेत्र में पल्लवों ने स्वतंत्र राज्य की स्थापना की।

❑ **हाल**

- इसने प्राकृत भाषा में गाथासप्तशती नामक मुक्तक काव्य की रचना की।
- बृहत्कथा के रचयिता गुणाढ्य तथा कातंत्र (संस्कृत व्याकरण) के लेखक शर्ववर्मन उसके दरबार में रहते थे।

❑ **सातवाहन प्रशासन**

- सातवाहन राज्य सामंतों में विभक्त था इनकी तीन श्रेणियां थीं-
- राजा-इसे सिक्के ढालने का अधिकार था।
- महामोज-प्रदेश (जनपद) का शासक।
- सेनापति (महारठी) - ये सातवाहनों के साथ वैवाहिक संबंधों से बंधे थेइसे प्रांत का शासनाध्यक्ष या गवर्नर बनाया जाता था।
- सातवाहनों ने ब्राह्मणों एवं बौद्ध भिक्षुओं को कर मुक्त ग्रामदान की प्रथा आरंभ की। सातवाहन अधिकारी 'अमात्य' तथा 'महामात्य' कहलाते थे।
- गौल्मिक ग्रामीण क्षेत्र का प्रशासन देखता था।
- सातवाहन काल में राजा में देवत्व सिद्ध करने का प्रयास किया गया।
- **मुद्रा -**
  - सीसा, चांदी, तांबा, कांसा तथा पोटीन
  - सातवाहनों ने सोने के सिक्के नहीं चलाए।
  - अधिकांश सिक्के सीसे के हैं।
  - सिक्का ढालने में प्रयोग किया जाने वाला सीसा रोम से लपेटी हुई पट्टियों के रूप में मंगाया जाता था।
  - सातवाहनों का प्राचीनतम मातृनाम के अंकन वाला ताम्र सिक्का नेवासा से मिला है। यहीं से उनकी सीसे की मुद्राएं भी मिलती हैं।
  - गौतमी पुत्र शातकर्णि प्रथम सातवाहन शासक था, जिसने आवक्ष प्रकार की रजत मुद्राओं का प्रचलन किया।

इक्ष्वाकु

- **संस्थापक -** श्रीशांतमूलक।
- **उपाधि -** महातलवार
- उसने अश्वमेघ यज्ञ किया।
- पुराणों में इस वंश के शासकों को **श्रीपर्वतीय** तथा **आंध्रभृत्य** कहा गया है।
- ये सातवाहनों के सामंत थे।
- इक्ष्वाकुओं का शासन **कृष्णा-गुन्टूर** क्षेत्र में था।
- इस वंश की विशेषता थी कि इक्ष्वाकु शासक ब्राह्मण धर्म के अनुयायी थे, किन्तु इनकी रानियों का झुकाव बौद्ध धर्म के प्रति था।

कलिंग का चेदि वंश

- मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद कलिंग क्षेत्र में इस वंश की स्थापना हुई।
- **संस्थापक -** महामेघवाहन
- अतः इस वंश को महामेघवाहन वंश भी कहते हैं।
- इस काल में बने उदयगिरि के रानीगुम्फा तथा खंडगिरि के अनंतगुफा में उत्कीर्ण रिलीफ चित्रकला की दृष्टि से उच्च कोटि का है।
- चेदि वंश का पातालपुर गुहालेख में चेदिवंश के शासकों महामेधवाहन, खारवेल तथा कुक्व का उल्लेख।
- सर्वाधिक शक्तिशाली राजा खारवेल था।

❑ **खारवेल**

- **स्रोत -** उदयगिरि पहाड़ी के हाथीगुम्फा (पुरी जिला) से उसका बिना तिथि का अभिलेख मिला है, जो इसका इतिहास जानने का एकमात्र स्रोत है। इसमें राज्याभिषेक के बाद तेरह वर्षों तक का वर्णन है।
- इसने अपने शासनकाल के प्रथम वर्ष में कलिंग की राजधानी का पुनर्निर्माण किया।
- दूसरे वर्ष सातवाहन नरेश शातकर्णि पर आक्रमण कर उसे ध्वस्त कर दिया।
- बरार के भोजकों और पूर्वी खानदेश तथा अहमदनगर के रठिकों पर आधिपत्य स्थापित किया।
- लगभग 300 वर्ष पूर्व नंदों द्वारा बनवाई गई नहर का विस्तार किया।
- एक लाख मुद्रा खर्च करके प्रजा को सुखी रखने के प्रयास किए।
- ग्रामीण तथा नगरीय जनता के कर माफ कर दिए।
- इसने उत्तरी भारत (मगध) पर आक्रमण। जिसमे यवनराज दिमिति मथुरा भाग गया।
- उत्तर भारत विजय के उपलक्ष्य में कलिंग के दोनों किनारों पर 'महाविजय प्रासाद' बनवाए।
- स्वर्ण पत्तियों वाले सोने के कल्पवृक्ष का दान किया।
- अपने शासन के ग्यारहवें वर्ष में इसने दक्षिण-भारत का अभियान किया।
- खारवेल का जैन धर्म की ओर भारी झुकाव था।
- **हाथीगुम्फा अभिलेख के अनुसार-**
  - खारवेल, 15 वर्ष की अवस्था में युवराज बना तथा 24 वर्ष की अवस्था में सत्ता प्राप्त की।
  - खारवेल ने कलिंग नगर का जीर्णोद्धार करवाया था।
  - इसने 'मुसिक नगर' पर आक्रमण किया।
  - खारवेल 'ने 'भारतवर्ष' पर आक्रमण किया था। अतः स्पष्ट है कि हाथीगुम्फा अभिलेख में **भारतवर्ष** का प्राचीनतम प्रमाण मिलता है।

- **Note:-**
- **उदयगिरि खंडगिरि गुफा**
- रानी का नूर या रानी गुफा यहां की विशालतम गुफा है।
- रानी गुफा में दुष्यंत-शकुंतला के चित्रों का अंकन है।
- गणेश गुफा में उदयन-वासवदत्ता एवं खंडगिरि की अनंतगुफा में श्री-लक्ष्मी की मूर्ति व चार-अश्वों के रथों पर सवार सूर्य देव की दो पत्नियों संग मूर्ति स्थित है।

हिन्द-यवन (इंडोग्रीक)

- इंडोग्रीक शासकों की वंशावली उनके सिक्कों से ज्ञात होती है। उनके सिक्कों के आधार पर पता चलता है कि कुल तीस इंडोग्रीक शासकों ने भारत पर शासन किया। इंडोग्रीक, मौर्योत्तर काल में सबसे पहले भारत आये।
- उत्तर-पश्चिम से पश्चिमी विदेशियों के आक्रमण मौर्योत्तर काल की सबसे महत्त्वपूर्ण राजनीतिक घटना थी।
- बैक्ट्रिया के ग्रीक (यूनानी), जिन्हें प्राचीन भारतीय साहित्य ने यवन कहा है।
- सर्वप्रथम यूनानी आक्रमणकारियों ने हिन्दुकुश पर्वत पार किया। इन्हें इण्डो-ग्रीक, हिन्द-यवन एवं बैक्ट्रियन ग्रीक के नाम से भी जाना जाता है।

❑ डेमेट्रियस

- हिंद-यवन के भारतीय विजय का इतिहास इसी से शुरू होता है।
- उसने सिंध तथा पंजाब के प्रदेश को जीता। और साकल (आधुनिक स्यालकोट) को अपनी राजधानी बनाया।
- डेमेट्रियस ने भारतीयों के राजा की उपाधि धारण की।
- यूनानी तथा खरोष्ठी दोनों लिपियों वाले सिक्के चलाए।
- इन प्रदेशों से उसकी ताम्र मुद्राएँ मिलीं।
- संभवतः आगे भी बढ़ा जहाँ पुष्यमित्र शुंग के पौत्र वसुमित्र द्वारा पराजित हुआ।

❑ यूक्रेटाइडीज

- इसने भी पश्चिमी पंजाब को जीता।
- यह झेलम तक बढ़ आया था।
- इस काल में पश्चिमोत्तर भारत में दो यवन राज्य स्थापित हुए।
- **यूक्रेटाइडीज के वंशज-** बैक्ट्रिया से झेलम तक, राजधानी तक्षशिला।
- **यूथीडेमस के वंशज -** झेलम से मथुरा तक, राजधानी शाकल।

❑ मिनांडर

- कुल - डेमेट्रियस
- राजधानी – शाकल
- सबसे प्रसिद्द यवन शासक था
- मिलिन्दपन्हों में शाकल का सुंदर वर्णन करते हुए कहा गया है कि साक्षात् स्वर्ग लोक ही पृथ्वी पर उतर आया है।
- इस समय शाकल भारत का प्रमुख सांस्कृतिक एवं व्यापारिक स्थल बन गया था।
- मिनांडर के सिक्कों का विस्तार गुजरात, कठियावाड़ तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश तक था।
- पेरीप्लस के अनुसार, उसके सिक्के भड़ोच में चलते थे।
- स्ट्रैबों के विवरण, महाभाष्य तथा गार्गी संहिता में यवनों द्वारा गंगा घाटी में आक्रमण का उल्लेख (रेह अभिलेख में यह आक्रमण मिनांडर का बताया गया) है।
- वह अपने विशाल साम्राज्य का शासन राज्यपालों की सहायता से चलाता था।
- बौद्ध स्रोतों में मिनांडर (मिलिंद) को बौद्ध धर्म का संरक्षक कहा गया है। उसके सिक्कों पर धर्मचक्र अंकित है।
- मिनाण्डर प्रथम इण्डोग्रीक शासक था जिसने स्वर्ण सिक्के चलवाये।
- मिलिन्दपन्हों के अनुसार, यह उच्च कोटि का विद्वान तथा विद्या और कला का प्रेमी था। उसे इतिहास, पुराण, ज्योतिष, दर्शन, तर्कशास्त्र, सांख्य, योग, गणित, संगीत, काव्य का अच्छा ज्ञान था।
- यूक्रेटाइडीज वंश के दो राजाओं के नाम मिलते हैं- एन्टियालकीड्स, हर्मियस (अंतिम शासक)।

❑ एन्टियालकीड्स

- तक्षशिला का शासक, जिसने शुंग राजा भागभद्र के दरबार में हेलियोडोरस नामक अपना राजदूत भेजा, जिसका उल्लेख बेसनगर गरूड़ स्तंभलेख में हुआ है।

❑ भारत पर यूनानी प्रभाव :-

- उत्तर-पश्चिम भारत में हेलेनिस्टिक कला का विकास है।
- यूनानी संपर्क से ही गंधार शैली का विकास हुआ।
- साँचे में ढली मुद्राओं के निर्माण की विधि भारतीयों ने यूनानियों से सीखी , मुद्राएँ सुडौल, लेखयुक्त तथा कलात्मक होने लगी।
- सिक्कों के एक ओर राजा की आकृति तथा दूसरी ओर देवता की आकृति बनने लगी।
- पूर्व मध्य काल में चांदी के सिक्के को "द्रम्म" कहा जाता था। यह यूनानी भाषा से लिया गया है।
- गार्गी संहिता के अनुसार ज्योतिष के क्षेत्र में भारत यूनान का ऋणी है।
- भारतीय ग्रंथों में पैतामह, वशिष्ठ, सूर्य, पोलिश और रोमक, ज्योतिष के पाँच सिद्धांत मिलते हैं , इसमें अंतिम दो का उदय यवन संपर्क से ही हुआ।
- सम्भवतः भारत ने यूनानी से ही कैलेन्डर प्राप्त किया।
- सप्ताह का सात दिनों में विभाजन, भविष्य बताने की कला यूनानियों से ही सीखी।
- विभिन्न ग्रहों के नाम, नक्षत्रों को देखकर यूनानी चिकित्सक हिप्पोक्रेटिज तथा भारतीय चिकित्सक चरक के सिद्धांतों में अनेक समानताएँ हैं।
- संस्कृत सुखांत नाटकों पर यूनानी प्रभाव दिखता है।
- संस्कृत नाटकों में पटाक्षेप के लिए यवनिका शब्द का प्रयोग हुआ है।
- धर्म और दर्शन के क्षेत्र में यूनान भारत का ऋणी है।
- हेलियोडोरस ने भागवत धर्म ग्रहण किया।
- तपस्या और योग की क्रियाएँ यूनानियों ने भारतीयों से सीखी।

- **Note:-**
- **हेलेनिस्टिक कला -** ग्रीक संस्कृति के प्रसार को संदर्भित करता है जो चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में सिकंदर महान की विजय के बाद शुरू हुआ था

शक

- शक **सीथियन** नाम से भी जाने जाते हैं। माना जाता है कि वे बोलन दर्रे के रास्ते भारत आये और निचले सिंधु क्षेत्र में स्थापित हो गए।
- शकों की पाँच शाखाएँ भारत में शासन करती रहीं -अफगानिस्तान, तक्षशिला, मथुरा, महाराष्ट्र, उज्जयिनी।
- भारत में शक राजा अपने आप को क्षत्रप कहते थे।

❑ तक्षशिला के शक

- शासकों में मोगा/माउस प्रमुख था। इसे प्रथम शक शासक माना जाता है।
- इसके अनेक सिक्के प्राप्त हुए हैं।

❑ महाराष्ट्र का क्षहरात वंश

- क्षहरात वंश का पहला राजा भूमक था।
- उसके सिक्कों पर ब्राह्मी तथा खरोष्ठी लिपि में लेख लिखे हैं।
- महाराष्ट्र के पश्चिमी शक शासकों में क्षहरात वंश (नासिक) का नहपान सबसे प्रसिद्ध था।
- सातवाहन शासक गौतमीपुत्र शातकर्णी से यह पराजित हुआ था।
- इसके चांदी तथा तांबे के सिक्के अजमेर से नासिक तक के क्षेत्र में मिले।
- अपने सिक्कों में अपने को राजन् कहा।
- इसके राज्य में कठियावाड़, दक्षिणी गुजरात, पश्चिमी मालवा, उत्तरी कोंकण, पूना शामिल थे।
- **पेरीप्लस के अनुसार,** नहपान के समय भड़ौंच एक प्रमुख बंदरगाह था।

❑ उज्जैन का कामर्दक वंश

- इस वंश का पहला स्वतंत्र शासक चष्टन था। इसने महाक्षत्रप की उपाधि धारण की।
- **रुद्रदामन (130-150 ई0)**
  - इसने सातवाहन वशिष्ठीपुत्र पुलुमावी को हराया। उसके साम्राज्य में मालवा, सौराष्ट्र, कच्छ, सिंधु नदी का मुहाना, कोंकण, मारवाड़ शामिल था।
  - इसका जूनागढ़ से प्राप्त अभिलेख संस्कृत भाषा का प्रथम अभिलेख है
  - लिपि - ब्राह्मी।
  - सुदर्शन झील का पुनरोद्धार- (सुविशाख द्वारा) स्वयं के कोष से कराने का तथा यज्ञश्री शातकर्णी के पुत्र पुलुमावी से अपनी पुत्री का विवाह करने का उल्लेख।
  - चन्द्रगुप्त मौर्य और अशोक दोनों का जिक्र जूनागढ़ अभिलेख से ही मिलता है।

- रुद्रदामन व्याकरण, राजनीति, संगीत एवं तर्कशास्त्र का पंडित था।

- **रुद्रसिंह तृतीय**

- पश्चिमी भारत का अंतिम शक नरेश रुद्रसिंह तृतीय था, जिसे गुप्त नरेश चंद्रगुप्त द्वितीय ने परास्त कर पश्चिमी भारत से शक सत्ता का उन्मूलन कर दिया

Note:-

- मालवा के एक राजा ने 58 ई.पू. में शकों को पराजित कर विक्रमादित्य की उपाधि ली तथा इसी उपलक्ष्य में विक्रम संवत चलाया।
- अब तक भारत में कुल 14 विक्रमादित्य नामक राजा हुए हैं।

पहलव

- ईस्वी पूर्व पहली सदी के अंत में उत्तर-पश्चिम भारत में पहलव का शासन था। इनका मूल निवास ईरान था
- संस्थापक - मिथ्रेडेटस प्रथम , जो यूक्रेटाइड्स का समकालीन था।

❑ गोंडोफर्निस

- सबसे प्रमुख शासक गोंडोफर्निस (20-41 ई.) था।
- इसका गद्देबहर तख्ते-बही अभिलेख पेशावर से मिला।
- खरोष्ठी लिपि में उत्कीर्ण इस अभिलेख में उसे गुदुवहर कहा गया है।
- फारसी में उसका नाम विन्दफर्ण है।
- ईसाई धर्म प्रचारक सेंट थॉमस इम्रायल होकर उसके दरबार में आया था।
- इसकी समाधि चेन्नई के समीप है।
- इसके काल में चांदी के सिक्के की कमी हो गयी थी।
- सिरकप (तक्षशिला) की खुदाई से पहलवों के अनेक सिक्के मिले हैं।
- उपाधि - देवव्रत एवं बासिलेओस बासिलेओन (राजाधिराज) थी।
- उसके शासन काल के 'तख्त-ए-बाही' अभिलेख (जिला- पेशावर-वर्तमान पाकिस्तान) में 103 तिथि अंकित मिली है।
- गोण्डोफर्नीज की राजधानी तक्षशिला थी।
- ईसाई अनुश्रुति में उसे 'संपूर्ण भारत का राजा' तथा ईसाई धर्मानुयायी कहा गया है।
- गोण्डोफर्नीज के सिक्के बेग्राम (अफगानिस्तान) में मिले हैं।
- गोण्डो फर्नीज द्वारा मिश्रधातु की मुद्राएं चलाई गयी जिन पर अश्वारोही के रूप में उसका अंकन किया गया।
- इस साम्राज्य का अंत कुषाणों द्वारा हुआ।

कुषाण

- **संस्थापक** – कुजुल कडफिसस
- ये मूलतः मध्य एशिया के स्टेपीज के रहने वाले थे।
- इन्हें तोचारियन के नाम से भी जाना जाता था।
- इनका साम्राज्य पश्चिमी एशिया, चीन, भारत, मध्य एशिया, भूमध्यसागरीय सभ्यताओं का मिलन स्थल बना।
- भारत में सबसे अधिक (व्यापक रूप में) सोने के सिक्के चलाने का श्रेय कुषाणों को है। ये विदेशी शासकों में सर्वाधिक प्रसिद्ध थे।
- प्राचीन भारत में कुषाणो ने नियमित रूप से सोने के सिक्के चलाए।
- कुषाण शासकों ने महाराजाधिराज (भारतीय उपाधि), देवपुत्र (चीनी उपाधि), केसर (रोमन उपाधि) जैसी उपाधियाँ धारण कीं।
- कुषाण शासकों ने मन्दिर बनवाने की प्रथा (देवकुल) भी प्रारम्भ की।

❑ कुजुल कडफिसस

- भारत में कुषाण वंश की स्थापना कुजुल कडफिसस ने की थी।
- चीनी इतिहासकारों के अनुसार यू-ची कबीला के कुजुल कडफिसस ने पाँच विभिन्न कबायली संप्रदायों को संगठित किया।
- उसने काबुल, काश्मीर में अपने राज्य की स्थापना की।
- उसने रोमन सिक्कों की नकल करके ताँबे के सिक्के ढलवाए तथा महाराजाधिराज की उपाधि धारण की।
- कडफिसस प्रथम के प्रारम्भिक सिक्कों के मुख्य भागों पर यूनानी राजा हर्मियस की आकृति और पृष्ठ भाग पर उसकी अपनी आकृति है।
- इसका अर्थ यह हुआ कि वह पहले यूनानी राजा हर्मियस के अधीन था।
- कुजुल कडफिसस की मृत्यु के बाद विम कडफिसस कुषाण शासक बना।

❑ विम कडफिसस

- इसने तक्षशिला, पंजाब पर अधिकार किया।
- इसके आद्य सिक्के तांबे के बने हैं , भारतीय इतिहास में सर्वाधिक ताम्र सिक्के कुषाणों ने जारी किए।
- विम कडफिसेस की मूल इकाई दीनार है, जो संकेतित करता है कि यह रोमन प्रभाव लेकर आया होगा।
- यह अंतिम शासक था, जिसने द्विभाषीय सिक्के चलाये- ग्रीक एवं खरोष्ठी (प्राकृत)।
- इसे भारत में कुषाण शक्ति का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।
- भारत में सर्वप्रथम स्वर्ण सिक्के चलाने का श्रेय विम कडफिसेस को ही दिया जाता है। इसने ताँबे के सिक्के भी चलाए।
- वह शैव मत का अनुयायी था। उसके कुछ सिक्कों पर शिव, नन्दी तथा त्रिशूल की आकृतियाँ मिलती हैं।
- विम कडफिसस ने अपने शासनकाल के दौरान विभिन्न उपाधियाँ; जैसे- राजाधिराज, महेश्वर तथा सर्वलोकेश्वर इत्यादि
- **इसके सिक्कों पर अंकन :-** अग्रभाग पर वज्र एवं गदाधारी राजा, जिसके कंधों से अग्नि की लपटें निकल रही हैं, इसके पृष्ठभाग पर त्रिशूलधारी शिव नंदी के साथ।

❑ कनिष्क

- 78 ई. में गद्दी पर बैठा तथा इस उपलक्ष्य में शक संवत् चलाया। उसका काल उत्तर भारत में सांस्कृतिक उन्नति तथा विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों से संबंध रखनेवाले लोगों के समन्वय का युग था।
- कनिष्क ने विशाल साम्राज्य बनाया, जो ऑक्सस से गंगा तक तथा बैक्ट्रिया से बनारस तक फैला था। उसके साम्राज्य में रूस व ईरान का एक भाग, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, भारत का बड़ा भाग शामिल था।
- मगध भी उसके शासन में था, जहाँ से वह अश्वघोष को पुरुषपुर ले गया था। कनिष्क ने कश्मीर को जीतकर कनिष्कपुर नगर बसाया।
- कनिष्क ने मध्य एशिया में काशगर, यारकंद, खोतान को भी जीता। सिल्कमार्ग की तीनों मुख्य शाखाओं पर कुषाणों का नियंत्रण था, **ये हैं-**
  - कैस्पियन सागर से होकर जानेवाला मार्ग
  - मर्व से फरात नदी होते हुए रूमसागर बंदरगाह का मार्ग
  - भारत से लाल सागर तक जाने वाला मार्ग
- कनिष्क महायान शाखा का संरक्षक था। पार्श्व के कहने पर चौथी बौद्ध संगीति का आयोजन करवाया। जिसका प्रधान वसुमित्र था।
- पेशावर के निकट कनिष्क ने एक बड़ा स्तूप और मठ बनवाया।
- कनिष्क के राजसभा में पार्श्व, वसुमित्र, अश्वघोष, नागार्जुन, चरक जैसे विद्वान रहते थे।
- कनिष्क की मुद्राओं पर भारतीय, यूनानी, ईरानी तथा पर्सियन देवताओं के नाम मिलते हैं।

- **कनिष्क के सिक्कों पर आकृति -** अग्रभाग पर हवनकुण्ड में आहुति देता राजा, पृष्ठभाग पर देवता का अंकन।
- उसके तांबे के सिक्कों में उसे एक वेदी पर बलिदान करते दिखाया गया है।
- सोने के सिक्के पर एक ओर उसकी तो दूसरी ओर देवी-देवताओं की आकृति बनी हुई है।
- मथुरा में सैनिक पोशाक पहने कनिष्क की एक मूर्ति मिली है।
- कनिष्क के उत्तराधिकारियों ने लगभग एक सदी तक शासन किया।
- कनिष्क ने रोमन सम्राट की तरह केसर या सीजर की उपाधि धारण की और शकों की तरह क्षत्रप शासन व्यवस्था लागू की।
- बोगरा (महास्थान) में पाई गई सोने की मुद्रा पर कनिष्क की एक खड़ी मूर्ति अंकित है। मथुरा में कनिष्क की एक प्रतिमा मिली है, जिसमें उन्हें घुटने तथा चोगा एवं पैरों में भारी जूते पहने हुए दिखाया गया है। इसके द्वारा जारी ताँबे के सिक्के पर बलि का दृश्य अंकित है।
- कनिष्क, कला एवं संस्कृति साहित्य का महान संरक्षक था। इसके समय में मूर्तिकला की गान्धार एवं मथुरा शैली का विकास हुआ।
- कनिष्क के समय कश्मीर के कुण्डलवन में चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन हुआ, जिसमें बौद्ध धर्म हीनयान एवं महायान में विभाजित हो गया। इस बौद्ध संगीति के अध्यक्ष वसुमित्र तथा उपाध्यक्ष अश्वघोष थे।

- **Note:-**
- **कनिष्क का रबतक अभिलेख**
- 1993 में अफगानिस्तान के बगलान प्रान्त में सुर्ख कोतल के पास स्थित रबातक नामक पुरास्थल से खोजा गया था।
- इसमें कनिष्क के साम्राज्य विस्तार के संबंध में महत्त्वपूर्ण सूचना प्राप्त होती है।
- इस अभिलेख के अनुसार साकेत, कौशाम्बी, चंपा और पाटलिपुत्र कनिष्क के साम्राज्य के हिस्से थे।

❑ **हुविष्क**

- कनिष्क का उत्तराधिकारी उसका पुत्र बासिष्क हुआ, तत्पश्चात् हुविष्क शासक बना।
- हुविष्क ने कश्मीर में हुविष्कपुर नामक नगर की स्थापना करवाई, जिसका उल्लेख राजतरंगिणी में है। उसके सिक्कों पर शिव, स्कन्द तथा विष्णु की आकृतियाँ उत्कीर्ण हैं।
- हुविष्क को सम्भवतः रूद्रदामन ने पराजित किया तथा मालवा शकों के अधीन हो गया।

❑ **वसुदेव प्रथम**

- विष्णु एवं शिव का उपासक था।
- यह पहला शासक था, जिसने पूर्णतया भारतीय नाम ग्रहण किया।
- इसके दो उत्तराधिकारी हुए- कनिष्क तृतीय व वासुदेव द्वितीय।
- सासानियन वंश तथा नाग भारशिव वंश ने कुषाणों के पतन में योगदान दिया।

❑ **मध्य एशिया तथा उत्तर भारत के संपर्क का महत्व**

- इस काल में मध्य एशिया व भारत के बीच स्थायी रूप से व्यापारिक संबंध बने।
- व्यापार को बौद्ध प्रचारकों ने भी बढ़ावा दिया।
- भारत को मध्य एशिया के अस्थायी पर्वत से काफी सोना प्राप्त हुआ।
- कुषाणों ने भारत में घोड़े की लगाम और जीन को प्रचलित किया।
- मध्य एशिया से ही टोपी, हेलमेट, बूट भारत आया।
- इस काल में छत तथा फर्श दोनों के लिए पकी ईंट का प्रयोग होने लगा।
- कुँआ भी ईंट के बनते थे। शक, कुषाणों दोनों ने राजत्व का ईश्वर से सीधा संबंध बताया।
- संभवतः चीन के प्रभाव से कुषाण राजा ईश्वर के पुत्र कहे जाते थे।
- इस काल में युगल शासकों की प्रथा तथा सैनिक गवर्नर नियुक्त करने की भी प्रथा शुरू हुई।

मौर्योत्तरयुगीन राज्य व्यवस्था एवं प्रशासन

- इस काल में विकेन्द्रीकरण की प्रवृति पर नियंत्रण के लिए राजतंत्र में देवी तत्वों का समागम किया गया। अब राजा की तुलना देवता से होने लगी।
- कुषाणों ने चीनी शासकों के अनुरूप देवपुत्र की उपाधि धारण की।
- रोमन शासकों के अनुरूप मृत राजाओं की स्मृति में मंदिर एवं मूर्तियाँ स्थापित की।
- इसी काल में मंदिर बनवाने की देवकुल प्रथा शुरू हुई।
- मनु भी राजपद को देवी मानते थे, उनके अनुसार राजा चाहे बालक ही क्यों न हो वह श्रेष्ठ है, क्योंकि वह पृथ्वी पर आया हुआ एक देवता है।
- सातवाहनों ने भी राजपद का देवीकरण किया।
- गौतमीपुत्र शातकर्णी की तुलना कृष्ण, राम, भीम, अर्जुन से की गई है। इस वंश के राजाओं के नाम मातृप्रधान थे।
- शक शासकों ने भी व्रतार (मुक्तिदाता) तथा राजाधिराज की उपाधि धारण की।

❑ **प्रशासन-**

- सातवाहन राजाओं ने मौर्य नरेशों के आदर्श पर अपने प्रशासन का संगठन किया।
- इस काल की दो रानियाँ नागनिका तथा गौतमीवलश्री ने प्रशासन में सक्रिय रूप से भाग लिया।
- स्थानीय शासन अधिकांशतः सामंतों द्वारा चलाया जाता था।
- कार्ले, कनहेरी लेखों में इन्हें महारठी तथा महाभोज कहा गया है।
- इनका पद आनुवंशिक होता था।
- **प्रमुख नगर**-भारूकच्छ, सोपारा, कल्याण, पैठन, गोवर्धन, धन्यकटक आदि।
- जनजातीय क्षेत्रों में शासन करने के लिए गौल्मिक नामक अधिकारी था।
- सातवाहनों ने ब्राह्मणों, श्रमणों को भूमिदान देने की प्रथा आरंभ की।
- यह भूमि सभी प्रकार करों से मुक्त थी।
- गौतमीपुत्र के अभिलेख में भूमि का प्रशासकीय नियंत्रण भी दानग्रहीता को दिए जाने का उल्लेख है।
- कुषाणों ने पाहि तथा पाहानुषाहि जैसी उपाधियाँ धारण की। यानि, प्रशासन में सामंतीकरण की प्रक्रिया की शुरुआत शक, कृषाण काल से ही थी।
- प्रशासन की सुविधा के लिए साम्राज्य अनेक क्षत्रपियों में विभाजित किया गया। कभी-कभी एक ही प्रदेश पर दो क्षत्रप एक साथ शासन करते थे, यानि कृषाणों ने प्रांतों में द्वैध शासन चलाया।
- कुषाण लेखों में पहली बार दंडनायक, महादंडनायक जैसे पदाधिकारियों का उल्लेख मिलता है।
- इंडो-ग्रीक के समय किसी क्षेत्र विशेष में शासन के लिए मेरीदर्ख नामक अधिकारी नियुक्त किए गए।
- इंडो-ग्रीक ने प्रशासन की क्षत्रप प्रणाली प्रारंभ की जो हखमनी राजवंश से प्रभावित थी।
- यवनों द्वारा सैनिक गवर्नर नियुक्त करने की प्रथा शुरू की गई, जिन्हें सत्रातेगो कहा जाता था।

मौर्योत्तर अर्थव्यवस्था

❑ **कृषि**

- **मनु ने लिखा-** खेत का स्वामी वह व्यक्ति होता है, जिसने जंगल साफ करके भूमि को आबाद किया।
- मनुस्मृति के अनुसार भूमि के नीचे दबे खजाने व खानों से प्राप्त वस्तुओं में राजा का आधा भाग होता है, जबकि विष्णु के अनुसार नीचे दबी सभी वस्तुओं का स्वामी राजा होता है।

- भूमिदान के अभिलेखीय प्रमाण सर्वप्रथम इसी काल में मिले हैं।
- **फसलें प्रमुख फसल हैं :-** धान, गेहूँ, दाल, साग, ईख, कपास, सन, अलसी, सेब, नारंगी, बेर।
- **सिंचाई -** इस काल में सिंचाई के विकास पर भी ध्यान दिया गया। खारवेल ने कलिंग नहर का विकास किया। शक शासक रुद्रदामन ने सुदर्शन झील की मरम्मत करवाई।
- गाथासप्तशती से ज्ञात होता है कि संभवतः सबसे पहले सिंचाई के लिए रहट का प्रयोग इसी काल में हुआ ।

❑ **शिल्प एवं उद्योग**

- इस काल में शिल्पियों का विशेषीकरण हुआ। मिलिन्दपन्हों में 75 प्रकार के व्यवसायों की चर्चा हुई है जिनमें 60 विभिन्न प्रकार के शिल्पों से जुड़े थे।
- **धातुकर्म -** ईसा की प्रारंभिक शताब्दियों में भारतीय लोहे से इस्पात बनाना जानते थे। पेरीप्लस के अनुसार, भारत में निर्मित लोहा इस्पात की वस्तुएँ कठियावाड़ के रास्ते अफ्रीका को भेजी जाती थी। मगध में लोहा काफी होता था।
- स्ट्रेबो तथा पेरीप्लस ताँबे का उल्लेख करते हैं। यह राजस्थान की खानों से निकाला जाता था तथा भड़ौच के रास्ते विदेश भेजा जाता था।
- इस काल का विशिष्ट मृद्भांड लाल चित्रित मृद्भांड है, जिसकी प्रशंसा मार्शल ने की है।
- **प्रमुख व्यवसाय :-** कपड़ा बुनाई, रेशम कताई, अस्त्रों का निर्माण, विलासिता की वस्तुओं का निर्माण।
- महाभाष्य के अनुसार, मथुरा में शाटक नामक विशेष वस्त्र बनता था। बनारस भी सूती वस्त्र के लिए प्रसिद्ध था।
- मगध वृक्षों के रेशों से बने वस्त्र के लिए प्रसिद्ध था। बंगाल मलमल के लिए प्रसिद्ध था, जहाँ इसे गंगई कहते थे। मसलिया और उरैयुर भी वस्त्र उद्योग के लिए प्रसिद्ध था।
- मिलिन्दपन्हों के अनुसार, गंगा बेसिन, वाराणसी, कोयम्बटूर, अपरांत में विभिन्न प्रकार के सूती वस्त्र बनाये जाते थे।
- **रेशम इसके लिए अनेक शब्दों का प्रयोग हुआ है :-** पत्रोर्ण, चीनपट्ट, चीनांशुक, कीटज, पट्टांशुक, चीनकौशेय।
- भारत और चीन का रेशम प्रारंभिक शताब्दियों में रोम ले जाया जाता था। दक्षिणी भारत में रंगरेजी एक महत्वपूर्ण व्यवसाय था।
- उरैयुर, अरिकामेडु से एक रंगाई का हौज प्राप्त हुआ है।
- हिमालय क्षेत्र में केसर तथा कस्तूरी का उत्पादन होता था। पंजाब में स्थित नमक की पहाड़ी से नमक मिलता था।
- दक्षिण भारत में मसाला, सोना, रत्न, चंदन की लकड़ी मिलती थी।
- **रत्न -** कश्मीर, कोसल, विदर्भ, कलिंग हीरे के लिए विख्यात था। सोना छोटानागपुर एवं असोम क्षेत्र में नदी के रेत से प्राप्त किया जाता था।
- **प्लिनी के अनुसार,** मोती निकालने का शिल्प उन्नत अवस्था में था। पेरीप्लस के अनुसार, मोती कोलची (कोरकई क्षेत्र) से प्राप्त होता था।
- प्लिनी ने भारत को रत्नों की एकमात्र जननी तथा सबसे महंगी वस्तुओं की जन्मदात्री कहा।
- **पेरीप्लस के अनुसार** गोमेद, कार्नेलियन दक्कन के पहाड़ों से जबकि पूर्वी मालवा से एक विशेष प्रकार का हाथी दांत प्राप्त किया जाता था।
- उज्जैन मनका बनाने का एक प्रमुख केन्द्र था। मनका मुख्यतः कीमती पत्थर, कांच, हाथी दांत तथा मिट्टी के बनाये जाते थे।
- श्रेणीसंघ एवं निगम वर्ण व्यवस्था में ढिलाई के फलस्वरूप अन्य वर्णों ने भी वाणिज्य व्यापार को अपना लिया।
- अन्य वर्णों की प्रतिस्पर्धा से बचने हेतु वैश्यों ने नए संघटनों को जन्म दिया, जो श्रेणी, निगम, पूग, सार्थ कहलाया।
- **श्रेष्ठी -** वित्त से संबंधित। वित्तीय व्यवस्था इन्हीं के हाथों में थी, वे संयुक्त उद्यम कंपनी के रूप में कार्य करते थे।
- **श्रेणी-** इसमें सभी प्रकार के गिल्ड आते थे।
- **निगम-** व्यापारियों का संघ ।
- **पूग-** किसी विशेष क्षेत्र के विभिन्न व्यापारियों, शिल्पियों, व्यवसायियों के हितों का संरक्षक।
- **सार्थ-** यह गिल्ड पारगमन से जुड़ा था, इसका प्रमुख सार्थवाह कहलाता था।
- प्रत्येक व्यावसायिक संघ की अलग-अलग श्रेणी होती थी, जिसका प्रधान श्रेष्ठिन कहलाता था । श्रेणियों के अपने अलग व्यापारिक नियम होते थे, जिन्हें श्रेणीधर्म कहा जाता था। इन्हें राज्य की ओर से मान्यता प्राप्त थी। इन्हें अपने सदस्यों के निमित्त विधि बनाने का अधिकार था। संघप्रमुख को दोषी सदस्यों को दंडित करने का भी अधिकार था। श्रेणी बैंकों का भी काम करती थी।
- महाजनी व्यवस्था प्रारंभिक धर्मसूत्रों में ब्याज की चर्चा मिलती है। गौतम, मनु दोनों ने धन कमाने के सात प्रकारों में ऋण देकर ब्याज लेने को एक साधन बताया है।
- **मनु के अनुसार,** अपातकाल में सभी वर्गों के लोग यह धंधा कर सकते है। लेकिन समान्य स्थिति में ब्राह्मण, क्षत्रिय नहीं। ऋण दो प्रकार के थे।
- मनु के अनुसार, मूलधन और ब्याज मिलकर कभी दूना से अधिक नहीं होना चाहिए।
- गौतम के अनुसार, जिस ऋण की समय सीमा न हो उसे उत्तराधिकारियों को चुकाना चाहिए।
- पति पत्नी के ऋण के लिए उत्तरदायी था, किंतु पत्नी पति के ऋण के लिए नहीं। प्रारंभ में ब्याज पर ऋण देना प्रतिबंधित नहीं था, किंतु बाद के धर्मशास्त्र में इसे निषिद्ध किया गया। क्योंकि ब्याज की दरें अत्यधिक हो गई थीं।

❑ **वाणिज्य व्यापार**

- इस काल में वाणिज्य व्यापार का पर्याप्त विकास हुआ। **इसके कई कारण थे-**
- अतिरिक्त मात्रा में कृषि उत्पादन
- नये धर्मों का उदय
- शहरी केन्द्र के विकास से नये उपभोक्ता वर्ग का उदय
- विदेशों में भारतीय माल की मांग
- पहली बार शासकों ने अपने सिक्के चलाए, इससे भी व्यापार को बढ़ावा मिला।
- **प्रमुख व्यापारिक मार्ग :-** अधिकांश व्यापारिक मार्ग का विकास मौर्य काल में ही हो चुका था। उत्तरापथ सर्वप्रमुख मार्ग था। इसके अतिरिक्त उत्तर का प्रमुख मार्ग वैशाली, श्रावस्ती होता हुआ नेपाल तक, मथुरा से सिंध की ओर (घोड़े का व्यापार इसी मार्ग से)।
- दक्षिण का प्रमुख मार्ग दक्षिणापथ कहलाता था, जो कई भागों में विभाजित था - अवन्ति से अमरावती तक, प्रतिष्ठान से नासिक तक, भृगुकच्छ से सोपारा, कल्याण तक तथा मुसिरी से पुहार तक। आंतरिक व्यापार के लिए एक अन्य मार्ग प्रसिद्ध था जो तक्षशिला को निम्न सिंधु घाटी से जोड़ता था।
- **बाह्य मार्ग :-** बैक्ट्रिया से एक मार्ग कपिशा, काबुल घाटी होकर तक्षशिला तक था।
- यह मार्ग बैक्ट्रिया से आगे कैस्पियन सागर होता हुआ काला सागर तक जाता था।
- बैक्ट्रिया मध्य एशिया व चीन के साथ व्यापार का मुख्य केन्द्र था। दूसरा मार्ग कंधार, हेरात होकर ईरान जाता था।

- इस प्रकार इसी काल में सिल्क मार्ग पर भारतीय व्यापारियों ने मध्यस्थ के रूप में भाग लेना प्रारंभ किया। यह सिल्क मार्ग चीन, मध्य एशिया, अफगानिस्तान, ईरान से पश्चिम एशिया तक जाता था।
- ईसा की पहली सदी में हिप्पॉलुस नामक ग्रीक नाविक ने अरब सागर में चलने वाली मॉनसूनी हवा की खोज की। इसके परिणामस्वरूप सागर मार्ग से अधिक व्यापार होने लगा।
- **मुख्य व्यापारिक स्थल एवं बंदरगाह :-**
- **पश्चिमी तट के बंदरगाह -** बारबैरिकम (सिंधु के मुहाने पर), पत्तल, रोरूक, भृगुकच्छ (सबसे प्रमुख बंदरगाह), सोपारा, कल्याण, चौल, पारिपत्तन, वैजयन्ती (बिंजाड्रोक), टिण्डिस, मुजिरिस।
- **पूर्वी तट के बंदरगाह -** कोरकोई (मोती के लिए प्रसिद्ध), चमर (कावेरीपट्टनम), पोडुका (अरिकामेडु), मौसलिया (मसुलीपट्टनम), कंटक्लेश (घंटशाल), पलूरो (दंतपुर, उड़ीसा, जहाँ हाथी दांत का निर्यात होता था), तामलुक (ताम्रलिप्ति, पूर्वी तट का सबसे महत्वपूर्ण बंदरगाह), गंग (गंगा सागर)।
- **रोमन व्यापार के प्रमुख केन्द्र थे-** अरिकामेडु, मुजिरिस, पुहार ।
- सातवाहन काल में प्रतिष्ठान, तगर, जुन्नार, नासिक, धान्यकटक व्यापार के आंतरिक केन्द्र थे।
- **व्यापार की वस्तुएँ :-** पेरीप्लस प्रथम सदी ईस्वी पूर्व की यूनानी कृति है, जिसमें समकालीन व्यापार का विस्तृत विवरण है। उस काल में भारत का व्यापार रोम, चीन वर्मा, थाईलैंड, इंडोनेशिया आदि देशों के साथ किया जाता था।
- **भारत-रोम व्यापार :-** रोम मुख्यतः विलासिता की वस्तुओं का आयात करता था - मसाला। (कालीमिर्च को यवनप्रिय कहा जाता था), रेशमी वस्त्र, मलमल, लोहा, बर्तन, मोती, हाथी दांत, कीमती पत्थर आदि। जबकि रोम से मदिरा, तांबा, रांगा, सीसा, औषधि आदि वस्तुएँ भारत आती। थीं। सबसे अधिक रोम से भारत को सोना का बुलियन प्राप्त होता था।
- भारत चीन से कच्चा रेशम, रेशमी वस्त्र, रेशम के धागे, मंगाकर रोम भेजता था। पार्थियन तथा रोमन साम्राज्य के बीच संघर्ष के कारण चीनी सिल्क का व्यापार भारत के रास्ते होता था।
- **पेरीप्लस और टॉलेमी के अनुसार,** भारत से रोम को तोता, शेर, चीता, लंगूर, बंदर भी भेजा जाता। था।
- रोमन वस्तुएँ अरिकामेडु, मुजिरिस, तामलुक से मिले हैं। दक्षिण भारत में रोमनों से संबंधित ऐरेटोइन मृद्भांड मिले हैं।
- तक्षशिला से रोमन कांस्य मूर्तियों के नमूने मिले हैं। यहाँ से रोमन सम्राट टिवेरियस के सिक्के भी मिले हैं।
- 1945 में अरिकमेड़ की खुदाई से रोमन बस्ती का प्रमाण मिला है।
- रोम के साथ व्यापार का संतुलन भारत के पक्ष में था। रोम से मुख्यतः स्वर्ण मुद्राएँ प्राप्त होती थीं, जो अधिकांशतः रोमन शासक ऑगस्टस, टिबेरियस के काल के हैं।
- **प्लिनी के अनुसार,** रोम से भारत को प्रतिवर्ष 10 करोड़ सेस्टर्स प्राप्त होता था। इस स्थिति पर प्लिनी ने दुःख प्रकट किया है। शहरी केन्द्र इस काल में शहरी केन्द्र की संख्या में वृद्धि हुई।
- **सातवाहनों के नगर -** पैठन, तगर, जुन्नार, करहाटक, नासिक, वैजयन्ती, धान्यकटक, विजयपुर।
- **कुषाणों के नगर -** वैशाली, पाटलिपुत्र, वाराणसी, कौशाम्बी, श्रावस्ती, हस्तिनापुर, इन्द्रप्रस्थ,तक्षशिला।
- **शकों के नगर-** शाकल, मथुरा और उज्जैन।
- **वाट, माप, विनिमय- प्रमुख वाट (बढ़ते क्रम में) -** प्रस्थ-आढ़क-द्रोण-खारी। खारी और द्रोण अनाज का माप था।

❑ **मुद्रा**

- वैदेशिक आक्रमण के साथ ही मुद्रा की ढलाई होने लगी। उसका एक विशेष रूपाकार निर्धारित कर दिया गया। अब सिक्कों पर आलेख, राजा का नाम एवं उसके अभीष्ट देव की तस्वीर बनने लगी।
- इंडो-ग्रीकों के सिक्के इन्होंने अधिकतर चांदी व ताम्र के सिक्के चलाए, स्वर्ण के सिक्के भी ढाले गए, किंतु ये बैक्ट्रिया तक ही रहे।
- भारत में ऐसे स्वर्ण सिक्के नहीं मिले, जिस पर कोई नाम अंकित हो, किंतु उन सिक्कों पर अंकित चिन्ह इसका संबंध मिनांडर से जोड़ते हैं। इसी आधार पर कहा जा सकता है कि इंडो-ग्रीक ही भारत में स्वर्ण सिक्का चलाने वाले प्रथम शासक थे।
- इंडो-ग्रीक के भारतीय क्षेत्र में मिले सिक्कों पर प्राप्त लेखों में ग्रीक के साथ खरोष्ठी का भी उपयोग किया गया है।
- **कुषाणों के सिक्के :-** कुजुल कडफिसस ने ताम्र सिक्के का प्रचलन करवाया। इसके सिक्कों पर हर्मियस का अंकन है।
- विम कडफिसस ने पहली बार निर्विवाद रूप से भारत में बड़ी मात्रा में स्वर्ण सिक्के चलाए। इनमें अधिकांश पर शिव, नंदी एवं त्रिशूल का अंकन है। विम कडफिसस अंतिम शासक था, जिसके सिक्के पर ग्रीक एवं खरोष्ठी द्विभाषीय आलेख अंकित है।
- कनिष्क के सिक्कों पर बुद्ध, शाक्यमुनि, महासेन, स्कंद, कुमार, विशाख, उमा, भवेश, वरुण, मित्रा, हेलियोस, शेलेन, हेराक्लीज देवताओं के चित्र मिले हैं। कुषाणों ने सबसे ज्यादा तांबे के सिक्के चलवाये।
- कुषाणों के अधिकतर सिक्के एक दीनार, दो दीनार और चौथाई दीनार के मिले हैं।
- **सातवाहनों के सिक्के :-** सबसे ज्यादा सिक्के इन्हीं के काल में पाये गए। इनके सिक्कों का भंडार जोगलथंबी में पाया गया है।
- सातवाहनों ने सोना, चांदी, तांबा, पोटीन, रांगा, सीसे के सिक्के चलवाये। सातवाहनों का सिक्का कार्षापण, सोना, चांदी, तांबा, सीसा चारों धातुओं का बना होता था।

मौर्योत्तर सामाजिक जीवन

❑ **वर्णाश्रम –**

- इस काल में भी समाज वर्णाश्रम धर्म पर आधारित था।
- **ब्राह्मण**
  - ब्राह्मणों को सर्वोपरि स्थान प्राप्त था। शुंग, कण्व, सातवाहन शासक ब्राह्मण ही थे।
  - नासिक प्रशस्ति में गौतमीपुत्र को अद्वितीय ब्राह्मण कहा गया है, जिसने समाज में वर्णाश्रम धर्म को प्रतिष्ठित करने तथा वर्णसंकरता को रोकने का प्रयास किया। अध्ययन, अध्यापन, संयम, तप आदि ब्राह्मणों के कर्तव्य बताएं गए हैं।
  - मनु विपत्ति के समय ब्राह्मणों को क्षत्रिय, वैश्य का कार्य करने की अनुमति देते हैं। परंतु निम्न वर्ण को उच्च वर्ण का व्यवसाय अपनाने की अनुमति नहीं दी गई थी।
- **शूद्र**
  - अन्य वर्णों की सेवा-सुश्रुषा और धन का संचय न करना शूद्रों के विशिष्ट कर्तव्य थे।
  - मनु शूद अध्यापकों की चर्चा करते हैं, फिर भी उनकी दृष्टि में शूद्र और दास में कोई अंतर नहीं था। उनके अनुसार स्नातकों को शुद्र के साथ यात्रा नहीं करनी चाहिए।
  - शूद्रों को इस काल में वैदिक ग्रंथों के शून्य और संस्कार कराने का अधिकार न रहा।
  - मिलिन्दपन्हों के अनुसार, शूद्रों को भी वैश्यों की तरह कृषि, व्यवसाय एवं पशुपालन की शिक्षा दी जाती थी। उस समय कारीगर अधिकतर शूद्र वर्ण से आते थे।
- **वर्णसंकर**

- इस काल की सबसे प्रमुख घटना चार वर्णों के अतिरिक्त कई अन्य जातियों की उत्पत्ति है।
- मनु ने अम्बष्ठ, निषाद, सूत, उग्र, विदेह, मागध आदि 57 जातियों का उल्लेख किया है। इन जातियों की उत्पत्ति अंतर्जातीय विवाह के फलस्वरूप हुई।
- सभी वर्ण के लोगों को अपने वर्ण से एक वर्ण नीचे के साथ विवाह की अनुमति दी गई और उसकी संतान का वर्ण पिता का वर्ण होता था, किंतु यदि माता का वर्ण पिता के वर्ण से अधिक नीचा हो तो संतान का वर्ण माता का वर्ण होता था।
- इस काल में भारतीय समाज में विदेशियों की संख्या बहुत बढ़ गई। उन्हें निम्न स्तर के क्षत्रिय का दर्जा दिया गया। इस काल में वर्ण संकरों की संख्या 61 हो गई।
- सातवाहनों के सबसे प्रसिद्ध राजा गौतमीपुत्र शातकर्णी ने विच्छिन्न होते चातुर्वर्ण्य (चार वर्णों वाली व्यवस्था) को पुनः स्थापित किया और वर्णसंकर (वर्णों और जातियों के सम्मिश्रण) को रोका।
- सातवाहन काल में वर्णसंकर का संकट शकों के प्रवेश से तथा दक्कन में रहने वाले जनजातीय लोगों के सतही ब्राह्मणीकरण के कारण उत्पन्न हो गया था।

❑ दास

- मनु ने सात प्रकार के दासों का उल्लेख किया है :- ध्वजाहृत (युद्धबंदी), भक्तदास (दुर्भिक्ष के समय भोजन के लिए बना दास), गृहज (घर में दासी से उत्पन्न), क्रीत (खरीदा हुआ), दत्रिम (माता-पिता या संबंधियों द्वारा दिया गया), दान में मिला दास, दंड दास (धार्मिक कृत्य न करने पर जुर्माने के रूप में बनाया गया दास)।
- **मिलिन्दपन्हो के अनुसार,** यदि किसी व्यक्ति के पास निर्वाह के साधन न होते तो वह अपने पुत्र को बेंचकर या बंधक रखकर ऋण लेकर निर्वाह करता था।

❑ स्त्रियों की दशा

- नारी की स्थिति में कुछ खास बदलाव नहीं आया। यद्यपि सातवाहनों के अंतर्गत वे शासन कार्यों में भी भाग लेती थीं।
- सातवाहन शासकों के नाम मातृप्रधान होते थे।
- इस समय अभिलेखों में स्त्रियों द्वारा पर्याप्त दान दिये जाने का उल्लेख है।
- गाथासप्तशती में सात कवियत्रियों के पद संग्रहित हैं, इससे स्पष्ट है कि कुछ स्त्रियों को पर्याप्त शिक्षा दी जाती थी।
- कन्याओं का विवाह कम उम्र में होने लगा था ।
- कम उम्र में विवाह होने से समाज में उनकी स्थिति बिगड़ी।
- मनु के अनुसार, विधवा विवाह की अनुमति नहीं थी, न ही विधवा को संपत्ति में अधिकार था।
- मनु ने कई परिस्थितियों में पत्नी को त्यागने की बात कही है, जैसे- वह पुत्र को जन्म न दे सके, उसकी संतान जीवित न रहे, केवल साधारणतया पत्नी को विवाह विच्छेद की अनुमति नहीं थी।
- नियोग प्रथा प्रचलित थी। समाज में सती प्रथा के प्रचलित होने का उल्लेख नहीं मिलता। पर्दा प्रथा का प्रचलन ज्यादा नहीं था, किंतु प्रारंभिक शताब्दियों में समाज के ऊँचे वर्गों में स्त्रियों के लिए पर्दा करना अच्छा समझा जाने लगा।
- **स्त्रीधन :-** इस विषय में मनु का मत था कि पत्नी को बिना पति की अनुमति के अपनी संपत्ति का कोई भाग किसी को नहीं देना चाहिए। उसने स्त्रीधन में विवाह के समय मिले उपहार के साथ विवाह के बाद प्रेम से दिए पति के उपहारों को भी शामिल किया।

धार्मिक स्थिति

- भक्ति का विकास मौर्योत्तर काल के धर्म की प्रमुख विशेषता है। बाद में भक्ति के साथ अवतारवाद की परिकल्पना और अवतारवाद के साथ मूर्तिपूजा की संकल्पना भी जुड़ गई।
- इस काल में कई विदेशी शासक विष्णु के उपासक बन गए। आर्य देवताओं के समानान्तर गैर-आर्य देवता भी स्थापित हो गए; जैसे- गणेश, कार्तिकेय, मातृदेवी, वृक्ष पूजा, पशु पूजा, सर्प पूजा आदि।
- मोरा से प्राप्त प्रथम सदी ई. के एक लेख में संकर्षण, वासुदेव, प्रद्युम्न, साम्ब व अनिरुद्ध की पूजा का वर्णन मिलता है। इस काल में बौद्ध धर्म और उसकी महायान शाखा का सर्वाधिक प्रचार-प्रसार हुआ। बौद्ध धर्म में मूर्तिपूजा आरम्भ हुई और इसका प्रचलन ब्राह्मण समुदाय में भी हुआ। बुद्ध की सबसे प्राचीन मूर्ति मथुरा से मिली है।
- भारत में सबसे पहले बुद्ध की प्रतिमाओं की पूजा की गई।
- जैन धर्म का भी फैलाव हुआ तथा इसका भी विभाजन हुआ।
- ब्राह्मण धर्म की लोकप्रियता वैष्णव और शैव संप्रदाय के रूप में बढ़ी।
- सभी धर्मों ने मनुष्य पर देवत्वारोपण किया तथा मूर्तिपूजा जैसे तत्वों को अपनाया।
- इस काल में धर्म को प्रभावित करने वाले दो महत्वपूर्ण कारक थे - यज्ञ का स्थान भक्ति ने ले लिया, बहुत सारे अनार्य तत्वों का आत्मसातीकरण हुआ।

❑ बौद्ध धर्म

- बौद्ध धर्म के कई केन्द्र बने और यह विदेशों में फैला। विचारधारा और दृष्टिकोण में अंतर के कारण बौद्ध धर्म में विभाजन हुआ।
- दिव्यावदान में पुष्यमित्र को बौद्धों का शत्रु कहा गया है। हालाँकि शुंग वंश के अंतर्गत भरहुत स्तूप बना तथा साँची स्तूप का विस्तार हुआ। इस अवधि में उत्तर-पश्चिमी भारत में बौद्ध धर्म का जबरदस्त प्रभाव था।
- मिनांडर, कुजुल कडफिसस और कनिष्क बौद्ध धर्म के अनुयायी थे।
- कनिष्क के काल में चतुर्थ बौद्ध संगीति हुई (पार्श्व के सलाह पर)। इसी समय बौद्ध धर्म हीनयान और महायान में विभाजित हो गया।
- कनिष्क ने पेशावर में एक स्तूप और विहार का निर्माण करवाया।
- महायान दो धर्म का विकास प्रथम शताब्दी ई.पू. में आंध्र क्षेत्र में हुआ। कनिष्क के समय इसे ख्याति प्राप्त हुयी।
- प्रथम व द्वितीय शताब्दी के दौरान संपूर्ण दक्षिण भारत में फैल गया।
- पश्चिमी भारत के क्षत्रपों ने भी बोद्ध धर्म को संरक्षण दिया।
- पुलुमावी के काल में अमरावती स्तूप का विस्तार हुआ।
- सातवाहन राजाओं ने नासिक, काले, जुन्नार, भज, कनहेरी में गुफा विहार बनवाये
- सातवाहनों के समय धान्यकटक (अमरावती) महायानों का प्रमुख केन्द्र था।
- उत्तर भारत में स्थविरवादियों की लोकप्रियता थी।
- बुध की उपासना पद्धति में परिवर्तन हुआ। पहले की वास्तुकला में बुद्ध का प्रतिनिधित्व, पैर के निशान, उजला हाथी, फूल के माध्यम से होता था, पर नए लोग बुद्ध की प्रतिमा बनाकर पूजने लगे। इस्वी सन के आरंभ में बुद्ध मूर्ति की स्थापना और पूजा का प्रचलन शुरू हुआ। बोधिसत्व की अवधारणा में भी परिवर्तन हुआ।
- पुनर्जन्म का सिद्धांत सुदृढ़ होता गया।
- **प्रमुख बौद्ध तीर्थ :-** भरहुत, बोधगया, साँची, तक्षशिला, पुरुषपुर, मथुरा, नासिक, कन्हेरी, कार्ले, अमरावती, नागार्जुनकोंडा (महाचैत्य प्रमुख तीर्थ स्थल)।
- **प्रमुख शिक्षा केन्द्र :-** तक्षशिला, बनारस। तक्षशिला में मानविकी, विज्ञान, हस्तकला, युद्धकला, विधि व औषधि की शिक्षा दी जाती थी।

❑ जैन धर्म

- इसके विस्तार की गति धीमी थी, क्योंकि राजकीय संरक्षण कम मिला। साथ ही विदेशों में प्रचार का प्रयास नहीं किया गया।
- ईस्वी सन् के आरंभ में जैन धर्म की स्थिति सुदृढ़ हो गई थी (संरक्षक खारवेल)।
- कुषाण काल में यह मथुरा में लोकप्रिय हुयी जहाँ मथुरा शैली में तीर्थंकरों की मूर्तियाँ बनाई गयीं।

- प्रथम सदी ईस्वी के लगभग यापानीय नामक एक संप्रदाय का उदय हुआ।
- इस संप्रदाय के अनुसार, स्त्रियाँ भी मोक्ष प्राप्त कर सकती थीं ।
- **महत्वपूर्ण जैन केन्द्र :-** राजगीर, मथुरा, उज्जैन, सिरकप (तक्षशिला), भड़ोंच, सोपारा, मदुरई, सित्तनवासल, उदयगिरि तथा खंडगिरि पहाड़ी। सिरकप बौद्ध धर्म के साथ-साथ जैन धर्म का भी केन्द्र था।

❑ **ब्राह्मण धर्म**

- इस काल में ब्राह्मण धर्म में कुछ परिवर्तन हुए।
- शुद्ध अनुष्ठान से भक्ति की ओर अधिक ध्यान केंद्रित हो गया।
- ब्राह्मण धर्म द्वारा स्थानीय परंपराओं का आत्मसातीकरण।
- कुछ तमिल देवताओं तथा स्थानीय देवता को ब्राह्मण धर्म में शामिल किया जाना।
- इस काल में बलि के स्थान पर देवी और देवताओं की पूजा को स्थान दिया गया।
- सर्वोच्च ईश्वर की अवधारणा ने बल प्राप्त किया। इसी समय त्रिदेव की संकल्पना सामने आयी।

❑ **शैव उपासना**

- शिव की पूजा इसी काल में शुरू हुयी।
- पतंजलि ने शैव को अयस्क शुलिकाह (लोहे का डंडा धारण करने वाला) कहा।
- मद्रास के पास गुड्डीमल्लम् एवं मध्य प्रदेश में भीटा से ऐसे लिंग प्राप्त हुए है जिन पर शिव की आकृति मिलती है।
- पार्वती को शक्ति का प्रतीक माना जाता था।
- सातवाहन राज्य में पार्वती की पूजा गौरी के रूप में की जाती थी। इस काल में स्कंद पूजा भी लोकप्रिय थी।
- **स्कंद के अन्य नाम -** कार्तिकेय, कुमार।
  - स्कंद की उपासना देवताओं के सेनापति के रूप में की जाती थी।
- शैव संप्रदाय में पाशुपत सर्वाधिक लोकप्रिय था।

❑ **वैष्णव संप्रदाय**

- द्वितीय सदी ईस्वी पूर्व तक विष्णु और नारायण एक दूसरे में समाहित हो गये।
- हेलियोडोरस ने वासुदेव के सम्मान में बेसनगर में गरुड़ स्तंभ बनवाया।
- इस काल में विष्णु के अतिरिक्त गरुड़, चक्र की भी पूजा होती थी।
- वैष्णव संप्रदाय में अवतार की अवधारणा बौद्ध धर्म से ग्रहण की गई।

मौर्योत्तरकालीन कला एवं संस्कृति

- मौर्योत्तर काल में (कनिष्क के शासनकाल में) कला के क्षेत्र में दो स्वतन्त्र शैलियों गान्धार शैली और मथुरा शैली का विकास हुआ।
- इस काल में कला का मुख्य आधार बौद्ध धर्म था। मध्य एशिया से जो मूर्तिशिल्प की कृतियाँ प्राप्त हुई हैं, उनमें बौद्ध धर्म के प्रभाव की छाया में स्थानीय और भारतीय दोनों लक्षणों का मिश्रण पाया जाता है।

❑ **मथुरा कला**

- मथुरा शैली मूलतः भारतीय कला थी।
- इस शैली का विषय बुद्ध जैन और हिन्दू तीनो धर्म थे।
- मथुरा से प्राप्त यक्ष और यक्षिणी मूर्तियां-बौद्ध, जैन एवं ब्राह्मण (हिंदू) धर्म से संबंधित हैं।
- इस शैली में बुद्ध की विलक्षण प्रतिमाएँ बनीं।
- प्रतिमाओं में कनिष्क की सिरविहिन खड़ी मूर्ति को सबसे अधिक ख्याति प्राप्त हैं।
- इसके निचले भाग में कनिष्क का नाम अंकित है।
- यहाँ महावीर की भी कई प्रस्तर मूर्तियाँबनाई गईं।
- कला की मथुरा शैली ईसा की प्रथम सदी से विकसित हुई।
- मथुरा कला में लाल बलुआ पत्थर का प्रयोग किया जाता था।
- इसकी लाल बलुआ की कृतियाँमथुरा के बाहर भी पाई जाती हैं।
- सम्प्रति मथुरा संग्रहालय में कुषाणकालीन मूर्तियों का भारत में सबसे अधिक संग्रह है।
- मथुरा कला के अन्तर्गत बुद्ध की धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा, अभय मुद्रा, ध्यान मुद्रा, भू-स्पर्श मुद्रा आदि मूर्तियों का निर्माण किया गया।

❑ **गान्धार कला**

- भारत के पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त गान्धार का मध्य एशियाई, यूनानी और रोमन शिल्पकारों के साथ सम्पर्क हुआ। इससे नई शैली की कला का उदय हुआ, जिसे गान्धार शैली कहते हैं।
- इसमें बुद्ध की प्रतिमाएँ यूनान और रोम की मिश्रित शैली से निर्मित की गईं।
- गान्धार कला का विषय-मात्र बौद्ध होने के कारण इसे 'यूनानी- बौद्ध' , इण्डो-ग्रीक या ग्रीको रोमन भी कहा जाता है।
- इसका सर्वाधिक विकास कुषाण काल में हुआ।
- इस शैली की विषय-वस्तु बौद्ध परम्परा से सम्बन्धित है, जबकि निर्माण का तरीका यूनानी था।
- गान्धार कला में मूर्तियों की आकृति को सर्वधा यथार्थ दिखाने का प्रयास किया गया है।
- गान्धार शैली की मूर्तिकला में बुद्ध की मूर्तियाँ यूनानी देवता अपोलो की तरह बनाई गई हैं।
- इसमें बुद्ध को घुंघराले बाल, मूंछ, पारदर्शी वस्त्रों एवं चप्पलों के साथ दिखाया गया है। सर्वप्रथम गांधार कला में प्रभामंडल का प्रयोग हुआ।
- बामियान (अफगानिस्तान) की विशाल बुद्ध प्रतिमाएं गान्धार शैली में बनी थीं, जिन्हें तालिबान ने नष्ट कर दिया। गान्धार में प्रमुखतया खड़ी मुद्रा में बुद्ध प्रतिमाएं बनाई गई हैं।

Note:-

❑ **गान्धार कला एवं मथुरा कला में अन्तर**

गान्धार कला	-	**मथुरा कला**
मथुरा कला गहरे नीले एवं काले पत्थर का प्रयोग -		लाल पत्थर का प्रयोग
संरक्षक शक एवं कुषाण	-	संरक्षक कुषाण
यथार्थवादी	-	आदर्शवादी
मुख्यतः बुद्ध की मूर्तियाँ-	बौद्ध, जैन तथा ब्राह्मण धर्म से सम्बन्धित मूर्तियाँ	

❑ **अमरावती कला**

- मौयर्योत्तर काल में ही सातवाहन तथा इक्ष्वाकु शासकों के संरक्षण में कृष्णा एवं गोदावरी की निचली घाटी में अमरावती कला का विकास हुआ।
- आन्ध्र प्रदेश में नागार्जुनकोण्डा और अमरावती बौद्ध कला के महान केन्द्र थे, जहाँ बुद्ध के जीवन की कथाएँ अनगिनत पट्टों पर चित्रित की गई है
- इसमें प्रमुख रूप से सफेद पत्थर का प्रयोग किया गया है।

❑ **शुंगकालीन कला**

- शुंग शासक भागभद्र (भागवत) के शासनकाल के 14वें वर्ष में तक्षशिला के यवन शासक एण्टियालकिट्स के राजदूत हेलियोडोरस ने विदिशा में वासुदेव के सम्मान में गरुड़ स्तम्भ स्थापित किया। इस पर दम्भ (आत्मनिग्रह), त्याग तथा अग्रपमाद तीन शब्द अंकित है।
- शुंग काल के गरुड़ स्तम्भ के अतिरिक्त अजन्ता का नौवाँ चैत्य मन्दिर, भाजा का चैत्य एवं विहार, नासिक तथा कार्ले के चैत्य तथा मथुरा की अनेक यक्ष-यक्षणियों की मूर्तियाँ आदि ये सभी कला के प्रमुख उदाहरण हैं।
- मौर्य काल में स्तूप का निर्माण ईंटों और मिट्टी की सहायता से किया जाता था, किन्तु शुंग काल में पाषाण (पत्थर) का प्रयोग किया जाने लगा।

❑ **सातवाहनकालीन कला**

- सातवाहन काल में पश्चिमोत्तर दक्कन या महाराष्ट्र में ठोस चट्टानों को काटकर अनेक चैत्य और विहार बनाए गए।
- चैत्य बौद्धों के मन्दिर का और विहार भिक्षु-निवास का कार्य करता था।

- चैत्य अनेक स्तम्भों पर निर्मित था, जो बड़े कमरे (हॉल) के समान था और विहार में एक केन्द्रीयशाला होती थी, जिसमें सामने के बरामदे की ओर एक द्वार था।
- इस काल की महत्त्वपूर्ण स्थापत्य कला है - कार्ले का चैत्य (इस काल का सर्वाधिक प्रसिद्ध) व अमरावती का स्तूप।
- ये स्तूप भित्ति-प्रतिमाओं से भरे हुए हैं।
- इनमें बौद्ध के जीवन के विभिन्न दृश्य उत्कीर्ण किए हुए हैं।

मौर्योत्तरकालीन साहित्य

- इस काल में साहित्य रचना अधिकांश संस्कृत भाषा में हुई।
- काव्य-शैली का पहला नमूना रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख (संस्कृत में) है, जिसका समय लगभग 150 ई.पू. है।
- संस्कृत तथा हिन्दू धर्म का पुनरुद्धार इसी काल में हुआ।
- महर्षि पतंजलि का इसके उत्थान में महत्त्वपूर्ण योगदान था।
- मनुस्मृति नामक ग्रन्थ की रचना शुंग काल के दौरान ही हुई ।
- सातवाहनों की राजकीय भाषा प्राकृत थी। सभी अभिलेख प्राकृत भाषा में और ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण किए गए हैं।
- प्राकृत ग्रन्थ **"गाथासप्तशती"** हाल नामक सातवाहन राजाओं की रचना है। जो प्राकृत लिपि में हैं।
- साहित्यकार अश्वघोष को कुषाणों का सम्पोषण प्राप्त था। इसने बुद्ध की जीवनी बुद्धचरित के नाम से लिखी।
- अश्वघोष ने सौन्दरानन्द नामक काव्य भी लिखा, जो संस्कृत काव्य का उत्कृष्ट उदाहरण है। अश्वघोष के नाटकों के कुछ भाग मध्य एशिया के एक विहार से मिले हैं।
- सुई विहार अभिलेख संस्कृत भाषा में है। यह अभिलेख कुषाण साम्राज्य से सम्बद्ध है।
- पतंजलि ने महाभाष्य की रचना की। यह उनके पूर्ववर्ती व्याकरणाचार्य पाणिनी की रचना अष्टाध्यायी की टीका है।
- महायान बौद्ध सम्प्रदाय की प्रगति के कारण अनेक अवदानों की रचना की गई। अनेक अवदान बौद्धों की मिश्रित संस्कृत भाषा में लिखे गए हैं। अवदानों का उद्देश्य लोगों को महायान के उपदेशों से अवगत कराना है। इस कोटि की प्रमुख कृतियाँ महावस्तु और दिव्यावदान हैं।

- **Note :-**
- यूनानियों ने परदे का प्रचलन आरम्भ कर भारतीय नाट्यकला के विकास में भी योगदान दिया, परन्तु परदा यूनानियों की देन था, इसलिए वह यवनिका के नाम से विदित हुआ।
- यवनिका शब्द यवन शब्द से बना है और यवन शब्द आयोनियन का संस्कृत प्रतिरूप है। धर्मेत्तर साहित्य का सबसे अच्छा उदाहरण वात्स्यायन द्वारा रचित कामसूत्र है। इसका काल ईसा की तीसरी सदी माना जाता है।

कुछ प्रमुख मौर्योत्तरकालीन रचनाएँ

रचनाएँ	रचनाकार
महाभाष्य	पतंजलि
चरक संहिता	चरक
मिलिन्दपन्हो	नागसेन
कामसूत्र	वात्स्यायन
नाट्यशास्त्र	भरत मुनि
सौदरानन्द, बुद्धचरित	अश्वघोष
गाथासप्तशती	हाल
उरुभंग	भास
चारुदत्ता	भास
स्वप्नवासवदत्ता	भास

संगम काल

- संगम का तात्पर्य है तमिल कवियों, आचार्या विद्वानों ज्योतिषियों तथा अन्य बुद्धिजीवियों की परिषद् या सभा, जहाँ सामुदायिक रूप से राजकीय संरक्षण में साहित्य सृजन किया जाता था। संगम साहित्य में तमिल भाषा विकसित चरण में थी एवं साहित्य का विकास उन्नत अवस्था में था।
- यहाँ रचित एवं संकलित साहित्य इतिहास निर्माण के लिए नहीं था। किंतु इनका इस्तेमाल करते हुए आधुनिक इतिहासकार वहाँ (चोल, चेर, पाण्ड्य) के राजनीति, समाज, अर्थव्यवस्था, धर्म संस्कृति का प्रमाण खोजते हैं। कुल तीन संगमों का आयोजन किया गया, जिनको पाण्ड्य राजाओं ने संरक्षण दिया।

तीन संगमों

❑ **प्रथम संगम**

- **स्थान -** मदुरै
- **अध्यक्ष -** अगस्त्य
- अन्य तथ्य –
  - इसमें संकलित ग्रंथ अब उपलब्ध नहीं हैं।
  - यह संगम सबसे अधिक समय तक चला।

❑ **द्वितीय संगम**

- **स्थान -** कपाटपुरम् (अलैवाई)
- **अध्यक्ष -** अगस्त्य
- अन्य तथ्य –
  - अगस्त्य को दक्षिण भारत में आर्य संस्कृति का प्रसार करने तथा तमिल के प्रथम ग्रंथ के प्रणेता होने का श्रेय दिया जाता है।
  - द्वितीय संगम की केवल तोलकामियम (तोलकाप्पियर द्वारा रचित व्याकरण ग्रंथ) उपलब्ध है। यह सूत्र शैली में रचित व्याकरण ग्रंथ है।
  - इस ग्रन्थ में पुरुषार्थ अर्थात् (अरम) अर्थ (पोल), काम (इनवम), मोक्ष (बिंदु) का निरूपण मिलता है।
  - तोलकाप्पियम् से ही पता चलता हैं की तमिल देश में आर्यों ने ही धार्मिक संस्कार के रूप में विवाह प्रथा शुरू की।

❑ **तृतीय संगम**

- **स्थान** -मदुरै
- **अध्यक्ष -** नक्कीरर
- **अन्य तथ्य-**
  - तीसरे संगम के अवसर पर तैयार किए गए संग्रह ग्रंथों (जो अब भी प्राप्य हैं) को तीन भागों में बांटा गया है- एतुत्तौके ,पत्तुप्पातु , पदिनेकिल्लकणक्कु
  - **एतुत्तौके (अष्ट संग्रह)**
    - रचित 8 ग्रंथ - नाट्रिणे , कुरंदोगै , ऐंगरुनुरु , पदित्रपत्तु ,परिपादल , कालित्तौगे ,अहनानुरु ,पुरुनानुरु
  - **पत्तुप्पातु (दशगीत)**
    - इस संग्रह में चेर राजाओं की कथा का वर्णन है।
    - यह 10 ग्रंथों का संग्रह है
  - **पदिनेकिल्लकणक्कु**
    - इस ग्रंथ का संग्रह भी तीसरे संगम में किया गया।
    - इसमें कुल 18 गीतों का संकलन हैं
    - इसके अन्तर्गत तिरूवल्लुवर की तिरुक्कुरल या कुरल सर्वश्रेष्ठ रचना है।

- **Note:-**
- **कुरल**
- इसमें नीतिशास्त्र, राज्यशासन विधि तथा प्रेम की व्यापक रूप से चर्चा है।
- कुरल को तमिल 'साहित्य की बाइबिल' एवं 'पंचमवेद' भी कहा जाता है।
- इसमें धर्म, (अरम), अर्थ (पोरुल) तथा काम (इनवम) का विश्लेषण है।
- इसकी रचना तिरुवल्लुवर द्वारा अपने मित्र सिंहल के शासक इलल के पुत्रों को शिक्षित करने हेतु की गई थी।

संगम के महाकाव्य

❑ **शिल्पादिकारम् - (नुपुर की कहानी)**

- **रचनाकार -** इलंगो आदिगल
- **अन्य तथ्य-**
- इसमें एक धनी व्यापारी कोवलन तथा कन्नगी की दुर्भाग्य गाथा है।
- कोवलन एक नर्तकी माधवी के प्रेम में पड़कर अपनी पत्नी की उपेक्षा करता है।
- काव्य के अंत में माधवी बौद्ध धर्म ग्रहण कर लेती है।
- इसमें श्रीलंका के शासक गजबाहु की भी चर्चा है। वह सेनगुहवन के दरबार में आया था।
- कन्नगी के नाम पर पत्नी पूजा की शुरूआत हुई।
- कण्णगी को तमिल समाज में 'सतीत्व की देवी' माना जाता है।
- इस रचना को तमिल का राष्ट्रीय काव्य माना जाता है।
- इस ग्रंथ में 32 प्रकार के सूती वस्त्रों का उल्लेख है।
- इसे तमिल साहित्य का 'इलियड' माना जाता है।

- **Note:-**
- इलंगो आडिगल चेर शासक शेनगुट्टवन का छोटा भाई था और अनुश्रुति है कि उसके भय से घर-बार छोड़कर सन्यासी हो गया था।

❑ **मणिमेखले**

- **रचनाकार -** सीतलसत्तनार (मदुरा का व्यापारी)
- **अन्य तथ्य-**
- इसमें माधवी एवं कोवलन से उत्पन्न पुत्री मणिमेखले और उदयनकुमार के बीच प्रेम संबंधों की चर्चा है।
- अंत में मणिमेखले भी बौद्ध धर्म ग्रहण कर लेती है।
- इसका महत्व मुख्यतः धार्मिक है।
- **'कांची के भयंकर अकाल'** का इसमें वर्णन है।

❑ **जीवक चिंतामणि**

- **रचनाकार –** तिरुत्तक्कदेवर (जैन भिक्षु)
- **अन्य तथ्य-**
- किसी जैन साहित्यकार द्वारा रचित यह प्रथम प्रणय ग्रंथ है।
- इसे विग्रह की पुस्तक कहते हैं, क्योंकि इसमें जीवक जैसा योद्धा जैन हो जाता है।

राजनैतिक इतिहास

- दक्षिण भारत में उत्पादन अधिशेष के साथ बहुत सारे सरदार अस्तित्व में आये। आगे चलकर पाण्ड्य, चोल व चेर के तीन राज्य विकसित हुए, जो मुवेन्दर कहलाते थे।

- ऐसा प्रतीत होता है कि ई०पू० प्रथम सदी तक तीनों राज्य अस्तित्व में आ चुके थे।

संक्षिप्त में			
राज्य	**राजधानियाँ**	**राजचिन्ह**	**स्थिति**
चोल	उरेयूर(पहले), पुहार (बाद में)	बाघ या चीता	पेन्नार तथा वेल्लार नदियों के मध्य
चेर	करूयर, तोण्डी	धनुष	उत्तरी त्रावणकोर, कोचीन, दक्षिणी मालाबार
पाण्ड्य	कोरकई, मदुरै	मछली	तिन्नवेली, रामनद, मदुरा (तमिलनाडु)

❑ चोल राज्य

- **राजधानी -** पुहार
- संगम युगीन तीनों राज्यों में चोल राज्य का उद्भव सबसे पहले हुआ।
- कुम्भकोनम में चोलों का कोषागार स्थित था।
- चोल राज्य के प्रमुख शासक-
- **इलंजेतचेन्नी**
  - यह अपने सुंदर रथों हेतु विख्यात था।
  - इलंजेतचेन्नी चोल राजवंश का प्रथम शासक था। उसने अपनी राजधानी उरैयूर में स्थापित की।
  - उरैयूर चोलों का राजनीतिक सत्ता का केन्द्र था, जो सूती कपड़ों के व्यापार के लिए प्रसिद्ध था।
- **एलारा**
  - ईसा पूर्व दूसरी सदी के मध्य में चोल राजा एलारा ने श्रीलंका पर विजय प्राप्त की थी।
  - एलारा ने श्रीलंका पर लगभग 50 वर्षों तक शासन किया।
  - एलारा चोलवंश का प्रथम राजा था, जिसने श्रीलंका पर विजय प्राप्त की।
- **करिकाल (जले पैरों वाला)**
  - चोलवंश का 'करिकाल' एक महत्वपूर्ण शासक था।
  - प्रथम महान चोल शासक था। वह सात सुरों का ज्ञाता था।
  - कावेरी नदी के मुहाने पर उसने पुहार नगर की स्थापना की।
  - करिकाल ने पट्टिनप्पाले के लेखक रूद्रन कन्नानार को उसने सोलह लाख मुद्राएँ भेंट की।
  - वेण्णि की लड़ाई चेर, पाण्ड्य और 12 राजाओं को पराजित किया।
  - करिकाल में कावेरी नदी के मुहाने पर बांध बनवाकर उसके जल का उपयोग सिंचाई में किया।

❑ चेर राज्य

- **राजधानी -** करुयार
- संगम कवियों ने भैरों की प्राचीनता महाभारत के युद्ध से जोड़ने का प्रयास किया।
- चेर साम्राज्य को बनावर, दिल्लवर, कुटवर, पौरयार, मलैलार आदि नामों से भी जाना जाता था।
- चोर राज्य के प्रमुख शासक-
- **उदियजेरल**
  - चेर वंश का प्रथम शासक था।
  - महाभारत युद्ध में भाग लेने वाले सभी योद्धाओं को भोजन कराया था।
  - इसने महाभोजन की उपाधि ली।
  - उदियन जेरल ने एक बड़ी पाकशाला बनवाई थी। इसके माध्यम से वह जनता में भोजन वितरित करवाता था।
  - उसने अधिराज की उपाधि धारण की, जो किसी समकालीन शासक पर विजय का प्रतीक था।
- **नेडूजेरल**
  - **राजधानी -** मरंदई
  - इसने हिमालय तक अपने राज्य का विस्तार कर इमयवरम्बम् की उपाधि ली।
  - इसके अतिरिक्त उसने अधिराज की भी उपाधि धारण की थी।
  - इसने आदन ने यवन व्यापारियों को बन्दी बनाया था तथा उनसे धन भी लूटा।
  - इसने व्यपार में बाधा उत्पन्न करने वाली कदम्बु जनजाति का दमन किया।
- **कुट्टवन**
  - कुट्टवन, नेदुनजेरल आदन का छोटा भाई था।
  - इसे हाथियों का स्वामी कहा जाता है।
  - इसने कोन्णु का युद्ध जीतने के पश्चात् अधिराज की उपाधि धारण की
- **सेनगुट्टुवन**
  - इसके यश का गान संगम कवि परनर ने किया। इसने अधिराज की उपाधि ली।
  - इसे लाल या भला चैर कहते हैं। यह साहित्य व कला का संरक्षक था। उसने पत्तिनी पूजा (कन्नगी पूजा) आरंभ की।
  - शिल्पादिकारम में कन्नगी पूजा का प्रमाण मिलता है, माना जाता है। कि इस पूजा के लिए पत्थर की मूर्ति वह गंगा नदी में धोकर लाया था।
  - यह पत्तिनी संप्रदाय का संस्थापक था।
- **पेरुनेजरल इरपोरई**
  - यह चोल शासक करिकाल का समकालीन था।
  - इसने दक्षिण में गन्ने की खेती प्रारम्भ की थी।
- चेर वंश का अन्तिम शासक सैईथै (लगभग 210 ई.) था, जिसे पाण्ड्य शासक नेडुंजेलियन ने पराजित किया था।

- **Note:-**
- टालमी के उल्लेख से तथा वांजि नगर के आस- पास अनेक स्थलों से रोमन सिक्के प्राप्त होने से यह प्रतीत होता है, कि वांजि (करुवुर) चेरों की राजधानी थी।

❑ पाण्ड्य राज्य

- **राजधानी -** मदुरै
- मेगास्थनीज के विवरण, अशोक के अभिलेख, महाभारत, रामायण में पाण्ड्यों की चर्चा की गई है।
- अर्थशास्त्र से ज्ञात होता है कि मदुरा कीमती मोतियों, उच्च कोटि के वस्त्र एवं विकसित वाणिज्य व्यापार के लिए प्रसिद्ध था।
- पाण्ड्य राज्य के प्रमुख शासक-
- **नेडियोन**
  - इसने पहरूली नदी को अस्तित्व प्रदान किया एवं समुद्र पूजा आरंभ करवाया।
  - **नेडियोन का अर्थ है -** लम्बा आदमी।
  - संगमकालीन साहित्य के अनुसार यह पाण्ड्य राजवंश का प्रथम शासक था।
- **नेडुनजेलियन**
  - इसने तलैयालंगानम् के युद्ध में चोल, चेर तथा पाँच अन्य राजाओं के संघ को पराजित किया। चेर शासक शेय को बंदी बनाकर कारागार में डाल दिया। इस युद्ध में विजय के पश्चात् तलैयालंगानम की उपाधि धारण की।
  - वह विद्वानों का संरक्षक, उदार प्रशासक तथा धर्मनिष्ठ व्यक्ति था।
  - संगमयुगीन कवि मुरदंग, नक्कीरर ने उसकी उदारता तथा दानशीलता की प्रशंसा की।
  - वह वैदिक धर्म का पोषक था तथा उसने अनेक यज्ञों का अनुष्ठान करवाया।
  - इसने रोमन सम्राट ऑगस्टस के दरबार में 26 ई. पू. में अपना दूत भेजा था।
  - नक्कीरर तथा मरुदन जैसे प्रसिद्ध कवियों ने नेहुंजेलियन पर काव्य रचना की, जो पत्तुपात्र में संकलित है।
  - मुदरैकांजी नामक रचना में नेडुजेलियन को कुशल शासक बताया गया है।

- पाण्ड्य राज्य की राजधानी मदुरै नेण्डुजेलियन के समय में व्यापारिक और सांस्कृतिक क्रियाकलापों का केन्द्र था।
- शिलप्पादिकारम की रचना इसी के शासनकाल में हुई।
- इसी के शासनकाल में शिलप्पादिकारम के नायक कोवलन को चोरी के आरोप में फाँसी दे दी गई।
- कोवलन को सजा देने के बाद आत्महत्या कर ली थी।
- संगम काल का अन्तिम पाण्ड्य शासक नल्लिवकोडन था, जिसका उल्लेख नत्तनार की कविता में मिलता है।

संगम युगीन प्रशासन

शासन का स्वरूप

- इस युग में वंशानुगत राजतंत्र का ही प्रचलन था, किंतु ज्येष्ठाधिकार या फिर उत्तराधिकार का कोई स्पष्ट नियम नहीं था।
- राजा के बाद युवराज (कोमहन) का स्थान था।
- अन्य पुत्रों को इलैगो कहा जाता था।
- सामान्यतः युवराज का चयन राजा अपने जीवनकाल में ही कर लेता था, लेकिन उत्तराधिकार के युद्ध भी होते थे।
- कभी-कभी एक स्थल से एक समय में ही एक से अधिक शासक द्वारा शासन करने का प्रमाण भी मिलता है।
- **राजा का आदर्श -** नैतिक नियमों का पालन कर जनता के समक्ष अनुकरणीय जीवन पद्धति का उदाहरण प्रस्तुत करना एवं पिता के समान जनता के हितार्थ कार्य करना।
- **राजा का मुख्य कर्तव्य-** युद्ध करना (दिग्विजय, चक्रवर्ती), जनता का कल्याण करना तथा संस्कृति के विविध पक्षों पर ध्यान देना।
- चक्रवर्ती का प्रमाण पुरूनानुरू में मिलता है। सही मायने में राजा ही सर्वेसर्वा था और उसपर कोई प्रभावशाली नियंत्रक वर्ग नहीं था।
- पुरोहित एवं राजा के कवि मित्र का भी कुछ महत्व था।
- राजा के जन्मदिन को **पेरूनल** कहा जाता था। इसका विशेष महत्व, क्योंकि इस दिन को ऐश्वर्य वृद्धि के लिए महत्वपूर्ण माना जाता था।
- राजमहल में एक विशेष प्रकार की प्रथा थी, जो करलमारम या कादिमारम कहलाती थी। इसके अंतर्गत प्रत्येक शासक अपनी शक्ति के प्रतीक के रूप में अपने राजमहल में महान वृक्ष रखते थे।
- राजकीय दरबार में सांस्कृतिक कार्यक्रमों पर विशेष ध्यान दिया जाता था। गायकों के गाने के साथ जो नर्तकियाँ नाचती थीं, उन्हें पानर या विडेयलियर कहा जाता था।
- राज्य मंडलों में विभाजित था, मंडल नाडू (जिला) में, नाडू उर या गाँव में विभाजित था।
- समुद्र तटीय कस्बों को पतिनम् कहा जाता था।
- **परिषदें एवं मंत्रिगण**
- शासन के कार्यों में राजा ब्राह्मणों की सभा से सहायता प्राप्त करता था।
- राजधानी में एक राजसभा होती थी, जिसे नालवै कहा जाता था।
- यहीं बैठकर राजा राज-कार्य करता था।
- राज्य कार्य में सहयोग देने के लिए पंचवारम् अथवा पंचमहासभा होती थी। इसके सदस्य थे -
  - **अमैर्रयच्चार-** मंत्री (प्रधानमंत्री)
  - **पुरोहितार-** पुरोहित (धार्मिक विभाग)
  - **सेनापतियार -** सेना विभाग
  - **दुत्तार -** विदेश विभाग
  - **ओर्रार-** गुप्तचर
- सभा के लिए संगम साहित्य में मनरम् / पोडियल तथा अवै शब्द मिलता है, जिसका शाब्दिक अर्थ है सार्वजनिक स्थल ।

न्याय प्रशासन

- राजा देश का प्रधान न्यायाधीश तथा सभी प्रकार के मामलों की सुनवाई की अंतिम अदालत होता था।
- राजा के न्यायालय को **मनरम्** कहा जाता था, इसके कई अन्य सदस्य भी होते थे।
- इस काल में दंड विधान अत्यंत कठोर थे।
- चोरी तथा व्यभिचार के अपराध में मृत्युदंड दिया जाता था।
- संगम काल में स्थानीय शासन को महत्व दिया गया। नगर तथा ग्राम में अलग-अलग सभाएँ होती थी।
- गाँवों में पंचायत का बड़ा महत्व था। राजा पंचायतों के परामर्श से ही गाँव के लिए कानून बनाता था।

सैनिक व्यवस्था

- संगमकालीन शासकों के पास पेशेवर सैनिक होते थे।
- सेना प्रमुख को **एनाडि** की उपाधि दी जाती थी।
- सेना में हाथी, घोड़े एवं रथ होते थे।
- सेना की अग्र टुकड़ी **तुसी** तथा पिछली टुकड़ी **कुलै** कहलाती थी।
- युद्ध में मारे गए सैनिकों की पाषाण मूर्तियाँ स्मारक स्वरूप बनाई जाती थीं, जिन पर उनके नाम और सफलताएँ अंकित की जाती थीं।
- पाण्ड्य एवं चोल शासन में नागरिक और सैनिक पदों पर धनी किसान

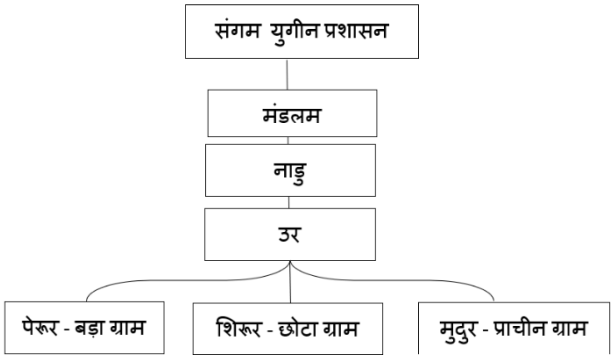

(वेल्लाल) होते थे।

- इनके अतिरिक्त राजनिवास की सुरक्षा हेतु सशस्त्र महिलाओं को तैनात किया जाता था।
- मरवा नामक जनजाति अपनी लड़ाकू प्रवृत्ति के कारण सेना में विशेष स्थान पाती थी ।
- युद्ध वीरगति प्राप्त करना शुभ माना जाता था। उनकी स्मृति में शिलापट्ट लगाये जाते थे, जिसे विराकल या नडुक्कल कहा जाता था।

राजस्व प्रशासन

- भू-राजस्व सरकारी आय का सर्वप्रमुख साधन था, क्योंकि विविध चरणों में उर्वर भूमि में वर्धित उत्पादन ने ही राज्य निर्माण का आधार तैयार किया था।
- यह नगद या अनाज दोनों रूपों में वसूला जाता था।
- कभी-कभी कवियों के कहने पर कर में छूट भी दी जाती थी।
- **कर**
- **करई -** भूमिकर, यह उपज का 1/6 भाग होता था।
- **इर्रई -** युद्ध में लूट के माल को कहा जाता था।
- **पथकर -** सीमा शुल्क को 'उलगू' (शुगम्) कहते थे।अतिरिक्त मांग 'ईराबू' कहलाती थी।
- **कदमई या पादुवाडी-** राजा को उपहार स्वरूप दिया जाने वाला कर था।

- **ईराबु -** बलपूर्वक प्राप्त किए जाने वाले उपहार
- कर संग्राहक **वरियर** कहलाते थे,

❑ **नगर प्रशासन**

- संपूर्ण राज्य को मंडलम कहा जाता था।
- नगर को उर कहा जाता था।
- पड़ोसी क्षेत्र को पक्कम कहते थे।
- मुख्य मार्ग को सलाई एवं नगर की गली को तेरु कहा जाता था।
- चेरि किसी नगर का उपनगर होते थे। तमिल क्षेत्र का मुखिया तंत्र (1) किलार- छोटे मुखिया (2) वेलिर- बड़े मुखिया (3) वेन्तर- सबसे बड़े मुखिया
- **विशेष तथ्य-**
- तमिल क्षेत्र में लगभग 15 महत्वपूर्ण मुखिया तंत्र अस्तित्व में था। सैन्य प्रशासन संगमयुगीन सेना चतुरंगिनी (गज सेना, अश्व सेना, रथ सेना तथा पैदल सेना) होती थी।

सामाजिक व्यवस्था

❑ **वर्ण व्यवस्था**

- इस समय तक सुदूर दक्षिण का आर्यीकरण हो चुका था।
- धीरे-धीरे पुरानी नातेदारी व्यवस्था टूट चुकी थी एवं वैदिक वर्ण-व्यवस्था स्थापित हो रही थी, किंतु संगम युग में स्पष्ट रूप से वर्ण विभाजन देखने को नहीं मिलता।
- इस युग में क्षत्रिय और वैश्य नियमित वर्ण नहीं थे।
- ब्राह्मणों का समाज में महत्वपूर्ण स्थान था। उत्तर से आये ब्राह्मण को **वेदमार** कहा जाता था।
- ब्राह्मणों के पश्चात् संगम समाज में वेल्लार (उल्वर वर्ग) का स्थान था, इनका मुख्य कर्म कृषि था, किंतु वे युद्ध में भाग लेते थे तथा महत्वपूर्ण प्रशासनिक पदों पर भी नियुक्त होते थे। वेल्लार का प्रधान **वेलिर** कहलाता था।
- शासक वर्ग को **अरसर** कहा जाता था और इस वर्ग के लोगों के वेल्लारों से वैवाहिक संबंध होते थे।
- तोल्कापियम् के अनुसार तमिल समाज वर्णों में विभाजित था, इस ग्रंथ के अनुसार चार जातियाँ थीं ब्राह्मण (शुड्डडूम), योद्धा (अरसर), वैश्य (वेनीनगर), कृषक (वेल्लाल)।
- इसमें विवाह को एक संस्कार के रूप में स्थापित किया गया था।
- स्त्री-पुरूष के सहज निकट आने (कामकक्कूटम्) को महत्व दिया जाता था। इस काल में विवाह के आठों प्रकार प्रचलित थे। जिनमें प्रमुख थे-
- **पंच तिणे-** सहज विवाह (गंधर्व विवाह)
- **कविकणे -** एक पक्षीय प्रेम (आसुर, राक्षस व पैशाच विवाह)
- **पेरून्दिणे -** अनुचित प्रेम (प्रजापत्य, आर्ष, ब्रह्म व दैव विवाह)

❑ **स्त्री दशा**

- तोलकप्पियम् में कन्या जन्म में दुःख का कारण माना गया है।
- स्त्रियों को भी शिक्षा दी जाती थी।
- तमिल साहित्य में नच्चेलियर तथा ओवैयर जैसी कवियित्रियों की चर्चा है।
- समाज में देवदासी प्रथा, वेश्यावृत्ति प्रचलित थी। जबकि सती प्रथा, दास प्रथा तथा पर्दा प्रथा के प्रमाण नहीं मिलते हैं।
- विधवाओं की दशा अच्छी नहीं थी। उनका सिर मुड़वा दिया जाता था।
- विधवाओं के लिए बिस्तर का प्रयोग, आभूषण पहनना एवं अच्छा भोजन वर्जित था।
- गणिकाओं को परटियर कहा जाता था।
- पाणर या विडैलियर घूम-घूम कर लोगों का मनोरंजन करते थे।
- जनजाति के गायकों की आर्थिक दशा अत्यन्त दयनीय थी।

❑ **भोजन तथा संस्कार**

- लोग शाकाहारी तथा मांसाहारी दोनों प्रकार का भोजन करते थे।
- चावल मुख्य खाद्यान था। इसमें दूध मिलाकर सांभर नामक खाद्यान बनाया जाता था।
- कछुआ का मांस भी खाया जाता था।
- मुन्नीर नामक पेय पिया जाता था, जो नारियल के पानी, ताड़ के रस तथा गन्ने के रस को मिलाकर बनाया जाता था।
- शवाधान की अग्निदाह तथा समाधिकरण दोनों विधियाँ प्रचलित थी।
- कभी-कभी शवों को खुले रूप से जानवरों के खाने के लिए छोड़ दिया जाता था।
- इस युग में समाधियों के स्थान पर पत्थर गाड़ने की प्रथा थी।
- स्त्रियाँ अपने मृत पतियों की आत्मा की शांति के लिए चावल के पिंड का दान देती थीं।
- इस काल के लोग कौवे को शुभ पक्षी मानते थे।

आर्थिक व्यवस्था

❑ **कृषि**

- इस काल में कृषि उन्नत अवस्था में थी। कावेरी डेल्टा अपनी उर्वरता के लिए प्रसिद्ध था।
- भूमि के पाँच प्रकार थे - कुरूंजी, पल्लै, मुल्लै, मरूदम या नयतल।
  - **कुरिंजी -** पर्वतीय क्षेत्र।
  - **मुल्लै -** चारागाह या वन प्रदेश।
  - **मरुदम या परुदम -** नदी की घाटियों का प्रदेश।
  - **नेयिदल -** समुद्र तट का प्रदेश।
  - **पालै -** शुष्क भूमि या मरुभूमि।
- **प्रमुख फसलें :-** धान, रागी, गन्ना, कटहल, गोलमिर्च, हल्दी के भी उत्पादन का भी वर्णन मिलता है।
- किसानों को वेल्लाल तथा उनके प्रमुख को वेलिट कहते थे, इनके उपर वेतर होता था।
- दक्षिण में काले या लाल मिट्टी के बर्तनों एवं लोहे के अविष्कार का श्रेय वेलिट लोगों को ही दिया जाता है।
- समाज के निम्न वर्ग की महिलाएँ ही मुख्यतः खेती का कार्य करती थीं। इन्हें कडैसियर कहा गया है।
- चावल और गन्ने से शराब तथा अदरक और तिल से तेल निकालने की चर्चा मिलती है।
- कृषि के लिए सिंचाई की भी व्यवस्था थी। राजाओं ने कुँओं, तलाबों तथा नहरों का निर्माण करवाया था।

❑ **शिल्प**

- इस काल में शिल्प एवं उद्योग का भी विकास हुआ।
- प्रस्तर, मिट्टी, वस्त्र, धातु के विविध शिल्प का पर्याप्त विकास हुआ।
- पुलैयन लोग चमड़े और रस्सी के उद्योग में लगे थे।
- वस्त्र उद्योग इस काल का मुख्य उद्यम था।
- सूत, रेशम आदि से वस्त्रों का निर्माण होता था।
- उरैयूर सूती वस्त्रों के लिए प्रसिद्ध था। सूत कातने का काम स्त्रियाँ करती थीं।
- बेल बूटेदार रेशमी कपड़ों का भी निर्माण किया जाता था। वस्तुतः चोलों की समृद्धि का मुख्य कारण उनका सुविकसित वस्त्र उद्योग था।

❑ **व्यापार**

- लेन-देन का सबसे सामान्य तरीका वस्तु विनिमय था।
- तमिल प्रदेश में वस्तु विनिमय में ऋण व्यवस्था नहीं थी। किसी वस्तु का निश्चित मात्रा में ऋण लिया जा सकता था, बाद में उसी को उसी मात्रा में लौटा दी जाती।

- बाह्य तथा आंतरिक दोनों ही व्यापार प्रगति पर था।
- उत्तर व दक्षिण के बीच व्यापार की चर्चा मौर्य काल से ही मिलती है।
- प्राचीन बौद्ध ग्रंथों में गोदावरी - पोटी तक के मार्ग का वर्णन है। इसी तरह कौटिल्य ने भी दक्षिण के मार्ग के लाभ बताये हैं। संभवतः दक्षिण के व्यापार पर नियंत्रण के उद्देश्य से ही अशोक ने कलिंग को जीता था।
- व्यापार में विलासिता की वस्तुओं की प्रधानता थी, **जैसे-** मोती रत्न व स्वर्ण, उत्तम किस्म के वस्त्र।
- इस समय तमिल वैश का व्यापार मित्र, रोम, चीन, मलयद्वीप समूह से होता था।
- प्रथम सदी में मिस्र के भाषिक हिप्पोलस में मानसून की खोज की। इसने भारत-रोम व्यापार की वृद्धि में योगदान दिया।
- **प्रमुख आयात-** सिक्का, शराब, वासी, सोना, चाँदी, सीसा जैसी विविध धातु, घोड़ा।
- **प्रमुख निर्यात -** सूती वस्त्र, मसाला, मूंगा पत्थर, हाथी दांत, इमारती लकड़ी, मोती, मयूर आदि।
- व्यापार संतुलन भारतीयों के पक्ष में था। विदेश से बुलियन का प्रभाव भारत में होता था।
- **दक्षिणी राज्य में कई प्रसिद्ध बंदरगाह थे।**
  - **चोल राज्य-** पुहार
  - **पांड्य राज्य -** शालीयूर
  - **चेर राज्य -** बंदर , तोण्डी
- **संगम युग के दौरान पश्चिमी तट पर स्थित प्रमुख बंदरगाह -** मुसिरी, टोंडी, नौरा
- **संगम युग के दौरान पूर्वी तट पर स्थित प्रमुख बंदरगाह -** कोरकाई और पुहार (कावेरीपट्टिनम)
- सगम साहित्य से ज्ञात होता है। कि यवन व्यापारी अपने जहाज में सोना भरकर मुजरिस बंदरगाह पर उतरते थे तथा उसके बदले कालीमिर्च तथा समुद्री रत्न ले जाते थे
- पेरीप्लस में भारत तथा रोम के बीच घनिष्ठ संबंधों का विवरण मिलता है। उसने पश्चिमी तट के बंदरगाह नौरा, मुशिरी, तोण्डी, नेलसिण्डा का उल्लेख किया है।
- सुदूर दक्षिण के कई स्थानों से रोमन सम्राट ऑगस्टस, नीरो और टाइवेरियस के स्वर्ण सिक्के मिले हैं। कुरूर (चेरों की प्राचीन राजधानी, इसे वंजीपुर भी कहते हैं) से रोमन सुराहियों के टुकड़े तथा सिक्के मिले हैं।
- अरिकामेडु (रोमनों ने इसे पैडुकै कहा) से रोम के दीपक के टुकड़े, काँच के कटोरे, मनके, वर्तन प्राप्त हुए हैं। एक मनके के उपर सम्राट ऑगस्टस का चित्र बना हुआ है।
- प्राचीन तमिल साहित्य में कुछ सिक्कों की जानकारी मिलती है, जिनमें प्रमुख हैं- काशु, कनम, पोन और वेनपोन।

धार्मिक व्यवस्था

- उत्तर व दक्षिण भारत के सांस्कृतिक संपर्क में संघर्ष के तत्व नहीं मिलते हैं। संगमकालीन दक्षिण भारत में ब्राह्मण अथवा वैदिक धर्म का प्रचलन दिखाई देता है।

❑ प्रमुख देवता

- **अगस्त्य :-** इन्होंने और कौण्डिन्य ऋषि ने दक्षिण में वैदिक धर्म को लोकप्रिय बनाया। वहाँ आज भी अगस्तेश्वर नाम से प्रसिद्ध अनेक मंदिर हैं, जहाँ शिव की मूर्तियाँ स्थापित है। एक परंपरा के अनुसार पांड्य राजवंश के पुरोहित अगस्त्य वंश के ही होते थे। एक परंपरा के अनुसार तमिल भाषा तथा व्याकरण की उत्पत्ति अगस्त्य ने की।
- **मुरूगन :-** तमिल देश का प्राचीन देवता, वाहन - मुर्गा, अस्त्र - बरछा (बेलन), पत्नी - कुरवस।
  - **अन्य नाम -** सुब्रमण्यम्, स्कंद कार्तिकेय, कुमार। ये शिकारियों के देवता थे। मुरूगन की उपासना पुजारी वेलनाइन तथा आम लोग मच्चलियन नामक नृत्यों से करते थे।
- **अन्य देवता :-** पदित्रपत्तु से पता चलता है कि विष्णु की पूजा तुलसी पत्र चढ़ाकर तथा घंटा बजाकर किया जाता था।
- कोरनावाई विजय की देवी थी। दक्षिण में परशुराम की माँ का नाम मरियम्मा था, जिसकी साम्यता शीतला देवी से की जाती है, जो चेचक की देवी थी।
- मणिमेखले में कपालिक शैव संन्यासियों की चर्चा है।
- बहेलिए कोर्रले की उपासना करते थे, जबकि पशुचारक कृष्ण की पूजा करते थे।
- ग्रामों में स्थानीय देवताओं की पूजा का प्रचलन था।
- देवता को प्रसन्न करने के लिए भेंड, मुर्गा, भैंस आदि की बलि भी चढ़ाई जाती थी।
- लोगों का कर्म, पुनर्जन्म और भाग्यवाद पर विश्वास था।
- इस काल में दक्षिण तक बौद्ध तथा जैन धर्मों का भी प्रचलन हो चुका था।
- नागार्जुन, गोली, घंटशाला, कांचीपुरम् बौद्ध धर्म के प्रमुख केन्द्र थे।

Note :-

- अहनानूरू के रचनाकार रूद्रसर्मन थे।
- मरुगरुप्पादय के रचनाकार नक्कीरर थे।

गुप्त काल

- मौर्य साम्राज्य केपतन के बाद लम्बे समय तक भारत एक शासन सूत्र के अन्तर्गत नहीं आ सका। कुषाणों एवं सातवाहनों ने स्थिरता लाने का प्रयास किया, किन्तु वे उत्तर एवं दक्षिण भारत तक ही सीमित रहे सम्पूर्ण भारत में स्थिरता न ला सके।
- इस राजनैतिक विघटन के समय भारत के तीन कोनों में तीन नये राजवंशों का उदय हुआ। मध्य प्रदेश के पश्चिमी भाग में नागशक्ति, दक्कन में वाकाटक तथा पूर्वी भारत में गुप्तवंश के शासक।
- गुप्त वंश का आरम्भिक राज्य उत्तर प्रदेश और बिहार में था। सम्भवतः गुप्त शासकों के लिए बिहार की अपेक्षा उत्तर प्रदेश अधिक महत्त्व वाला प्रान्त था, क्योंकि आरम्भिक गुप्त मुद्राएं और अभिलेख मुख्यतः उत्तर प्रदेश में पाये गये हैं।
- सम्भवतः गुप्त लोग कुषाणों के सामन्त थे। कुषाणों के बाद मध्य भारत का एक बड़ा भाग मुरुण्डों के आधिपत्य में आया और उन्होंने 250 ई. तक राज्य किया तत्पश्चात् गुप्त आधिपत्य शुरू हुआ।
- गुप्तों के उदय के पूर्व का काल राजनैतिक दृष्टि से विकेन्द्रीकरण तथा विभाजन का काल माना जाता है। गुप्तों की उत्पत्ति का प्रश्न विवादग्रस्त रहा है।
- कीर्तिकौमुदी नाटक में लिच्छिवियों को म्लेच्छ तथा चण्डसेन (चन्द्रगुप्त प्रथम) को कारस्कर कहा गया है। चन्द्रगोमिन के व्याकरण नामक ग्रन्थ में गुप्तों को जाट कहा गया है।
- **गुप्तों की उत्पत्ति के बारे में विद्वानों केभिन्न मत**
  - के.पी. जायसवाल - निम्न वर्ण से सम्बंधित
  - एलन, अल्तेकर, रोमिलाथापर - वैश्य
  - रमेशचन्द्र मजूमदार - क्षत्रिय
  - हेमचन्द्र राय चौधरी - ब्राह्मण

गुप्तकालीन स्रोत

- **गुप्तकालीन इतिहास के स्रोत को निम्नवत विभाजित किया जा सकता हैं -**
  - साहित्यिक स्रोत
  - पुरात्विक स्रोत
  - विदेशी विवरण

❑ साहित्यिक स्रोत

- विष्णु, वायु, ब्रह्मांड पुराण से भी गुप्तकालीन इतिहास की जानकारी मिलती हैं।
- **देवीचंद्रगुप्तम् :-** विशाखदत्त कृत (रामगुप्त व चंद्रगुप्त द्वितीय के विषय में कुछ सूचना)।
- **मृच्छकटिकम् (शूद्रक)** तथा **कामसूत्र (वात्सायन)** से भी गुप्तकालीन शासन व्यवस्था व नगरीय जीवन के बारे में पता चलता हैं।
- **कालिदास की रचनाओं :-** ऋतुसंहार, मेघदूत, कुमारसंभव, रघुवंश आदि से।

❑ पुरात्विक स्रोत

- **अभिलेख :-** समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति, चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के मेहरौली, उदयगिरी, साँची एवं गढवा अभिलेख, मंदसौर, विलसड़, स्कंदगुप्त के जूनागढ़ भीतरी अभिलेख, बुद्धगुप्त तथा भानुगुप्त एरण अभिलेख, आदि। इन सभी अभिलेखों की भाषा **संस्कृत** तथा तिथियाँ **गुप्त संवत्** है।
- **सिक्का :-** मुख्यतः स्वर्ण (दीनार), तांबे (माष्क) तथा कुछ रजत (रूपक) के।
- स्वर्ण सिक्कों का सबसे बड़ा ढेर बयाना (राजस्थान) से मिला। कुमारगुप्त के उत्तराधिकारियों के सिक्कों में मिलावट की मात्रा अधिक है, यानि सोना कम किंतु वजन ज्यादा। कह सकते हैं कि उत्तर गुप्तों के समय अर्थव्यवस्था पतनोन्मुख थी।
- **स्मारक :-** अनेक मंदिर, स्तंभ, मूर्तियाँ, चैत्यगृह प्राप्त हुए हैं, जिनसे तात्कालीन कला तथा स्थापत्य की उत्कृष्टता सूचित होती है। साथ ही धार्मिक स्थिति का भी ज्ञान होता है।
- **मंदिर :-** देवगढ़ का दशावतार मन्दिर (झाँसी, उत्तर प्रदेश), भीतरगाँव का मन्दिर (कानपुर, उत्तर प्रदेश), नचना कुठार का पार्वती मन्दिर (पन्ना, मध्य प्रदेश) व तिगवा का विष्णु मन्दिर (जबलपुर, मध्य प्रदेश) आदि विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण हैं।
- मंदिरों के अतिरिक्त सारनाथ, मथुरा, सुल्तानगंज, करमदण्डा, खोह, देवगढ़ आदि से बुद्ध, शिव व विष्णु की मूर्तियाँ मिली हैं।
- बाघ (ग्वालियर) तथा अजंता की गुफाओं (16 और 17) के चित्र गुप्त काल के ही माने जाते हैं।
- बाघ की चित्रकला लौकिक जीवन से संबंधित है, जबकि अजंता की चित्रों का विषय धार्मिक है।

❑ विदेशी विवरण

- **फो-क्यो-की :-** फाह्यान का विवरण (मध्य देश की जनता का वर्णन)।
- **सी-यू-की :-** ह्वेनसांग का विवरण, इसमें कुमारगुप्त प्रथम (शक्रादित्य), बुद्धगुप्त, बालादित्य आदि शासकों का जिक्र। उसके विवरण के अनुसार कुमारगुप्त ने ही नालंदा महाविहार की स्थापना करवाई। वह बालादित्य को हूण नरेश मिहिरकुल का विजेता बताता है।

गुप्तों के उदय के पूर्व का काल

- कृषाणों के पतन से लेकर गुप्तों के उदय के पूर्व का काल राजनैतिक दृष्टि से विकेन्द्रीकरण तथा विभाजन का काल माना जाता है।
- इस काल में अनेक छोटे-छोटे राज्य उभर कर आये जो निम्नलिखित हैं -

❑ नाग वंश

- मध्य भारत तथा उत्तर प्रदेश के भू-भाग पर।
- पुराणों के अनुसार पद्मावती, मथुरा, कालीपुर में नागकुलों का शासन था।
- इनमें पद्मावती (ग्वालिर के समीप) के नाग सर्वाधिक महत्वपूर्ण जो भारशिव कहलाते थे। इनका वाकाटकों के साथ वैवाहिक संबंध था।
- समुद्रगुप्त के समय यहाँ नागसेन का शासन था, जबकि मथुरा में गणपतिनाग का। इसी वंश का एक शासक भानुशिवनाग ने दस अश्वमेघ यज्ञ किये, जिसके नाम पर आगे बनारस में दशाश्वमेघघाट बना।

❑ वाकाटक

- सस्थापक - विष्णुवृद्धि
- यह राज्य महाराष्ट्र एवं मध्य भारत में विस्तृत था।
- विंध्यशक्ति ने भी पुष्यमित्रशुंग के समान कोई उपाधि नहीं ली। उसके बाद पुत्र प्रवरसेन प्रथम राजा बना, जिसने सम्राट की उपाधि ली तथा अनेक वैदिक यज्ञ किए। उसने चार अश्वमेघ यज्ञ किए।
- आगे वाकाटक शासन का विभाजन दो भागों में बरार और नागपुर में हुआ।
- नागपुर शाखा के रूद्रसेन द्वितीय का विवाह प्रभावती गुप्त से हुआ था।
- इसी शाखा के प्रवरसेन द्वितीय ने सेतुबंध नामक काव्यकृति की रचना की।
- संस्कृत रचना की वैदर्भी शैली का विकास इसी समय हुआ।
- अजंता की कुछ गुफाएँ तथा भित्तिचित्र वाकाटक राजा के संरक्षण में बने है।
- छठी सदी के अंत तक बदामी के चालुक्यों द्वारा इनका अंत हो गया।

❑ पल्लव

- राजधानी - कांची
- प्रारंभ में ये भी वाकाटकों के समान सातवाहनों के अधीनस्थ शासक थे।
- प्रारंभिक राजाओं में स्कंदवर्मन का नाम उल्लेखनीय है।
- समुद्रगुप्त के समय में पलल्व शासक विष्णुगोप था।

❑ **ईक्ष्वाकु**

- **संस्थापक -** श्रीशांतमूल,
- कृष्णा-गुण्टुर क्षेत्र पर शासन करते थे तथा बौद्ध धर्म के पोषक थे।

❑ **कदम्ब**

- **संस्थापक -** मयूरशर्मन (मानव्यगोत्रीय ब्राह्मण)
- **राजधानी -** बनवासी
- इसने पल्लवों को पराजित कर बनवासी को अपनी राजधानी बनाया।
- अपनी विजयों के उपलक्ष्य में 18 बार अश्वमेघ यज्ञ (सर्वाधिक बार) किया।

गुप्तकालीन शासक

❑ **श्रीगुप्त गुप्तों**

- प्रथम ऐतिहासिक शासक है। इसका कोई भी लेख अथवा सिक्का नहीं मिला है।
- गुप्त वंशावली की चर्चा कुमारगुप्त के बिल्सड स्तम्भ लेख से मिलती है।
- इन लेखों में गुप्त वंश का प्रथम शासक श्रीगुप्त को बताया गया है।
- प्रभावती गुप्ता के पूना ताम्रपत्र अभिलेख में गुप्तों के आदिपुरुष श्रीगुप्त तथा इनके पुत्र घटोत्कच गुप्त का उल्लेख किया गया है।
- इत्सिंग को यात्रा विवरण के अनुसार, श्रीगुप्त ने मगध में चीनी यात्रियों के लिए मन्दिर का निर्माण करवाया और उसे 24 गाँव दान में दिए थे।
- श्रीगुप्त ने महाराज की उपाधि धारण की थी।

❑ **घटोत्कच**

- इसका भी कोई लेख व सिक्का नहीं मिला है।
- श्रीगुप्त के पश्चात् उसका पुत्र घटोत्कच गुप्त वंश का शासक बना।
- अपवाद स्वरूप स्कन्दगुप्त के सुपिया लेख में घटोत्कच को गुप्त वंशावली में प्रथम शासक बताया गया है।
- प्रभावती गुप्ता के पूना एवं रिद्धपुर ताम्रपत्र लेख में घटोत्कच को गुप्त वंश का प्रथम शासक बताया गया है।
- घटोत्कच ने ही महाराज की उपाधि धारण की थी।
- श्रीगुप्त तथा घटोत्कच दोनों ही पूर्ण स्वतंत्र शासक नहीं थे।

❑ **चंद्रगुप्त प्रथम (लगभग 319-335 ई.)**

- यह गुप्त वंश का वास्तविक संस्थापक था।
- **उपाधि - महाराजाधिराज**
- घटोत्कच के पश्चात् चन्द्रगुप्त प्रथम गुप्तवंश का शासक बना।
- यह गुप्त वंश का पहला प्रसिद्ध शासक हुआ।
- इसके राज्यारोहण की तिथि 319 ई. थी तथा इसे गुप्त सम्वत् का आरम्भ माना गया है
- चन्द्रगुप्त प्रथम ने लिच्छवि राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह किया और वैशाली राज्य को प्राप्त किया।
- क्षत्रिय कुल में विवाह करने से चन्द्रगुप्त प्रथम की प्रतिष्ठा में बढ़ोतरी हुई। इसकी पुष्टि निम्न तथ्यों से होती है
- पहला, स्वर्ण सिक्कों में चन्द्रगुप्त कुमार देवी प्रकार, लिच्छवि प्रकार, राजा-रानी प्रकार व विवाह प्रकार इत्यादि है।
- दूसरा, समुद्रगुप्त के प्रयाग अभिलेख में उसे लिच्छवि दौहित्र कहा गया है।
- गुप्तवंश में सर्वप्रथम चन्द्रगुप्त प्रथम ने रजत (चाँदी) मुद्राओ को जारी किया था। वायु पुराण में इसकी राज्य सीमा का चन्द्रगुप्त प्रथम ने साकेत (अयोध्या), प्रयाग (प्रयागराज) और मगध पर शासन किया था।
- चन्द्रगुप्त प्रथम ने अपने स्वर्ण सिक्कों पर कुमार देवी का नाम उत्कीर्ण करवाया और इसके पृष्ठ भाग पर लिच्छवयः (लिच्छवि) खुदवाया।

❑ **काच**

- कुछ काचनामधारी सिक्कों के मिलने से यह अनुमान लगाया जाता है कि चन्द्रगुप्त प्रथम के बाद यह शासक बना होगा। कुछ विद्वान इसका संकरण समुद्रगुप्त से ही करते हैं। काच के सिक्कों पर 'सर्वराजोच्छेता' लिखा है।

❑ **समुद्रगुप्त**

- चन्द्रगुप्त एवं कुमार देवी के पुत्र समुद्रगुप्त को स्मिथ महोदय ने **"भारत का नेपोलियन"** की संज्ञा दी है।
- यह गुप्त शासकों में सबसे महान था।
- इसने उत्तर एवं दक्षिण भारत के अनेक राज्यों को पराजित किया।
- **हरिषेण** द्वारा रचित **प्रयागप्रशस्ति** से इसकी विजयों की सूचना मिलती है।
  - सबसे पहले इसने आर्यावर्त के 9 राज्यों को अपने क्षेत्र में मिला लिया।
  - इसने आर्यावर्त के राज्यों को दो बार में जीता था।
  - इसकी आर्यावर्त विजय को आर्यावर्त राज्य **प्रसभोद्धरण** कहा गया।
  - इसने दक्षिणापथ के बारह राज्यों को भी पराजित किया था।
  - इसकी इस विजय को **धर्म विजय** कहा जाता है।
  - इन बारह राज्यों के प्रति स्नेह **ग्रहणमोक्षानुग्रह** की नीति अपनायी थी।
  - समुद्रगुप्त ने मध्य भारत के क्षेत्रों में आटविक राज्यों को भी अपने क्षेत्र में मिला लिया।
  - प्रयाग प्रशस्ति से सीमावर्ती राज्यों के साथ समुद्रगुप्त के सम्बन्धों पर प्रकाश पड़ता है
  - इसमें समतट (पूर्वी बंगाल), डवाक् (असम), कामरूप (असम), कर्तृपुर एवं नेपाल के प्रति **सर्वकरादानाज्ञाकरण** की नीति की जानकारी मिलती है
  - इसके समय देवपुत्रषहानुषाहि, शक, मुरूण्ड, एवं सिंहल के सम्बन्ध में आदि विदेशी राज्य थे।
  - इनके प्रति समुद्रगुप्त द्वारा आत्मनिवेदन **कन्योपायन** नीति अपनाने की जानकारी प्रयाग प्रशस्ति से मिलती है।
  - इसके समय सिंहल का शासक मेघवर्मन था जिसने समुद्रगुप्त से गया में एक विहार बनवाने की अनुमति मांगी थी। संभवतः सिंहल समुद्रगुप्त के अधीन नहीं था।
  - विजयों के पश्चात् समुद्रगुप्त ने अश्वमेद्य प्रकार के सिक्के चलवाए।
  - इसके अतिरिक्त उसके वीणावादन प्रकार के सिक्कों से संगीत प्रेमी होने की जानकारी मिलती है।

- **Note :-**
- **समुद्रगुप्त की विजय नीति**
- **ग्रहणमोक्षानुग्रह-** भारत के 12 राजाओं के संघ को पराजित कर उन्हें पुनः उनके राज्य सौंप दिये।
- **आत्मनिवेदन, कन्योपायन** व **गुरुत्मन्दक** - विदेशी शासकों ने समुद्रगुप्त की अधीनता स्वीकार करते हुए आत्मनिवेदन (प्रार्थना), कन्योपायन (वैवाहिक सम्बन्ध) तथा गुरुत्मन्दक (मुद्रा द्वारा शासन करना) की विधि अपनाई।
- **प्रसभोद्धरण नीति-** मगध के आस-पास के राज्यों को हराकर उन्हें अपने राज्य में मिला लेना.
- **सर्वकरदानाज्ञाकरण नीति-** सीमांत क्षेत्रों के लिए अपनाई जाने वाली नीति.
- **परिचारिकीकृत नीति-** जनजातीय राज्यों को सेवक बनाना.

❑ **रामगुप्त**

- विशाखदत्त कृत देवीचन्द्रगुप्तम् नामक नाटक में चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य से पूर्व रामगुप्त का गुप्त शासक के रूप में वर्णन किया गया है।
- इसके अनुसार शकों के आक्रमण के कारण रामगुप्त ने अपनी पत्नी ध्रुवदेवी को शकों को सौंपकर शान्ति स्थापित करने का विचार किया।
- इससे क्षुब्ध होकर रामगुप्त के छोटे भाई चन्द्रगुप्त ने ध्रुवदेवी का वेश बनाकर शकराज की हत्या कर दी।
- इसके उपरान्त उसने रामगुप्त की भी हत्या कर ध्रुवदेवी से विवाह कर लिया।

- यद्यपि गुप्त अभिलेखों से रामगुप्त की ऐतिहासिकता की जानकारी नहीं मिलती। शकों के समक्ष रामगुप्त के समर्पण और चन्द्रगुप्त के सत्ता अधिग्रहण की घटना की चर्चा हर्षचरित (बाणभट्ट), काव्यमीमांसा (राजशेखर) तथा राष्ट्रकूट शासक गोविन्द चतुर्थ के सांगली ताम्रलेख में भी मिलती है।

❑ **चन्द्रगुप्त द्वितीय 'विक्रमादित्य' (375 ई. - 415 ई.)**

- इसे देवराज या देवगुप्त भी कहा गया है।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय को 'विक्रमाडक' या विक्रमादित्य कहा जाता है।
- इसकी माता का नाम दत्तदेवी था।
- इसका काल गुप्तकाल का स्वर्णयुग माना जाता है।
- **वैवाहिक सम्बन्ध –**
  - चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने वैवाहिक सम्बन्धों और विजयों के द्वारा अपने साम्राज्य की सीमा बढ़ायी।
  - इसने नागवंश की राजकुमारी कुबेरनागा से विवाह किया।
  - इससे एक कन्या प्रभावती गुप्ता उत्पन्न हुई।
  - वाकाटकों का सहयोग प्राप्त करने के लिए चन्द्रगुप्त ने अपनी पुत्री प्रभावती गुप्ता का विवाह वाकाटक नरेश **रुद्रसेन द्वितीय** के साथ कर दिया।
  - इसके अतिरिक्त उसने कदम राजवंशी कन्या का विवाह अपने पुत्र कुमारगुप्त के साथ किया।
  - इन वैवाहिक सम्बन्धों से गुप्तो की शक्ति एवं प्रतिष्ठा दोनों को लाभ हुआ।
- दक्षिण दिल्ली में मेहरौली स्थित लोह स्तम्भ में चन्द्र नामक शासक की विजयों का उल्लेख है।
- इस चन्द्र की पहचान चन्द्रगुप्त द्वितीय से की जाती है।
- इस लेख में राजा चन्द्र के द्वारा सप्त सिन्धु पार कर बाहलीकों के विरुद्ध और पूर्व में बंग शासकों के विरुद्ध विजय का वर्णन किया गया है।
- बंग की पहचान बंगाल तथा बाहलीकों की पहचान बल्ख से की जाती है।
- वाकाटकों के सहयोग से चन्द्रगुप्त द्वितीय ने उज्जयिनी के अन्तिम शक शासक रुद्रसिंह तृतीय को 409 ई. में पराजित कया।
- इस विजय के उपलक्ष्य से उसने मालवा क्षेत्र में व्याघ्र शैली के चांदी के सिक्के चलाए।
- ये सिक्के उसकी शकों पर विजय के सूचक हैं।
- शक विजय के उपलक्ष्य में ही उसने **विक्रमादित्य** की उपाधि धारण की।
- **नवरत्न**
  - चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के दरबार में नौ विद्वानों की एक मण्डली निवास करती थी। जिसे नवरत्न कहा गया।
  - इसमें कालिदास, धन्वन्तरि, बाराहमिहिर, अमरसिंह, क्षपणक, शंकु, बेतालभट्ट, घटकर्पर, वररुचि जैसे विद्वान थे।
  - ये नवरत्न सम्भवतः उज्जैन दरबार को सुशोभित करते थे जो विक्रमादित्य की दूसरी राजधानी थी।
  - चंद्रगुप्त द्वितीय कला एवं साहित्य का संरक्षक था। उसके दरबार में 'नवरत्न' रहते थे-
  - कालिदास - इन्हें 'भारत का शेक्सपियर' भी कहा जाता है।
    - धन्वन्तरि - चिकित्सक
    - क्षपणक - ज्योतिषी
    - अमर सिंह - कोषकार
    - बेतालभट्ट - जादूगर
    - शंकु - वास्तुकार
    - घटकर्पर - कूटनीतिज्ञ
    - वाराहमिहिर- खगोलविज्ञानी व ज्योतिषी
    - वररुचि - वैयाकरण
- चन्द्रगुप्त द्वितीय के काल में चीनी यात्री फाह्यान भारत आया।
- चीनी भाषा में "फा" का अर्थ होता है धर्म और "हियान" का अर्थ है आचार्य, अतैव फाह्यान नाम से तात्पर्य है "धर्माचार्य"।
- फाह्यान के बाल्यकाल का नाम कुड था। उसके द्वारा छोड़ा गया भ्रमण-वृतान्त चन्द्रगुप्त कालीन भारत की सांस्कृतिक दशा का सुन्दर निरूपण करता है।
- पाटलिपुत्र में उसने अशोक का राजमहल देखा तथा इससे इतना प्रभावित हुआ कि उसे देवताओं द्वारा निर्मित बताया।
- **सिक्के**
  - चंद्रगुप्त द्वितीय ने सोने, चांदी तथा तांबे के विभिन्न प्रकार के सिक्के चलाए।
  - चन्द्रगुप्त ने स्वर्ण, रजत एवं ताम्र मुद्राएँ जारी की।
  - इस काल में स्वर्ण सिक्कों को दीनार तथा रजत सिक्कों को रूप्यक या रूपक कहा जाता था।
  - चन्द्रगुप्त की स्वर्ण मुद्राओं का छत्रधारी प्रकार के सिक्कों पर विक्रमादित्य उपाधि अंकित है, विवरण इस प्रकार है
  - सिंह-निहन्ता प्रकार के सिक्कों के मुख भाग पर सिंह को धनुष बाण अथवा कृपाण में मारते हुए राजा की आकृति उत्कीर्ण है।
  - चंद्रगुप्त द्वितीय ने 8 प्रकार के स्वर्ण सिक्के जारी किए- धनुर्धारी प्रकार , छत्रधारी प्रकार , पर्यंक प्रकार , सिंह-निहन्ता , अश्वारोही प्रकार ,पर्यंक स्थिति राजा-रानी प्रकार , ध्वजधारी प्रकार , चक्र विक्रम प्रकार
  - तांबे के सिक्कों के मुख भाग पर राजा की आवक्ष आकृति तथा पृष्ठ भाग पर गरुड़ की आकृति मिलती है।
- **प्रमुख अधिकारी**
  - **वीरसेन 'शाव'**
    - यह चंद्रगुप्त द्वितीय का संधिविग्रहिक व सचिव था।
    - इसका उल्लेख उदयगिरि गुहालेख में मिलता है।
    - यह व्याकरण, न्याय एवं मीमांसा का विद्वान था।
  - **गोविंद गुप्त**
    - यह चंद्रगुप्त द्वितीय का पुत्र एवं तीरमुक्ति प्रदेश का राज्यपाल था।
    - इसका उल्लेख बसाढ़ मुद्रालेख में मिलता है।
  - **आम्रकार्दव**
    - यह चंद्रगुप्त द्वितीय का प्रधान सेनापति था।

❑ **कुमारगुप्त 'महेन्द्रादित्य' (415-455ई.)**

- **उपाधि** - महेन्द्रादित्य
- मुद्राओं पर अंकित उसकी उपाधियां' श्री महेन्द्र', 'महेन्द्रादित्य', 'महेन्द्र सिंह', 'अश्वमेध महेन्द्र' आदि।
- उसके स्वर्ण सिक्कों पर उसे 'गुप्तकुलामल चंद्र' एवं 'गुप्तकुल व्योमशशि' कहा गया है।
- कुमारगुप्त प्रथम को 'गढ़वा लेख' में 'परम भागवत' कहा गया है।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग ने उसका उल्लेख 'शक्रादित्य' के नाम से किया है। (नालन्दा महाविहार बनवाने के सन्दर्भ में)
- 'शक्रादित्य' को कुमारगुप्त की उपाधि 'महेन्द्रादित्य' का समानार्थी माना गया है।
- संभवतः कुमारगुप्त प्रथम ने कोई नवीन विजय नहीं की, किंतु उत्तराधिकार में प्राप्त पैतृक साम्राज्य को अक्षुण्ण रखा।
- कुमारगुप्त, चन्द्रगुप्त की पत्नी ध्रुवदेवी से उत्पन्न पुत्र था।
- कुमारगुप्त के समय में गुप्तकालीन सर्वाधिक अभिलेख प्राप्त हुए हैं। इसके समय में गुप्तकालीन मुद्राओं का सबसे बड़ा ढेर बयाना मुद्राभांड (राजस्थान के भरतपुर जिले में) से प्राप्त हुआ है, जिसमें 623 मुद्राएं मिली हैं।

- इनमें मयूर शैली की मुद्राएँ सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं। कुमारगुप्त प्रथम के अन्तिम दिनों में पुष्यमित्र नामक जातियों ने आक्रमण किया।
- कुमारगुप्त के पुत्र स्कन्दगुप्त पुष्यमित्र जाति को पराजित करने में सफल हुआ।
- कुमारगुप्त ने ही **नालन्दा विश्वविद्यालय** की स्थापना कार्रवाई ।
- कुमारगुप्त के विलसड अभिलेख से कुमारगुप्त प्रथम तक गुप्तों की वंशावली प्राप्त होती है।
- कुमारगुप्त ने स्वर्ण, रजत तथा ताम्र मुदाएँ जारी कीं। मध्य भारत में रजत सिक्कों का प्रचलन इसी के काल में हुआ। उसने मयुर प्रकार एवं अश्वमेध प्रकार की मुद्रा चलायी।

- **Note:-**
- कुमारगुप्त के मन्दसौर अभिलेख की रचना वत्सभट्टि ने की थी। मन्दसौर पश्चिमी मालवा में शिवना नदी के किनारे स्थित है। इसी स्थान को आज दसोर भी कहते है। इसका प्राचीन नाम दशपुर था। यह स्थान पहले सिन्धिया रियासत में पड़ता था। इस प्रशस्ति के प्रथम तीन श्लोकों में सूर्य की स्तुति की गई है तथा उसके बाद केन्द्रीय गुजरात (लाट विषय) के रमणीक वर्णन से यह प्रारम्भ होता है। इसमें तन्तुवाय श्रेणी का विस्तार से उल्लेख मिलता है। ये लोग अपने पैतृक व्यवसाय के अतिरिक्त विविध कलाओं में प्रवीण थे। इन दस्तकारों ने अपने शिल्प से अर्जित धन समूह से विलक्षण भव्य सूर्य मंदिर का निर्माण करा दिया।

❑ **स्कन्दगुप्त 'क्रमादित्य' (455 ई. - 467ई.)**

- यह कुमारगुप्त का पुत्र था।
- हूण आक्रमणकारियों से लड़ते समय इसे अपने पिता के निधन की सूचना मिली इसने मध्यएशिया के हूणों के आक्रमण को विफल किया।
- हूणों पर स्कन्दगुप्त की सफलता का गुणगान इसके जूनागढ़ अभिलेख तथा भितरी स्तम्भ लेख में प्राप्त होता है।
- हूण मध्य एशिया की एक बर्बर जाति थी।
- इनका प्रथम आक्रमण स्कन्दगुप्त के समय में हुआ।
- इसका नेता खुशनवाज था।
- हूणों (म्लेच्छों) पर विजय का साहित्यिक प्रमाण 'चंद्रगर्भ परिपृच्छ' ग्रंथ से मिलता है। हूणों को निर्णायक रूप से पराजित करने के कारण स्कंदगुप्त देश-रक्षक के रूप में विख्यात हुआ।
- इसी संदर्भ में उसे 'गुप्त वंश का एकमात्र वीर' भी कहा गया है।
- बौद्ध ग्रंथ 'आर्यमन्जुश्रीमूलकल्प' में स्कन्दगुप्त को 'श्रेष्ठ, बुद्धिमान तथा धर्मवत्सल शासक' कहा गया है।
- स्कन्दगुप्त न केवल एक योग्य सैन्य संचालक था अपितु एक आदर्श प्रशासक भी था। उसके जूनागढ़ अभिलेख से पता चलता है कि उसने सुराष्ट्र प्रांत में पर्णदत्त को अपना राज्यपाल नियुक्त किया।
- इस लेख में गिरनार के प्रशासक चक्रपालित द्वारा सुदर्शन झील के बाँध के पुनर्निर्माण का वर्णन है।
- स्कन्दगुप्त की उपाधि शक्रादित्य थी जैसा कि कहोम अभिलेख से विदित है।
- ह्वेनसांग ने नालन्दा संघाराम को बनवाने वाले शासकों में शक्रादित्य के नाम का उल्लेख किया है जिससे स्कन्दगुप्त द्वारा नालंदा संघाराम को सहायता देने का प्रमाण मिलता है।
- स्कन्दगुप्त ने चीन के साथ मित्रतापूर्ण सम्पर्क बनाए रखा तथा 466 ई. में एक राजदूत को चीन के सांग सम्राट के दरबार में भेजा।
- उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले में स्थित भीतरी अभिलेख में पुष्यमित्रों और हूणों के साथ स्कंदगुप्त के युद्ध का वर्णन मिलता है।
- स्कन्दगुप्त ने वृषभ शैली के नए सिक्के जारी किए थे।
- स्कन्दगुप्त के अन्तिम समय में गुप्तवंश पतन की ओर अग्रसर होने लगा। इस समय के स्वर्ण सिक्कों में मिलावट भी बढ़ने लगी। परवर्ती गुप्तों में पहला शासक पुरुगुप्त था।

स्कंदगुप्त के अभिलेख	
स्तंभ	**स्थान**
भितरी स्तंभ लेख	गाजीपुर उ.प्र.
जूनागढ़ अभिलेख	सौराष्ट्र, गुजरात
बिहार स्तंभलेख	पटना, बिहार
सूपिया अभिलेख	रीवां, म.प्र.
गढ़वा शिलालेख	प्रयागराज उ.प्र.
कहौम लेख	गोरखपुर उ.प्र.
इंदौर ताम्रपत्र	बुलंदशहर उ.प्र.

❑ **पुरुगुप्त (467 ई. - 73 ई.)**

- इसने वैष्णव धर्म को छोड़कर बौद्ध धर्म अपना लिया।
- इसकी उपाधि 'प्रकाशादित्य' थी। यह संभवतः सर्वाधिक वृद्ध अवस्था में राजा बना।
- यह स्कंदगुप्त के बाद शासक बना।
- यह कुमारगुप्त प्रथम एवं अनन्तदेवी का पुत्र था।
- परमार्थ कृत 'वसुबन्धु जीवनवृत्त' के अनुसार, पुरुगुप्त बौद्ध मतानुयायी था।

❑ **बुधगुप्त (467 ई. - 95 ई.)**

- ह्वेनसांग ने इसे 'शक्रादित्य' का पुत्र बताया है, जबकि नालन्दा से प्राप्त मुहर (Seal) में इसे पुरुगुप्त का पुत्र बताया गया है।
- बुधगुप्त के लेख सारनाथ एवं एरण से मिले हैं।
- उपाधि - 'परममट्टारक महाराजाधिराज', 'श्रीविक्रम' 'परमदैवत'
- ह्वेनसांग के अनुसार, बुधगुप्त ने नालन्दा महाविहार को धन दान दिया था।
- **इसके समय में गुप्त साम्राज्य तीन भागो बटा था -**
  - मगध क्षेत्र- शासक नरसिंह गुप्त बालादित्य ।
  - मालवा क्षेत्र- शासक भानुगुप्त
  - बंगाल क्षेत्र- शासक वैन्यगुप्त
  - इसका साम्राज्य हिमालय से लेकर नर्मदा तथा मालवा से लेकर बंगाल तक था।

❑ **नरसिंह गुप्त 'बालादित्य' (495 ई. - 510 ई.)**

- इसकी मुख्य सफलता हूण शासक मिहिरकुल को हराना था।
- नरसिंह गुप्त के ही काल में बसुबन्धु (बौद्ध विद्वान) का निधन हुआ।
- यह बसुबन्धु का शिष्य था।
- नालन्दा मुद्रालेख' में उसे 'परमभागवत' कहा गया है।
- नरसिंह गुप्त की 'धनुर्धारी प्रकार' की मुद्राएं मिलती हैं।
- ह्वेनसांग ने भी इसके द्वारा मिहिरकुल को पराजित करके बंदी बनाए जाने का उल्लेख किया है।
- भीतरी मुद्रालेख के अनुसार, इसकी माता 'महादेवी चंद्रदेवी' थी।

❑ **भानुगुप्त**

- इसके समय के एरण अभिलेख से पता चलता है कि इसका मित्र गोपराज, हूणों के विरुद्ध भानुगुप्त की ओर से लड़ता हुआ मार डाला गया तथा उसकी पत्नी अग्नि में जल मरी। यह सती प्रथा का प्रथम अभिलेखीय प्रमाण है।
- भानुगुप्त के बाद वैन्युगुप्त, कुमारगुप्त द्वितीय एवं विष्णुगुप्त शासक हुए। विष्णुगुप्त इस वंश का अन्तिम शासक था।
- गुप्तों के पतन के साथ-साथ नए वंशों का उदय प्रारम्भ हुआ।

❑ **हुण शासन**

- भारत पर हूणों का शासन लगभग दूसरी सदी में शुरू हुआ था और 670 ईस्वी में खत्म हो गया। हूणों ने भारत पर कई बार आक्रमण किया और गुप्त साम्राज्य को कमज़ोर किया। हूणों के आक्रमणों और युद्धों में हार गुप्त साम्राज्य के पतन का मुख्य कारण था।
- हूणों के नेता तोरमाण ने स्कंदगुप्त के शासनकाल में भारत पर आक्रमण किया था।
- हूणों के प्रतापी राजा तुरमान शाह ने गुप्त साम्राज्य के पश्चिमी भाग पर कब्ज़ा कर लिया था।
- तोरमाण का पुत्र मिहिरकुल था। मन्दसौर अभिलेख के अनुसार, लगभग 552 ई. में मिहिरकुल को यशोवर्मन ने पराजित किया था।
- हूणों को भारतीय राजकुमारों के एक गठबंधन ने हराया था. इस गठबंधन में मालवा के राजा यशोधर्मन और गुप्त सम्राट नरसिंहगुप्त शामिल थे।
- हूणों को भारत से बाहर निकालने के बाद, यशोधर्मन ने 530 और 540 ईस्वी के बीच भारतीय उपमहाद्वीप के एक बड़े हिस्से पर शासन किया।
- मिहिरकुल को बौद्ध धर्म का विरोधी तथा मूर्तिभंजक कहा गया है।
- बौद्ध साहित्य में हूणों के नेता मिहिरकुल को बड़ा ही अत्याचारी और निर्दय बताया गया हैं।
- हूणों के सिक्कों पर बाख्त्री भाषा में 'अलकोन्नो' लिखा होता था।
- हूण शासकों को बुद्ध का विरोधी बताया गया है। सम्भवतः मिहिरकुल की पराजय के साथ भारत में हूणों की प्रभुता समाप्त हो गई।

गुप्तकालीन प्रशासन

- गुप्त राजाओं का शासन काल भारतीय इतिहास में 'स्वर्णयुग' के नाम से विख्यात है। वस्तुतः इस समय सभ्यता और संस्कृति के प्रत्येक क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति हुई।

❑ केंद्रीय प्रशासन

- गुप्त शासन का केन्द्र बिन्दु राजा था। गुप्त शासन महाराजाधिराज और परमभट्टारक जैसी भारी भरकम उपाधियाँ धारण करते थे।
- राजा की सहायता के लिए एक मंत्रिपरिषद् होती थी, जिसके ज्यादातर सदस्य उच्च वर्ग के होते थे। इन्हें अमात्य कहा जाता था।
- मंत्रियों का पद अधिकांशतः आनुवांशिक होता था।
- एक ही मंत्री के पास कई विभाग होते थे।
- मंत्रियों का वेतन नकद एवं भू-राजस्व के रूप में दिया जाता था।

प्रमुख अधिकारी

अधिकारी	कार्य
कुमारामात्य	यह राज्य के उच्च पदाधिकारियों का विशिष्ट वर्ग था अथवा प्रान्तीय पदाधिकारी
महासेनापति , महाबलाधिकृत	सेना का सर्वोच्च अधिकारी
महादण्डनायक	युद्ध एवं न्याय का मंत्री
महासन्धिविग्रहिक	शान्ति एवं वैदेशिक नीति का प्रधान।
दण्डपाशिक	पुलिस विभाग का प्रमुख अधिकारी।
चाट और भाट	पुलिस विभाग का साधारण कर्मचारी।
ध्रुवाधिकरण	भूमिकर वसूलने वाला प्रमुख अधिकारी।
महाक्षपटलिक	राज्य के प्रमुख दस्तावेजों तथा राजाज्ञाओं को लिपिबद्ध करने वाला अधिकारी।
विनयस्थिति स्थापक	यह धर्म सम्बन्धी मामलों का प्रधान अधिकारी
करणिक	भूमि आलेखों को सुरक्षित रखने वाला अधिकारी

- Note:-
- भूमिदान का सबसे प्राचीन अभिलेखीय प्रमाण पहली शताब्दी ई.पू. से मिलता है।
- पाँचवीं शताब्दी ई.पू. से भूमिदान की प्रवृत्ति जोर पकड़ने लगी और 6ठीं शताब्दी ई. तक आते-आते यह पूर्णता को प्राप्त हो गई। अब सामंत बिना राजा की अनुमति के ही भूमिदान सातवाहन अभिलेख करने लगे।
- इस प्रक्रिया को सामंतवाद के उदय का प्रमुख कारण माना है। इस प्रकार गुप्त काल के अन्तिम समय (6वीं शताब्दी) में सामंतवाद का उदय हुआ।

❑ प्रान्तीय प्रशासन

- प्रशासन की सुविधा के लिए गुप्त साम्राज्य अनेक प्रान्तों में विभाजित किया
- प्रांतो को ही देश,अवनि और मुक्ति कहा जाता था।
- मुक्ति के शासक को उपरिक कहा जाता था।
- इस पद पर राजकुमार अथवा राजकुल से सम्बन्धित व्यक्तियों की ही नियुक्ति की जाती थी।
- सीमान्त प्रदेशों के शासक गोप्ता कहलाते थे।

❑ जिला प्रशासन

- मुक्ति का विभाजन अनेक जिलों में हुआ जिसे 'विषय' कहा जाता था।
- इसका प्रधान अधिकारी विषयपति होता था।
- विषयपति की सहायता के लिए विषय परिषद् होती थी।
- इसके सदस्य विषय महत्तर कहे जाते थे।
- **प्रशासनिक कार्यों में 'विषयपति' की सहायता हेतु चार सदस्य होते थे -**
  - नगरश्रेष्ठि - नगर के व्यापारियों तथा बैंकरों की श्रेणियों का प्रमुख
  - सार्थवाह - व्यापारियों की श्रेणी का प्रमुख
  - प्रथम कुलिक - शिल्पियों का प्रमुख
  - प्रथम कायस्थ - वर्तमान समय के मुख्य सचिव जैसा पदाधिकारी

❑ नगर प्रशासन

- प्रमुख नगरों का प्रबन्ध नगरपालिकाएँ करती थीं।
- नगर के प्रधान अधिकारी को पुरपाल कहा जाता था।

❑ स्थानीय प्रशासन

- जिले> तहसील> पेठ > ग्राम
- ग्राम प्रशासन की सबसे छोटी इकाई थी।
- इसका प्रशासन ग्राम सभा द्वारा चलाया जाता था।
- ग्राम का प्रमुख अधिकारी प्रामिक या ग्रामपति कहलाता था।
- ग्राम सभा के कुछ पदाधिकारियों के नाम इस प्रकार मिलते हैं।
  - महत्तर, अष्ट कुलाधिकारी, प्रामिक एवं कुटुम्बिन।

❑ सैन्य प्रशासन

- गुप्तकाल में राजा के पास स्थायी सेना होती थी।
- **महाबलाधिकृत** - सैन्य प्रशासन में सेना का सर्वोच्च अधिकारी
- **सेना के चार प्रमुख अंग थे** -पदाति, रथारोही, अश्वारोही तथा गजसेना।
- पुलिस विभाग के पदाधिकारियों में उपरिक, दशापराधिक, चौरोद्धरणिक, दण्डपाशिक, अंगरक्षक आदि प्रमुख पद थे।
- गुप्तचर कर्मचारी को दूत तथा पुलिस के छोटे कर्मचारी को चाट और भाट कहा जाता था।
- **रणभाण्डागरिक**- सैन्य सामान की व्यवस्था करने वाला

न्याय प्रशासन

- नारद और बृहस्पति स्मृतियों से यह ज्ञात होता है कि गुप्त युग में न्याय व्यवस्था अत्यधिक विकसित थी।
- **इस काल में न्यायालय चार श्रेणियों (वर्गों) में विभक्त थे-**
  - राजा का न्यायालय
  - पूग

- श्रेणी
- कुल।

- इस युग में न्याय व्यवस्था कठोर नहीं थी।
- पहली बार गुप्त युग में ही दीवानी तथा फौजदारी कानून भली-भांति परिभाषित और पृथक्कृत हुए।
- गुप्तकालीन अभिलेखों में न्यायधीशो को महादण्डनायक, दण्डनायक, सर्वदण्डनायक आदि कहा गया है।
- व्यापारियों तथा व्यवसायियों की श्रेणियों के अपने अलग न्यायालय होते थे जो अपने सदस्यों के विवादों का निपटारा करते थे।
- स्मृति ग्रंथों में 'पूग' तथा 'कुल' नामक संस्थाओं का उल्लेख है जो अपने सदस्यों के विवादों का फैसला करते थे।
- 'पूग' नगर में रहने वाली विभिन्न जातियों की समिति होती थी जबकि 'कुल' समान परिवार के सदस्यों की समिति थी।
- चोरी, व्यभिचार को फौजदारी विधि में तथा संपत्ति संबंधी विविध विवादों को दीवानी विधि में सम्मिलित किया गया।
- दंड विधान मानवीय था। मृत्युदंड प्रचलन में नहीं था।

गुप्तकालीन अर्थव्यवस्था

❑ **भू-राजस्व व्यवस्था** –

- गुप्तकाल में राजा भूमि का मालिक था।
- वह भूमि से उत्पन्न का 1/6 से लेकर 1/4 भाग तक लेता था।
- इस कर को 'भाग' कहा जाता था।
- गुप्त काल में राजा को दिये जाने वाले उपहारों को भोग कहा गया है।
- इस काल में दो अन्य करो उदंग और उपरिकर का उल्लेख मिलता है।
- 'उद्रंग' स्थाई काश्तकारों पर लगाया जाने वाला भूमिकर था जबकि 'उपरिकर' अस्थाई कृषकों पर लगने वाला कर था।
- भूमिकर संग्रह करने के लिए ध्रुवीकरण तथा भूमि आलेखों को सुरिक्षत करने के लिए महाक्षपटलिक और करणिक नामक पदाधिकारी थे।
- **कुछ अन्य कर** - विष्टि (बेगार या निःशुल्क श्रम), बलि (धार्मिक कर), शुल्क (चुंगीकर)।
- **भूमि माप की इकाइयाँ** - संक्षेप में गुप्तकाल में भूमिमाप से सम्बन्धित अनेक इकाइयों का उल्लेख मिलता है- निवर्तन, पाटक, नड़, कुल्यावाप, द्रोणवाप, आढ़वाप
  - गुप्तकाल में सिंचाई के साधनों में 'अरघट्ट' (रहट) का उल्लेख मिलता है।
  - ह्वेनसांग ने लिखा है। कि सिंचाई में 'घटी यंत्र' (रहट) का प्रयोग होता था।
  - इसकी तरह बाणभट्ट ने हर्ष चरित में सिंचाई के लिए 'तुलायंत्र' (रहट) के प्रयोग की चर्चा की है।
- महाजनी (साहूकारी) व्यवस्था प्रचलित थी।

अमरकोश में बारह प्रकार की भूमियों का वर्णन

भूमि	प्रकार
उर्वर	उपजाऊ भूमि
उषर	बंजर भूमि
मरु	मरुस्थल
अमहत	परती भूमि
शाद्वल	घास युक्त भूमि
पंकिल	दलदली भूमि
जलप्रायानुपम	नमीयुक्त भूमि
कच्च	जल स्रोत के निकट स्थित भूमि
शर्करा	कंकड़ों से युक्त भूमि
शर्करावती	बलुई मिट्टी वाली भूमि
नदी मातृक	नदी द्वारा सिंचित भूमि
देवमातृक	वर्षा द्वारा सिंचित भूमि

❑ **गुप्तकालीन सिक्के**

- गुप्त शासकों ने सोने-चांदी एवं तांबे के सिक्के चलाए।
- गुप्तों के स्वर्ण सिक्कों को **'दीनार'**, चांदी सिक्कों को **रूपक** और ताम्बे सिक्कों को **माषक** कहा जाता था।
- कुषाणों ने यद्यपि सर्वाधिक शुद्ध स्वर्ण जिसके चलाए परन्तु, सबसे अधिक स्वर्ण सिक्के चलाने का श्रेण गुप्तों को ही प्राप्त है।
- परवर्ती गुप्त मुद्राओं का वजन बढ़ता गया किन्तु उसमें स्वर्ण का अंश घटता गया।
- फाह्यान ने लिखा है कि, लोग लेन-देन में **'कौड़ियों'** का प्रयोग करते थे।

❑ **व्यापार एवं वाणिज्य**

- गुप्त युग में व्यापार वाणिज्य की प्रगति हुई। इस काल में अनेक नगरों का उदय हुआ।
- व्यापार एवं वाणिज्य ने इन नगरों के वैभव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- चन्द्रगुप्त 'द्वितीय ने 'उज्जैन' को अपनी द्वितीय राजधानी के रूप में विकसित किया। इसने शीघ्र ही वैभव तथा समृद्धि में पाटलिपुत्र को भी पीछे छोड़ दिया। इसके अतिरिक्त भड़ौच, विदिशा, प्रयाग, ताम्रलिप्ति, मथुरा, अहिच्छत्र, कौशाम्बी आदि भी प्रमुख व्यापारिक नगर थे।
- गुप्त अभिलेखों में श्रेणियों के उल्लेख तथा गुप्त कालीन स्वर्ण मुद्राओं के आधिक्य के आधार पर विकसित आन्तरिक एवं विदेशी व्यापार की चर्चा की जाती है। जहाँ तक आन्तरिक व्यापार का प्रश्न हे आधुनिक शोधों से स्पष्ट है कि ग्राम लगभग आत्मनिर्भर उत्पादक इकाई के रूप में उभर कर सामने आ रहे थे। स्वयं फाहयान ने लिखा है कि साधारण जनता रोज के विनियम में वस्तुओं की अदला-बदली अथवा कौड़ियों से काम चलाती थी।
- संभवतः विदेशी व्यापार में गिरावट आई। इसका कारण 364 ई० में रोमन साम्राज्य का विभाजन दो भागों में हो जाने से भारत और रोम के बीच व्यापार को धक्का लगना था।
- संभवतः फारसवासियों ने रेशम बनाने की विधि ज्ञात कर ली थी और अब चीन एवं मध्य एशिया के बीच भारत की मध्यस्था जैसी भूमिका समाप्त हो गयी। साथ ही हूणों के आक्रमण के कारण भी मध्य एशिया से होने वाले व्यापार को हानि हुई।
- गुप्त काल में भारत एवं चीन व्यापार बढ़ा। 5वीं-6वीं शताब्दी में कई बौद्ध धर्म प्रचारक जैसे बोधिरूचि, बुद्धजीव एवं बुद्धशान्त चीन गए थे।
- कॉस्मास के विवरण से पता चलता है कि भारत-चीन व्यापार में सिंहल द्वीप (श्रीलंका) विचौलिए का कार्य करता था। परन्तु यह व्यापार वस्तुओं की अदला-बदली पर आधारित प्रतीत होता है।
- भारतीय वस्तुओं के बदले चीन से रेशम प्राप्त किया जाता था। परन्तु न तो चीन के सिक्के यहाँ मिलते हैं और न ही भारत के सिक्के चीन में। गुप्तकाल में भारत एवं दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों के बीच व्यापार का पता चलता है।
- यह व्यापार ताम्रलिप्ति बन्दरगाह से होता था, परन्तु कम्बोडिया, चम्पा, वर्मा, मलय प्रायद्वीप, सुमात्रा, जावा, बोर्नियो आदि के आरम्भिक अभिलेखों में इस व्यापार की कोई चर्चा नहीं मिलती है।
- गुप्त युग में कई नगर ह्रास के चिन्ह प्रदर्शित करते हैं। ह्वेनसांग ने पाटलिपुत्र को उजड़ा हुआ पाया। इसी प्रकार मथुरा, कुम्रहार, सोनपुर, सोहगौरा आदि नगर भारी ह्रास के ही प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। इस समय वस्त्र उद्योग सबसे महत्वपूर्ण उद्योग था।
- रेशम वस्त्र, मलमल, कैलिको, लिनन, ऊनी एवं सूती वस्त्रों की माँग की अधिकता के कारण इनका बड़े पैमाने पर उत्पादन किया जाता था।

- हाथी दाँत का व्यवसाय, पत्थर की कटाई तथा खुदाई का व्यवसाय भी लाभप्रद था। सोन, चाँदी, ताँबे, लोहे एवं सीसे के उद्योग भी थे।
- गुप्तकाल में चीन से रेशम (चीनांशुक), यूथोपिया से हाथीदाँत, अरब, ईरान एवं बैक्ट्रिया से घोड़ों का आयात किया जाता था।
- निर्यातित वस्तुओं में कपड़े, बहुमूल्य पत्थर, हाथी दाँत की वस्तुएँ, गरम मसाले, नारियल, सुगन्धित द्रव्य, नील, दवाएँ आदि प्रमुख थी।
- **गुप्त काल में पूर्वी तट पर प्रसिद्ध बन्दरगाह -** ताम्रलिप्ति, घंटाशाला, कदूरा
- **गुप्त काल में पश्चिमी तट पर प्रसिद्ध बन्दरगाहों** – भड़ौच (भृगुकच्छ), चौल, कल्याण, कैम्बे

आर्थिक स्थिति

- गुप्तकालीन समाज परम्परागत चार वर्णों में विभक्त था - ब्राह्मण , क्षत्रिय, वैश्य , शूद्र
- समाज में ब्राह्मणों का स्थान सर्वोच्च था।
- शूद्रों का मुख्य कर्तव्य अपने से उच्च वर्गों की सेवा करना था।
- गुप्तकाल में ये वर्ण भेद स्पष्ट रूप से थे।
- वाराहमिहिर ने वृहत्संहिता में चारों वर्णों के लिए विभिन्न बस्तियों की व्यवस्था की।
- न्याय व्यवस्था में भी वर्ण भेद बने रहे।
- न्याय संहिताओं में कहा गया है कि ब्राह्मण की परीक्षा तुला से, क्षत्रिय की अग्नि से, वैश्य की जल से व शूद्र की विष से की जानी चाहिए।
- निम्न जातिवादी उच्च जाति के साथियों से अपना वाद प्रमाणित नहीं करा सकता। यद्यपि नारद ने साक्ष्य देने की पुरानी वर्णमूल भेदक व्यवस्था का विरोध किया।
- इस काल में चोरी करने पर ब्राह्मण का क्षेत्र अपराध सबसे अधिक और शूद्र का सबसे कम माना जाएगा।
- ब्राह्मणों की पवित्रता पर भी बल दिया जाता था।
- इस काल के ग्रंथों के अनुसार, ब्राह्मण को सूद्र का अन्न नहीं ग्रहण करना चाहिए क्योंकि इससे आध्यात्मिक देवमातृक वर्षा द्वारा सींची जाने वाली भूमि बल घटता है।
- **याज्ञवल्क्य के अनुसार,** ब्राह्मणों को दासों और शूद्रों का अन्न खाने की अनुमति है।
- हिन्दू धर्मशास्त्रों में क्षत्रियों के लिए भी यह व्यवस्था थी कि वे संकटकाल में अपने से नीचे वर्णों का कर्म अपना सकते थे।
- वैश्य वर्ग द्वारा भी क्षत्रिय का व्यवसाय ग्रहण कर लेने के अनेक उदाहरण हैं। इस काल में शुद्र वर्ग की सेवा-वृत्ति पर बहुत अधिक बल दिया गया।
- शूद्र का एकमात्र धर्म तीनों वर्णों की सेवा माना गया।
- **याज्ञवल्क्य की स्मृति में** शूद्रों के प्रति उदार दृष्टिकोण रखा है और शुद्र को व्यापारी, कृषक तथा कारीगर होने की अनुमति दी। साथ ही गुप्त काल में शिल्पकर्म शूद्रों के सामान्य कर्तव्यों में आ गया।
- गुप्तकाल में वाणिज्य को भी शूद्रों का कर्तव्य माना जाने लगा था। इस काल में हर प्रकार की बिक्री करना शूद्रों का समान कर्तव्य कहा गया है।
- धर्म सम्बन्धी अधिकारों के क्षेत्र में शुद्र के प्रति उदार भावनाएँ व्यक्त की गई। इनके दान का भी उल्लेख है।
- मत्स्यपुराण के अनुसार, अगर शूद्र भक्ति में निमग्न रहे, मदिरापान न करें, इन्द्रियों को वश में रखे तो उसे भी मोक्ष प्राप्त हो सकता है।
- याज्ञवल्क्य ने स्पष्ट रूप से कहा है कि शूद्र 'ओंकार' के बदले 'नमः' का प्रयोग करके पंचमहायज्ञ कर सकते हैं।
- गुप्तकालीन वर्ण-व्यवस्था की एक प्रमुख विशेषता, वैश्यों की सामाजिक स्थिति में गिरावट एवं शूद्रों की सामाजिक स्थिति में अपेक्षाकृत सुधार परिलक्षित होती है।
- व्यापार में गिरावट के कारण वैश्य वर्ग को नुकसान पहुँचा जबकि दण्डविधान आदि में कमी के कारण इसका सर्वाधिक फायदा शूद्र वर्ण को मिला और उनकी सामाजिक स्थिति वैश्यों के नजदीक आ गई।
- इस काल के स्मृतिकारों ने आपद्धर्म की कल्पना भी की अर्थात् आपत्ति के समय में अपने धर्म से अलग हटकर कार्य करना।
- **मिश्रित जातियाँ -** अनुलोम एवं प्रतिलोम विवाहों के फलस्वरूप अनेक मिश्रित जातियों का उदय गुप्त काल में हुआ।
- गुप्तकालीन स्मृतियों में इसका उल्लेख मिलता है।
  - क्षत्रिय पिता एवं ब्राह्मण माता – सूत
  - ब्राह्मण पिता एवं शूद्र माता – निषाद
  - क्षत्रिय पिता एवं वैश्य माता - उग्र,
  - शूद्र पिता एवं ब्राह्मण माता - चाण्डाल
- **कायस्थ-** गुप्तकालीन अभिलेखों में कायस्थ नामक एक नए वर्ग का उल्लेख मिलता है। इनकी गणना किसी उपजाति में नहीं थी।
- इनका उदय भूमि और भू-राजस्व के स्थानान्तरण के कारण हुआ। इस जाति के लोग मूल रूप से राजकीय सेवा से सम्बद्ध थे। उनका प्रधान कार्य केवल लेखकीय ही नहीं होता था बल्कि वे लेखाकरण, गणना, आय-व्यय और भूमिकर के अधिकारी भी होते थे।
- गुप्त युग तक कायस्थ केवल एक वर्ग थे जाति नहीं।
- कायस्थ वर्ग का उल्लेख सर्वप्रथम याज्ञवल्क्य स्मृति में मिलता है परन्तु एक जाति के रूप में इनका उल्लेख गुप्तकाल के बाद की ओशनम स्मृति में मिलता है।
- **महात्तार -** गुप्तकाल में इस वर्ग का भी उदय हुआ। यह ग्रामवृद्ध व मुखिया लोगों का एक नया वर्ग था, जिन्हें भूमि हस्तान्तरण की सूचना दी जाती थी।
- **अस्पृश्य -** फाह्यान के वर्णन से ज्ञात होता है कि भारतीय समाज में गुप्तकाल में एक अस्पृश्य वर्ग था किन्तु, अमरकोश में वर्ण-संकरों और अस्पृश्यों को शुद्र जाति में ही रखा गया।
- फाह्यान के वर्णन से पता चलता है कि ये बस्ती के बाहर रहते थे।
- स्मृतियों में इन्हें अन्त्यज अथवा चाण्डाल तथा प्रतिलोम विवाह से उत्पन्न कहा गया है। ये सबसे निम्न वृत्ति का पालन करते थे जैसे- जंगली जानवरों का शिकार, मछली पकड़ना, सड़कों व गलियों की सफाई करना, श्मशान का काम करना और अपराधियों को फांसी पर लटकाना।
- डोम्ब' गीत गाते थे और सार्वजनिक मनोरंजन भी करते थे।

❑ दास प्रथा

- इस काल में दासों की स्थिति में गिरावट आयी। शांतिपर्व के अनुसार शूद्र की सृष्टि अन्य तीन वर्गों के दास के रूप में की गई।
- नारद ने 15 प्रकार के दासों (दासों की सबसे लंबी सूची) का उल्लेख किया।
- दास मुक्ति के अनुष्ठान का विधान भी सर्वप्रथम नारद ने किया।
- 'अमरकोश' में 'दासी सभम' (दासियों के दल) का उल्लेख किया गया है।
- स्वामी के पुत्र को जन्म देने पर दासी स्वतंत्र हो जाती थी।

❑ स्त्रियों की दशा

- गुप्तकालीन साहित्य में नारी का आदर्शमय चित्रण। परंतु व्यवहार में उनकी स्त्रियों की दशा स्थिति पहले की अपेक्षा दयनीय ।
- याज्ञवल्क्य स्मृति में कन्या के लिए उपनयन संस्कार तथा वेदाध्ययन निषिद्ध बताया गया। स्त्री शिक्षा का प्रचलन था।
- 'अमरकोष' में शिक्षिकाओं के लिए उपाध्याया तथा आचार्या शब्द आया है।
- राजशेखर के 'काव्यमीमांसा' के अनुसार स्त्री भी कवियत्री होती थी।
- 'अभिज्ञानशाकुंतलम' में अनुसूया को इतिहास का ज्ञाता कहा गया है।
- स्त्री को ऐसी संपत्ति कहा गया, जो किसी को दिया या गिरवी रखा जा सकता है।

- 'अभिज्ञानशाकुंतलम व हर्षचरित' (राज्यश्री को अरूणांशुलावगुंठित - मुख पर लाल पर्दा) में पर्दा प्रथा का जिक्र।
- दक्षिण प्रांतों में विदेशी आक्रमण न होने के कारण पर्दा नहीं था। अजंता व एलोरा में स्त्री को पर्दे में नहीं दिखाया गया है।
- **सती प्रथा –**
  - इस काल मे सती प्रथा विशेषतः सैनिक वर्ग में।
  - सती प्रथा का सर्वप्रथम अभिलेखीय साक्ष्य 510 ईस्वी में भानुगुप्त के 'एरण अभिलेख' में मिलता है, जिसमें उसके सेनापति गोपराज की मृत्यु के बाद उसके पत्नी का सती होने का उल्लेख है।
- **विधवा**
  - उच्च वर्ण के विधवा की स्थिति अत्यंत सोचनीय थी।
  - विधवा को श्वेत वस्त्र पहनकर जीवन भर ब्रह्मचर्य का पालन करना पड़ता था।
  - बृहस्पति ने विधवा के लिए अनेक कठोर नियम बनाएँ
  - राजा का कर्तव्य विधवा का पालन-पोषण करना था।
- **संपत्ति में स्त्री अधिकार**
  - इस काल में स्त्रीधन का दायरा विस्तृत कर दिया गया।
  - याज्ञवल्क्य ने सर्वप्रथम स्त्रियों की संपत्ति संबंधी अधिकारों की वकालत की।
  - याज्ञवल्क्य ने पत्नी को भी पति की संपत्ति में अधिकारी बताया है। उनके अनुसार पुत्र के अभाव में पति की संपत्ति पर पत्नी का अधिकार।
  - नारद तथा कात्यायन आदि स्मृतिकार कन्या को भी पिता की संपत्ति का अधिकारिणी माना।
- **गणिकायें –**
  - देवदासियों का भी एक वर्ग था, जो मंदिरों से संबद्ध।
  - कालिदास ने महाकाल मंदिर (उज्जैन) में देवदासियों की नृत्यगान का उल्लेख किया है।
  - गणिकाएँ नागरिक जीवन का सामान्य अंग थी।
  - 'कामसूत्र' में गणिका को प्रशिक्षण देने की बात ।
  - कालिदास ने विदिशा की गणिका का वर्णन किया है।

धार्मिक दशा

वैष्णव धर्म

- यद्यपि गुप्त शासकों का अपना धर्म वैष्णव धर्म था परन्तु, वे अन्य धर्मो के प्रति भी साहिष्णु थे।
- उन्होंने 'परमभागवत्' की उपाधि धारण की तथा 'गुरूड़' को अपना राजकीय चिन्ह बनाया।
- गुप्तकालीन सबसे विख्यात मंदिर देवगड़ का दशावतार मंदिर था, जिसमें विष्णु के दशावतारों का चित्रण प्राप्त होता है।
- उदयगिरि गुहा-अभिलेख में विष्णु के वाराह अवतार का उल्लेख है। यह गुप्त काल का सर्वाधिक लोकप्रिय अवतार था।
- चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने विष्णुपद पर्वत पर गरूड़-ध्वज की स्थापना की।
- गुप्त काल में 'नववैष्णव-वाद' का विकास हुआ। इस नए पक्ष का सम्बन्ध पान्चरात्र मत से था।

शैव धर्म

- गुप्त काल में शैव धर्म भी अत्यन्त महत्वपूर्ण धर्म था।
- दो गुप्त शासकों कुमारगुप्त और स्कनदगुप्त के नाम कार्तिकेय (शिव के पुत्र) के नाम पर ही हैं।
- कुमारगुप्त ने मयूर की आकृति वाले सिक्के जबकि स्कन्दगुप्त ने बैल की आकृति वाले सिक्के चलवाए।
- गुप्तकाल में ही अध् नारीश्वर के रूप में शिव की कल्पना की गई तथा शिव और पार्वती की संयुक्त मूर्तियाँ बनायी गई। यहाँ पार्वती शिव की शक्ति की प्रतीक है।
- गुप्तकाल में हरिहर के रूप में शिव व विष्णु को एक साथ दर्शाया गया है। इसी तरह त्रिमूर्ति के अन्तर्गत ब्रह्मा, विष्णु और शिव की पूजा प्रारम्भ हुई।
- इस काल में शैव धर्म के चार सम्प्रदायों का उल्लेख हैं - पाशुपत, शैव, कापालिक, कालमुख
- पाशुपत सम्प्रदाय का गुप्तकाल में सर्वाधिक विकास हुआ।

बौद्ध धर्म

- गुप्तकाल मे बौद्ध धर्म भी विकसित अवस्था में था।
- फाह्यान के अनुसार इस समय कश्मीर, अफगानिस्तान और पंजाब बौद्ध धर्म के केन्द्र थे।
- बोधगया भी बौद्ध धर्म का प्रसिद्ध केन्द्र था, जहाँ लंका के बौद्ध यात्रियों के लिए विहार बनवाया गया था।
- कुमारगुप्त ने नालन्दा में प्रसिद्ध बौद्ध विहार की स्थापना करवाई।
- फाह्यान के अनुसार पूर्वी भारत के प्रसिद्ध बौद्ध नगर वैशाली, श्रावस्ती और कपिलवस्तु गुप्त युग में समृद्ध नहीं थे।
- गुप्तकाल में कई प्रसिद्ध बौद्ध आचार्यो का उल्लेख है जिसमे आर्यदेव, असंग, वसुबंधु और मैत्रेयनाथ प्रमुख थे।
- दिड़नाग तर्कशास्त्र मत के प्रणेता थे। योगाचार दर्शन का गुप्तकाल में अत्यधिक विकास 'आर्यदेव ने चतुश्शतक और असंग ने महायान संग्रह, योगाचार भूमिशास्त्र और महायानसूत्रालंकार नामक बौद्ध ग्रंथों की रचना की।

जैन धर्म

- गुप्तकाल में जैन धर्म उन्नत अवस्था में था। इस समय जैन ग्रंथों पर भाष्य और टीकाएं लिखी गई।
- मुनि सर्वनन्दी ने लोक विभंग नामक ग्रंथ लिखा।
- आचार्य सिद्धसेन ने न्यायवार्ता की रचना की जिससे जैन दर्शन और न्यायदर्शन के विकास में सहयोग मिला।
- गुप्त युग में कदंब और गंग राजाओं ने जैन धर्म को आश्रय दिया। इस काल में मथुरा और वल्लभी श्वेताम्बर जैन धर्म के केन्द्र थे, जबकि बंगाल में पुण्ड्रवर्धन दिगम्बर सम्प्रदाय का केन्द्र था।

कला और साहित्य

- कला और साहित्य की दृष्टि से गुप्तकाल को भारतीय इतिहास का स्वर्ग-युग कहा जाता है।
- इस काल में संस्कृत साहित्य का अत्यधिक विकास हुआ।
- गुप्तकालीन नाटकों में उच्च वर्ग के पात्र संस्कृत तथा निम्न वर्ग के पात्र प्राकृत भाषा का प्रयोग करते थे।
- इसी युग में मंदिर कला की नागर शैली अपने परिपक्व स्थिर की ओर अग्रसर हुई। साथ ही गुफा स्थापत्य, बौद्ध विहार एवं चैत्य तथा मूर्तिकला ने भी नये आयाम स्थापित किये।

मंदिर स्थापत्य

- गुप्तकाल में ही मंदिर निर्माण कला का जन्म हुआ। ये मंदिर नागर शैली के हैं।
- गुप्तकालीन मंदिरों का प्रारम्भ गर्भगृह के साथ हुआ जिसमें देवमूर्ति की स्थापना की जाती थी। इस भवन के चारों ओर एक प्राचीर युक्त प्रांगण होता था जिसमें बाद में अनेक पूजा स्थलों की स्थापना होने लगी।
- इस काल के मंदिरों की छतें अधिकांशतः सपाट होती थी, किन्तु शिखर युक्त मंदिरों का निर्माण भी प्रारम्भ हो चुका था।
- मंदिर का निर्माण चबूतरे के उपर किया जाता था इसे अधिष्ठान कहा जाता था। उपर जाने के लिए चारों और सीढ़ियों बनाई जाती थी।
- द्वारपाल के स्थान पर मकरवाहिनी गंगा एवं कूर्मवाहिनी यमुना की प्रतिमाएं बनी होती थीं। अनेक शिखरों वाले मंदिरों का प्रचलन गुप्तकाल के अंतिम समय में ही प्रारंभ हो सका।

- पंचायतन शैली के मंदिरों का भी निर्माण गुप्तों के अंतिम काल में देखने को मिलता है। इस काल मे प्रमुख मंदिर देवगढ़ का दशावतार मंदिर, तिगवां का विष्णु मंदिर, नचना कुठार का पार्वती मंदिर, भितरगाँव मंदिर, तथा सिरपुर का लक्ष्मण मंदिर प्रमुख है।
- भितरगाँव मंदिर एवं सिरपुर का मंदिर ईंटो से बने मंदिर है। गुप्तकाल का सर्वोत्कृष्ट मंदिर देवगढ़ का दशावतार मंदिर है। इसमें 12 मीटर उँचा एक शिखर है जो भारतीय मंदिर निर्माण में शिखर का पहला उदाहरण है।

❑ **बौद्ध स्तूप**

- गुप्तकाल के बौद्ध स्तूपों में सारनाथ का धमेख स्तूप प्रसिद्ध है। यह ईटों का बना है। इसका आधार स्तूपों के समान वर्गाकार न होकर गोलाकार है। इसमें अन्य स्तूपों के समान चबूतरा नहीं है, बल्कि यह धरातल पर निर्मित है।
- **गुहा मंदिर -** गुप्तकालीन गुहा मंदिरों को दो भागों में बांटा जा सकता है- ब्राह्मण गुहा मंदिर और बौद्ध गुहा मंदिर
  - **ब्राह्मण गुहा मंदिर -** इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण उदयगिरि का मंदिर है। इसमें विष्णु के वाराह अवतार की विशाल मूर्ति उत्कीर्ण है। उदयगिरि गुहा मंदिर का निर्माण चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के सेनापति वीरसेन ने करवाया था।
  - **बौद्ध गुहा मंदिर -** इसके प्रमुख उदाहरण अजन्ता तथा बाद्य की गुफाएं है। अजन्ता की गुफा संख्या16, 17 और 19 गुप्तकालीन मानी जाती है। इनमें मुख्यतः बौद्ध धर्म से सम्बन्धित चित्र हैं।
- बाद्य की गुफाओं में भी बौद्ध धर्म से सम्बन्धित चित्रकारियाँ मिलती है।

❑ **मूर्तिकला**

- गुप्तकालीन मूर्तियों की विशेषता है उनकी स्वभावगत जीवंतता एवं लावण्यमयता, इस युग की मूर्तिकला में भाव के प्रकाशन पर अत्यधिक ध्यान दिया गया है।
- गुप्तकाल की मूर्तियों में पारदर्शी वस्त्र, आंखे अधखुली है, मंद स्मित हास एवं मानसिक शांति का पूर्ण प्रकाशन हुआ है।
- गुप्तकालीन मूर्तियों में कुषाणकाल की मूर्तियों की तरह नग्नता नहीं है। यहाँ की मूर्तियों मे सुसज्जित प्रभामंडल बनाए गए जबकि, कुषाणकालीन मूर्तियों में प्रभामंडल सादा था।
- गुप्तकालीन मूर्तियों में देवगढ़ से प्राप्त विष्णु की प्रतिमा अत्यंत सुन्दर है। इस अनन्तशायी मूर्ति में विष्णु को शेषनाग की शया पर दर्शाया गया है।
- गुप्तकालीन बुद्ध की मूर्तियों में सारनाथ में बैठे हुए बुद्ध की मूर्ति तथा मथुरा में खड़े हुए बुद्ध की मूर्ति अत्यन्त प्रसिद्ध है। इस युग की बुद्ध मूर्तियों के बाल घुंघराले हैं, उनके प्रभामंडल अलंकृत है तथा मुद्राओं में विविधता है।

❑ **चित्रकला**

- बाघ की चित्रकला गुप्त युग की प्रतिनिधि चित्रकला है साथ ही इस युग में अंजता की गुफाओं में महायान शाखा से संबंधित चित्र अपने चरमोत्कर्ष तक पंहुचे। वात्स्यायन के कामसूत्र में चित्रकला की गणना 64 कलाओं में की गई है।
- **अजन्ता की चित्रकला -** अजन्ता की गुफाएं महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में स्थित है। इसमें पहले 29 गुफाओं में चित्र बने थे, परन्तु अब केवल 7 गफाओं (1, 2, 9, 10, 16, 17 और 19) के चित्र अवशिष्ट हैं।
- इसमें 16, 17 और 19 गुप्तकालीन है।
- अजन्ता की गुफाओं का निर्माण ई.पू. दूसरी शताब्दी से लेकर सातवीं शताब्दी इ. तक किया गया था।
- अजन्ता की खोज 1819 ईत्र में सर जेम्स अलेक्जेंडर ने की थी।
- अजन्ता मे मुख्यतः ब्राह्मण और बौद्ध धर्म से सम्बन्धित चित्र हैं।
- बौद्ध धर्म के लिए महायान शाखा से सम्बन्धित हैं।
- अजन्ता के चित्रों में लाल, हरा, नीला, सफेद, काला एवं भूरे रंग का प्रयोग हुआ है।
- यहाँ पीले एवं मिश्रित रंग नहीं प्राप्त होते हैं।
- अजन्ता की गुफा संख्या 9 और 10 सबसे पुराने (वाकाटक काल की) हैं जबकि गुफा संख्या 1 और 2 पुलकेशिन द्वितीय के समय की है। 16वीं गुफा के चित्रों में मरणासन्न राजकुमारी का चित्र अत्यन्त सुंदर है।
- 17वीं गुफा के चित्रों को चित्रशाला कहा गया है। ये अधिकतर बुद्ध के जन्म, जीवन, महाभिनिष्क्रमण तथा महापरिनिर्वाण की घटनाओं से सम्बन्धित है। इन चित्रों मे माता और शिशु का चित्र सर्वोत्कृष्ट है।
- **बाघ चित्रकला -** ग्वालियर के समीप धार जिले में बाघ नामक स्थान पर ये गुफाएं बनायी गई थी।
- इनकी खोज 1818 ई० में डेंजर फील्ड महोदय ने की। बाघ की चित्रकला में जातक माला की कथाओं का सुंदर निरूपण हुआ है।
- यह कला अजन्ता शैली से प्रभावित है। यहां गुफाओं की संख्या 9 है। अजन्ता के चित्रों के विपरीत बाघ के चित्र मनुष्य के लौकिक जीवन से भी सम्बन्धित है।
- यहाँ का सबसे प्रसिद्ध चित्र संगीत और नृत्य का एक दृश्य है।

❑ **साहित्य**

- गुप्तयुग संस्कृत साहित्य के अभूतपूर्व विकास का योग था। इस युग में पुराणों के वर्तमान स्वरूप की रचना हुई। अनेक स्मृतियों और सूत्रों पर भाष्य लिखे गए।
- अनेक पुराणों तथा रामायण एवं महाभारत को इसी समय अन्तिम रूप दिया गया।
- **इस समय स्मृतियों जैसे -** नारद, वृहस्पति, विष्णु, कात्यायन, पाराशर आदि की रचना हुई।
- चंद्रगुप्त द्वितीय के दरबार में नौ विद्वान निवास करते थे। जिनमें कालीदास का नाम सर्वोपरि था। इन नौ विद्वानों के अतिरिक्त भी अनेक साहित्यकार गुप्तकाल में पैदा हुए।
- हरिषेण समुद्रगुप्त के समय सन्धिविग्रहिक, कुमारामात्य तथा महादण्डनायक था। उसकी प्रसिद्ध कृति प्रयाग स्तम्भ लेख है। यह गद्य-पद्य मिश्रित (चम्पू शैली में) है।
- वत्सभट्टि, कुमारगुप्त प्रथम का दरबारी कवि था। इसने मन्दसौर प्रशस्ति की रचना की।
- वीरसेन शाब चन्द्रगुप्त द्वितीय का युद्ध सचिव था। उसकी रचना उदयगिरि गुहालेख है, जिसमें उसे शब्द, अर्थ, न्याय, व्याकरण, राजनीति आदि का मर्मज्ञ वर्णन किया हैं।
- **कालिदास -** अनेक ग्रंथों की रचना की जिन्हें महाकाव्य, खण्डकाव्य एवं नाटक में बांटा जा सकता है।
- गुप्तकालीन नाटक मुख्यतः प्रम प्रधान एवं सुखान्त होते थे। इस समय के नाटकों की उल्लेखनीय बात यह है कि उच्च सामाजिक स्तर के पात्र संस्कृत बोलते हैं जबकि निम्न सामाजिक स्तर का पात्रा तथा स्त्रियाँ प्राकृत भाषा का प्रयोग करती है।
- **कालिदास के प्रमुख नाट्य ग्रथ निम्नलिखित हैं-**
  - **मालविकाग्निमित्रम्**-यह कालिदास का प्रथम नाटक है जिसमें मालविका और अग्निमित्र की प्रणय कथा वर्णित है।
  - **विक्रमोर्वशीयम्**-इसमें उर्वशी तथा पुरूरवा की प्रणय कथा है।
  - **अभिज्ञान शाकुन्तलम्**- यह कालिदास का सर्वश्रेष्ठ नाटक है। इसमें दुष्यंत और शकुन्तला का मिलन है। इसी कथा महाभारत से ली गई है। जिसका आंग्लभाषा में 1789 ई. में विलियम जोंस ने अनुवाद किया।
- **महाकव्य- कालिदास के दो महाकाव्य मिलते है.**
  - **रघुवंश-** यह 19 सर्गा का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य है जिसमें राम के पूर्वजों का वर्णन है।
  - **कुमार सम्भव-** 17 सर्ग के इस नाटक में प्रति-चित्राण तथा कार्तिकेय जन्म की कथा वर्णित है।

- **गीतिकाव्य या खण्डकाव्य -**
  - **मेघदूत -** इसमें विरही यक्ष एवं उसकी प्रियतमा का वियोग वर्णन चित्रित है।
  - **ऋतुसंहार-** इसमें ऋतु का वर्णन है।

गुप्तकालीन खगोलशास्त्री , गणितज्ञ एवं ज्योतिशास्त्री	
खगोलशास्त्री / गणितज्ञ /ज्योतिशास्त्री	**ग्रन्थ**
पिंगल	भारत के प्राचीन गणितज्ञ और छन्दःसूत्रम् के रचयिता
आर्यभट्ट	आर्यभटीय' या 'आर्य भट्टीयम्' , सूर्य सिद्धांत, दशगीतिकसूत्र (दसगीतिका) , आर्याष्टाशतक
वराहमिहिर	पंचसिद्धांतिका , बृहज्जातक , बृहत संहिता , विवाह पटल , योगमाया , लघु जातक
ब्रह्मगुप्त	'ब्रह्म सिद्धांत', 'खण्डखाद् या खंडखाद्यक'
भास्कर-I	आर्यभट्टीयम की टीका 'आश्मकीय' लिखी।
धन्वन्तरि	निघण्टु
भास्कराचार्य	सिद्धांत शिरोमणि - जिसके चार भाग बीज गणित, ग्रहगणिताध्याय, गोलाध्याय, लीलावती

❑ अन्य लेखकों की रचनाएं

- **मृच्छकटिकम्-** यह गुप्तकाल का एक मात्रा दुःखान्त नाटक है। इसके लेखक शुद्रक है। इसका नायक ब्राह्मण चारुदत्त है, जो सार्थवाह है और नायिका वसन्तसेना नामक गणिका है।
- इस नाटक में राजा, ब्राह्मण, जुआरी, व्यापारी, वेश्या, चोर, धूर्त, दास, घूसखोर आदि सभी सामाजिक वर्गों का वर्णन है।
- **मुद्राराक्षस-** इसके लेखक विशाखदत्त है। इसमें चाणक्य की योजनाओं का वर्णन है।
- **देवीचन्द्रगुप्तम्-** विशाखदत्त द्वारा रचित इस नाटक में चन्द्रगुप्त द्वितीय, द्वारा शकराज एवं रामगुप्त के वथ तथा ध्रुवदेवी के साथ उसके विवाह का वर्णन है।
- **अमरकोश-**यह संस्त के प्रसिद्ध विद्वान अमरसिंह की रचना है।
- चन्द्रव्याकरण-यह चन्द्रगोमिन नामक बंगाली बौद्ध भिक्षु द्वारा लिखा गया ग्रंथ है। इसे महायान बौद्धों ने अपनाया।
- **कामसूत्रा-** इसके लेखक वात्स्यायन है। इसमें कामजीवन के समस्त पक्षों जैसे सामाजिक, वैयक्तिक, शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक, भोग आदि का वैज्ञानिक ढंग से विवेचन किया गया है।
- **पंचतंत्र-** इसके लेखक विष्णु शर्मा है। इस ग्रंथ का अनुवाद 50 से अधिक भाषाओं में किया जा चुका है। संस्कृत नीतिकथाओं में पंचतन्त्र का पहला स्थान माना जाता है। इस ग्रन्थ के रचयिता पण्डित विष्णु शर्मा हैं। पंचतन्त्र को पाँच तन्त्रों (भागों) में विभक्त किया गया है; जैसे- मित्रभेद, मित्रलाभ, काकोलुकीयम्, लब्धप्रणाश, अपरीक्षित कारक।
- **नीतिसार-**इसके लेखक कामन्दक हैं।
- **बौद्धग्रंथ -** गुप्त युग में बौद्ध दर्शन पर भी अनेक ग्रंथों की रचना हुई। असंग, महायान धर्म का प्रकाण्ड विद्वान था। उसने योगाचारभूमिशास्त्रा, प्रकरणआर्यवाचा, महायानसूत्रालंकार, वज्रघेटिकाटीका, महायान सम्परिग्रह और महायानभिर्ध्मसंगीतशास्त्रा आदि ग्रंथ लिखे ।
- वसुबंधु ने अभिधर्मकोश लिखा। इसमें बौद्ध धर्म के मौलिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है।
- बुद्धघोष ने हीनयान धर्म पर प्रसिद्ध ग्रंथ विसुद्धिमग्ग लिखा।
- **जैन ग्रंथ-** इसमें आचार्य सिद्धसेन का न्यायावतार सबसे प्रसिद्ध है।

विज्ञान एवं तकनीक

- गुप्तयुग में विज्ञान एवं तकनीक का समुचित विकास हुआ।
- इस काल में प्रमुख गणितज्ञ, ज्योतिष विद्या में भी निपुण थे। अतः इन दोनों शाखाओं का समुचित विकास हुआ।
- इस समय के आर्यभट्ट वाराहमिहिर, भाष्कर प्रथम तथा ब्रह्मगुप्त अत्यन्त प्रसिद्ध विद्वान हैं।

❑ आर्यभट्ट

- इनका प्रसिद्ध ग्रंथ आर्यभट्टयम है।
- इन्होंने ज्योतिष को गणित से अलग शास्त्र माना तथा दशमलव प्रणाली का विकास किया।
- सर्वप्रथम इन्होंने ही बताया कि पृथ्वी गोल है और अपनी धुरी पर घूमती है तथा इसकी छाया चन्द्रमा पर पड़ने के कारण ग्रहण पड़ता है।
- इस प्रकार सूर्यग्रहण एवं चन्द्रग्रहण पड़ने के वास्तविक कारणों पर प्रकाश डाला गया।
- पाई (π) का मान 3.1416 बताया तथा सौर वर्ष की लम्बाई 365.3586805 दिन बताया। ये गुप्तकालीन सर्वश्रेष्ठ गणितज्ञ एवं ज्योतिषी थे।

❑ भाष्कर प्रथम (600 ई०)

- आर्यभट्ट के सिद्धान्तों पर भाष्कर प्रथम ने टीकाएँ लिखीं तथा स्वतंत्र ग्रंथ भी लिखे थे। ये ब्रह्मगुप्त के समकालीन और प्रसिद्ध खगोलशास्त्री थे। इन्होंने तीन ग्रंथों की रचना की- महाभास्कर्य, लघुभास्कर्य और भाव्य।

❑ ब्रह्मगुप्त (598 ई०)

- इन्होंने ब्रह्म सिद्धान्त की रचना की तथा सर्वप्रथम यह बताया कि पृथ्वी सभी वस्तुओं को अपनी ओर आकर्षित करती है। इनका जन्म उज्जैन में हुआ था।

❑ वाराहमिहिर (550 ई०)

- ये भी गुप्त काल में प्रसिद्ध ज्योतिषी थे परन्तु, ज्योतिषी के रूप में इतने अधिक प्रशंसनीय नहीं थे जितने ज्योतिष के इतिहासकार के रूप में।
- इनकी प्रसिद्ध रचनाएं पंचसिद्धांतिका, बृहत्संहिता, बृहज्जातक एवं लघुजातक हैं।

❑ चिकित्सा ग्रंथ

- गुप्त काल में अनेक चिकित्सा ग्रंथ भी लिखे गए। 6वीं शताब्दी के वाग्भट्ट ने आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रंथ अष्टांगहृदय की रचना की।
- चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के दरबार में आयुर्वेद का विद्वान और चिकित्सक धन्वन्तरि था। नवनीतकम नामक आयुर्वेद ग्रंथ की रचना भी इसी काल में हुई।
- पालकाप्य नामक पशु चिकित्सक ने **'हस्त्यायुर्वेद'** नामक ग्रंथ की रचना की जो हाथियों के रोगों व चिकित्सा से सम्बन्धित थी।
- भारतीय चिकित्सा-विषयक ज्ञान का प्रसार पश्चिम एशिया में हुआ और एक फारसी चिकित्सक भारतीय औषधिशास्त्र के अध्ययन के लिए छठीं शताब्दी ई० में भारत आया।

❑ धातुविज्ञान

- रसायन विज्ञान में भी प्रगति हुई।
- बौद्ध दर्शनिक नागार्जुन रसायन और धातुविज्ञान का विद्वान था। उसने यह प्रमाणित किया कि सोना, चाँदी, तांबा आदि खनिज पदार्थों के रासायनिक प्रयोग से रोगों का निवारण हो सकता है।

गुप्तोत्तर काल

गुप्तोत्तर काल में नवीन वंशों का उद्भव

- गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद सामन्तवाद का उद्भव हुआ, जिसने विकेन्द्रीकरण एवं क्षेत्रीयता की भावना को बढ़ावा दिया। इस दौरान कुछ प्रमुख राजवंशों ने शासन किया, लेकिन सम्पूर्ण भारत को एकसूत्र में बाँधा नहीं जा सका।

वंश	राजधानी	प्रमुख शासक	विशेषता
मैत्रक	वल्लभी (गुजरात)	भट्टारक, धरसेन चतुर्थ	नवोदित राज्यों में सबसे लंबे समय तक शासन
मौखरि	कन्नौज	हरिवर्मा, ईशानवर्मा, सर्ववर्मा, ग्रहवर्मा	हूणों को पराजित कर पूर्वी भारत को हूण आक्रमण से बचाया
पुष्यभूति	थानेश्वर, कन्नौज	पुष्यभूति, प्रभाकरवर्धन, राज्यवर्धन, हर्षवर्धन	गुप्तों के बाद उत्तर भारत का सबसे विशाल राज्य
परवर्ती गुप्त	मगध, मालवा	कृष्णगुप्त, महासेनगुप्त, देवगुप्त	मौखरियों से राजनीतिक प्रतिद्वंदिता
चंद्र (गौड़)	पुंड्र	शशांक	वर्धन व मौखरि शासकों से राजनीतिक प्रतिद्वंदिता

❑ गौड़ वंश

- **संस्थापक** - शशांक
  - हर्षचरित में इसे गौड़ों में सर्वाधिक निकृष्ट कहा गया है।
  - यह बौद्ध विरोधी था, जिसने कुशीनगर तथा वाराणसी के बीच सभी बौद्ध विहारों को नष्ट करवा दिया।
  - साथ ही पाटलीपुत्र में बुद्ध के पदचिन्हों से अंकित पत्थरों को गंगा में फिकवा दिया व गया के बोधवृक्ष को कटवा दिया। शैव धर्म का अनुयायी।
  - इसने बुद्ध के स्थान पर शिव की मूर्ति स्थापित की। हर्ष ने इसकी राजधानी पुंड्र पर आक्रमण कर उसे परास्त किया।

❑ वल्लभी के मैत्रक

- संस्थापक -भट्टार्क (उपाधि- सेनापति), गुप्त सामंत था।
- **राजधानी** - वल्लभी
- **ध्रुवसेन** (उपाधि- सेनापति),
  - इस वंश का प्रथम स्वतंत्र शासक था।
  - हर्ष का समकालीन था, हर्ष ने अपनी पुत्री का विवाह इससे किया।

❑ मालवा

- **शासक** - यशोधर्मन
- औलिकर वंशीय शासक
- मंदसौर प्रशस्ति में इसकी विजयों का वर्णन मिलता है। इसमें इसे जनेन्द्र कहा गया।
- इसने गुप्तों और वाकाटकों को पराजित किया।
- इसने हूण नरेश मिहिरकुल को पराजित कर मार डाला।
- इसने नालंदा में एक बिहार का निर्माण करवाया।

❑ मालवा का उत्तरगुप्त वंश

- इस वंश का इतिहास जानने के प्रमुख साधन - अफसढ़ का लेख तथा देवबर्नाक का लेख
- इसी काल में कन्नौज को लेकर पाल, प्रतिहारों एवं राष्ट्रकूटों के मध्य त्रिपक्षीय संघर्ष हुआ।
- इसी समय अनेक नए वंशों का उदय हुआ, जो निम्नलिखित हैं -

- गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद लगभग दो शताब्दियों तक मालवा में उत्तरगुप्त वंश ने शासन किया।
- **संस्थापक-** कृष्णगुप्त
  - अफसढ़ लेख में इसे 'अच्छे वंश का' तथा 'असंख्य शत्रुओं का विजेता' कहा गया है।
- **कुमारगुप्त**
  - **उपाधि** - 'महाराजाधिराज'
  - उत्तरगुप्त वंश का चौथा शासक
  - यह जीवितगुप्त का पुत्र था।
  - इसके समय में यह वंश सामंत स्थिति से मुक्त हुआ।
  - अफसढ़ लेख के अनुसार मौखरि नरेश ईशानवर्मा तथा इसके मध्य युद्ध हुआ, जिसमें कुमारगुप्त की विजय हुआ।
- इसके बाद क्रमशः दामोदरगुप्त, महासेनगुप्त, देवगुप्त तथा माधवगुप्त शासक हुए।
- **आदित्यसेन**
  - **उपाधि** - 'परमभट्टारक महा- राजाधिराज'
  - माधवगुप्त का पुत्र
  - आदित्यसेन मगध का चक्रवर्ती शासक बना।
  - अफसढ़, शाहपुर तथा मंदर पर्वत के लेख से इसके विजयो के बारे में जानकारी मिलती है।
  - मंदर लेख से पता चलता है कि इसने तीन अश्वमेध यज्ञ किए।
  - आदित्यसेन के पुत्र देवगुप्त द्वितीय ने भी 'परमभट्टारक महाराजाधिराज' की उपाधि ग्रहण की।
  - जीवितगुप्त द्वितीय इस वंश का अंतिम महान शासक था।
  - इस वंश के अंतिम शासक जीवितगुप्त द्वितीय को कन्नौज नरेश यशोवर्मा ने मारकर इस वंश को 725 ई. में समाप्त कर दिया।

❑ कन्नौज का मौखरि वंश –

- **संस्थापक** – हरिवर्मा (गुप्तों का सामंत)
- इसके बाद आदित्यवर्मा ईश्वरवर्मा, ईशानवर्मा, सर्ववर्मा, अवन्तिवर्मा, ग्रहवर्मा राजा हुए।
- इसके बाद राज्यश्री ने कन्नौज का शासन अपने भाई हर्षवर्द्धन को दे दिया।
- **ईशानवर्मा**
  - मौखरि वंश को सामंत से स्वतंत्र कराया।
  - ईश्वरवर्मा का पुत्र था।
  - **उपाधि** - 'महाराजाधिराज'
  - ईशानवर्मा के पश्चात उसका पुत्र सर्ववर्मा शासक हुआ।
- **सर्ववर्मा**
  - **उपाधि** - 'महाराजाधिराज'
  - ईशानवर्मा का पुत्र
  - मगध को मौखरि आधिपत्य के अंतर्गत यही लाया था।
- **अवन्तिवर्मा**
  - यह सर्ववर्मा का पुत्र था।

- उपाधि - 'महाराजाधिराज'

- **ग्रहवर्मा**
  - अवन्तिवर्मा का पुत्र
  - इसका विवाह थानेश्वर के शासक प्रभाकरवर्द्धन की कन्या राज्यश्री के साथ हुआ था। कालांतर में मालवा के शासक देवगुप्त ने कन्नौज पर आक्रमण कर ग्रहवर्मा को मार डाला तथा राज्यश्री को कन्नौज के बंदीगृह में डाल दिया।
  - ग्रहवर्मा की मृत्यु के पश्चात हर्षवर्द्धन ने अपनी राजधानी थानेश्वर से कन्नौज स्थानांतरित कर लिया था।
  - इसका उद्देश्य प्रशासनिक कार्यों में राज्यश्री को सहायता देना था।

पुष्यभूति वंश

पुष्यभूति वंश के स्रोत -

- **साहित्य स्रोत** - बाणभट्ट के हर्षचरित एवं कादंबरी तथा बौद्ध ग्रंथ आर्यमंजुश्रीमूलकल्प
- **पुरातात्विक स्रोत** - बाँसखेड़ा, मधुबन तथा ऐहोल का लेख तथा मुहरें
- **विदेशी विवरण**- ह्वेनसांग का यात्रा विवरण 'सी-यू-की', ह्वेनसांग की जीवनी (ह्री-ली द्वारा रचित) तथा इत्सिंग के विवरण

- **इस वंश के शासक** - नरवर्द्धन, राजवर्द्धन, आदित्यवर्द्धन एवं प्रभाकरवर्द्धन
- प्रभाकरवर्द्धन के दो पुत्र -राज्यवर्द्धन एवं हर्षवर्द्धन तथा पुत्री राज्यश्री थी।
- हर्षचरित में प्रभाकरवर्द्धन को हुण हरिण केसरी कहा गया है।
- ये सम्भवतः गुप्तों के अधीनस्थ सामन्त थे, किन्तु हूणों के आक्रमण के पश्चात् स्वतन्त्र हो गए।
- वाणभट्ट के अनुसार इस वंश का संस्थापक पुष्यभूति था, जिसकी तुलना हर्षचरित में चन्द्र से की गई है। ये संभवतः वैश्य थे।

प्रभाकर वर्धन

- थानेश्वर का प्रथम राजा जिसने अपनी उन्नति के द्वारा ख्याति प्राप्त की
- **उपाधि**- परमभट्टारक व महाराजाधिराज
- वाणभट्ट के अनुसार उसने हूणों को पराजित किया तथा उसे हूणहरिणकेसरी कहा गया है।
- इसके समय वर्द्धन वंश की शक्ति और प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई।
- इसने मौखरि वंश के शासक ग्रहवर्मा के साथ अपनी पुत्री राज्यश्री का विवाह किया। प्रभाकरवर्द्धन के पश्चात् राज्यवर्द्धन शासक बना।

राज्यवर्धन

- पिता की मृत्यु के समय पंजाब में हूणों से संघर्षरत।
- सिंहासनारूढ़ होते ही उसे समाचार मिला कि राजश्री (बहन) के पति कन्नौज के राजा ग्रहवर्मा की मालवा के परवर्ती गुप्त शासक देवगुप्त ने हत्या कर दी है तथा राज्यश्री को कारागार में डाल दिया गया है।
- अपनी बहन राज्यश्री को बचाने के प्रयास में राज्यवर्द्धन की मालवराज देवगुप्त एवं गौड़ शासक शशांक द्वारा मिलकर हत्या कर दी गई।
- राजश्री इन लोगों की कैद से निकलकर विंध्य पर्वत में भाग गयी, जिसे बौद्ध भिक्षु दिवाकरमित्र की सहायता से हर्ष ने खोजा।

हर्षवर्धन

- राज्यवर्धन का भाई
- **राजधानी**- थानेश्वर से कन्नौज स्थानांतरित की।
- **उपासक**- सूर्य, शिव व बुद्ध का।
- **अन्य नाम**- शिलादित्य
- हर्ष का राज्य उत्तर में कश्मीर को छोड़कर शेष प्रांतों में था।
- महायान बौद्ध धर्म को संरक्षण, किंतु शैव व अन्य धर्म के प्रति उदार भी।
- ह्वेनसांग उसको बौद्ध धर्म के प्रति पक्षपातपूर्ण बताता है।
- हर्ष ने कन्नौज में महायान सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार हेतु एक समारोह का आयोजन किया, जिसमें 20 देशों के राजा शामिल थे।
- इसने प्रयाग में महामोक्ष परिषद् का आयोजन भी कराया।
- 3 चीनी दूत उसके दरबार में आये।
- वाणभट्ट, मयूर, दिवाकर, ह्वेनसांग आदि को संरक्षण दिया।
- हर्ष, विद्वानों का संपोषक तो था हीं, प्रियदर्शिका, रत्नावली व नागानंद नामक तीन नाटकों की भी रचना की, उसे साहित्यकार सम्राट कहा गया।
- हर्ष का शासन सामंतवादी व्यवस्था पर आधारित था, वेतन के रूप में भूमि दी जाती थी।
- सामंतों की अपनी सेना थी, जिसे वे युद्ध के समय देते थे। इसी समय स्वावलम्बी ग्रामीण अर्थव्यवस्था का उदय हुआ।
- ह्वेनसांग भारत में चार वर्णों का वर्णन करता।
- वाण के अनुसार हर्ष प्रत्येक कार्य वर्ण या आश्रम के नियमों से करता था। इसके समय में महिलाओं की स्थिति और गिरी।
- **साम्राज्य विस्तार**
  - **बल्लभी का युद्ध-**
  - मध्य - हर्षवर्धन एवं बल्लभी का शासक ध्रुवसेन द्वितीय
  - परिणाम-
    - ध्रुवसेन द्वितीय पराजित हुआ।
    - उसने भड़ौच के गुर्जर शासक दद्द द्वितीय के यहां शरण ली।
    - हर्ष ने बल्लभी नरेश ध्रुवसेन का राज्य लौटा कर उसके साथ अपनी पुत्री का विवाह कर दिया।
  - **सिंघ युद्ध**
  - **मध्य** - हर्षवर्धन तथा सिंघ का राजा
  - **परिणाम**
    - हर्षवर्धन ने धर्म-विजय की नीति अपना कर, भेंट-उपहारादि स्वीकार कर उसका राज्य लौटा दिया।
  - **चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय के साथ युद्ध**
  - **मध्य** - हर्षवर्धन तथा चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय। यह युद्ध नर्मदा नदी के तट पर लड़ा गया।
  - **तात्कालिक कारण** - हर्ष के राज्य की पश्चिमी सीमा नर्मदा नदी तक विस्तृत हो गई थी तथा नर्मदा के दक्षिण का राजा पुलकेशिन भी उत्तर दिशा में राज्य विस्तार करना चाहता था।
  - **परिणाम** -
    - रविकीर्ति के ऐहोल अभिलेख (634 ई.) से पता चलता हैं कि, इस युद्ध में हर्ष पराजित हुआ।
    - रविकीर्ति पुलकेशिन द्वितीय का दरबारी कवि था। पुलकेशिन द्वितीय की राजधानी बादामी या 'वातापी' थी।
  - **दूसरा पूर्वी अभियान**
    - इस अभियान में हर्ष ने मगध, बंगाल और उड़ीसा को जीता।
    - चीनी प्रलेखों में हर्ष को 'मगधराज' कहा गया है।
    - हर्ष ने माधवगुप्त को 'मगधराज्य' का शासन भार सौंपा।
  - **अन्य विजयें** -
    - नेपाल में हर्ष संवत् का प्रारंभ संभवतः हर्ष की नेपाल विजय के बाद हुआ।
    - 'हर्षचरित' में हर्ष द्वारा नेपाल विजय का उल्लेख है।
    - कामरूप (असम) के राजा भास्करवर्मन ने 'हंसबेग' नामक राजदूत के माध्यम से हर्ष से मैत्री संबंध स्थापित किए।

- ह्वेनसांग के अनुसार हर्ष ने पाँच राज्यों पंजाब, कन्नौज, गौड़, मिथिला, उड़ीसा को जीता।

- **हर्ष कालीन प्रशासन**
  - केंद्र (सम्राट)> भुक्ति (प्रांत) > विषय (विषयपति) > पाठक > ग्राम (महत्तर/ग्रामिक)
  - सामंतवादी प्रवृत्ति के लक्षण
  - **दौस्साधसाधनिक** (राजकीय कार्य करने वाला उच्च अधिकारी) नामक नवीन पद का सृजन
  - **याम चेटि** - रात्रि में पहरा देने वाली औरते
  - **प्रमातार** - भूमि पर्यवेक्षण का मुख्य अधिकारी
  - हर्षचरित में हर्षवर्द्धन को 'सभी देवताओं का सम्मिलित अवतार' कहा गया है।
  - हर्षवर्द्धन के अधीन शासको को 'महाराज' / 'महासामंत' कहा जाता था।
  - **लोकपाल**- प्रांतीय शासक
  - भुक्ति का शासक राजस्थानीय, उपरिक/ राष्ट्रीय कहलाता था।
  - **चाट या भाट** - पुलिसकर्मी
  - **कर** - भाग, हिरण्य तथा बलि
    - भाग- कृषकों की उपज का छठा भाग
    - 'हिरण्य' -व्यापारियों से लिया जाने वाला नकद कर

- **धार्मिक स्थिति**
  - हर्ष प्रारंभिक जीवन में 'शैव' था।
  - बौद्ध भिक्षु दिवाकर मिश्र के प्रभाव से वह बौद्ध धर्म की ओर आकृष्ट हुआ।
  - ह्वेनसांग से मिलने के पश्चात पूर्ण बौद्ध बन गया।
  - हर्ष ने बौद्ध धर्म की महायान शाखा को संरक्षण दिया।
  - हर्ष धार्मिक रूप से सहिष्णु शासक था।
  - इसने कन्नौज तथा प्रयाग में धर्म सभाओं का आयोजन किया था।
  - कन्नौज की सभा ह्वेनसांग के सम्मान में आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता- ह्वेनसांग ने की थी ।
  - कन्नौज की सभा के बाद हर्ष ह्वेनसांग के साथ प्रयागराज गया।
  - यहाँ प्रति पांचवें वर्ष धार्मिक अनुष्ठान, समारोह आयोजित करता था, जिसे 'महामोक्ष-परिषद' कहा जाता था।
  - हर्ष प्रयाग में लगभग ढाई माह तक चलने वाले 'दान सत्र' का आयोजन करता था, जिसमें वह अपने रत्न और आभूषण भी दान कर देता था।
  - हेनसांग ने प्रयाग में ही हर्ष से स्वदेश (चीन) जाने के लिए विदाई ली।

- **आर्थिक स्थिति**
  - राज्य की आय का मुख्य साधन भूमि थी, जिनमें उद्रंग, उपरिकर, धान्य और हिरण्य अधिक महत्त्वपूर्ण थे।
  - इसके अतिरिक्त तुल्यमेय, भाग, भोग आदि कर लिए जाते थे।
  - भोगिक - कर वसूलने वाला अधिकारी
  - पुस्तपाल - जमीन का हिसाब रखने वाला अधिकारी
  - वन भी राजकीय आय के महत्त्वपूर्ण स्रोत थे।
  - हर्षचरित में आदिवासी कृषकों का उल्लेख है।
  - मथुरा सूती वस्त्रों के निर्माण हेतु प्रसिद्ध था।
  - **आर्थिक शब्दावली**
  - **अप्रहता भूमि** - कृषि अयोग्य भूमि
  - **अप्रदा** - न रहने योग्य भूमि
  - **खिल** - बंजर भूमि
  - **शौल्किक** - चुंगी वसूलने वाला अधिकारी
  - **तारिक** - नदी के घाट पर कर वसूलने वाला अधिकारी
  - **हट्टमति** - क्रय-विक्रय पर कर वसूलने वाला अधिकारी

- **हर्षकालीन साहित्य**
  - हर्षवर्द्धन ने स्वयं तीन नाटक लिखे - प्रियदर्शिका, नागानन्द एवं रत्नावली
  - बाणभट्ट ,मयूर, जयसेन और मातंग दिवाकर हर्षवर्द्धन के दरबारी लेखक थे।
  - बाणभट्ट - कादम्बरी, हर्षचरित, पूर्वपीठिका और चण्डीशतक की रचना की।
  - मयूर - सूर्यशतक की रचना की थी।

Note:-
- कुम्भमेला प्रारम्भ करने का श्रेय हर्षवर्द्धन को दिया जाता है।

- **चीन से भारत आने वाले प्रमुख यात्री**
  - **फाह्यान**
    - **वर्ष** -399-414 ई
    - **शासक** - चंद्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य
    - **अन्य तथ्य** - चीन से भारत आने वाला प्रथम बौद्ध भिक्षु
  - **ह्वेन त्सांग:**
    - **वर्ष** -629-645 ई
    - **शासक** - हर्षवर्द्धन
    - **अन्य तथ्य** - अपनी पुस्तक "सी-यू-की" में अपनी यात्रा और तत्कालीन भारत का विवरण दिया है.
  - **इत्सिंग:**
    - **वर्ष** -671-695 ई
    - **शासक** - हर्षवर्धन के शासनकाल के बाद
    - **अन्य तथ्य** - उन्होंने नालंदा विश्वविद्यालय में 10 साल तक रहकर संस्कृत और बौद्ध धर्म के ग्रंथों का अध्ययन किया

गुप्तोत्तरकालीन समाज

- सातवाहन काल से जो भूमि अनुदान की परंपरा आरंभ हुई वह गुप्तोत्तर काल तक आते-आते समाजिक राजनीतिक और अर्थिक आधार पर बहुआयामी परिवर्तन परिलक्षित करता है।
- भट्टभुवनदेवकृत 'अपराजितपृच्छा' सामंतों की 4 श्रेणी (महामण्डलेश्वर, मांडलिक, महासामंत एवं लघु सामंत) के लिए घरों के प्रकार का वर्णन है।
- बंगाल एवं दक्षिण भारत में मुख्यतः दो वर्ण थे - ब्राह्मण, शूद्र।
- इस युग का सर्वाधिक विस्मयकारी परिवर्तन जातियों का प्रारम्भ था, जिसने ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यों व शूद्रों सभी को प्रभावित किया।

❑ **सामाजिक स्थिति** –

- **ब्राह्मण**
  - समाज में ब्राह्मण का सर्वश्रेष्ठ स्थान था।
  - अलबरूनी, अलमसूदी, ह्वेनसांग के अनुसार ब्राह्मणों को सबसे पवित्र माना जाता था।
  - जो ब्राह्मण अपने मूलकर्म एवं जाति स्तर को छोड़कर क्षत्रियों के कार्य को अपना लेते थे ऐसे ब्राह्मण 'ब्रह्म-क्षत्रिय' के नाम से जाने जाते थे।
  - 'शूद्र ब्राह्मण' वह है जो लाख, नमक, दूध, शहद, मांस आदि का विक्रय करता है।
  - इस काल की एक महत्वपूर्ण घटना राजपूतों का अभ्युदय है।
  - 12वीं शताब्दी तक राजपूतों की 36 जातियाँ प्रसिद्ध हो गयी थी, जिसमें प्रमुख हैं - चालुक्य, चौहान, प्रतिहार, परमार, गुहिल, चंदेल, कछवाहा, मेद आदि।
  - क्षत्रियों से उच्चतम् स्तर का दावा करने वाले 'शत-क्षत्रिय' कहलाए।
  - इब्नखुर्दादव ने क्षत्रिय के दो वर्ग बताये
    - **सवुकफूरिया**- राज्यवंश तथा सामंतवर्ग व योद्धा ।

- **कतरिया**-कृषि व्यापार से जीविका चलानेवाले क्षत्रिय ।

○ अलबरूनी के अनुसार राजपूत क्षत्रिय ब्राह्मण के समान थे। खेतीहर क्षत्रिय वैश्य के समान थे, इन्हें वेद पढ़ने का अधिकार नहीं था।

■ **वैश्य :-**

○ पराशर ने 'कुशीदवृति' (सूद पर उधार देना) को वैश्यों का व्यवसाय कहा।

○ अलबरूनी के अनुसार वैश्व व शुद्र को वेद पढ़ने व सुनने का अधिका नहीं है।

■ **शूद्र :-**

○ इस काल में कृषि कार्य आमतौर पर शूद्रों का व्यवसाय हो गया।

○ ह्वेनसांग तथा इब्नखुर्दादव ने कृषि को शूद्रों का समान्य व्यवसाय बताया है।

○ कुटुम्बि को शूद्रों के अंतर्गत रखा गया।

○ किसानों को दो वर्ग में बाटा गया था

- **स्वतंत्र किसान (कुटुम्बि)** - भूमि के स्वामी थे, राज्य को अनेक कर देते थे।
- **त्र्यधसीरीन या सीरीन** - बंटाई पर खेती करते थे, उपज का 1/3 या 1/4 मिलता था।

○ उसने शूद्रों को सरोवर, कूप, आहारगृह बनवाने की आज्ञा दी, किंतु 'मोक्ष' का अधिकार नहीं दिया।

○ **शुद्र को दो वर्ग में विभक्त किया गया -**

- **सत् :-** इनको पौराणिक विधि से संस्कार, पंचमहायज्ञ करने की अनुमति थी।
- **असत् :-** उपरोक्त अधिकार नहीं था।

○ शूद्रों के बंधुआ होने के संकेत एक धार्मिक विचारधारा में मिलते हैं, जो पूर्व मध्यकाल में अत्यंत प्रभावी हो गयी थी।

■ **वर्ण संकर जातियाँ**

○ याज्ञवल्क्य द्वारा वर्णित मीमांसा उच्च जाति के पुरूषों का निम्न जातियों के स्त्रियों से अनुमोदित रीति से (अनुलोम) विवाह और इसके विपरीत (प्रतिलोम) विवाहों के साथ-साथ अन्य विविध प्रकार के निषिद्ध विवाहों के परिणामस्वरूप उत्पन्न वर्णसंकर जातियों की उत्पत्ति हुयी।

○ वर्णसंकर जातियों की सबसे लंबी सूची वैजयन्ति ने दी है, जिसमें 64 वर्णसंकर जातियों का उल्लेख है।

○ अनुलोम जातियाँ द्विज मानी जाती थीं। इसलिए उन्हें यज्ञोपवित संस्कार का अधिकार था। इस काल में अस्पृश्यता के नियम कठोर हुए।

❑ स्त्रियों की स्थिति

■ स्त्रियों की स्थिति में गिरावट आयी, बाल विवाह प्रचलित हो गया, स्मृतियों में विवाह का आदर्श उम्र 8-10 वर्ष, 8 वर्ष की लड़की 'गौरी' व 10 वर्ष की लड़की 'कन्या' कहलायी।

■ सती प्रथा अधिक प्रचलित हो गयी। अंगिरा, हरीत, अपरार्क, विज्ञानेश्वर ने सती प्रथा की प्रशंसा की।

■ **सती प्रथा में वृद्धि के कारण :-**

○ वैराग्य तथा कठोर संयम संबंधी विचारधारा का समाज पर बढ़ता प्रभाव।

○ पुनर्विवाह का निषेध ।

○ विधवाओं के संपत्ति विषयक अधिकार को विलम्ब से मान्यता ।

❑ दास

■ दास प्रथा में वृद्धि।

■ इनकी स्थिति अंत्यजों तथा तिरस्कृत जातियों से अच्छी थी।

■ मीताक्षरा' में नारद द्वारा कथित 15 प्रकार के दासों का उल्लेख, जिनमें 'गृहज' तथा 'उदर' दास सर्वसाधारण थे।

■ लेख पद्धति के अनुसार वस्तुओं के विनिमय में दासों का निर्यात समुद्री मार्ग से पश्चिमी देशों को होता था।

■ दास-दासियों को दान में देने की प्रथा और प्रबल हुयी।

■ वीरधवल के मंत्री तेजपाल ने नाविकों द्वारा मनुष्य के अपहरण पर रोक लगा दी।

■ इस युग में भी दास प्रायः घेरलू काम में ही लगाये जाते थे।

■ बौद्ध ग्रंथ में मठों, मंदिरों द्वारा दासों को कृषि कार्य में लगाने का वर्णन है।

❑ आर्थिक दशा

■ कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार था।

■ 'नीतिवाक्यामृत' में अनेक प्रकार के संग्रहों में धान्य संग्रह सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

■ उत्पादकता के हिसाब से भूमि का वर्गीकरण किया गया है

○ **वाहीत** - जो बोया गया

○ **उसर** - जहाँ बीज न उगता हो,

○ **अकृष्ट** - जिसमें खेती न की गई हो।

■ झील, नदी, नहर, तलाब और बावड़ियों के द्वारा सिंचाई होती था।

■ आदित्यसेन की पत्नी कोणदेवी ने तलाब खुदवाया था।

■ राजतरंगिणी में खूया या सूय द्वारा झेलम नदी के तट पर बाँध बनवाने का उल्लेख।

■ चंदेल राजाओं ने 'राहिल्य सागर', 'कीरत सागर' जैसे जलाशय बनवाये।

■ परमार राजाओं ने मूंज सागर, भोज सागर जैसे जलाशय बनवाये।

❑ व्यापार

■ अतिरिक्त उत्पादन के आभाव में व्यापार में ह्रास हुआ।

■ **पूर्वी तट के प्रमुख बंदरगाह :-** ताम्रलिप्ति, सप्तग्राम (प्रमुख बंदरगाह), पुरी, कलिंग, शिकाकोस था।

■ **पश्चिमी तट के बंदरगाह:-** देवल, थाना, खंभात, भड़ौंच तथा सोमनाथ था।

■ तट-शुल्क राज्य की आय का महत्वपूर्ण साधन था ।

■ पाल अभिलेख में तट-शुल्क अधिकारी को 'तरिक' कहा गया है।

■ भारत, तिब्बत-आसाम, और चीन के बीच स्थल मार्ग से व्यापार होता था। इस काल में समुद्री व्यापार में अरबों व चीनियों का प्रभाव अधिक था।

■ 11वीं सदी में चीनियों ने 'कुतुबनुमा' का अविष्कार कर लिया था।

■ दक्षिण-पूर्व एशिया से लौंग, अगर, सुपारी, नीला थोथा आदि भारत आता था।

■ चीन के साथ भारत का व्यापार अरबों एवं हिंद एशिया के व्यापारियों की प्रतिद्वंदिता के कारण कम हो रहा था। मुख्यतः दक्षिण भारत के साथ चीन का व्यापार होता था।

■ इस काल में विलास की वस्तुएँ की मांग बढ़ी। व्यापार का सबसे अधिक लाभ दक्षिण, गुजरात व बंगाल को होता था।

■ **प्रमुख व्यापारिक केन्द्र :-** अल इद्रिसी ने मुल्तान को वस्त्र उद्योग का केन्द्र माना है। मानसोल्लास के अनुसार मुल्तान, अन्हिलवाड़, कलिंग वस्त्र उद्योग के केन्द्र थे।

■ भड़ौंच में बने वस्त्र को 'वरोज' व खंभात के वस्त्र को 'खंबयात' कहा जाता था। खंभात के 'वुकरम' वस्त्र विदेश जाते थे। मध्यदेश 'चुनरी' के लिए प्रसिद्ध था। हेनसांग के अनुसार कश्मीर का सफेद लिनन वस्त्र प्रसिद्ध था ।

❑ मुद्रा

■ इस काल के सिक्कों के वजन तथा उपयोग में कमी हुयी।

■ इस काल में अंतर्राज्जीय व्यापार का माध्यम वस्तु विनिमय था।

■ साधारण व्यापार व लेन-देन कौड़ियों के माध्यम से होता था।

■ इस काल में क्षेत्रीय सांस्कृतिक इकाई का अर्विभाव एक महत्वपूर्ण विशेषता है।

■ क्षेत्रीय भाषाओं के बीज इसी काल में दृष्टिगोचर होते हैं।

दक्षिण भारत की राजनीतिक स्थिति

- लगभग 300 ई. के काल खण्ड को विन्ध से दक्षिण के प्रदेशों में द्वितीय ऐतिहासिक चरण कहा जाता है।
- **इस चरण की निम्नलिखित विशेषताएँ थी :-**
  - इन क्षेत्रों में आधा दर्जन राज्य उदित हुए, इनमें कांची के पल्लव बादामी के चालुक्य तथा मदुरै के पाण्ड प्रमुख थे।
  - इस काल में व्यापार, नगर एवं सिक्कों के प्रचलन में ह्रास के चिन्ह दृष्टिगोचर होते है।
  - भूमि अनुदान की प्रचुरता
  - बौद्ध एवं जैन धर्म की तुलना में ब्राह्मण धर्म का प्रचार-प्रसार बढ़ा।
  - द्वितीय चरण दक्षिण भारत के लिए मन्दिरों का युग था।
  - प्राकृत भाषा के स्थान पर स्थानीय एवं संस्कृत भाषा का प्रभाव बढ़ा।

प्रमुख राजवंश

कदम्ब वंश

- **संस्थापक** – मयूर श्रमण
- **राजधानी -** वैजन्ती/वनवासी
- कदम्ब वंशी शासकों की वंशावली तालगुण्डा थी इसकी जानकारी तालगुण्ड स्तम्भ लेख से मिलती है।
- **मयूर श्रमण**
  - समय 345 से 360 ई. तक माना जाता है।
  - यह पढ़ने के लिए वह कांची गया था। उसे पल्लवों ने अपमानित किया था।
  - पल्लव अधिकारियों से अपने अपमान का बदला लेने के लिए सैनिक बने मयूरशर्मन ने पल्लव राज्याधिकारियों को पराजित कर कदम्ब राज्य की नींव रखी।
  - उसने 18 अश्वमेध यज्ञ किय थे।
- **कंगनवर्मन**
  - मयूर श्रमण का उत्तराधिकारी था
  - उपाधि - महराजाधिराज
- **काकुस्थवर्मन**
  - इस वंश का सबसे प्रतापी शासक था उसने गंग एवं गुप्त वंश के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित किया।
  - काकुत्सवर्मन ने तालगुण्ड में एक विशाल तालाब खुदवाया था
- इस वंश का एक अन्य शासक मृगेश्ववर्मन था, जिसने पलासिका में एक जैन मन्दिर बनवाया था।
- उल्लेखनीय है कि, चतुर्थ शताब्दी के मध्य से कदम्बों का दक्षिण पथ के दक्षिण-पश्चिम में उत्पकर्ष हुआ।
- कदम्ब लोग मानण्यगोत्रीय ब्राह्मण थे, जो अपने को हरित पुत्र कहते थे।
- उनका मुख्य कार्य वेदों का अध्यन तथा यज्ञों का अनुष्ठान करना था।
- संभवतः भगीरथ के काल में ही गुप्त शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय ने कालिदास के नेतृत्व में अपना दूतमंडल कुन्तल नरेश के दरबार में भेजा था।
- कदम्ब प्रारम्भ में पल्लवों के अधीन थे।
- बादामी के चालुक्यों ने 540 ई. के लगभग कदम्बों को पराजित कर उनका राज्य अपने राज्य में मिला लिया।

गंग वंश

- **संस्थापक** –वर्मन कोंकणीवर्मन
- **उपाधि -** महाराजधिराज
- **राजधानी -** कोलार/कुबलाल
  - बाद में गंगों की राजधानी तलकाड़ हो गयी।
- इसे पश्चिमी गंग कहा जाता है ताकि इसकी पहचान कलिंग के पूर्वी गंग से अलग की जा सके। वे आधुनिक मैसूर क्षेत्र पर शासन करते थे। इसलिए मैसूर क्षेत्र को गंगवाड़ी भी कहा जाता है।
- गंग राजाओं ने 350 ई. से 550 ई. तक स्वतंत्र रूप से शासन किया।
- गंगों का पल्लवों तथा चालुक्यों से वैवाहिक संबंध था।
- गंग शासक **दुर्विनित** कन्नड़ एवं संस्कृत का विद्वान था। गंगों को पल्लवों की अधीनता से मुक्त किया।
- **श्रीपुरुष** इस वंश का अन्य शासक था, जो अपनी राजधानी को मन्यपुर ले आया। इसका राज्य श्रीराज्य कहलाता था, जो समृद्धि का रेखांकित करता है।

पल्लव वंश

- संस्थापक- सिंह विष्णु
- पूर्वी क्षेत्र में पल्लव राज्य की स्थापना हुई एवं पश्चिम में वाकाटकों को पतनोपरान्त चालुक्त राज्य वंश की स्थापना हुई। संभवतः पल्लव, स्थानीय जनजाति थी, जिसने तोंडडाईनाडू अर्थात् 'लताओं के देश' में अपनी सत्ता स्थापित की।
- तमिल में पल्लव शब्द का अर्थ है- **डाकू**
- पल्लव का संस्कृतार्थ लता है और यह शब्द तोंडाई का रूपान्तरण है जो लता का ही वाचक है।
- **साहित्यिक स्रोत**
  - इस काल में संस्कृत एवं तमिल में अनेक ग्रंथों की रचना हुई।
  - महेन्द्रवर्मप्रथम की रचना "मत्त विलास प्रहसन" (संस्कृत) में शैव सम्प्रदाय के कापालिकों पर व्यंग्य किया गया है। पुलिस एवं न्याय व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार पर व्यंग्य है।
  - जैन ग्रंथ 'लोक विभाग' एवं बौद्ध ग्रंथ 'महावंश' से भी पल्लवों के विषय में जानकारी मिलती है।
  - ह्वेनसांग ने लगभग 64 ई. में कांची की यात्रा की। उस समय नरसिंह वर्मन शासक था।
  - ह्वेनसांग उसे महान शासक बताता है। ह्वेनसांगानुसार, 'धर्मपाल नामक विद्वान का जन्म स्थल कांची ही था कांची में अनेक बौद्ध विहार स्थित हैं।"
  - समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति में पल्लव शासक विष्णुगोप का उल्लेख मिलता है, जो कांची का शासक था।
- **पुरातात्विक स्रोत**
  - पल्लवों के अभिलेख मुद्राओं शिलाओं मन्दिरों ताम्रपत्रों, आदि पर उत्कीर्ण है।
  - उनके प्रारम्भिक अभिलेख प्राकृत भाषा में पाये गये है। बाद के अभिलेख संस्कृत भाषा में है।
  - पल्लव अभिलेखों में पल्लवों को भारद्वाजगोत्रीय तथा अश्वत्थामा के वंशज बताया गया है, किन्तु तालगुण्ड लेख में उन्हें क्षत्रिय कहा गया है।
  - पल्लवों का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक केंद्र कांची था परन्तु उनका मूल स्थान तोंडमण्डलम् था।
- **सिंह विष्णु**
  - पल्लव वंश का संस्थापक सिंह विष्णु था।
  - उसे अवनी सिंह तथा सिंह विष्णुपोत्तरायण भी कहा जाता था। वह विष्णु का उपासक था एवं मामल्यपुर में आदि वराह का निर्माता था।
  - उसके दरबार में किरातार्जुनीय महाकाव्य के लेखक भारवि रहते थे। सिंह विष्णु के समय का कोई अभिलेख नहीं मिला है।

- **महेन्द्रवर्मन प्रथम (600 से 630 ई. पू.)**
  - इसके काल में पल्लव चालुक्य एवं पल्लव पाण्ड्य संघर्ष प्रारम्भ हुआ वह पुलकेशिन द्वितीय का समाकालीन था।
  - पुलकेशिन ने महेन्द्रवर्म से वेंगी का क्षेत्र छीन लिया।
  - महेन्द्रवर्मन प्रथम एक सांस्कृतिक रुझान वाला व्यक्ति था उसने मत्तविलास प्रहसन तथा भगवतज्जुकीयम् की रचना की।
  - प्रारम्भ में वह जैन था। बाद में नयनार संत अप्पर के संपर्क में शैव बन गया।
  - उसने रुद्र कार्य से संगीत की शिक्षा ग्रहण की। उसने अनेक उपाधियाँ भी धारण की थी.
  - **उपाधियाँ** - विचित्र चित्र, मत्तविलास गुणभर, महेन्द्र विक्रम आदि
  - महेन्द्रवर्मन के काल में एकाश्म मन्दिरों का निर्माण प्रारंभ हुआ।
- **नरसिंहवर्मन प्रथम (630 से 660 ई. पू.)**
  - उपाधि - वातापीकोंड
  - नरसिंहवर्मन ने श्रीलंका के शासक मानवर्मन के सहयोग पुलकेशिन द्वीतीय को पराजित किया।
  - उसने पुलकेशिन द्वितीय को परियल मणिमंगलाय एवं सुरमार के युद्धों में पराजित किया। उसने महाबलिपुरम् नगर बसाया तथा महामल्ल की उपाधि धारण की।
  - चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय को पराजित करने में नरसिंहवर्मन द्वितीय ने श्रीलंका के शासक की सहायता प्राप्त की थी। इसी के समय रथ शैली के मंदिरों का निर्माण किया गया।
  - नरसिंहवर्मन प्रथम ने अपने पिता महेंद्रवर्मन द्वारा शुरू की गई एकाश्मक मंदिरों की स्तंभ निर्माण शैली में सिंह शीर्ष विन्यास की कला प्रारम्भ की।
  - इस प्रकार की द्रविड़ वास्तु स्तंभ रचना को 'मामल्ल शैली' के नाम से जाना जाता है।
  - कला में मामल्ल शैली में दो प्रकार के मंदिर आते हैं- मंडप तथा रथ।
    - **मंडप-** नरसिंहवर्मन 'मामल्ल' के काल में निर्मित मंडप अधिक अलंकृत और विकसित थे, विशेष रूप से वराह, महिष और पंच पांडव मंडप में यह अलंकरण अधिक स्पष्ट है।
    - **रथ -** ये रथ आकार में एकाश्मक मंदिर हैं, जिसमें स्तंभ की लाट नालीदार है, स्तंभ सिंहों के सिर पर स्थित हैं तथा स्तंभ शीर्ष मंगलघट आकार में हैं।
- **महेंद्रवर्मन द्वितीय (668-670 ई.)**
  - यह नरसिंहवर्मन का पुत्र था, जो अल्पकाल के लिए ही शासक बना था।
- **परमेश्वरवर्मन प्रथम (670-680 ई.)**
  - **उपाधि -** 'परम महेश्वर' एवं विद्याविनीत
  - पल्लवों के परंपरागत शत्रु चालुक्यों के राजा विक्रमादित्य से इसका युद्ध हुआ था, जिसमें परमेश्वरवर्मन की विजय हुई थी।
  - इसने मामल्लपुरम के गणेश मंदिर का निर्माण कराया।
- **नरसिंहवर्मन द्वितीय (680-720 ई.)**
  - **उपनाम** - "राजसिंह"
  - इसका शासनकाल स्थापत्य कला की गतिविधियों हेतु प्रसिद्ध है।
  - इसके शासनकाल में मंदिर स्थापत्य की **'द्रविड़ शैली'** का प्रारंभ हुआ।
  - उसका काल शन्तिपूर्ण रहा (पल्लव चालूक्य संघर्ष नहीं हुआ) अतः कला एवं साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति हुई।
  - उसने कांची में कैलाश मन्दिर, महाबलिपुरम् में शोर मन्दिर और तटीय मन्दिर का निर्माण कराया।
  - यह शैव था। उसके दरबार में दण्डिन् रहते थे, जिन्होंने दुशकुमारचरित एवं अवन्तीसुन्दरी की रचना की।
  - नरसिंहवर्मन ने एक दूतमंडल चीन भेजा था। तथा चीनी यात्रियों के लिए नागपट्टनम् में एक विहार निर्मित करवाया था। उसके समय में समुद्री व्यापार में वृद्धि हुई।
- **नंदीवर्मन द्वितीय (731 से 795 ई.)**
  - विक्रमादित्य का समकालीन था।
  - गोविन्द तृतीय के अभिलेख से यह प्रमाणित होता है कि, राष्ट्रकूट नरेश दंतिदुर्ग ने पल्लवों की राजधानी कांची पर विजय प्राप्त कर अपनी पुत्री का विवाह नन्दि वर्मन द्वितीय से कर दिया था।
  - इन दोनों के संयोग से दंति वर्मन नामक पुत्र ने जन्म लिया।
  - उदय चन्द्र नरसिंह वर्मन द्वितीय का योग्य सेनापति था।
  - नन्दि वर्मन द्वितीय वैष्णव धर्म का अनुयायी था।
  - इसके समय में समकालीन वैष्णव सन्त तिरुमंगै अलवार ने वैष्णव धर्म का प्रचार-प्रसार किया।
  - नन्दि वर्मन द्वितीय ने बैकुंठ, पेरुमल एवं मुक्तेश्वर मन्दिर का निर्माण करवाया था।
  - कशाक्कुण्डि लेख में इसके लिए पल्लवमल्ल, क्षत्रिय मल्ल, राजाधिराज, परमेश्वर एवं महाराज आदि उपाधियों का प्रयोग किया गया है।
  - इसने पल्लव राजाओं में सबसे अधिक समय (65 वर्ष) तक शासन किया।
- **अपराजित** –
  - काञ्ची के पल्लव वंश का अंतिम महत्वपूर्ण शासक अपराजित था। जिसे उसके मित्र चोल नरेश आदित्य प्रथम ने के लगभग मार डाला।
  - आठवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में चालुक्य नरेश विक्रमादित्य द्वितीय ने पल्लव राजधानी काञ्ची को तीन बार जीता।
  - पल्लवों को दन्तिवर्मन के शासनकाल में पाण्ड्यों एवं राष्ट्रकूटों के आक्रमण से भी भारी हानि हुई।
  - पल्लवों के पतन के बाद चोल दक्षिण की सर्वाधिक शक्तिशाली शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

❑ चालुक्य वंश

- **संस्थापक** – जय सिंह
- **राजधानी** – बादामी (वातपी)
  - ईसा की छठी सदी के मध्य से आठवीं सदी के मध्य तक दक्षिणा पथ पर चालुक्य वंश का आधिपत्य रहा। उसकी राजनीति का केंद्र बादामी वातापी था। अतः उन्हें बादामी वातपी का चालुक्य कहा जाता है। उन्हें पूर्वकालीन पश्चिमी चालुक्य भी कहा जाता है। चालुक्य शासक अपने को ब्रह्मा, मनु, चंद्र आदि का वंशज मानते थे। उन्होंने अपने को अयोध्या के राजवंशों से जोड़ा है।
- **ऐतिहासिक स्रोत**
  - **एहोल अभिलेख** –
    - पुलकेशिन द्वितीय के एहोल अभिलेख की रचना रवि कीर्ति (जैन) ने संस्कृत भाषा एवं दक्षिणी ब्रह्मी लिपी में की थी।
    - वह जैन था. किन्तु यह अभिलेख विष्णु मन्दिर पर उत्कीर्ण है। इस अभिलेख में कालिदास तथा भारवि का उल्लेख है। यह प्रशास्ति लेख है। इससे हर्ष की हार की सूचना मिलती है।
  - **बादामी के अभिलेख** –
    - इस वंश को हारित पुत्र तथा मान्वगोत्रीय कहा गया है। वे अपने आम को चंद्रवंशी कहते थे।
    - पुलकेशिन प्रथम का अभिलेख है।
    - बन्तेरप्पा मंदिर के पीछे यह शिलालेख स्थित है।
- **पुलकेशिन प्रथम (535 ई. से 566-67 ई.)**

- इसे चालुक्य वंश का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।
- **राजधानी -** वातापीपुर
- यज्ञ किये- अश्वमेध, बाजपेय, अग्निहोम एवं हिरण्यगर्भ आदि
- इसकी तुलना पौराणिक राजा दिलीप और ययाति से की गई है।
- वह मनुस्मृति, पुराण, महाकाव्य, आदि का ज्ञाता था।

- **कीर्तिवर्मन प्रथम (566 से 597 ई.)**
  - उपधियां- पुरुणपराक्रम और सत्याश्रय
  - यह पुलकेशिन प्रथम का पुत्र था।
  - इसने कोंकण के मौर्यो, वैजन्ती या वनवासी के कदम्ब, वेल्लारी के नल शासकों को पराजित किया।
  - महाकूट स्तम्भ लेख में उसे बहु-सुवर्ण अग्निष्टोम यज्ञ करने वाला कहा गया है।
- **मंगलेश (597 से 609 ई.)**
  - यह पुलकेशिन प्रथम का पुत्र था।
  - इसने कल्चुरी शासक को हराया।
  - वह वैष्णव था एवं वातापी में गुफा मन्दिर, को पूर्ण कराया।
  - पुलकेशिन द्वितीय ने इसकी हत्या कर दी।
- **पुलकेशिन द्वितीय (609 से 642 ई.)**
  - **उपाधि -** सत्याश्रय पृथ्वीवल्लभ महाराज
  - वह इस वंश का सबसे महत्वपूर्ण शासक था।
  - वह कीर्तिवर्मन का पुत्र था।
  - इसने वनवासी के कदम्बों, कोंकण के मौर्य, लाल, मालवा एवं गुर्जर क्षेत्र को जीता।
  - इसने हर्ष के दखिण अभियान को प्रभावशाली ढंग से रोका एहोल अभिलेख से सूचना मिलती है कि हर्ष को हराने के बाद उसने परमेश्वर की उपाधि ली।
  - इसने कांची के पल्लवों को हराकर वेंगी का क्षेत्र छील लिया एवं अपने भाई विष्णुवद्धन को नियुक्त किया, जिससे वंगी का चालुक्य शाखा की नींव पड़ी।
  - पुलकेशिन द्वितीय ने महेन्द्रवर्मन प्रथम को हराया था किन्तु नरसिंह प्रथम ने पुलकेशिन को हराकर वातापी कोंड की उपाधि धारणा की।
  - ह्वेनसांग ने 641 ई. में पुलकेशिन द्वितीय के राज्य का दौरा किया था तथा उसकी प्रशंसा की।
  - अरब लेख 'तावड़ी' एवं अजन्ता की प्रथम गुफा के चित्र से ईरानी शासकों के दूतों के आदान-प्रदान की जानकारी मिलती है।
  - गुफा चित्र पुलकेशिन द्वितीय को दूतों को स्वागत करते हुए दिखाया गया है।
- **विष्णुवर्धन (लगभग 615 से 633 ई.)**
  - यह पुलकेशिन द्वितीय का छोटा भाई था, जो 'विषम सिद्धि' के नाम से जाना जाता था।
  - यह सतारा और पंढरपुर में शासन कर रहा था।
  - बाद में वेंगी का प्रांत प्राप्त होने पर अपने भाई पुलकेशिन द्वितीय की अनुमति से वेंगी के चालुक्य वंश का संस्थापक बना।
- **विक्रमादित्य प्रथम (655 से 681 ई.)**
  - इसने चोलों पाण्ड्यों एवं केरल की शक्ति को तोड़ा एवं पल्लवों को पराजित किया।
  - इसने दावा किया कि वह तीन समुद्रों के बीच की भूमि का सम्राट है।
  - इसने अपने भाई जयसिंह को लाट क्षेत्र का गर्वनर बनाया, जिसने गुजरात **चालुक्य शाखा** की नींव डाली।
- **विक्रमादित्य द्वितीय (733 से 774 ई.) –**
  - इसके समय दक्कन के क्षेत्रों पर अरबों का आक्रमण हुआ किन्तु पुलकेशी ने उसे पराजित किया।
  - प्रसन्न होकर विक्रमादित्य द्वितीय ने पुलकेशी को अवनीजानाश्रय की उपाधि प्रदान की।
  - विक्रमादित्य द्वितीय ने नंदीवर्मन द्वितीय को पराजित कर कांची को जीता था।
  - विक्रमादित्य द्वितीय का उत्तराधिकारी **कीर्तिवर्मन द्वितीय** था। वह अन्तिम चालुक्य शासक था।

- **कीर्तिवर्म कालातंर में चालुक्य राज्य दो भागो में विभाजित हो गया ,**
  - पूर्वी शाखा (वेगी के चालुक्य)
  - पश्चिमी शाखा (कल्याणी के चालुक्य)न द्वितीय को उसके सामन्त दन्ती दुर्ग ने पराजित कर राष्ट्रकूट वंश की स्थापना की।

❑ कल्याणी के चालुक्य

- राष्ट्रकूट वंश के पतन के बाद कल्याणी के चालुक्य वंश का उदय हुआ, जो अपने लेखों में अपना मूल स्थान अयोध्या बताते हैं।
- 'विक्रमांकदेवचरित' के अनुसार ब्रह्मा ने अपने चुलुक से वीर पुरुष को उत्पन्न किया उसी से चालुक्य वंश की स्थापना हुई।
- कल्याण लेख में ब्रह्मा को ही चालुक्यों का आदि पुरुष कहा गया है। यह अभिलेख 1095 ई. का है।
- राष्ट्रकूट शासक कर्क द्वितीय को पराजित करके तैलप/तैल द्वितीय ने चालुक्य वंश (कल्याणी) की स्थापना की इस वंश को उत्तरवर्ती पश्चिमी चालुक्य भी कहा जाता है।
- **तैलपद्वितीय**
  - राष्ट्रकूटों को सामंत था उसने गंग एवं परमार शासक-मुंडा को हराया। चोलों के साथ संघर्ष तैलप द्वितीय के समय ही प्रारम्भ हुआ।
- **सत्याश्रय**
  - **उपाधि -** अकलकचरित
  - तैलप द्वितीय का उत्तराधिकारी सत्याश्रय था। वह सोलिंग के नाम से भी जाना जाता था उसने राजराजा प्रथम से संघर्ष किया फिर राजेन्द्र चोले से पराजित हुआ।
- **विक्रमादित्य पंचम**
  - सत्याश्रय का उत्तराधिकारी विक्रमादित्य पंचम था। विक्रमादित्य पंचम के बाद **जयसिंह द्वितीय** शासक बना।
  - जयसिंह द्वितीय ने मालवा के राजा भोज एवं राजेन्द्र चोल से संघर्ष किया। उसने जगदोक मल्ल की उपाधि ली।
- **सोमेश्वर प्रथम (1042 से 1068 ई.)**
  - इसने अपनी राजधानी मान्यखेत से कल्याणी स्थनान्तरित की एवं कल्याणी नगर को सजाया। इसकी व्याख्या विल्हण ने की है।
  - सोमेश्वर प्रथम के समय चोल चालुक्य संघर्ष प्रारम्भ हुआ और कोप्पम की लड़ाई में राजेन्द्र द्वितीय ने सोमेश्वर प्रथम को पराजित कियाायह जानकारी विल्हण देता है।
  - सोमेश्वर प्रथम को उत्तर भारत में सफलता मिली। उसने भोज तथा कुल्चुरी शासक लक्ष्मी कर्ण को हराया।
  - सोमेश्वर प्रथम के बाद **सोमेश्वर द्वितीय** गद्दी पर बैठा। उसने वीर राजेन्द्र की पुत्री से विवाह किया।
  - सोमेश्वर द्वितीय का उत्तराधिकारी विक्रमादित्य षष्ठम् था।
- **विक्रमादित्य षष्ठम् (1076 से 1126)**
  - सोमेश्वर द्वितीय का भाई एवं सोमेश्वर प्रथम का पुत्र था।
  - इसने चालुक्य विक्रम संवत् चलाया।
  - वह कला एवं साहित्य का संरक्षक था।
  - इसने विक्रमपुर नामक नगर बसाया।
  - विष्णु का एक मन्दिर बनवाया एवं एक झील बनवायी।
  - इसने तमिल ब्राह्मणों को भूमि अनुदान दिया एवं बसाया।

- विल्हण विक्रमादित्य षष्ठम् का राजकवि था। उसने **विक्रमांकदेवचरित** की रचना की।
- इसका मंत्री विज्ञानेश्वर था, जिसने **मिताक्षरा** की रचना की।
- वेंगी के चालुक्यों को पराजित करने में उसके सेनापति अनन्तपाल ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।
- विक्रमादित्य षष्ठम् का अधिकारी सोमेश्वर तृतीय था।
- इसने भूलोकमल त्रिभुवन मल का उपाधि ली उसने **'मानसोल्लास'** नामक ग्रंथ की रचना की। ।
- इस वंश का अन्तिम शासक **सोमेश्वर चतुर्थ** था इस वंश के खंडहर पर देवगिरी के यादव एवं वारंगल के काकतीयों का उदय हुआ।

❑ **पूर्वी शाखा-**

- **संस्थापक** -विष्णुवर्धन
- ये 'वेंगी के चालुक्य' भी कहे जातेथे।
- राजधानी- पहले पिष्टपुरी तत्पश्चात 'वेंगी'
- यह शाखा मुख्य शाखा (पश्चिमी शाखा) कल्याणी के चालुक्यों से स्वतंत्र थी।
- इन्होंने सर्वप्रथम अभिलेखों में तेलुगु भाषा का प्रयोग किया।
- विजयादित्य पंचम इस वंश में सबसे कम समय तक (15 दिन) शासक रहा।
- इस वंश का अंतिम शासक विजयादित्य सप्तम था।

प्रमुख राजवंशों की विशेषताएं

- पल्लव शासक ब्राह्मण धर्मावलम्बी थे। उन्होंने धर्म महराज, धर्ममहाराजाधिकारी आदि उपाधि ली।
- इस वंश के शासक अग्निसटोम, वाजपेय, अश्वमेधयज्ञी की उपाधि भी लेते थे।
- बैकुण्ठ पेरूमल के अभिलेख में मंत्रिपरिषद् का उल्लेख है। इसे रहस्यादिभूदास कहा गया है।
- पल्लव एवं चालूक्य काल के अधिकारी
  - **राष्ट्रिक** - जिले का प्रधान अधिकारी
  - **ग्रामयोजक**- गाँव का मुखिया
  - **गौमिक**- सैनिक चौकियों के प्रधान
  - **देशाधिकृत**- स्थानीय संरक्षक
- साम्राज्य मंडल में और मंडल नाडु में विभाजित था। ग्रामों का संगठन ग्राम के अथवा **"मुटक"** के नेतृत्व में किया गया था। राजकीय आदेश उसी को सम्बोधित करके भेजे जाते थे।
- ग्राम सभा की बैठक एक विशाल वृक्ष के नीचे होती थी। बैठक के स्थान को **"मनरम"** कहा जाता था।
- नाडु एक प्रशासनिक संस्था के रूप में इसी काल में स्थापित हुआ।

❑ **साहित्य**

- इस काल में संस्कृत तथा तमिल दोनों भाषाओं में साहित्य की रचना की गयी।
- **'मत्तविलास प्रहसन'** की रचना महेन्द्र वर्मन ने की।
- यह एक एकांकी नाटक है जो व्यंग्यात्मक वार्तालाप से भरा है। यह एक सामाजिक नाटक है।
- दण्डिन नरसिंहवर्मन के दरबार में रहता था। उसने **'दशकुमारचरित्' अवन्तिसुन्दरी** कथा तथा काव्यादर्श की रचना की हैं।
- दण्डिन् की 'दशकुमारचरित' में भावोत्तेजक एवं चातुर्यपूर्ण कहानियों का संग्रह है। वस्तुतः यह पुस्तक अवन्ति सुन्दरी कथा का एक भाग है।
- पल्लव शासक के अधिकांश लेख संस्कृत भाषा में है, पल्लव काल में संस्कृत विद्यालय को **घटिका** कहा जाता था।

❑ **चालुक्य संस्कृति**

- चालुक्यों के समय साहित्य कला धर्म के क्षेत्र में प्रगति के तत्व दृष्टिगोचर होते है।
- ह्वेनसांग के अनुसार चालुक्य के लोग विद्या के व्यसनी थे।
- चालुक्यों के लेख में संस्कृत भाषा का प्रयोग मिलता है।
- महाकूट एवं एहोल के अभिलेख संस्कृत में है। इन काल के अन्य विद्वानों में उदयदेव सूरी जैन थे। उन्होंने जैनेन्द्र व्याकरण ग्रंथ की रचना की।
- सोमदेव सूरी ने नीति वाक्यामृत तथा यशस्तिलक (चम्पू) की रचना की।
- चालुक्य शासक मूलतः विषणु के उपासक थे। वराह उनका पारिवारिक चिन्ह था। उनके अधिकांश अभिलेख वराह अवतार की अवधारणा से प्रारम्भ होते है।
- चालुक्य **"परम भागवत्"** की उपाधि लेते थे किन्तु उन्होंने बौद्ध, जैन एवं शैव धर्मों को भी प्रोत्साहन दिया।
- एहोल अभिलेख के लेखक रवि कीर्ति जैन थे। उन्होंने एहोल में एक जीनेन्द्र का मन्दिर (महावीर स्वामी) बनवाया, जिसे मेतुगी मन्दिर कहा जाता है।
- चालुक्य शासकों ने बेसर शैली के आधार पर मन्दिरों का निर्माण करवाया चालुक्यों के मन्दिर बादामी, एहोल एवं पट्टादक्कल से मिले हैं।
- एहोल को मन्दिरों का नगर कहा जाता है। वस्तुतः दक्षिण भारत में हिन्दू मन्दिर यही से बनने प्रारम्भ हुए। यहाँ कम से कम 70 मन्दिर पाये गये है।
- यहाँ का सबसे प्राचीनतम् मन्दिर लाड़खाँ (दुर्गा मन्दिर) गुफा मन्दिर है, जिसके ऊपर अब सूर्य मन्दिर बन गया है।
- एहोल में एक दुर्गा मन्दिर भी है, जिसके निर्माण में बौद्ध चैत्य का अनुसरण किया गया है।
- बादामी में पाषाण काट कर चार स्तम्भ-युक्त मण्डल बनवाये गये हैं। जिसमें जीन मण्डप-हिन्दू धर्म से सम्बन्धित हैं तथा एक जैन-धर्म से सम्बन्धित है।
- मंगलेश ने एहोल में एक शिव मनिदर बनवाय था।

❑ **मंदिर स्थापत्य**

- दक्षिण भारत में द्रविड़ शैली में मंदिरों का निर्माण हुआ। बाद में इन मंदिरों के साथ अनेक स्तंभयुक्त मंडप, गलियारे तथा विशाल गोपुरम जोड़ दिए गए।
- **पल्लव कला**
  - द्रविड़ शैली की स्थापना पल्लवों के काल में हुयी। पल्लवों ने वास्तुकला को काष्ठ कला और कंदरा कला के प्रभाव से मुक्त किया।
  - पल्लवों के मंदिर काँची, महाबलीपुरम्, पुडकोटाई में मिले हैं। प्रमुख पल्लव शैली राजा के नाम पर थे।
  - **महेन्द्रवर्मन शैली**
    - इस शैली में मंदिर को मंडप कहा गया। इसमें एक स्तंभयुक्त बरामदा व खोंद कर बनाये दो कमरे थे।
  - **मामल्ल शैली**
    - नरसिंहवर्मन के समय मंदिर को मंडप तथा रथ कहा जाता था।
    - **प्रमुख मंडप**- वाराह, महिष तथा पंचपांडव रथ मंदिर एकाश्मक हैं, इसकी विशेषता स्तंभ है, ये 'सप्तपैगोडा' के नाम से प्रसिद्ध है, इनकी संख्या आठ है।
    - **प्रमुख रथ**- द्रौपदी (अलग शैली का), अर्जुन, भीम, धर्मराज (विहारों का विकसित रूप), सहदेव।
  - **राजसिंह शैली**
    - मामल्लपुरम का तटीय मंदिर, काँची का कैलाशनाथ (पल्लव वास्तुकला की सभी विशेषताएँ) तथा बैकुण्ठ पेरूमल मंदिर।
    - इनकी प्रमुख विशेषता सिंह स्तंभ मंडप के सुदृढ़ स्तंभ, पिरामिड़ आकार का शिखर, चाहरदीवारी।

- **नंदिवर्धन शैली**
  - इस शैली के मंदिर छोटे हैं। प्रमुख मंदिर काँची का मुक्तेश्वर, मातंगेश्वर मंदिर तथा गुडीमल्लम का परशुरामेश्वर मंदिर।
  - पल्लव कला की विशेषता दक्षिण पूर्व एशिया में भी पहुँची।
  - पल्लवों ने बौद्ध चैत्य विहारों से विरासत में मिली हुयी कला का विकास किया, जो चोल व पाण्ड्य काल में पूर्णरूप से विकसित हुयी।
  - पल्लव - मंडपचोल शिखर (विमान)
  - पाण्ड्य - गोपुरम

चोल साम्राज्य

❑ चोल राजवंश का उत्कर्ष :

- **संस्थापक** - विजयालय '
- **राजधानी** - 'तंजावुर' या 'तंजौर' तथा बाद में गंगैकोण्डचोलपुरम्।
- दक्षिण क्षिण भारत के सभी राजवंशों में चोल को प्राचीनतम माना जा सकता है। इस वंश का उल्लेख महाभारत में भी प्राप्त होता है। अशोक के अभिलेखों में भी चोल वंश का उल्लेख स्वतंत्र राज्यों की श्रेणी में देखा जा सकता है। इसी तरह संगम साहित्य में करिकाल चोल, का उल्लेख मिलता है, जो कि एक प्रतापी राजा था। उसकी राजधानी कावेरीपत्तनम् थी। ऐतिहासिक काल में 9वीं शताब्दी ई. तक चोल पल्लवों व पांड्य राजाओं की साम्राज्यवादिता के कारण अंधकार में छिपे रहे। विजयालय द्वारा उद्धार के पश्चात ये प्रकाश में आया।
- चोलयुगीन स्रोत- चोल अभिलेख तमिल, संस्कृत, तेलुगू एवं कन्नड़ चार भाषाओं में हैं।
- राजराज प्रथम अपने अभिलेखों में ऐतिहासिक प्रशस्ति के रूप में चोल इतिहास के वर्णन की परंपरा शुरू की।
- चोलयुगीन अभिलेख मंदिरों की दीवारों पर उत्कीर्ण हैं। राजेंद्र प्रथम के करैण्डै तथा तिरुवालंगाडु दान पत्रों से चोलों की उत्पत्ति पर प्रकाश पड़ता है।
- राजराज तृतीय के तिरुवेन्दिपुरम अभिलेख में चोलों के उदय का क्रमबद्ध विवरण मिलता है।
- राजाधिराज प्रथम के मणिमंगलम अभिलेख में अश्वमेध यज्ञ व सिंहल पर विजय का उल्लेख है।
- चीनी यात्री 'चाऊ-जू-कुआ' (1225 ई.) के विवरण में चोल देश एवं शासन व्यवस्था की जानकारी होती है।
- अशोक के तेरहवें शिलालेख में चोल, चेर तथा पाण्ड्य का स्वतंत्र रूप से उल्लेख किया गया है।
- महावंश से राजेंद्र प्रथम की सिंहल पर विजय की जानकारी मिलती है।
- चोल प्रारंभ में पल्लवों के सामंत थे।
- चोलों का प्राचीन निवास स्थान उरैयूर था।

❑ विजयालय (850-871ई.)

- इसे 'चोल वंश का संस्थापक' माना जाता है।
- उपाधि - 'तंजैकोण्ड' तथा नरकेसरी थी।
- पाण्ड्य शासकों से तंजौर छीनकर उसे अपनी राजधानी बनाया।
- तंजौर में दुर्गा देवी का मंदिर बनवाया।

❑ आदित्य प्रथम (871-907 ई.)

- **उपाधि** – कोण्डाराम
- इसने पाण्ड्य शासक को हराया और पल्लव शासक को हराकर तोण्डमण्डलम् का क्षेत्र छीन लिया।
- कावेरी नदी के दोनों तटों पर शिव के विशाल पाषाण मन्दिर बनवाये।
- प्रारंभ में यह पल्लव राजा अपराजित वर्मन का सामंत था।
- इसने अपने स्वामी अपराजित की हत्या कर तोण्डमण्डलम पर अधिकार कर लिया और कोण्डदराम की उपाधि ग्रहण की।
- इसने पाण्ड्यों से कोंगू प्रदेश छीन लिया और पश्चिमी गंगों को अधीन बनाया।

❑ परान्तक प्रथम (907-953 ई.)

- **उपाधि** – मदुरैकोण्ड
- चोल शक्ति की वास्तविक स्थापना का श्रेय परान्तक प्रथम को दिया जा सकता है। इसने मदुरा के पाण्ड्य राजा को हराया व लंका तक आक्रमण किए।
- इसने कालहस्ति के निकट तोंडाईमानाड में एक मन्दिर बनवाया था।
- इसे पाण्ड्य शासक राजसिंह एवं श्रीलंका की संयुक्त सेना को वल्लूर के निकट युद्ध में पराजित किया तथा मदुरै को जीतकर मदुरैकोण्ड की उपाधि धारण की।
- श्रीलंका के इस हस्तक्षेप के कारण चोल एवं श्रीलंका में एक लम्बा संघर्ष प्रारम्भ हो गया।
- परान्तक ने पल्लवों से नेल्लोर का क्षेत्र छीन लिया और उन्हें पूर्णतः समाप्त कर दिया।
- 949 ई. में राष्ट्रकूट शासक कृष्ण तृतीय ने पश्चिमी गंगों की सहायता से चोलों पर आक्रमण किया एवं तक्कोलम् की लड़ाई में परान्तक प्रथम को पराजित किया।
- ऋग्वेद का टीकाकार वेंकटमाधव परान्तक प्रथम का समकालीन था। इसके उत्तरमेरुर अभिलेख से चोल ग्राम प्रशासन का विस्तृत विवरण मिलता है।

❑ राजराज प्रथम (985-1014 ई.)

- उपाधियां-'कण्डलूर शालैकल मरुत', 'चोल नारायण', 'चोल मार्तण्ड', 'मुम्मडि चोल देव', 'जयगौण्ड', 'राज्याश्रय', 'राजमार्तण्ड', 'चोलेन्द्र सिंह', 'शिवपाद शेखर' आदि।
- चीनी स्रोतों में इसे लोप्स-लोप्स कहा गया है। उसके काल में चोल दूतमंडल चीन की यात्रा पर गया।
- वह सुन्दर चोल का पुत्र था। उसका नाम अरिमोलि वर्मन था। इसी समय चोल साम्राज्यवाद का युग प्रारम्भ हुआ।
- वह चोलों की महत्ता का वास्तविक संस्थापक था। उसने अभिलेखों को ऐतिहासिक प्रशस्ति के साथ प्रारम्भ करने की परम्परा का सूत्रपात किया।
- इसने चेर शासक भास्कर वर्मा को हराया एवं "काण्डलूर शालेकलमरुत" की उपाधि धारण की।
- उसने पाण्डय् राजा अमर भुजंग को पराजित किया।
- उसने चेर, पाण्ड्य तथा सिंहल की संयुक्त सेनाओं को पराजित किया।
- राजराज प्रथम ने मैसूर क्षेत्र के पश्चिमी गंगों, कलिंग तथा वेंगी के पूर्वी चालुक्य राज्य को भी जीता।
- राजराज प्रथम ने वेंगी के पूर्वी चालुक्य राज्य को अपना संरक्षित राज्य बना लिया।
- उसने अपनी पुत्री का विवाह वेंगी के चालुक्य राजा के छोटे भाई विमलादित्य से किया। उसने अपनी शक्तिशाली नौसेना के द्वारा लक्षद्वीप एवं मालदीव पर भी अधिकार कर लिया।
- उसकी प्रथम विजय केरल एवं अंतिम विजय मालदीव थी।
- लंका के शासक महेन्द्र पंचम को पराजित कर दिया।
- लंका पर आक्रमण का एक महत्वपूर्ण कारण महेन्द्र पंचम द्वारा भास्कार वर्मन की सहायता करना था।
- राजराज प्रथम की इस लंका विजय की सूचना तिरुवालंगाडु लेख से मिलती है।
- इसने लंका में नई राजधानी **"पोलोन्नरूवा"** बनवाई, एवं उसका नाम जननाथमंगलम् रखा तथा श्रीलंका के विजित प्रदेश को एक प्रांत बनाया, जिसे **"मुम्डिचोलमंडलम"** कहा गया हैं

- श्रीलंका विजय के उपलक्ष्य में उसने जगन्नाथ की उपाधि ली, एवं वहाँ कुछ शिव मन्दिर बनवाये और इस प्रकार तमिल स्थापत्य को प्रसारित किया चोलों की श्रीलंका पर विजय पहली सामूहिक विजय थी।
- चोल शासक विशेषकर राजराज प्रथम एवं राजेन्द्र प्रथम अपनी विजय का स्मरणोत्सव शिव एवं विष्णु का मन्दिर बनाकर मनाते थे।
- इसमें सबसे प्रसिद्ध राजराजेश्वर या वृहदेश्वर का मन्दिर (तंजौर में स्थित) था।
- अपनी विजयों का समापन मालद्वीप द्वीप समूह की विजय से किया। इसकी चर्चा चोल लेखों से स्पष्ट रूप से नहीं मिलती है।
- भूमि की माप करवाई तथा उचित कर निर्धारित किया। उसने स्थायी सेना एवं विशाल नौ सेना का गठन किया।
- ताँबा, सोना, चाँदी के विभिन्न प्रकार के सिक्कों को जारी किया।
- राजराज प्रथम शैव था। उसने विष्णु का मन्दिर भी बनवाया एवं उसे जावा के शेलेन्द्र शासक मारविजय तुंग वर्मन को नागपट्टनम् में चूड़ामणि बौद्ध विहार बनवाये की अनुमति दी।
- राजराज ने अपनी सम्पूर्ण साम्राज्य स्थानीय स्वशासन को प्रोत्साहन दिया। ग्राम सभाओं और स्वशासित निगमों द्वारा सार्वजनिक धन के संभावित दुरुपयोग को रोकने के लिए उनके हिसाब की जांच-पड़ताल की व्यवस्था की थी।
- राजराज द्वारा श्रीलंका के उत्तरी भाग अनुराधापुर पर आक्रमण कर अधिकार कायम किया गया; सम्पूर्ण श्रीलंका पर विजय पताका फहराने का कार्य राजन्द्र प्रथम द्वारा किया गया।

- **Note :-**
- वृहदीश्वर (राजराजेश्वर) मंदिर की दीवारों पर राजराज प्रथम की उपलब्धियों को उल्लिखित किया गया है।
- इसके गर्भगृह में राजराज I के अभिलेख के साथ ही इसकी बहन कुण्डवा का अभिलेख भी अंकित है।
- तिरुवालंगाण्डु ताम्रपत्रों में भी राजराज प्रथम की उपलब्धियों का वर्णन है।
- राजराज प्रथम के समय के प्रमुख लेख हैं - तंजौर अभिलेख और वृहदीश्वर मंदिर में उत्कीर्ण लेख।

❑ **राजेन्द्र प्रथम (1014 ई. -1044 ई.)**

- **उपाधियाँ-** गंगैकोण्डचोलम्, कदारंगोण्ड, उत्तम चोल, मुदीकोण्ड, पण्डित चोल
- वह योग्य पिता का योग्य उत्तराधिकारी था। उसने 2 वर्षों तक अपने पिता के साथ शासन किया एवं 1014 ई. में वह स्वयं गद्दी पर बैठा। उसने भी अपने पुत्र राजाधिराज प्रथम को युवराज बना दिया।
- राजेन्द्र प्रथम का इतिहास मुख्यतः उसकी व्यापक विजयों का इतिहास है। उसने अपने विजय अभियानों का प्रारम्भ पश्चिमी चालुक्यों के विरुद्ध किया।
- तिरुमलाई अभिलेख के अनुसार उसने अपने शासन के तीसरे वर्ष के अंत तक रायचूर दोआब, इदैतुडायनाद, वनवासी एवं कुल्पक (हैदराबाद के निकट) के भाग को जीत लिया।
- अपने शासन के 5वें वर्ष में उसके सम्पूर्ण श्रीलंका को जीत लिया। इस समय यहाँ का शासक महेन्द्र पंचम था, जिसे बन्दी बनाकर चोल राज्य में भेज दिया गया एवं यहीं उसकी मृत्यु हो गई। इसकी जानकारी करण्डै (करंदाई) लेख एवं महावंश से मिलती है।
- राजेन्द्र प्रथम ने पाण्ड्यों एवं चेरों पर आक्रमण किया अपने पुत्र को पाण्ड्य प्रदेशों का गवर्नर बनाया, फिर केरल पर विजय क्रम में सांदिमत्तिक (अरब सागर में एक द्वीप) पर अधिकार कर लिया।
- इसने बंगाल के शासक महिपाल प्रथम, पूर्वी बंगाल के गोविन्द चन्द्र एवं दक्षिसी गढ़ क्षेत्र के राजा रणसूर को पराजित किया। इसका कथित उद्देश्य केवल गंगा का पवित्र जल लाना था। उनकी बंगाल विजय की सूचना तिरुवालंगाडु अभिलेख में वर्णित है।
- इस जल से चिदम्बरम् के निकट त्रिचनापल्ली जिले में बनी चोलों की नई राजधानी **"गंगैकोण्डचोलपुरम"** को पवित्र किया गया, उसने गंगैकोण्ड की उपाधि ली। किन्तु इस अभियान का कोई प्रभाव नहीं पड़ा।
- राजेन्द्र प्रथम की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विजय कडारम के श्रीविजये साम्राज्य के विरुद्ध थी, श्री विजय साम्राज्य के अन्तर्गत मलय, जावा, सुमात्रा आदि आते थे।
- शैलेन्द्र शासक संग्राम विजय कुलोत्तुंग वर्मन पराजित हुआ, किन्तु अधीनता स्वीकार कर लेने के बाद उसे राज्य वापस कर दिया गया। इसकी सूचना तिरुवलांगाडु ताम्रपत्र लेख से मिलती है।
- **इस विजय के दो उद्देश्य थे-**
- श्री विजय साम्राज्य चोलों के पूर्वी व्यापारिक संबन्धों में बाधा डालता था।
- राजेन्द्र प्रथम अपने पिता द्वारा स्थापित औपनिवेशिक साम्राज्य का विस्तार करना चाहता था।
- उसकी इस विजय से भयभीत होकर कंपूचिया के शासक सूर्य वर्मन प्रथम ने भी उससे मित्रता की प्रार्थना की थी।
- राजेन्द्र प्रथम की सेना ने अण्डमान एवं निकोबार, अराकानयोमा के क्षेत्र तथा पीगू (पेगू) के राज्य को भी जीता।
- 1014 ई. में श्रीलंका के नरेश विक्रमबाहु के नेतृत्व में श्रीलंका ने स्वतंत्र होने की चेष्टा की। किन्तु राजाधिराज ने इस विद्रोह को विफल कर दिया।
- राजेन्द्र प्रथम के समय चाले साम्राज्य का सर्वाधिक विस्तार हुआ। उसने अपनी राजधानी परिवर्तित करके गंगैकोण्डचोलपुरम् बनवाई।
- सिंचाई के लिए 16 मील लम्बा तालाब बनवाया, जिसे चोलगंगम् कहते है तथा सिंचाई के साधनों का विस्तार किया।
- राजेन्द्र प्रथम ने वैदिक सहित्य एवं दर्शन की शिक्षा के लिए एक महाविद्यालय की स्थापना की थी। उसने अपना एक राजदूत चीन भेजा था। चीन के साथ उसके सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण थे।

❑ **राजधिराज प्रथम (1044-1054 ई.)**

- चेर (केरल), पाण्ड्य एवं सिंहल (लंका) के राजाओं के विद्रोह का दमन किया।
- उसने वेंगी में सोमेश्वर के पुत्र विक्रमादित्य के नेतृत्व वाली पश्चिमी चालुक्य सेना को पराजित किया।
- **पूण्डूर का युद्ध**
- कृष्णा नदी के तट पर।
- पश्चिमी चालुक्य राजा सोमेश्वर और चोल राजाधिराज प्रथम के मध्य लड़ा गया।।
- राजाधिराज विजयी हुआ।
- चालुक्य राजधानी कल्याणी को लूटा और वहां अपना वीराभिषेक किया।
- राजाधिराज ने 'वीर राजेन्द्र' की उपाधि धारण की।
- राजाधिराज कल्याणी विजय की स्मृति में द्वारपाल की एक मूर्ति उठा ले गया।
- **कोप्पम युद्ध**
- मध्यकालीन चोल और चालुक्य राजाओं के बीच लड़ा गया था।
- इस युद्ध में चोलों का नेतृत्व राजाधिराज चोल प्रथम ने किया था।
- उनके छोटे भाई राजेंद्र चोल द्वितीय ने उनका समर्थन किया था।
- चालुक्यों का नेतृत्व सोमेश्वर प्रथम ने किया था।
- यह युद्ध 1054 ईस्वी में या सेन के मुताबिक 1052 ईस्वी में लड़ा गया था।
- इस युद्ध में चोलों की जीत हुई थी।
- हालांकि, युद्ध के मैदान में राजाधिराज प्रथम मारे गए थे।

❑ **राजेन्द्र द्वितीय (1053-63 ई.)**

- राजाधिराज प्रथम का उत्तरधिकारी राजेन्द्र द्वितीय (1053-63 ई.) था।

- उसने युद्ध क्षेत्र में अभिषेक किया था
- उसे कुदाल संगम युद्ध (तुंग व भद्रा नदियों का संगम) में सोमेश्वर प्रथम को पराजित किया।
- इसने पुरकेसरी की उपाधि ली। संभवतः उसने लंका पर आक्रमण किया था।
- चोल राज्य में भीषण अकाल पड़ा।

❑ **"वीर राजेन्द्र" (1063-1070)**

- राजेन्द्र द्वितीय का उत्तराधिकारी "वीर राजेन्द्र" था।
- उसने श्रीलंका एवं श्री विजय साम्राज्य के विरुद्ध भी सैन्य अभियान किया।
- वीर राजेन्द्र ने विक्रमादित्य के साथ चोल राजकुमारी का विवाह करके पश्चिमी चालुक्यों के साथ सम्बन्धों में एक नए अध्याय का शुभारंभ किया।
- वीर राजेन्द्र ने पश्चिमी चालुक्य सोमेश्वर प्रथम को दो बार परास्त किया। अंततः सोमेश्वर ने तुंगभद्रा में डूबकर आत्महत्या कर ली।
- वीर राजेन्द्र ने चालुक्यों को पराजित किए जाने की स्मृति में तुंगभद्रा तट पर विजय स्तंभ स्थापित किया।
- वीर राजेन्द्र ने सिंहल (श्रीलंका) नरेश विजयबाहु प्रथम पर आक्रमण किया। विजयबाहु प्रथम ने वातगिरि में शरण ली।

❑ **अधिराजेन्द्र**

- वीर राजेन्द्र का उत्तराधिकारी **"अधिराजेन्द्र"** था, किन्तु एक वर्ष के भीतर ही वह एक जन-विद्रोह में मारा गया।
- इसी के साथ चोलों की मुख्य शाखा का अंत हो गया।

❑ **कुलोत्तुंग प्रथम (1070-1122 ई.)**

- **उपाधि-** सुंगमतवीर्त
- वह पूर्वी चालुक्य नरेश राजराज का पुत्र था
- प्रारम्भिक नाम - राजेन्द्र चोल द्वितीय
- उसने वेंगी के चालुक्य एवं चोल राज्य का एकीकरण किया।
- उसके समय श्रीलंका के शासक विजयबाहु ने स्वतंत्रता की घोषणा कर दी।
- कुलोत्तुंग प्रथम ने अपनी पुत्री का विवाह श्रीलंका के राजकुमार से कर दिया।
- उसने 72 सौदागरों (व्यापारियों) का एक दूतमंडल चीन भेजा। यह दूतमण्डल एक व्यापारिक शिष्टमण्डल था, जिसे (तमिल व्यापार के लिए) चीन से अधिक सुविधएँ प्राप्त करने के लिए भेजा गया था।
- सुमात्रा से प्राप्त एक लेख से जानकारी मिलती है कि श्री विजय साम्राज्य मे तमिल व्यापारियों की एक श्रेणी निवास करती थी।
- कुलोत्तुंग प्रथम ने पथकर (चुंगी) को समाप्त कर दिया।
- उसने चिदम्बरम् के मन्दिर तथा श्रीरंगम् की समाधि का वर्धन कराया।
- अतः कुलोत्तुंग प्रथम के शासन काल के अंत में चोल राज्य एक बहुत छोटे क्षेत्र तक सीमित रह गया।

❑ **विक्रम चोल**

- **उपाधि** - त्यागसमुद्र
- इसके समय चोल साम्राज्य में भयंकर बाढ़, अकाल आदि आये।
- इसने पश्चिमी चालुक्य विक्रमादित्य षष्ठ के मृत्योपरांत वेंगी पर पुनः अधिकार कर लिया।
- 'गंगवाड़ी' पर आक्रमण कर कोलार जिले पर अधिकार कर लिया।

❑ **कुलोत्तुंग द्वितीय (1137-50 ई.)**

- कुलोत्तुंग द्वितीय ने चिदम्बरम् के मन्दिर के नवीनीकरण एवं संवर्द्धन का कार्य किया।
- उसने इस मन्दिर से गोविन्दराज (विष्णु) की प्रतिमा को हटवाकर समुद्र में फिकवा दिया।
- चोल शक्ति का स्थान द्वारसमुद्र के होयसल और मदुरा के पाण्ड्यों ने लिया।

❑ **राजेन्द्र तृतीय**

- यह चोल वंश का अंतिम शासक था। पाण्ड्य नरेश कुलशेखर ने उसे पराजित कर चोल क्षेत्र पर अधिकार कर लिया।

चोल प्रशासन

❑ **चोलकालीन केंद्रीय प्रशासन**

- आठवीं शताब्दी से 13वीं चोल संस्कृति शताब्दी के मध्य तक चोल साम्राज्य का अस्तित्व बना रहा।
- दक्षिण भारत के कई वंशों की तुलना में चोलों का केंद्रीय प्रशासन विशिष्ट था।
- चोल शासकों ने सामन्तों की उपेक्षा करके किसानों से बड़े पैमान पर संपर्क बनाये रखा।
- चोल राजा उत्तर भारत में प्रचलित चक्रवर्ती उपाधि के तुल्य उपाधि धारण करने लगे।
- चोल राज्य में मृत राजाओं की प्रतिमाये पूजी जाती थी। इससे राजत्व के दैवीय सिद्धान्त को बल मिला।
- इस काल में पुरोहितों की राजनीतिक भूमिका बढ़ गयी। अब वे चोलों के राजगुरू के साथ-साथ समस्त धार्मिक एवं सांसरिक मामलों में राजा को परामर्श देने लगे।
- चोल शासकों, का राज्यभिषेक एक भव्य उत्सव के माध्यम से होता था ये तंजौर, गंगईकोण्ड चोलपुरम, चिदम्बरम्, कांचीपुरम, आदि स्थानों पर सम्पादित होते थे।
- चोल काल में अधिकारियों की सभा की चर्चा मिलती है। यहाँ शासक विचार-विमर्श करते थे। किन्तु नियमित मंत्री परिषद का कोई अभिलेख साक्ष्य नहीं मिलता है। ज्येष्ठाधिकार के आधार पर उत्तराधिकार देने का प्रचलन था, किन्तु कभी-कभी छोटा पुत्र भी युवराज बन जाता था।
- **चोल साम्राज्य** - मंडलों> वलनाडु >नाडु > कुर्रम > ग्राम
- **मण्डलम् (प्रान्त)** - इसका सर्वोच्च अधिकारी राजकुमार अथवा राज परिवार का अन्य सदस्य होता था।
- **'कोट्टम्' अथवा 'वलनाडु'**- यह आधुनिक कमिश्नरी की भांति था।
- **'नाडु'**- यह आधुनिक जिले के समान था। इसकी सभा 'नाट्टार' कहलाती थी।
- 'नाट्टार' में जिले के सभी गांवों तथा नगरों के प्रतिनिधि होते थे।
- नाट्टार के खर्च के लिए नाडुविनियोगम नामक कर लगाया जाता था।
- इसका मुख्य कार्य भूराजस्व प्रबन्धन करना था।
- इसके अतिरिक्त यह संस्था भूराजस्व में छूट, भूमि का वर्गीकरण एवं वर्गीकरण के आधार पर राजस्व का निर्धारण तथा कभी-कभी मंदिर के प्रबंधन को दान देने कार्य भी करती थी।

- **कुर्रम् (ग्राम संघ)** - वर्तमान तहसील की भांति थे।
- **'ग्राम सभा'** - आधुनिक ग्राम पंचायत के समान-यह प्रशासन की सबसे छोटी इकाई थी।
- ग्राम सभा का मुख्य कार्य केंद्रीय सरकार को वार्षिक कर पहुंचाना था।
- ग्राम-प्रशासन की देख-रेख वेतन भोगी अधिकारियों द्वारा की जाती थी।
- सार्वजनिक भूमि का स्वामित्व ग्राम सभा के पास था।
- ग्राम सभा वनों तथा परती भूमि के रख-रखाव में सहायता करती थी।
- गांव के भूमिकर के निर्धारण में राजकीय अधिकारियों की सहायता करना ग्राम सभाओं का दायित्व था।
- ग्राम सभा को राजस्व वसूली न मिलने पर भूमि की नीलामी का भी अधिकार था।

- ग्राम सभा सड़कों के रख-रखाव और सिंचाई का भी विवरण रखती थी।
- **'नगरम्'-** व्यापारिक नगरों की सभा थी।
- कभी-कभी बहुत बड़े गाँव का शासन एक ईकाई के रूप में होता था, यह तनयूर कहलाता था।

❑ **चोलकालीन स्थनीय स्वशासन-**

- चोल प्रशासन की सबसे उल्लेखीय विशेषता स्थानीय स्वशासन थी। इसकी परम्परा पल्लव काल में ही विकसित हुई थी।
- उत्तरमेरुर से प्राप्त परान्तक प्रथम कालीन दो अभिलेखों से स्थानीय स्वशासन की जानकारी मिलती है।
- सबसे प्राचीन उत्तर मेरूर अभिलेख पल्लव शासक नंदीवर्मन के काल का है। इससे भी सभा के बारे में जानकारी मिलती है।
- ग्रामों में दो प्रकार की संस्थाएं कार्य करती थीं- उर, महासभा
- **उर**
- यह गाँव की प्रधान समिति होती थी।
- उर की कार्य समिति को **आलूगंणम्/उलंगानाटार/उलंगणम्** कहा जाता था।
- उर साधारण गाँव की संस्था होती थी, जिसके सदस्य गाँव के कर दाता होते थे।
- इसमें सभी वयस्क पुरुष भाग ले सकते थे किन्तु प्रौढ़ सदस्य सक्रिय रहते थे।
- कहीं-कही एक ही गाँव में एक से अधिक उर होते थे जैसे - सातमंगलम् में दो उर थे। यह जानकारी 1227 ई. के एक अभिलेख से मिलती है।
- इसमें से प्रथम उर हिन्दू देवदान से और दूसरा उर जैन पल्लिचन्दनम् से सम्बन्धित था।
- इसी प्रकार 1245 ई. में अमनकुंडी तथा कुमारमंगलम् नामक गाँवों में दो उर होने की सूचना मिलती है।
- उर के विषय में बहुत कम जानकारी मिलती है। किसी-किसी गाँव में उर तथा सभा साथ होती थीं।
- **सभा/महासभा**
- यह अग्रहार गाँव में होती थी। ऐसे गाँव को ब्रह्मदेह तथा मंगलम् भी कहा जाता था।
- सभा गाँवों के वरिष्ठ ब्रह्मणों की संस्था थी।
- कांची एवं मद्रास क्षेत्र में इस प्रकार की अनेक सभायें थीं।
- सभा की कार्यकारिणी पर उत्तर मेरूर लेख से प्रकाश पड़ता है।
- सभा अपना कार्य समिति के माध्यम से सम्पादित करती थी, जिसे वारियम् कहा जाता था।
- कभी-कभी समिति के सदस्यों के चुनाव के सम्बन्ध में सम्राट भी नियम बनाता था। इसकी सूचना 1190 ई. के अभिलेख से मिलती है।
- समिति के सदस्यों का चुनाव लॉटरी पद्धति से होता था।
- प्रत्येक सभा में कई समितियाँ होती थी- समति में 30 सदस्य होते थे।
- **प्रमुख समिति**
  - उपवन समिति (तोट्टा वारियम)- 12 सदस्य।
  - वार्षिक समिति (समवत्सर वारियम्) - 12 सदस्य
  - ऐनवारियस/एरी वारियम्- 6 सदस्य।
  - स्वर्ण समिति (पोण वारियम्)
  - झगड़ा निपटाने वाली समिति (पंचभार वारियम्)
  - विदेशियों से सम्बद्ध समिति (उदासिक वारियम्),
  - न्याय समिति (न्यायत्तार वारियम)
- **समिति के सदस्यों के लिए योग्यताएँ-**
  - व्यक्ति 35 वर्ष 70 वर्ष के आयु वाले हों।
  - इनके पास 1/4 बेली भूमि हो, यह लगभग 1 से डेढ़ एकड़ होती थी।
  - व्यक्ति एक वेद तथा उसके भाष्य का ज्ञाता हो।
  - उसका मकान अपनी भूमि पर हो।
- समिति के लिए अयोग्य वह होते थे, **जिनमे निम्नलिखित अयोग्यताये थी -**
  - वह तीन वर्ष तक समिति में रह चुका हो।
  - हिसाब प्रस्तुत न किया हो।
  - चोरी करने वाला।
  - पाप कर्मों से संलिप्त हो।
- **सभा के कार्य**
  - सरकार के लिए कर निर्धारित करना।
  - कृषि योग्य भूमि बनाना।
  - उत्पादन एवं राजस्व के आकलन में अधिकारियों की सहायाता करना।
  - राजस्व वसूलना।
  - कर न चुकाने वाले व्यक्ति की भूमि नीलाम करना।
  - भूमि एवं सिंचाई सम्बन्धी झगड़ों का निर्णय करना।
- महासभा को **पेरुगुडी,** महासभा के सदस्य को **पेरुमक्कल** तथा समिति के सदस्य को **वारियम् पेरुमक्कल** कहा जाता। था।
- सभा की बैठक गाँव के मन्दिर में वृक्ष के नीचे जलाशय के किनारे होती थी। सार्वजनिक भूमि पर सभा का स्वामित्व होता था।
- **नगरम्**
- नगरम् नामक संस्था सामान्यतः व्यापारिक केंद्रों में होती थी क्योंकि यह पूर्णतः व्यापारिक हितों की रक्षा के लिए समर्पित संस्था थी।
- मामल्यपुरम् से प्राप्त एक चोल अभिलेख में नगरम् के चार भागों का उल्लेख मिलता है।
- नगरम् का प्रशासन व्यापारी ही सम्भालते थे।
- तकोल्लम् से प्राप्त एक लेख में नगरम् के प्रशासन की चर्चा है। प्रशासन को दो वर्गों में बाँटा गया है। नगरतर, व्यापारी नगरोप्पम्।
- **नगरम् के कार्य**
  - व्यापारिक वर्गों, प्रतिष्ठानों एंव उद्यमों/उद्योगों पर कर की दरों का निर्धारण एवं वसूली करना नगरम् के प्रमुख कार्य थे।
  - लिपिक को **नगरकरनतार** (नगरम् लिपिक) तथा लेखाधिकारी की **नगरक्कण्णवक्कु** कहा जाता था।
- **व्यापारियों से जुड़े संगठन थे:-**मणिग्रामम्, वलंजियर, नानादेशी
  - **मणिग्रामम्-** यह संगठन नौवीं सदी से 13वीं सदी के अन्त तक समुद्रतटीय एवं आन्तरिक व्यापार में संलग्न रहा था।
  - **नानादेशी-** यह संगठन 11वीं एवं 12वीं सदी में अपना व्यापार बर्मा, सुमात्रा आदि देशों से करता था।
  - इस काल में **"अंजुवनम्"** तथा **"वीरवनजुज़"** नामक व्यापारिक श्रेणियों की चर्चा भी मिलती है।
  - अंजुवनम् में विदेशी व्यापारी सक्रिय थे, जो मालाबार तट पर रहते थे अर्थात् इस संस्था से मालाबार तट का व्यापार मुख्य रूप से होता था।

❑ **चोलकालीन उद्योग व्यापार एवं सिक्के**

- शांति व्यवस्था एवं शासकों की अभिरुचि के कारण चाले काल में उद्योग एवं व्यापार को बल मिला।
- चोलों की सामुद्रिक विजय के कारण व्यापार को प्रोत्साहयन मिला।
- शासकों ने सड़क परिवहन को जिससे व्यापारियों व सैनिकों के आवागमन में वृद्धि हुई।

- इस काल के उद्योगों में सर्वाधिक विकास धातु-उद्योगों में हुआ।
- सोने-चाँदी के आभूषणों बनाने वाले कारीगर काफी कुशल थे एवं स्वर्ण उद्योग चरम पर था।
- धातुओं को गला कर मूर्तियाँ ढालने एवं बर्तनों का निर्माण करने वाले उद्योग भी काफी विकसित थे।
- हथियारों के निर्माण को भी प्रोत्साहन मिला क्योंकि सैन्य संगठन पर बल दिया गया था।
- सूती कपड़े के उद्योग के विकास की सूचना चीनों स्रोतों से मिलती है।
- कालीकट, कोयंबटूर (रेशम के बेल-बूटे वाले कपड़े) कांचीपुरम् (जुलाहों का यार्ड) वस्त्र उद्योग हेतु प्रसिद्ध था।
- महीन वस्त्र, सूती, रंगे हुए वस्त्र, रेशमी एवं छापे वाले कपड़े के लिए यह क्षेत्र प्रसिद्ध था।
- कालीकट एवं कोचीन नाव एवं जहाजों के निर्माण के लिए प्रसिद्ध थे।
- **चाऊ जू कुआ**-14 प्रकार के जहाजों का उल्लेख करता है।
- छोटे उद्योगों में मिट्टी के बर्तन, नमक, मोती एकत्रित करना तथा नारियल से सम्बन्धित उद्योग प्रसिद्ध थे।
- उल्लेखनीय है कि, नारियल की खेती दक्षिण भारत में प्रथम द्वितीय शताब्दी में आरम्भ हो गयी थी। नारियल की रस्सी से चटाई बनती थी, जिसकी चर्चा 1203 ई. में अब्दुल रसीद करता है।
- कोल्हू से गन्ने का रस निकाला जाता था अभिलेखों में तेल निकालने वाले कोल्हुओं का उल्लेख है।
- हाथ से घुमाने वाले कोल्हू को **कैगान** कहा जाता था।
- बैलों की सहायता से चलने वाले कोल्हू को **एचुगान** तथा बड़े कोल्हू को **मेतुगान** कहा जाता था।
- **10वीं सदी के अंत में दक्षिण भारत के विदेशी व्यापार में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। इसके दो प्रमुख कारण थे:-**
- चोल के वैदेशिक सम्बन्ध
- चोल सम्राटों द्वारा विदेश व्यापार के अवसरों को प्राप्त करने के लिए व्यक्तिगत प्रयास।
- इस काल में चीन विदेशी व्यापार के लिए उपयुक्त व सुरक्षित हो गया था। चोल शासकों ने व्यापारिक लाभ उठाने के लिए व्यापारिक दूतमंडल चीन भेजे थे।
- फारस की खाड़ी के पूर्वी तट पर स्थिति सिराफ सम्पूर्ण एशिया की सबसे बड़ी व्यापारिक मंडी थी।
- श्री विजय साम्राज्य के विरुद्ध अभियान से चीन के साथ व्यापारिक सम्बन्ध सुलभ हो गया।
- काली मिर्च का उत्पादन मालाबार क्षेत्र में होता था। इसका निर्यात क्यूलोन बन्दगाह से होता था।
- **काली मिर्च** चोल साम्राज्य से सबसे अधिक निर्यात होने वाली वस्तु थीं।
- निर्यात होने वाली उत्पादित वस्तुओं में सबसे अधिक कपड़े का निर्यात होता था। अन्य वस्तुओं में कालीन, चमड़े का सामान आदि थे।
- आयातित वस्तुओं में कुल धात्विक वस्तुऐं थी, मुख्यतः चाँदी, ताँबा, टीन का आयात होता था।
- पीतल के बर्तन तथा रेशम के धागे का आयात चीन से होता था। अरब से घोड़े का आयात होता था।
- व्यापार संतुलन भारत के पक्ष में था।
- इस काल की ग्राम सभा बैंक का कार्य करती थी।
- **सिक्के**
- राष्ट्र कूट अभिलेखों में स्वर्ण, गद्यान, के अतिरिक्त द्रम का उल्लेख हैं।
- चोलों ने सोने, चाँदी तथा ताँबे के सिक्के चलाये। सोने के सिक्के कम मिले है। चाँदी के सिक्के ज्यादा मिले है। ताँबे के सिक्के बड़ी मात्रा में मिले है।
- द्रम-चाँदी का सिक्का था।
- 11वीं एवं 12वीं सदी के तमिल अभिलेखों में तिरमम् नामक चाँदी के सिक्के का उल्लेख है, जो चोलों के मानक स्वर्ण सिक्के काशु का 5वाँ/ 6वाँ भाग होता था।
- दक्कन का स्वर्ण सिक्का **"गद्यान"** था। चोल काल में सबसे भारी तथा सबसे अधिक मानक सिक्का कल्याण जू था, जिसे पोण/माडई भी कहा जाता था।
- चोल अभिलेखों में कल्याण जू-कलंजू/माड़ई एवं काश के अनेक प्रकारों का उल्लेख है।
- चोल काल में पूर्वी तट पर महाबलीपुरम् कावेरीपट्टनम् शालियोर, कोलची बन्दरगाह थे।
- मालाबार तट पर क्वीलॉन बन्दरगाह था।

❑ **चोलकालीन सैन्य प्रशासन**

- चोल सेना के मुख्य अंग निम्नलिखित थे –
- **गज सेना** - आनैयाटक कलकुंजिर मल्लर
- **अश्वारोही सेना** - कुदिरैच्चेवगर
- **धनुर्धारी**- बिल्लिगल
- **पैदल सैनिक** - बर्डीपेर
- **राजा के अंगरक्षक**- वेलैक्कर
- **भाला सैनिक**- शेंगुन्दर
- सेनापतियों को 'नायक', 'सेनापति' या 'महादण्डनायक' कहा जाता था।
- चोल सेना में हाथियों की प्रधानता थी।
- चोल नौसेना ने कोरोमण्डल, मालाबार तट तथा बंगाल की खाड़ी पर आधिपत्य स्थापित किया और दक्षिण पूर्वी एशिया के सैनिक अभियानों में भी सफलता प्राप्त की।

❑ **चोलकालीन राजस्व प्रशासन**

- राजकीय आय का प्रमुख साधन भूमिकर था।
- भूमिकर की वसूली ग्राम समितियों द्वारा नकद तथा अनाज दोनों रूपों में की जाती थी।
- वारिपोत - राजस्व विभाग
- वारियोतगक्क- राजस्व विभाग का प्रधान
- सरकार तथा स्थानीय प्राधिकरण, ग्राम प्राधिकरण के साथ मिलकर सिंचाई पर विशेष ध्यान देने के साथ ही तालाबों के रख-रखाव का भी पूरा ध्यान रखते थे।
- राजेन्द्र चोल प्रथम ने अपनी राजधानी के समीप नहर खुदवाई थी।
- राजराज प्रथम ने समस्त भूमि का एक बार तथा कुलोत्तुंग प्रथम ने दो बार सर्वेक्षण कराया।
- चोल राज्य व्यापारियों तथा पेशेवरों से भी कर वसूल करता था।
- भूमिकर के अतिरिक्त चोल राज्य के अन्य प्रमुख कर निम्नलिखित थे –
- **पाडिकावल** - ग्राम सुरक्षा कर
- **मनैइरै** - गृहकर
- **वेट्टि**- सार्वजनिक कार्य के लिए ली जाने वाली बेगार
- **पेवरि**- तेलियों से लिया जाने वाला कर
- **कडमै** - सुपाड़ी-बागान पर कर
- **मगम्मै**- शिल्पकारों पर लगने वाला कर
- **मरमजडि** - वृक्षों पर लगने वाला कर
- **तट्टमेलि** - सुनारों पर लगने वाला कर
- विवाह समारोहों पर भी शुल्क लगता था।
- असाधारण स्थितियों में राजा इन करों को कम या माफ कर देता था।

❑ चोलकालीन कला एवं शिल्प

- तंजावुर, गंगैकोण्ड चोलपुरम् तथा काञ्ची नगरों का निर्माण किया गया।
- चोलों ने अच्छी सड़कें बनवाई।
- चोलों की कला शैली श्रीलंका में भी अपनाई गई।
- गोएत्ज द्वारा मंदिर स्थापत्य हेतु 'चोलकाल को स्वर्ण युग' कहा गया है।
- **मंदिर**
- मंदिर निर्माण के क्षेत्र में पल्लव परम्पराओं को विरासत में प्राप्त किया।
- चोल काल के आरम्भिक मन्दिर पुडुक्कोटो में पाये गये हैं। इसमें विजयालय द्वारा बनवाया गया चोलेश्वर मन्दिर सर्वाधिक प्रसिद्ध है। यह मन्दिर नर्तमलाई/नट्टामलाई में है।
- चोलों का दूसरा महत्वपूर्ण मन्दिर बालसुब्रह्ममण्यम् मन्दिर है, जिसे आदित्य प्रथम ने बनवाया था।
- लगभग इसी समय एक मन्दिर कुम्भकोणम् में बना, जो नागेश्वर मन्दिर के नाम से विख्यात है।
- दसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में परान्तक प्रथम के समय के श्रीनिवास नल्लूर के कोरंग नाथ के मन्दिर में गर्भगृह एवं मंडप बना।
- राजराजा प्रथम एवं राजेन्द्र प्रथम के समय मन्दिर निर्माण को बड़ा प्रोत्साहन मिला।
- **बृहदेश्वर मन्दिर** –
  - राजराजा प्रथम के समय बृहदेश्वर मन्दिर का 1003 से 1010 में निर्माण हुआ था।
  - भारत के मन्दिरों में यह सबसे बड़ा एवं सबसे ऊँचा मन्दिर है।
  - बृहदेश्वर मन्दिर को द्रविड कला का सर्वोत्तम नमूना माना जा सकता हैं। इसके महत्वपूर्ण अंग हैं- गर्भगृह, विमान
  - पारसी ब्राउन का मत है कि तंजौर का राजराजेश्वर मन्दिर द्रविड़ कला की सर्वोत्तम कृति है और यह भारतीय वास्तुकला की कसौटी है।
  - गंगईकोंडचोल पुरम् के बृहदेश्वर मन्दिर की तुलना में अधिक अलंकृत है।
- राजेन्द्र प्रथम के उत्तराधिकारियों के समय छोटे-छोटे मन्दिरों का निर्माण होने लगा।
- चोल काल कास्य की प्रतिमाओं के लिए भी प्रसिद्ध है।
- त्रिचनापल्ली के तिरुभरंगकुलम् से नटराज की एक विशाल कांस्य प्रतिमा मिली है।
- तिरुवलंगकडु से कांसे की ही शिव की अर्द्ध-नारीश्वर प्रतिमा मिली है।
- चोल मूर्ति कला मुख्यतः चोल वास्तुकला का ही अंग था। मात्र धातु मूर्ति कला ही स्वतंत्र रूप में विकसित हुई था। नागेश्वर की नटराज मूर्ति सबसे विशाल है।

❑ चोलकालीन साहित्य एवं धर्म

- चोल काल तमिल संस्कृत का स्वर्ण युग था।
- 11वीं शताब्दी में कम्बन, पुलगेन्दु एवं ओट्टकुट्टन तमिल साहित्य के त्रिरत्न थे।
- जीवकचिन्तामणि की रचना 10वीं सदी में हुई थी।
- जयगोंदार कुलुत्तंग प्रथम का राजकवि था। उसने कलिंगतुपर्णी नामक ग्रंथ की रचना की।
- इस पुस्तक में कलिंग युद्ध की चर्चा है। तमिल में श्रेष्ठ कविता को पर्णी कहा जाता है।
- कम्बन ने 12वीं शताब्दी में रामायण का अनुवाद रामावतारम् नाम से किया।
- यह तमिल का सबसे बड़ा महाकाव्य है। वह (कम्बन) कुलुत्तुंग तृतीय का समकालीन था।
- ओट्टनकुट्टन् विक्रम चोल, कुलोत्तुंग द्वितीय एवं राजराजा द्वितीय का समकालीन था, इन्होने प्रत्येक पर उलाये की रचना की। यह उलाये श्रृंगार जीवनचरित है। ओट्टनकुट्टन् तथा कम्बन समकालीन थे। एवं दोनों में प्रतिद्वन्द्विता थी ।
- कुट्टन ने भी रामायण के उत्तरकाण्ड का अनुवाद किया। उसने तक्कभागप्पराणि में युद्ध अभियानों एवं सैनिकों का शोभायात्रा का बड़ा मनोरम वर्णन किया है।
- पेरियापुराणम् (शैव दर्शन) की रचना शेक्किलार ने की। इसमें 63 शैव संतों का चरित है।
- शेक्किलार कुलोत्तुंग द्वितीय का समकालीन था।
- चोल काल में वैष्णव लेखकों ने अपने ग्रंथों की रचना संस्कृत में की जिन्हें नाथमुनि यमुनाचार्य तथा रामानुजाचार्य की रचना में देखा जा सकता है।

दक्षिण भक्ति आंदोलन

भक्ति आंदोलन

- इस काल में 350 से 1200 ई. तक भक्ति आन्दोलन पल्लव एवं चोल राजाओं के संरक्षण में चलाया गया। इसके सूत्रधार नयनार तथा अलवार थे।
- यह आन्दोलन 6ठी शताब्दी में आरम्भ होकर नौवी शताब्दी के अन्त तक चलता रहा। इस आन्दोलन के फलस्वरूप सुदूर दक्षिण में मूर्तिपूजा, अवतारवाद, यज्ञ, कर्मकाण्ड का व्यापक प्रसार हुआ।
- सर्वप्रथम भक्ति आन्दोलन का आर्विभाव द्रविड़ प्रदेश में ही हुआ था।

❑ नयनार

- नयनार शिव भक्त होते थे।
- नयनारों ने पल्लव काल में शैव धर्म का प्रचार किया तथा जैन धर्म को तमिल प्रदेश से निर्वासित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।
- नयनारों की संख्या 63 बतायी गयी है।
- नयनार संत जाति-पाति के विरोधी थे एवं भजन, उपदेश प्रेमपूर्ण कविता के माध्यम से शैव धर्म का प्रचार करते थे।
- **नयनार संत -** अप्पार, तिरुज्ञान, सम्बन्दर, सुन्दर मूर्ति, मणिक्कवाचर आदि प्रमुख हैं।

○ **अप्पार / अप्पर –**

- इनका दूसरा नाम तिरुनावुक्करशु था। उनका जन्म तिरुगमूर में हुआ था वे महेन्द्रवर्मन प्रथम तथा संबंदर के समकालीन थे। इनका बेल्लाल (किसान) परिवार में जन्म हुआ था।

○ **सम्बन्दर**

- इनका जन्म शियाली के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके विषय में कहा जाता है कि, पाण्डय शासक एवं प्रजा दोनों का उन्होंने जैन धर्म से शैव धर्म में दीक्षित किया था एवं बौद्धों को वाद-विवाद में पराजित किया था।
- वे अवनिशूलपाणि एवं पाण्ड्य शासक अरिकेसरी मारवर्मन् के समकालीन थे।

○ **सुन्दर मूर्ति**

- वह कम ही समय में कई भक्ति गीत लिख चुके थे। वे शिव के साथ मित्रवत् व्यवहार वाली भक्ति का अवलम्बन करते थे। इसलिए उन्हें तम्बिरान्तोलन (ईश्वर का मित्र) भी कहा जाता है।
- सुन्दर मूर्ति के बाद मणिक्कवाचर हुए।

○ **मणिक्कवाचर**

- मणिक्कवाचर के भक्ति-गीत तिरुवाशगम (पवित्र संसार) में संकलित हैं।
- इन्होंने चिदम्बरम् एवं श्रीलंका में बौद्ध भिक्षुओं का शास्त्रार्थ में पराजित किया।

○ **नम्बि अंडारनंबि**

- 11 तिरुमूरैयों को संकलित करने के कारण नम्बि अंडारनंबि को तमिल का व्यास कहा जाता है। वे राजराजा प्रथम के समकालीन थे।

❑ अलवार

- वैष्णव भक्त अलवार कहलाता थे।
- अलवार शब्दार्थ होता है। अन्तर-ज्ञान रख कर ईश्वर के गुण/चिन्तन में रहने में रहने वाला व्यक्ति।
- इनकी संख्या 12 बतायी गयी है।
- अलवार संतों ने भजन, कीर्तन, मूर्ति दशन मंत्र आदि से वैष्णव दर्शन को आगे बढ़ाया। वे भक्ति को "काम" कहते थे। उनकी कविताओं में विरह तत्व की प्रधानता है।
- अलवार संतों की अन्तिम कड़ी के रूप में नाम्मलवार एवं उनके प्रिय शिष्य मधुर कवि महत्वपूर्ण थे।
- अलवार संत - पोयगई, पुडमम् पेय, तिरुमलि शई, अण्डाला अलवार संत थे।

○ **तिरुमलि शई –**

- महेनद्रवर्मन के समकालीन थे। इनके विषय में कहा जाता है कि श्रीरंगम् के मन्दिर की मरम्मत करवनाने के लिए इन्होंने नागपट्टनम् के बौद्ध विहार से एक स्वर्ण मूर्ति चुरायी थी। शैवों के साथ उनका मित्रवत् व्यवहार था।

○ **पेरियाल**

- पेरियाल ने पाण्ड्य शासक श्रीमारवर्मन् के दरबार में शास्त्रार्थ किया था।

○ **अण्डाला**

- अलवारों में एकमात्र महिला संत् **अण्डाला** थीं, जिन्हें गोदा/कोदई के नाम से भी जाना जाता है। उनके भक्ति गीतों में श्रीकृष्ण कथाओं की भरमार है।
- वे 9वीं सदी की महिला संत थीं।

○ **कुलशेखर या पेरुमाल**

- केरल का राजा कुलशेखर या पेरुमाल था।
- यह महत्वपूर्ण अलवार संत था। वह तमिल एवं संस्कृत का विद्वान था।

मध्यकालीन सन्त

- **शंकराचार्य**
- **जन्म -** अलवाय नदी के निकट कलादि नामक गाँव में
- **पिता** – शिवगुरू
- **माता -** आर्यम्बा
- **गुरु -** गोविन्द योगी
- **उपाधि -** परमहंस (गोविन्द योगी ने)
- सर्वप्रथम शंकराचार्य ने काशी की यात्रा की बौद्ध, जैन, कपालिक स्मार्त आदि सम्प्रदाय के अनेक आचार्यों से उनका शास्त्रार्थ हुआ।
- महिषमति में शंकराचार्य का मण्डल मिश्र एवं मण्डल की पत्नी भारती के साथ शास्त्रार्थ हुआ। दोनों शंकर के शिष्य बन गये।
- प्रयाग में कुमारिलभट्ट से उनका शास्त्रार्थ हुआ।
- शंकर के जीवनीकार आनन्दगिरि हैं, जिसके अनुसार शंकराचार्य ने 50 सम्प्रदायों के आचायों के साथ शास्त्रार्थ किया था और सभी में विजयी रहे।
- मालाबार क्षेत्र में शंकराचार्य ने सुधार आन्दोलन प्रारम्भ किया। उन्हीं के समय कोल्लम संवत् आरम्भ हुआ।
- शंकराचार्य ने बौद्ध दर्शन की काफी आलोचना की। उनका दर्शन महायान बौद्ध दर्शन से भिन्न नहीं है। इसलिए शंकराचार्य के विरोधी उन्हें प्रच्छन्न बौद्ध कपट बुद्ध कहते थे।
- शंकराचार्य की महानता उनकी तर्क-पद्धति में है। उनका सिद्धान्त केवलाद्वैत तथा अद्वैतवाद के नाम से विख्यात है।
- उन्होंने हिन्दू-धर्म में प्रचार हेतु देश की चारों दिशाओं में चार मठ बनवाये थे-

○ उत्तर में बद्रीनाथ मठ - जोशी मठ (विष्णु)

○ दक्षिण में श्रृंगेरी मठ - श्रृंगेरी मठ (शिव)

○ पूर्व में पुरी मठ - गोवर्धन मठ (बलभद् व सुभद्रा)

- पश्चिम में द्वारिका मठ -शारदा मठ (कृष्ण)
  - उन्होंने काशी में सुमेरू मठ और कांची में कामकोटि मठ की स्थापना की। प्रत्येक मठ में स्त्री एवं प्रधान आराध्य देवी-देवता होते हैं।
  - शंकराचार्य शृंगेरी में सबसे अधिक समय तक रहे। वे 32 वर्ष तक जीवित रहे 82 ई. में उनकी मृत्यु हो गई।
  - शंकराचार्य द्वारा नव-ब्राह्मण धर्म की स्थापना की गई।
  - शंकराचार्य ने स्मृति सम्प्रदाय की स्थापना हिन्दू धर्म की सुव्यवस्थित व्याख्या करने के लिए की थी।
  - प्रमुख रचना - ब्रह्मसूत्र भाष्य, उपदेश साहसी, प्रपन्व सारतंग तथा मरीषापच्च आदि हैं।
  - हालांकि शंकराचार्य के निर्गुण ज्ञानवादी दर्शन का प्रभाव लोगों को अधिक प्रभावित नहीं कर सका, जिस कारण निम्नलिखित मतों का भी विकास हुआ
  - **मत-**
    - **विशिष्टाद्वैतवाद** - रामानुजाचार्य
    - **द्वैतवाद** - माध्वाचार्य
    - **द्वैताद्वैतवाद** - निम्बार्काचार्य
    - **शुद्धाद्वैतवाद** - वल्लभाचार्य

❑ **रामानुजाचार्य**

- **जन्म** - 1017 ई. में मद्रास के समीप श्री पेरम्बुदुर में
- **पिता** - केशव भट्ट
- **बचपन का नाम** - लक्ष्मण
- **दर्शन के प्रवर्तक** – विशिष्टाद्वैत
- **गुरु** - यादव प्रकाश
- ये एक वैष्णव सन्त थे।
- इन्होंने वेदान्त तथा वैष्णव धर्म के मध्य समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया।
- इन्होने शंकर के अद्वैतवाद में संशोधन किया।
- रामानुजाचार्य ने बह्मसूत्र पर श्री भाष्य नामक टीका लिखा हैं।
- जिसमे कहा गया है कि ईश्वर की कृपा से शूद्र भी मोक्ष को प्राप्त कर सकता है।
- दक्षिण में रामानुजाचार्य को विष्णु का अवतार माना जाता है।
- इनका मानना है कि "ब्रह्म एवं जीव एक ही तत्त्व से निर्मित हैं, परन्तु दोनों एक नहीं हैं। जीव की मुक्ति के लिए ज्ञान आवश्यक है, परन्तु उससे भी आवश्यक है-ईश्वर की कृपा।
- रामानुज ने भक्ति आन्दोलन को एक ओर दार्शनिक आधार दिया तथा दूसरी ओर एक समझौता सूत्र लाया गया, जिसके अनुसार उन्होंने उच्च जातियों के समाज में कुछ सुविधाएँ प्रदान की।
- इन्होंने शूद्रों के लिए वर्ष में दिन निश्चित किया था, जिस दिन वे कुछ मन्दिरों में जा सकते थे। इस समझौते के सूत्र को **दक्षिणवाद** के नाम से जाना जाता है।

❑ **निम्बार्काचार्य**

- जन्म - 12वीं सदी में मद्रास (आधुनिक कर्नाटक) के बेलारी जिले में निम्बापुर में एक ब्राह्मण परिवार में
- **दर्शन के प्रवर्तक** – द्वैताद्वैत
- निम्बार्काचार्य को सुदर्शन चक्र का अवतार माना जाता है।
- ये रामानुजाचार्य के समकालीन थे।
- इन्होंने मथुरा में शक्तिपीठ की स्थापना की।
- इन्होंने कृष्ण को ब्रह्म के रूप में देखा और राधा को उनकी शक्ति के रूप में बताया।
- निम्बार्काचार्य का सम्प्रदाय सनकादि के नाम से विख्यात है।

❑ **माध्वाचार्य**

- जन्म - 1199 ई. में उडुप्पी में
- **दर्शन के प्रवर्तक – द्वैतवाद**
- अन्य नाम - आनन्दतीर्थ व पूर्णप्रज्ञ
- इन्होंने वेदान्त के निर्गुण ब्रह्म के स्थान पर विष्णु की प्रतिष्ठा की।
- ये भक्तिपूर्वक विष्णु की उपासना पर बल देते थे।
- इनका सम्प्रदाय ब्रह्म सम्प्रदाय था तथा इनका मत द्वैतवाद के नाम से जाना जाता है।
- वेदान्त दर्शन के तीन दार्शनिकों में माध्वाचार्य को रामानुजाचार्य एवं शंकराचार्य के समकक्ष माना गया है।

❑ **वल्लभाचार्य**

- जन्म - वाराणसी में
- **दर्शन के प्रवर्तक – शुद्धाद्वैतवाद**
- ये तेलुगू ब्राह्मण है।
- वाराणसी के बाद वल्लभाचार्य ने वृन्दावन अपना केन्द्र बना लिया था।
- ये कृष्ण भक्ति शाखा के सन्त थे।
- ये कृष्ण की उपासना श्रीनाथ जी के रूप में करते थे।
- इनकी भक्ति का दार्शनिक आधार पुष्टिमार्ग था।
- ये कहते थे कि पुष्टिमार्ग के द्वारा ही ईश्वर की प्राप्ति की जा सकती है। इन्होंने कहा कि जीव उतना ही सत्य है, जितना की ब्रह्म, क्योंकि यह ब्रह्म का ही एक अंश है।
- कृष्ण भक्ति को अत्यधिक लोकप्रिय बनाने का कार्य वल्लभाचार्य के पुत्र विट्ठलनाथ द्वारा किया गया था।

❑ **रामानन्द**

- **जन्म** - प्रयागराज में
- **गुरु**- रामानुज
- **महिला शिष्य** - पद्मावती और सामीर
- रामानन्द 14वीं सदी में उत्तरी भारत के महान भक्ति सन्त थे।
- रामानन्द ने दक्षिण और उत्तर के बीच सेतु का कार्य किया तथा दक्षिण भारत के भक्ति आन्दोलन को उत्तर भारत में प्रसारित किया। इन्होंने विष्णु के स्थान पर राम की भक्ति आरम्भ की।
- रामानन्द ने अपने उपदेशों का माध्यम हिन्दी को अपनाया, ताकि उनका सन्देश प्रत्यक्ष रूप से जन सामान्य तक पहुँच सके।
- इन्होंने बिना किसी जन्म, जाति, धर्म या लिंग के भेदभाव के सभी के लिए भक्ति के द्वार खोल दिए।
- महिलाओं को सन्त मठों में सम्मान दिलाया।
- इनके कुछ शिष्य निचली जाति के थे - **कबीर (जुलाहा),** घन्ना (जाट), सेना (नाई), **रैदास (मोची),** सदना (कसाई) पोपा (राजपूत)।

❑ **कबीर**

- **जन्म** - 1398 ई. में
- **गुरु**- रामानन्द
- **समकालीन** - सिकन्दर लोदी
- कबीर ने जात-पात, मृतिपूजा तथा अवतार सिद्धान्त को अस्वीका किया।
- कबीर निर्गुण सन्त होकर भी शुद्ध गृहस्थ बने एवं शारीरिक श्रम की प्रतिष्ठा को महत्त्व दिया।
- कबीर की वाणी का संग्रह इनके शिष्यों ने किया, जोकि मुख्यतः तीन रूपों में मिलती है-साखी, सबद, रमैनी। इन्हों तीनों का संग्रह **बीजक** कहलाता है।
- कबीरदास की भाषा सधुक्कड़ी , पंचमेल खिचड़ी थी।

रैदास

- **अन्य नाम** - रविदास
- **गुरु**- रामानन्द
- **उपाधि** - सन्तों का सन्त (कबीर)
- **परम शिष्या** - चितौड़ की रानी झाला
- सिखों के गुरु ग्रन्थ साहिब में इनके तीस से अधिक भजन संगृहीत हैं।
- ये पेशे से मोची थे। रविदास के अनुसार, मानव सेवा ही जीवन में धर्म की सर्वोत्कृष्ट अभिव्यक्ति का माध्यम है।
- वर्तमान में रविदासी रविदास के प्रमुख अनुयायी है।

दादू दयाल

- **जन्म**- अहमदाबाद में
- **शिष्य**- रज्जब सूरदास, सन्तदास एवं जगनदास
- इनका जन्म एक जुलाहा परिवार में हुआ था।
- इनकी मृत्यु 1603 ई. में राजस्थान के नराना या नारायण गाँव में हुई थी।
- दादू गृहस्थपूर्ण थे तथा इनका विश्वास था कि गृहस्थ का सहज जीवन आध्यात्मिक अनुभूति के लिए अधिक उपयुक्त है।
- इन्होंने आध्यात्मिक अनुभूति के लिए गृहस्थ जीवन को बाधक नहीं माना था।
- इस महान आदर्श को कार्य रूप में परिणत करने के लिए ब्रह्म सम्प्रदाय या परब्रह्म सम्प्रदाय की स्थापना की गई।
- इन्होंने पुस्तकीय ज्ञान का सम्मान करते हुए सन्तों के उपदेशों को संग्रहित करने पर विशेष बल दिया।
- इनकी रचनाओं को इनके शिष्य सन्तदास एवं जगनदास ने **हरडेबानी** नाम से संग्रहित किया।
- दादू दयाल ने रचनाओं में इस्लामी शब्दों को प्रमुखता से प्रयोग किया था।
- उनकी काव्य भाषा से ब्रजभाषा, राजस्थानी और खड़ी बोली के शब्दों का मिश्रण प्राप्त होता है।

रज्जब

- **गुरु**- दादू दयाल
- **रचना**-रज्जब-बानी
- इनकी रचनाओं में उदाहरण शैली का प्रयोग किया गया था।

गुरुनानक

- **जन्म** - 1469 ई. में तलवण्डी (आधुनिक ननकाना) पंजाब में
- **मौलिक सिद्धान्त**- एकेश्वरवाद तथा मानव मात्र की एकता
- **समकालीन** - सिकन्दर लोदी
- **शिष्य**- मरदाना
- **प्रमुख रचनाएं** - जपुजी, आसादीवार, रहिरास और सोहिल्ला
- **काव्य भाषाएँ** - हिन्दी, फारसी, बहुल पंजाबी और पंजाबी
- नानक मूर्तिपूजा, तीर्थयात्रा तथा धार्मिक आडम्बरों के कट्टर विरोधी थे, किन्तु ये कर्म एवं पुनर्जन्म में विश्वास रखते थे।
- इन्होंने हिन्दू-मुस्लिम एकता पर बल दिया था।
- गुरुनानक ने निराकार ईश्वर की कल्पना की और इस निराकार ईश्वर को इन्होंने अकाल पुरुष की संज्ञा दी।
- ईश्वरीय ज्ञान की प्राप्ति हेतु इन्होंने गुरु को अनिवार्य अंग माना।
- इनके प्रेरणादाई कविताओं एवं गीतों को आदि ग्रन्थ नाम से प्रकाशित किया गया हैं
- लंगर व्यवस्था को गुरुनानक द्वारा शुरू किया गया था।
- गुरुग्रन्थ साहिब सिक्खो का संकलन गुरुनानक द्वारा किया गया था।

चैतन्य महाप्रभु

- **जन्म** - 1486 ई. में नवद्वीप या नदिया (बंगाल) में
- **वास्तविक नाम** – विश्वम्भर
- **बाल्यावस्था मे नाम** – निमाई
- **समकालीन** - अलाउद्दीन हुसैनशाह(बंगाल का शासक)
- **सम्प्रदाय**- अचिन्त्य भेदाभेद
- **संस्थापक** - बंगाल में आधुनिक वैष्णववाद
- **शिष्य** - राजा प्रतापरुद्र (उड़ीशा), रामानन्द (राजमुन्द्री के प्रान्तपति)
- ये कृष्ण भक्ति शाखा से सम्बन्धित हैं।
- ये गौरांग महाप्रभु के नाम से भी जाने जाते थे।
- चैतन्य ने भक्ति में कीर्तन को मुख्य स्थान दिया।
- ये सगुण उपासक थे। इन्होने राधा कृष्ण की उपासना की।
- इन्होंने मूर्तिपूजा का विरोध नहीं किया।

मीराबाई

- **जन्म** -1498 ई में
- **गुरु** - रविदास
- **पति** - भोजराज
- **पिता** - रत्नसिंह राठौर
- ये भारत की एक महान महिला सन्त थी।
- भाषा- राजस्थानी और ब्रजभाषा
- मीराबाई भगवान कृष्ण की भक्त थी
- जयदेव के गीत गोविन्द पर टीका लिखी।
- पदावली मीराबाई का भक्ति गीत है।
- इनके काव्य में विरह को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।
- मध्यकालीन समय की नारी की स्थिति को मीराबाई के काव्य में देखा जा सकता है।

तुलसीदास

- जन्म - 1632 ई. में बाँदा जिले के राजापुर नामक ग्राम में
- समकालीन - अकबर
- **रचना** - रामचरितमानस् , गीतावली, दोहावली, कवितावली, रामलला नहछू, पार्वती मंगल, जानकी मंगल, रामाज्ञा प्रश्न तथा विनयपत्रिका
- भाषा- अवधी में
- ये राम के भक्त थे।
- रामचरितमानस् में सर्वोच्च कोटि की धार्मिक भक्ति का विवरण है।

सूरदास

- **जन्म** - आगरा-मथुरा मार्ग पर रुनकता नामक ग्राम में
- **गुरु** - वल्लभाचार्य
- **समकालीन** - अकबर एवं जहाँगीर
- **रचना** - सूरसरावली, सूरसागर एवं साहित्य लहरी
- **भाषा** - ब्रजभाषा
- इन्होंने अपनी रचनाओं में कृष्णलीला को समाहित किया।
- सूरदास भगवान कृष्ण और राधा के भक्त थे।
- इनके ग्रन्थों में सूरसागर सबसे प्रसिद्ध है।

शंकरदेव

- **जन्म** - 1499 ई. में
- **शिक्षाओं का सार**- एकेश्वरवाद
- **सम्प्रदाय** - एकशरण सम्प्रदाय
- शंकरदेव मध्यकालीन असम के महानतम् धार्मिक सुधारक थे।

- यह विष्णु के भक्त थे।
- इन्होंने देवियो जैसे-लक्ष्मी, राधा, सीता आदि को मान्यता प्रदान नहीं की।
- ये मूर्तिपूजा एवं कर्मकाण्ड दोनों के विरोधी थे।
- ये मूर्ति के रूप में कृष्ण की पूजा के विरोधी थे।
- ये असम के चैतन्य नाम से भी प्रसिद्ध थे।
- नाटक शैलीअंकिया का विकास शंकरदेव के द्वारा किया गया था।

❑ **नरसी मेहता**

- **जन्म** - भावनगर (गुजरात)के समीपवर्ती "तलाजा" नामक ग्राम में
- **पिता** - कृष्णदामोदर
- गुजरात से सम्बन्धित नरसी मेहता के गीत सूरत संग्राम में संकलित है।
- इनका प्रसिद्ध भजन वैष्णन जन तो तेनो कहिये, पीर पराई जाने रे था।

महाराष्ट्र में धार्मिक आन्दोलन

- मध्यकालीन भक्तिकाल में वैष्णोवादी भक्ति धारा के साथ ही महाराष्ट्र में धार्मिक आंदोलन का उदय हुआ। इसके प्रमुख देवता विठोवा थे।
- इस आन्दोलन को पण्डरपुर आन्दोलन के नाम से भी जाना जाता हैं। इस आन्दोलन के अन्य दो भाग - **धरकरी और बरकरी**
- प्रमुख सन्त - ज्ञानेश्वर, नामदेव, एकनाथ, तुकाराम और रामदास

❑ **ज्ञानेश्वर**

- **सम्प्रदाय**- रहस्यवादी
- **रचना** - अमृतानुभव तथा चंगप्रशस्ति
- **समकालीन** - नामदेव
- 13वीं सदी के महाराष्ट्र के एक प्रमुख सन्त थे।
- भावार्य दीपिका श्रीमद्भगवतगीता का मराठी रूप इनके द्वारा ही लिखा गया था।
- ज्ञानेश्वरी इनके द्वारा रचित प्रमुख संग्रह है।
- ये गुरु गोरखनाथ की नाथ योगी शिष्य परम्परा से सम्बन्धित थे।
- इनके द्वारा साँप सीढ़ी के खेल की उत्पत्ति भी की गई थी।

❑ **नामदेव**

- **जन्म** - एक दर्जी के परिवार में
- **सम्प्रदाय**- बरकरी
- अपने प्रारम्भिक जीवन में ये डाकू थे।
- इनके कुछ गीतात्मक पद्य गुरुग्रन्थ साहिब में संकलित हैं।
- नामदेव ने कहा था कि "एक पत्थर की पूजा होती है, तो दूसरे को पैरों तले रौदा जाता है। यदि एक भगवान है, तो दूसरा भी भगवान है।"
- इन्हें सन्त शिरोमणि के नाम से भी जाना जाता है।

❑ **एकनाथ**

- **जन्म** - पैठण , औरंगाबाद में
- **प्रमुख पुस्तकें** - रामायण शक्तिमणी, स्वयंवर, गौलना एवं भरुद
- इन्होंने जाति एवं धर्म में कोई भेदभाव नहीं किया।
- प्रतिदिन कीर्तन करना इनकी दिनचर्या थी।
- इन्होंने भगवद्गीता के चार श्लोकों पर टीका लिखा हैं।
- इन्होंने रामायण पर टीकाओं की रचना भी की गई थी।

❑ **रामदास**

- **जन्म** - लाहौर , पंजाब में
- **उपनाम** - नारायण सूर्याजीपन्त कुलकर्णी
- **सम्प्रदाय** - परमार्थ
- **पुस्तक** - दासबोध आनन्द भुवन
- **मृत्यु** - 1581, गोइंदवाल
- यह चौथे सिख गुरु थे।
- ये शिवाजी के आध्यात्मिक गुरु थे।
- रामदास धरकरी सम्प्रदाय के प्रमुख सन्तों में से एक थे।
- गुरु ग्रन्थ साहिब में इनकी स्तुतियाँ संकलित हैं।

❑ **तुकाराम**

- **जन्म**- एक शूद्र परिवार में पूना के देही में
- **उपनाम** - दक्षिण का कबीर
- **सम्प्रदाय** - बरकरी
- इन्होंने हिन्दू-मुस्लिम एकता पर बल दिया।
- इन्होंने अनेक अभंगों की रचना की, जिसमें इनकी शिक्षाएँ सन्निहित हैं और महाराष्ट्र में जिनका व्यापक रूप से गायन किया जाता है।
- गुरु ग्रन्थ साहिब में इनकी स्तुतियाँ शामिल है।

भक्ति आंदोलन का भारत पर प्रभाव

❑ **सामाजिक प्रभाव**

- भक्ति आंदोलन ने जाति व्यवस्था को चुनौती दी और सामाजिक समानता को बढ़ावा दिया। भक्ति संतों ने समाज में सामाजिक समानता लाने के लिए एक साथ मिलकर काम किया। उन्होंने मानक रसोई और भोजन साझा किया जैसे:- लंगर - गुरुनानक द्वारा स्थापित लंगर व्यवस्था। भक्ति आंदोलन ने महिलाओं और निम्न जातियों के लिए मोक्ष को सुलभ बनाया।

❑ **धार्मिक प्रभाव**

- भक्ति आंदोलन के कारण हिंदू धर्म में नए संप्रदाय और उप-संप्रदायों का उदय हुआ। भक्ति संतों ने क्षेत्रीय धार्मिक प्रथाओं और अनुष्ठानों के विकास में योगदान दिया।

❑ **सांस्कृतिक प्रभाव**

- भक्ति आंदोलन ने भारतीय साहित्य का संवर्धन और मिश्रित कला को बढ़ावा दिया। भक्ति आंदोलन ने संगीत और कविता को धार्मिक पूजा में एकीकृत किया। कीर्तन जैसे संगीत और नृत्य रूप तथा सत्रिया जैसे भक्ति नृत्य रूप का विस्तार हुआ।

❑ **धार्मिक विचारों पर प्रभाव**

- भक्ति आंदोलन ने सरल और नैतिक जीवन को प्रोत्साहित किया। भक्ति आंदोलन ने भ्रूणहत्या, सती प्रथा, व्यभिचार और मादक द्रव्यों के सेवन जैसी सामाजिक बुराइयों का विरोध किया।

उत्तर भारत की राजनीतिक स्थिति (800ई. – 1200 ई.)

- हर्षवर्द्धन के बाद भारत की राजनैतिक अवस्था विखंडन में पहुंच गई थी। इस काल में अनेक सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन हो रहे थे, जिन्होंने मध्यकाल की पृष्ठभूमि तैयार की। इनमें सामंतवाद का उदय, अर्थव्यवस्था का बंद होना तथा सामाजिक व्यवस्था का अधःपतन आदि प्रभाव महत्वपूर्ण थे
- आठवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध की समाप्ति पर भारत में तीन महाशक्तियां थीं- पाल, गुर्जर प्रतिहार एवं राष्ट्रकूट।

❑ **तीन महाशक्तियो के शासक**

- **पाल-** गोपाल , धर्मपाल , देवपाल, विग्रहपाल, नारायणपाल, महिपाल प्रथम, रामपाल, मदनपाल
- **प्रतिहार-** नागभट्ट प्रथम, वत्सराज, नागभट्ट द्वितीय, मिहिरभोज प्रथम, महेन्द्रपाल प्रथम
- **राष्ट्रकूट-** दुन्तिदुर्ग, कृष्ण प्रथम, ध्रुव, गोविन्द तृतीय, अमोघवर्ष, कृष्ण द्वितीय, इन्द्र तृतीय, कृष्ण तृतीय

बंगाल का पाल राजवंश

- **संस्थापक-** गोपाल
- अरबों द्वारा पाल राज्य को **'रुह-मा'** कहा गया है।
- सभी पाल शासक बौद्ध धर्मावंलबी थे।
- पालवंश का शासन गौड़ देश , बंगाल में स्थित था।
- ह्वेनसाँग के अनुसार बंगाल में चार स्वतन्त्र राज्य थे - पुण्ड्रवर्द्धन, कर्णसुवर्ण, समतट और ताम्रलिप्ति।
- शशांक की मृत्यु एवं हर्षवर्द्धन के पश्चात् बंगाल की राजनीतिक स्थिति बिगड़ गई।
- वहाँ मत्स्य न्याय की स्थिति व्याप्त हो गई।
- पाल कालीन राज्याश्रय प्राप्त शिल्पी 'धीमन' एवं 'विटपाल' थे।
- पालों द्वारा खुदवाए गए जलाशय दीनाजपुर जिले (पश्चिम बंगाल) में अभी भी विद्यमान हैं।

❑ **गोपाल**

- गोपाल ने शशांक की मृत्यु के बाद बंगाल में व्याप्त अव्यवस्था को समाप्त किया।
- पाल साम्राज्य की स्थापना 750 ई. में गोपाल ने की।
- यह बौद्ध धर्म का अनुयायी था।
- देवपाल के मुंगेर ताम्रपत्र अभिलेख में गोपाल को समुद्रपर्यन्त पृथ्वी का विजेता बताया गया है।
- इसने नालन्दा में भी एक विहार बनवाया।
- गोपाल को जनता ने स्वयं चुनकर राजा बनाया था।
- खलीमपुर अभिलेख के अनुसार, मत्स्य न्याय से पीड़ित हो जनता द्वारा गोपाल को राजा बनाया गया।
- कुछ विद्वान गोपाल को ही 'ओदंतपुरी' विहार की स्थापना का श्रेय देते हैं।

❑ **धर्मपाल (770-810 ई.)**

- **उपाधि -** 'परमेश्वर', 'परमभट्टारक' ,'परमसौगात' एवं 'महाराजाधिराज'
- इसके अधीन बंगाल उत्तर भारत का सर्वाधिक महत्वपूर्ण राज्य बन गया।
- इसने 'विक्रमशिला' तथा 'सोमपुरी' बौद्ध विहार की स्थापना कराई।
- इसने बौद्ध विद्वान 'हरिभद्र' को राज्याश्रय दिया।
- हरिभद्र ने **'अष्टसहस्रिका जघन्य पारमिता'** नामक ग्रंथ की रचना की।
- खालीमपुर लेख में धर्मपाल को "सभी संप्रदायों विशेषतः ब्राह्मणों का आदर करने वाला कहा गया है।"
- भागलपुर अभिलेख के अनुसार, धर्मपाल ने 'कन्नौज नरेश इंद्रायुध को परास्त कर चक्रायुध को कन्नौज का राजा बनाया।
- धर्मपाल ने कन्नौज में एक सभा आयोजित की उसने स्वयं को उत्तरी भारत का सम्राट घोषित किया।
- धर्मपाल ने विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना की।

❑ **देवपाल (810-850 ई.)**

- **उपाधि -** 'परमसौगात'
- **राजधानी -** मुंगेर स्थानांतरित की
- **विजयों के श्रोत -** मुंगेर लेख' एवं 'बादल स्तंभ लेख' में
- यह धर्मपाल की राष्ट्रकूट वंशीय रानी 'रन्नादेवी' से उत्पन्न पुत्र था।
- देवपाल, पाल वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक था।
- इसने गुर्जर प्रतिहार वंश के रामभद्र तथा नोज को पराजित किया।
- देवपाल के सुदूर दक्षिण अभियान का उद्देश्य राष्ट्रकूटों की शक्ति को कम करना था।
- प्रशासनिक कार्यों में **'दर्मपाणि'** एवं **'केदार मिश्र'** मंत्रियों का विशेष योगदान रहा।
- सैनिक विजयों में चचेरा भाई जयपाल उसका प्रमुख सहायक था।
- इसके समय जावा के शैलेंद्र शासक **'बालपुत्रदेव'** ने नालंदा में एक विहार की स्थापना की, जिसके रख-रखाव हेतु देवपाल ने 5 गांव दान दिए।
- यह बौद्ध धर्म का संरक्षक था।
- इसने नगरहार के विद्वान वीरदेव का सम्मान किया और उन्हें 'नालन्दा-महाविहार' का अध्यक्ष बनाया।

❑ **विग्रहपाल (850-854 ई.)**

- यह अपने पुत्र नारायणपाल के पक्ष में सिंहासन त्याग कर साधु हो गया।

❑ **नारायणपाल (854-908 ई.)**

- इसकी रुचि सैनिक जीवन की अपेक्षा साधु जीवन व्यतीत करने में अधिक थी।
- इसका राज्य मात्र बंगाल के एक भाग में संकुचित हो गया था, किंतु अपने शासनकाल के अंत तक मगध तथा उत्तरी बंगाल पर पुनः अधिकार कर लिया।
- नारायणपाल के बादल अभिलेख में देवपाल को म्लेच्छ विजेता कहा गया है।
- नारायण पाल ने शिव के सम्मान में एक हजार मंदिरों का निर्माण करवाया।

❑ **विग्रहपाल द्वितीय (908-988 ई.)**

- विग्रहपाल द्वितीय के समय पालों का बंगाल पर शासन समाप्त हो गया ।
- पाल शासक बिहार तक सीमित हो गया। ।
- इसे 'सेना के साथ भटकने वाले पाल राजा' था।

❑ **महिपाल प्रथम (988 - 1038 ई.)**

- 'पाल वंश का द्वितीय संस्थापक'
- इसने कम्बोजों को बंगाल से बाहर निकाल दिया।
- पाल राज्य को पुनः पूर्वी भारत का शक्तिशाली राज्य बनाया।
- राजेन्द्र चोल प्रथम ने 1023 ई. के लगभग महिपाल प्रथम को पराजित किया, किंतु इससे महिपाल प्रथम को कोई विशेष हानि नहीं हुई।
- यह अंतिम योग्य शासक था इसके बाद पाल सत्ता का पतन प्रारम्भ हो गया।

❑ **रामपाल (1077-1120 ई.)**

- यह पाल वंश का अंतिम उल्लेखनीय शासक था।
- इसने राष्ट्रकूटों की सहायता से अपने भतीजे भीम को मारकर राज्य पर अधिकार किया।

- इसने उत्तरी बिहार तथा संभवतः असम की विजय की।
- इसके समय में **'कैवर्त्त विद्रोह'** हुआ। सन्ध्याकर नंदी ने अपने ग्रंथ 'रामचरित' में इसका वर्णन है।

❑ **मदनपाल**

- इस वंश का अंतिम शासक था।
- 1199 ई. में बख्तियार खिलजी के पुत्र इख्तियारुद्दीन खिलजी के नेतृत्व में मुसलमानों ने बिहार से भी पाल वंश का उन्मूलन कर दिया।
- अंततः बारहवीं शताब्दी के अंत में बंगाल के पाल राज्य को सेन राजवंश ने हस्तगत कर लिया।

- Note:-
- पाल शासकों ने बौद्ध धर्म को राज्याश्रय प्रदान कर नवजीवन प्रदान किया।
- पाल राजा नयपाल के शासनकाल में बौद्ध आचार्य अतिश दीपंकर ने तिब्बत के राजा के निमंत्रण पर तिब्बत जाकर बौद्ध मत का प्रचार किया।
- 1202 ई. में बख्तियार खिलजी ने विक्रमशिला विश्वविद्यालय को ध्वस्त कर दिया।

बंगाल का सेन राजवंश

- पाल राजवंश के पतन के बाद बंगाल में सेन राजवंश का शासन आरम्भ हुआ।
- **संस्थापक-** सामंतसेन
- **वास्तविक संस्थापक-** आदिपुरुष वीरसेन
- सेन स्वयं को 'कर्नाट क्षत्रिय' एवं 'ब्रह्म क्षत्रिय' कहते थे
- यह स्वयं को दक्षिणापथ के राजाओं का वंशज मानते थे।

❑ **विजयसेन (1095- 1158 ई.)**

- सेन वंश का प्रथम ऐतिहासिक शासक
- **उपाधियां -** 'परममट्टारक', 'महाराजाधिराज', 'परमेश्वर', 'अरिराज वृषम शंकर'
- **शासनकालीन श्रोत -** 'देवपाड़ा' वरकपुर एवं पैकोर लेख से
- शेव मतानुयायी विजयसेन ने देवपाड़ा में **'प्रद्युम्नेश्वर शिव मंदिर'** बनवाया।
- इसकी विजयों से प्रभावित होकर कवि श्रीहर्ष द्वारा **गौडोर्विश प्रशस्ति** की रचना की गयी।

❑ **बल्लाल सेन (1158-1178 ई.)**

- इसने संपूर्ण बिहार तथा बंगाल पर अधिकार किया।
- **उपाधियां -** 'गौड़ेश्वर', 'परम माहेश्वर' तथा 'निःशंक शंकर'
- पुराण एवं स्मृतियों का अध्ययन करने वाला यह स्वयं प्रसिद्ध लेखक भी था।
- रचना –'दान सागर'(स्मृतियों पर), 'अद्भुत सागर'(खगोल विज्ञान पर)
- उसने 'कुलीनवाद' नामक सामाजिक प्रणाली आरंभ की। जिसका उद्देश्य कुलीन जातियों की शुद्धता को बनाए रखना था।
- यह शैव मतानुयायी था।
- इनके आचार्य अनिरुद्ध थे, इसने प्रयाग में जलसमाधि ली थी।

❑ **लक्ष्मण सेन (1178-1206 ई.)**

- सेन वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली राजा तथा बंगाल का अंतिम हिंदू राजा था।
- उपाधि - परमभागवत एवं अरिराज मदन शंकर
- **समकालीन-** गहड़वाल राजा जयचंद्र
- इसने गहड़वालों पर आक्रमण कर उनसे काशी तथा प्रयाग छीन लिए।
- इसने पुरी, काशी तथा प्रयाग में विजय स्तंभ स्थापित किए।
- बिहार का एक बड़ा भाग लक्ष्मण सेन के आधिपत्य में था, जहां उसके नाम पर **'लक्ष्मण संवत्'** प्रचलित था।
- बख्तियार खलजी द्वारा 18 खलजी घुड़सवारों के साथ अचानक किए गए आक्रमण में लक्ष्मण सेन को अपनी राजधानी 'नदिया' (नवद्वीप) छोड़कर भागना पड़ा
- तत्पश्चात लक्ष्मण सेन ने सोनार गांव में शरण ली और शेष जीवनकाल में वहीं से दक्षिण बंगाल पर शासन करता रहा।
- लक्ष्मण सेन के वंशज तेरहवीं शताब्दी के मध्य तक बंग (पूर्वी बंगाल) पर राज करते रहे, तत्पश्चात 'देव' राजवंश ने उनका स्थान ले लिया।
- लक्ष्मण सेन लेखक तथा कवि था।
- इसकी कविताएं इसके दरबारी कवि श्रीधर दास रचित **'सदुक्तिकर्णामृत' ग्रंथ** में मिलती है।
- लक्ष्मण सेन के दरबार में रहने वाले विद्वान एवं उनकी रचनाएं थीं-
  - जयदेव- 'गीतगोविन्द', मसन्नराघव
  - घोयी- 'पवनदूत'
  - हलायुध-'ब्राह्मणसर्वस्व' एवं 'पिंगल सूत्रवृत्ति'
    - हलायुध, लक्ष्मण सेन का प्रधान न्यायाधीश तथा मुख्यमंत्री भी था।
  - श्रीधर दास - सदुक्ति कर्णामृत' (काव्य ग्रंथ)
  - गोवर्द्धन - 'आर्यासप्तशती'।
- लक्ष्मण सेन ने अपने पूर्वजों के शैव मत को छोड़कर वैष्णव मत अपनाया एवं **'परम भागवत'** की उपाधि धारण की।

राष्ट्रकूट

- दक्षिण में राष्ट्रकूटों का शासन पाल और प्रतिहार वंशो के शासन के समकालीन था।
- अशोक के अभिलेख में राष्ट्रकूटों का उल्लेख हुआ है।
- राष्ट्रकूटों के अभिलेख में उनका मूल निवास स्थान लट्टलूर (आधुनिक लातूर जिला वीदर) माना गया है किन्तु बाद में एलिचपुर में इस वंश का राज्य स्थापित हुआ।
- राष्ट्रकूट शासक शैव, वैष्णव, शाक्त एवं जैन मत के उपासक थे।
- राष्ट्रकूटों के पास नौसैनिक दस्ते थे।
- एलिफैन्टा के गुहा मंदिर का निर्माण भी राष्ट्रकूटों के समय हुआ ।

❑ **दन्तिदुर्ग**

- **संस्थापक -** दन्तिवर्मन या दन्तिदुर्ग
- जिसने आठवीं शताब्दी के मध्य (752 ई०) चालुक्य शासक कीर्तिवर्मन को पराजित करके स्वतंत्र राज्य की स्थापना की।
- उसने अपनी राजधानी मान्यखेत अथवा मालखेत बनाई।
- दन्तिदुर्ग ने उज्जयिनी में हिरण गर्भ (महादान) यज्ञ किया जिसमें प्रतिहार राजा ने द्वारपाल का काम किया था।

❑ **कृष्ण प्रथम (756 ई०)**

- दन्तिवर्मन के बाद उसका चाचा कृष्ण प्रथम शासक बना, जिसमें बादामी के चालुक्यों के अस्तित्व को पूर्णरूप से नष्ट कर दिया।
- विजेता होने के साथ-साथ कृष्ण प्रथम एक निर्माता भी था उसने एलोरा के प्रसिद्ध केलाश मंदिर (गुहा मंदिर) का निर्माण करवाया।
- **एलोरा का कैलाश मंदिर** राष्ट्रकूट नरेश कृष्ण प्रथम ने बनवाया था।
- पर्वत शिलाओं को खोंदकर भवन निर्माण के विकास की चरमावस्था एलोरा का कैलाश मंदिर है।
- इस मंदिर का आकार 'पट्टडकल' के **चालुक्यकालीन विरूपाक्ष मंदिर** की भांति है।
- यह मंदिर द्रविड़ शैली के नियमित क्रमबद्ध विकास का उदाहरण है।

- सारा मंदिर 'तक्षण कला' से अलंकृत है। इस मंदिर को उपर से नीचे की ओर तराशा गया है।

❑ **ध्रुव**

- कृष्ण प्रथम के बाद गोविंद द्वितीय तथा इसके बाद ध्रुव शासक बना।
- **उपाधियां** - 'निरूपम', 'कालिवल्लम', 'श्रीवल्लम' एवं 'धारावर्ष'
- इसने पल्लव एवं वेंगी के चालुक्यों को पराजित किया।
- वह दक्षिण का प्रथम राष्ट्रकूट शासक था जिसने उत्तरी भारत के आधिपत्य के लिए चलाए जा रहे त्रिपक्षीय संघर्ष में दृढ़तापूर्वक हस्तक्षेप किया तथा प्रतिहार नरेश वत्सराज एवं पाल शासक धर्मपाल को पराजित किया।
- उत्तर के अपने सफल अभियानों के पश्चात् ध्रुव ने " अपने राजचिन्ह पर गंगा और यमुना के प्रतीक रूप में अंकित किया।"

❑ **गोविन्द तृतीय**

- यह ध्रुव का उत्तराधिकारी था।
- गोविन्द तृतीय ने पल्लव, पाण्ड्य, केरल तथा गंग राजाओं द्वारा बनाए गए संघ को धवस्त कर दिया।
- राष्ट्रकूट शासकों में गोविन्द तृतीय अपने अद्वितीय साहस, कूटनीतिज्ञता, सेनानायकत्य आदि गुणों के कारण सर्वश्रेष्ठ शासक था।
- उसका काल राष्ट्रकूट शक्ति का चरमोत्कर्ष काल था।
- गोविन्द तृतीय ने पाल शासक धर्मपाल तथा प्रतिहार शासन नागभट्ट द्वितीय को पराजित किया।
- प्रतिहार शासक से उसने मालवा छीनकर अपने एक अधिकारी परमार वंश के उपेन्द्र को दिया था।
- गोविन्द तृतीय के शासन काल में संपूर्ण भारत ने राष्ट्रकूट प्रभुसत्ता को स्वीकार किया।

❑ **अमोघवर्ष**

- आमेघवर्ष का काल धर्म एवं साहित्य के विकास का काल था।
- अमोघवर्ष विद्या और कला का उदार संरक्षक था।
- इसने कविराज मार्ग नामक कन्नड़ भाषा में एक काव्य ग्रन्थ की रचना की।
- इसने अपने राजसभा में अनेक विद्वानों को आश्रय प्रदान किया।
- इसने आदिपुराण के लेखक जिनसेन तथा गणितसार संग्रह के लेखक महावीराचार्य को संरक्षण प्रदान किया।
- अमोघवर्ष जैन मत का अनुयायी था।
- वह हिन्दू देवी-देवताओं का भी सम्मान करता था वह महालक्ष्मी का अनन्य भक्त था तथा जैन होते हुए भी ताम्रपत्र से पता चलता है कि उसने एक अवसर पर देवी को अपने बाये हाथ की उंगली चढ़ा दी थी। उसकी तुलना शिव दधीचि जैसे पौराणिक व्यक्तियों से की जाती है।
- अमोघवर्ष ने तुंगमद्रा नदी में जल समाधि ले ली थी।

❑ **कृष्ण तृतीय**

- इसने अपने राज्यारोहण के समय अकाल वर्ष की उपाधि धारण की।
- कांची और तंजौर को जीतने के बाद उसने कांचीयम तंजेयमकोंड (कांची तंजौर का विजेता) की भी उपाधि ग्रहण की थी।
- कृष्ण तृतीय ने चोल नरेश परान्तक प्रथम को पराजित किया गया।
- दक्षिण में उसकी सेनाएं रामेश्वरम् तक पंहुच गयी थी।
- चोल राज्य के उत्तरी भाग को हस्तगत कर लिया।
- वहाँ उसने एक विजय स्तम्भ तथा एक मंदिर का निर्माण करवाया।
- कृष्ण तृतीय ने रामेश्वरम् में **कृष्णेश्वर** तथा **गण्डमार्तण्डादित्य** के मंदिर बनवाये।
- इसकी राजसभा में कन्नड़ भाषा का कवि पोन्न निवास करता था जिसने शान्ति पुराण की रचना की।
- एक अन्य विद्वान पुष्पदन्त ने **'ज्वालामालिनीकल्प'** की रचना की।

❑ **कर्क द्वितीय (972-974 ई.)**

- राष्ट्रकूट वंश का अंतिम शासक था, जिसके पश्चात राष्ट्रकूट राज्य समाप्त हो गया।
- चालुक्य राजा तैलप द्वितीय ने कर्क द्वितीय को परास्त करके राष्ट्रकूट राज्य पर अधिकार कर लिया तथा कल्याणी के चालुक्य वंशीय राज्य की स्थापना की।

Note:-

- परमार राजा सीयक ने राष्ट्रकूट राज्य पर आक्रमण का दिया तथा 927-73 में राष्ट्रकटों की राजधानी मान्यखेट में खूब लूटपाट की।

❑ **राष्ट्रकूट कालीन संस्कृति**

- राष्ट्रकूटों ने लगभग तीन सौ वर्षों तक (आठवीं से ग्याहरवीं सदी) तक शासन किया। इस दौरान इन्होंने प्रशासनिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में अनेक उपलब्धियां हासिल की।

- **प्रशासनिक उपलब्धियां**
  - राष्ट्रकूटों के अधीन राजा शासन का केंद्र बिन्दू था ।
  - वह परमभट्टारक, धारावर्ष एवं आकाल वर्ष जैसी उपाधियां धारण करता था।
  - उसकी सहायता के लिए युवराज एवं मंत्रिपरिषद् होती थी ।
  - यद्यपि राष्ट्रकूट शासन का स्वरूप सामंतीय था। लेकिन भूमि हस्तांतरण एवं कर आदि के मामले में सामन्तों को राजा से अनुमति लेनी पड़ती थी।
  - राष्ट्रकूटों के समय प्रांतों (राष्ट्र)> विषयों > भुक्ति (सर्वोच्च अधिकारी भौगिक)> नगर(उच्च अधिकारी पुरपति)> ग्राम(सर्वोच्च अधिकारी ग्रामकूट)
  - भुक्तियों बारह ग्राम समुह हुआ करते थे।
  - नगर एवं ग्राम शासन में परिषदें ज्येष्ठ सदस्यों से मिलकर बनती थी। इनकों छोटे-छोटे मुकदमों और दीवानी मुकदमों के निपटारें का अधिकार था।
  - भूमि पर व्यक्तिगत अधिकार थे। उपज का 1/4 भाग भोग कर के रूप में लिया जाता था।
  - राष्ट्रकूट लेखों में उद्रंग, उपरिकर (भोगकर) भूतोत्पाताय तथा विष्टि आदि करों का विवरण प्राप्त होता है।
  - इन करों के अतिरिक्त वन, नदी, खान तथा सामंतों से होने वाली आय भी राजकीय राजस्व के प्रमुख शासन थे।

- **सांस्कृतिक उपलब्धियां**
  - राष्ट्रकूट शासक जैन धर्म के अनुयायी थे। लेकिन इनका काल धार्मिक सहिष्णुता का काल था ।
  - इस समय शैव एवं वैष्णव धर्म लोकप्रिय थे। कृष्ण प्रथम द्वारा बनवाएं गए एलोरा के कैलाश नाथ मंदिर से इसकी जानकारी मिलती है। इस समय त्रिमूर्ति पूजा भी प्रचलन में थी।
  - राष्ट्रकूटों ने बौद्ध संघों को भी मुक्त हस्त से दान दिया था। इन्हीं के काल में कुमारिल भट्ट और शंकराचार्य जैसे दिग्गजों का आर्विभाव हुआ।
  - राष्ट्रकूटों का समय साहित्य के विकास का भी समय था। इस समय संस्कृत साहित्य के साथ-साथ कन्नड़ साहित्य का भी विकास हुआ।
  - आदि पुराण, विक्रमार्जुनविजय, शांति पुराण एवं गदायुद्ध जैसे साहित्यों की रचना इसी समय हुयी। महावीराचार्य की गणित सार संग्रह उस काल की अक्षय निधि है।
  - राष्ट्रकूट काल में एलोरा एलिफेन्टा आदि में अनेक मंदिरों एवं इन मंदिरों में मूर्तिकला का अभूतपूर्व विकास हुआ।
  - पहली बार भारत में गुफा मंदिर इसी काल में बनाएं गए। ऐलोरा में बने प्रमुख मंदिरों में दशावतार मंदिर एवं कैलाश नाथ मंदिर और ऐलोरा के मंदिर है।

गुर्जर-प्रतिहार वंश

- प्रतिहार वंश की राजधानी मिनमल्ल (भीनमाल) थी , बाद में राजधानी कन्नौज बनी।
- **स्रोत-**
  - पुलकेशिन द्वितीय (चालुक्य) का 'ऐहोल लेख' - गुर्जर जाति का सर्वप्रथम उल्लेख
  - 'मिहिरभोज का ग्वालियर अभिलेख' - राजनैतिक उपलब्धियां एवं उनकी वंशावली 'लक्ष्मण' का वंशज बताया गया है।
- **ह्वेनसांग-** गुर्जरों के राज्य को 'कु-चे-लो' एवं राजधानी को 'पिलोमोलो' कहा।
- **अलमसूदी -** प्रतिहार राज्य को अलजुर्ज कहा ।
- **सुलेमान -** जीम की आकृति की भांति बताया ।

❑ **नागभट्ट प्रथम (730-756 ई.)**

- प्रतिहार वंश का **संस्थापक**
- इसने सिंध की ओर से होने वाले आक्रमण से पश्चिमी भारत की रक्षा की।
- नागभट्ट प्रथम के राज्य में राजस्थान, मालवा एवं गुजरात के हिस्से सम्मिलित थे।
- नागभट्ट प्रथम का उल्लेख- पुलकेशिन द्वितीय के **ऐहोल अभिलेख** तथा बाणभट्ट के **हर्षचरित**
- ग्वालियर अभिलेख - **म्लेच्छ विनाशक** कहा गया ।

❑ **वत्सराज (775-800 ई.)**

- इसे प्रतिहार साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।
- वत्सराज के समय **त्रिकोणीय संघर्ष का प्रारंभ** हुआ।
- जयानक द्वारा रचित 'पृथ्वीराज विजय' से पता चलता है कि चाहमान शासक दुर्लभराज वत्सराज का सामंत था, जिसने उसकी ओर से पालों के विरुद्ध संघर्ष किया था।
- इसने त्रिपक्षीय संघर्ष में पाल शासक धर्मपाल को पराजित किया
- राष्ट्रकूट शासक ध्रुव से वत्सराज स्वयं पराजित हुआ।

❑ **नागनट्ट द्वितीय (800-833 ई.)**

- यह वत्सराज का पुत्र था।
- इसने कन्नौज को प्रतिहार - साम्राज्य की राजधानी बनाया।
- सर्वप्रथम इसी ने कन्नौज पर विजय प्राप्त की।
- इसने मुंगेर के युद्ध में धर्मपाल को हराया।
- इसने गंगा में जल समाधि ली थी।
- **श्रोत -** जैन लेखक चंद्र प्रमुसूरि के ग्रंथ 'प्रमावथ प्रशस्ति' से
- **ग्वालियर अभिलेख -** इसको 'आनर्त, किरात, तुरुष्क, वत्स, मत्स्य आदि का विजेता' कहा गया है।

❑ **मिहिरभोज प्रथम (836-885 ई.)**

- **श्रोत -** कल्हण की 'राजतरंगिणी' , सुलेमान के वर्णन से
- उसने कलचुरि, चेदि तथा गुहिलौत वंशों के साथ मैत्री संबंध स्थापित किए।
- 836 ई. में कन्नौज पर अधिकार कर उसे अपनी राजधानी बनाया।
- जयपुर क्षेत्र का गुहिलौत शासक 'हर्षराज' मिहिरभोज का सामंत था, जिसने उसके उत्तरी अभियानों में भाग लिया था।
- **उपाधियां -** 'आदि वराह' एवं 'प्रमास'
- आदि वराह उपाधि ग्वालियर अभिलेख एवं 'प्रमास' उपाधि दौलतपुर अभिलेख से जानकारी मिलती हैं।
- इसके सिक्कों पर सूर्यचक्र की आकृति का अंकन मिलता है।
- इसके शासनकाल में ही अरब व्यापारी सुलेमान भारत आया था।

❑ **महेन्द्रपाल प्रथम (885-910 ई.)**

- उपाधि- 'सकल-कला-निलय-निर्भयराज'
- इसके काल में उसकी राजधानी कन्नौज 'हिंदू सभ्यता एवं संस्कृति का केंद्र' बन गई।
- इसके दरबार में विद्वान राजशेखर रहते थे, जो उसके राजकवि एवं राजगुरु थे।
- राजशेखर उसके पुत्र तथा उत्तराधिकारी महिपाल प्रचम के दरबार में भी रहे।
- **राजशेखर की रचनाएं है-** कर्पूरमन्जरी, काव्यमीमांसा, विद्धशालमंजिका, मुवनकोश, बालरामायण, हरविलास एवं प्रबन्धकोश

❑ **महिपाल प्रथम (912-944 ई.)**

- इसके शासन काल में अरब यात्री अलमसूदी भारत आया।
- इसके शासनकाल में राष्ट्रकूट शासक इन्द्र तृतीय ने कन्नौज को ध्वस्त किया।
- **उपाधि-** 'आर्यावर्त का महाराजाधिराज' (राजशेखर ने कहा) , 'कर्नाटक विजेता' (क्षेमेश्वर ने कहा)
- इसके बाद से ही प्रतिहार साम्राज्य का विघटन प्रारंभ हो गया।
- चन्देल, परमार एवं चेदि प्रतिहार साम्राज्य से स्वतंत्र हो गए।

❑ **राज्यपाल**

- महमूद गजनवी के आक्रमण (1018 ई.) के समय यह भाग निकला, फलस्वरूप कन्नौज को खूब लूटा।
- चन्देल राजा विद्याधर ने राज्यपाल का वध कर दिया।
- अंततः 1090 ई. तक प्रतिहार शासन कन्नौज से विलुप्त हो गया
- उसके स्थान पर गहड़वाल (राठौर) वंश स्थापित हुआ।

- **Note**

❑ **महत्वपूर्ण तथ्य**

- गुर्जस्-प्रतिहारों को 'अग्निकुल राजपूत' भी कहा जाता है, जिन्हें अरबों ने 'अल-जुर्ज' कहा है।
- गुर्जर-प्रतिहारों ने 'नीलमाल' या 'मीनमाल' (माउण्ट आबू के समीप राजस्थान) से शासन आरंभ किया।
- अरब इतिहासकार सुलेमान के अनुसार, 'मिहिरभोज अरबों के प्रति अत्यन्त क्रूर तथा इस्लाम विरोधी था।'
- अरब लेखकों के अनुसार, 'गुर्जर-प्रतिहारों' के पास सोने तथा चांदी के विशाल भंडार थे।'

त्रिकोणीय संघर्ष

- त्रिपक्षीय संघर्ष, आठवीं और नौवीं शताब्दी में उत्तरी भारत में हुए राजनीतिक उथल-पुथल का दौर था। इस संघर्ष में गुर्जर-प्रतिहार, पाल, और राष्ट्रकूट राजवंशों के बीच कन्नौज पर नियंत्रण के लिए युद्ध हुए थे। इस संघर्ष को कन्नौज त्रिभुज युद्ध भी कहा जाता है।

❑ **त्रिपक्षीय संघर्ष कन्नोज के लिए ही क्यों –**

- त्रिपक्षीय संघर्ष, कन्नौज के लिए इसलिए हुआ क्योंकि कन्नौज उस समय संप्रभुता का प्रतीक था।
- यह गंगा घाटी के उपजाऊ क्षेत्रों में स्थित था।
- सिल्क रुट से जुड़ा हुआ था।
- कन्नौज, हर्षवर्धन के साम्राज्य की राजधानी थी।
- कन्नौज पर नियंत्रण का मतलब मध्य गंगा घाटी पर नियंत्रण भी था, जो संसाधनों से भरा हुआ था।
- कन्नौज, व्यापार और वाणिज्य के लिए उपयुक्त था।

- 8वीं शताब्दी के अंत और 9वीं शताब्दी के प्रारंभ में कन्नौज पर कमज़ोर शासकों का शासन था।
- राष्ट्रकूट लोग लूटपाट करने की इच्छा से कन्नौज की ओर आकर्षित हुए थे।

❑ **त्रिपक्षीय संघर्ष का आरम्भ**

- त्रिपक्षीय संघर्ष का आरम्भ पाल शासक धर्मपाल ने किया।
- इसने कन्नौज पर आक्रमण कर इन्द्रायुध को पराजित किया तथा चक्रायुध को अधीनस्थ शासक के रूप में प्रतिष्ठित किया।
- प्रतिहार शासक वत्सराज ने चक्रायुध एवं धर्मपाल दोनों को पराजित किया। शीघ्र ही राष्ट्रकूट शासक ध्रुव ने वत्सराज एवं त्रिपक्षीय धर्मपाल को पराजित किया।
- यह संघर्ष लगभग दो सौ सालों तक चला और अंत में गुर्जर-प्रतिहार शासक नागभट्ट द्वितीय के पक्ष में खत्म हुआ।
- नागभट्ट द्वितीय ने कन्नौज को गुर्जर-प्रतिहार साम्राज्य की राजधानी बनाया।

❑ **त्रिपक्षीय संघर्ष का परिणाम**

- इस प्रकार कन्नौज पर आधिपत्य के लिए संघर्ष प्रारम्भ हो गया। यद्यपि इस त्रिदलीय संघर्ष का कोई लाभदायक परिणाम नहीं निकला।
- बल्कि तीनों राज्यों की शक्ति को नष्ट हो गयी।
- केंद्रीय सत्ता कमज़ोर हुई।
- क्षेत्रीय शक्तियां मज़बूत हुईं।
- साम्राज्यों की आर्थिक नींव असंतुलित हो गई।
- गुर्जर प्रतिहार के अवशेषों पर दसवीं शताब्दी में अनेक राजपूत राज्यों का उदय हुआ।

त्रिपक्षीय संघर्ष में शामिल शासक

चरण	पाल शासक	प्रतिहार शासक	राष्ट्रकूट शासक	जीत
I	धर्मपाल	वत्सराज	ध्रुव	राष्ट्रकूट
II	धर्मपाल	नागभट्ट द्वितीय	-	गुर्जर-प्रतिहार
III	धर्मपाल	नागभट्ट द्वितीय	गोविन्द तृतीय	राष्ट्रकूट
IV	देवपाल, नारायणपाल	रामभद्र, मिहिर भोज	अमोघवर्ष, कृष्ण द्वितीय	गुर्जर-प्रतिहार
V	-	महेन्द्रपाल, महिपाल	इन्द्र तृतीय	पहले राष्ट्रकूट , अन्तिम रूप से गुर्जर-प्रतिहार

अन्य वंश

❑ **कार्कोट वंश**

- **संस्थापक** - दुर्लभवर्द्धन (627-632 ई.)
- यह गोनंद वंश के अंतिम राजा बालादित्य का पदाधिकारी था, जिसकी हत्या कर यह राजा बना।
- ह्वेनसांग के अनुसार, दुर्लभवर्द्धन के काल में तक्षशिला, सिंहपुर, उरसा, पुंच (पुञ्छ) एवं राजपूताना कश्मीर राज्य के अंग थे।
- **दुर्लभक (632-682 ई.)**
  - **उपाधि** - 'प्रतापादित्य'
  - इसने 'प्रतापपुर' नगर की स्थापना की।
- **चंद्रापीड**
  - **अन्य नाम-वज्रादित्य**
  - इसके चीन के साथ मैत्री संबंध थे।
  - यह राजा दुर्लभक का पुत्र था।
  - इसके काल में कश्मीर में अरब आक्रमण हुए।
- **तारापीड**
  - **अन्य नाम-** उदयादित्य
  - यह राजा दुर्लभक का पुत्र था।
  - 'कल्हण' ने इसे 'क्रूर तथा निर्दयी राजा' बताया।
- **मुक्तापीड**
  - **अन्य नाम-** ललितादित्य
  - यह राजा दुर्लभक का पुत्र था।
  - इसने चीनी दरबार में दूतमंडल भेजा था।
  - इसने वशोवर्मन के साथ संधि कर तिब्बतियों को परास्त किया। इसने कम्बोजों व तुर्कों को भी परास्त किया।
  - इसने कन्नौज नरेश यशोवर्मन को परास्त किया था।
  - यशोवर्मन के दरबारी कवि वाक्पति एवं भवभूति को कश्मीर ले गया।
  - कल्हण ने इसकी दिग्विजय का उल्लेख किया है।
  - इसकी विजयों ने कश्मीर को गुप्तों के बाद भारत का सबसे शक्तिशाली साम्राज्य बना दिया।
  - इसने सूर्य के 'मार्तण्ड मंदिर' एवं परिहासपुर के 'केशव मंदिर' का निर्माण करवाया।
- **जयापीड**
  - **अन्य नाम-** विनयादित्य
  - अंतिम शक्तिशाली राजा था।
  - इसकी मृत्यु के साथ ही कार्कोट वंश का अंत हो गया।
  - इसने कन्नौज नरेश वज्रायुध को परास्त किया।
  - 'कल्हण' ने इसे निर्दयी तथा धनलोलुप शासक' बताया।
  - विद्वान - क्षीर, उद्भट, दामोदरगुप्त को संरक्षण प्रदान किया।

❑ **उत्पल वंश**

- **संस्थापक** - अवंतिवर्मन (855-883 ई.)
- **अवंतिवर्मन**
  - कृषि के लिए सिंचाई की उत्तम व्यवस्था कराई।
  - उसके अभियंता 'सुय्य' या 'सूर्य' ने सिचाई हेतु नहरों का निर्माण करवाया।
  - अवंत्तिवर्मन के कार्यों से कश्मीर को बाढ़ से राहत मिली तथा भूमि का एक बड़ा भाग कृषि कार्य के उपयोग में आने लगा।
  - अवंतिवर्मन ने अवंतिपुर नगर की स्थापना की।
  - **विद्वान** - रत्नाकर तथा आनंदवर्धन को संरक्षण प्रदान किया।
- **शंकरवर्मन (883-902 ई.)**
  - इसने दार्वाभिसार, त्रिगर्त तथा गुर्जर पर विजय प्राप्त की।
  - शंकरवर्मन एक क्रूर तथा अत्याचारी शासक था, उसने जनता पर भारी करारोपण किया।

- **Note:-**
- दार्वाभिसार क्षेत्र - झेलम तथा विनाब के मध्य स्थित क्षेत्र, त्रिगर्त क्षेत्र – कांगड़ा

- **गोपालवर्मन (902-904 ई.)**
  - दुर्बल शासक था।
  - दुर्बल उत्तराधिकारियों के कारण सत्ता 'तांत्रिन सैनिकों (राजभवन के अंगरक्षक) के एक समूह के हाथों में आ गई।
- **यशस्कर**
  - यह 'सामान्य कुल में उत्पन्न' विद्वान व्यक्ति था
  - उत्पल वंश के बाद कश्मीर का शासन अपने हाथों में लिया।
  - कश्मीर में शांति एवं व्यवस्था की स्थापना की।

- कल्हण ने इसके गुणों की प्रशंसा की है।

- **पर्वगुप्त**
- यशस्कर के उत्तराधिकारी की हत्या कर इसने शासन अपने हाथों में लिया।
- पर्वगुप्त के बाद इसका पुत्र क्षेमगुप्त का विवाह शाही राजा भीम की पौत्री ' दिद्दा ' से हुआ। यह शासिका बनी।

- **दिद्दा (980-1003 ई.)**
- इसने शांति तथा व्यवस्था स्थापित की और विद्रोहियों का दमन किया।
- इसके शासनकाल में इसके महामंत्री तुंग के विद्रोह होते रहे।
- 1003 ई में दिद्दा की मृत्यु के साथ ही उत्पल वंश का अंत हो गया।
- इसके सिक्कों पर देवी लक्ष्मी का अंकन था।
- इसने पुरा एवं कंकनपुरा नगरी की स्थापना की।
- कल्हण की 'राजतरंगिणी' के चौथी, पांचवीं और छठवीं तरंगों में कार्कोट तथा उत्पल वंश के इतिहास का वर्णन मिलता है।

❑ लोहार वंश

- **संस्थापक** - संग्रागराज (1003-1028 ई.)

- **संग्रागराज (1003-1028 ई.)**
- यह रानी दिद्दा का भतीजा था।
- इसने मंत्री तुंग को भटिण्डा के शासक त्रिलोचनपाल की ओर से महमूद गजनवी से युद्ध के लिए भेजा।
- तुंग असफल रहा तथा कश्मीर वापस आने पर उसकी हत्या कर दी गई।
- इसकी रानी सूर्यमती ने प्रशासनिक सुधारों में उसका सहयोग किया।

- **कलश**
- जीवन की अंतिम अवस्था में अच्छा शासन संचालन किया।

- **हर्ष** (1089-1111)
- इसे कश्मीरी का नीरो कहा जाता हैं।
- कश्मीर के राजा कलशा का पुत्र था।
- कल्हण हर्ष का आश्रित कवि था।
- कल्हण उत्ते 'तुर्क राजा' कहता है।
- वह क्रूर तथा अत्याचारी शासक था। कल्हण ने उसके अत्याचारों का वर्णन किया है।
- हर्ष देव ने सैनिकों पर ज़्यादा खर्च किया और विलासिता की वजह से वित्तीय संकट में पड़ गए।
- भीमासाही में जमा धन की खोज के बाद उन्होंने मंदिरों को नुकसान पहुंचाया और भगवान और देवी की सोने-चांदी की मूर्तियां पिघला दीं।
- कल्हण के मुताबिक, उनके शासनकाल में रात की मिट्टी पर भी कर लगाया जाता था।
- उसने प्रजा पर भारी करारोपण कर उनसे बलपूर्वक वसूल करवाया।
- सामंतों ने लोहार वंश के उच्छल तथा सुस्सल भाइयों के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया, जिसे दबाने के प्रयास में 1101 ई. में हर्ष मारा गया।
- हर्ष के मृत्योपरान्त राजा बने उच्छल, सुस्सल एवं निक्षाचार दुर्बल शासक थे।

- **जयसिंह**
- यह लोहार वंश का अंतिम शासक था।
- इसने यवनों को परास्त किया।
- इसके शासनकाल को जानने का श्रोत कल्हण की 'राजतरंगिणी' हैं।
- 'राजतरंगिणी' का विवरण जयसिंह के शासन के साथ ही समाप्त हो जाता है।
- राजतरंगिणी के सातवें तथा आठवें तरंग में लोहार वंश का इतिहास वर्णित है।
- लोहार राजवंश की समाप्ति के बाद कश्मीर में लगभग दो शताब्दियों तक अराजकता का वातावरण रहा।

❑ मालवा का परमार राजवंश

- **संस्थापक** - उपेन्द्र राज (कृष्ण राज)
- **वास्तविक संस्थापक** - श्रीहर्ष (सीयक)
- **राजधानी** - उज्जैन
- **द्वितीय राजधानी** - धारा
- यह प्रतिहारों एवं राष्ट्रकूटों के जागीरदार थे।
- स्रोत- उदयादित्य की 'उदयपुर प्रशस्ति'

- **श्रीहर्ष**
- परमार राजवंश का वास्तविक संस्थापक
- नर्मदा नदी के तट पर राष्ट्रकूट खोट्टिग से श्रीहर्ष का युद्ध हुआ।
- इसमें राष्ट्रकूट राजा की हार हुयी।
- श्रीहर्ष को अत्यधिक संपत्ति लूटी।
- **श्रीहर्ष की उपलब्धि-** चालुक्य नरेश योगराज, हूणमंडल के एक सरदार को पराजित किया।

- **वाक्पत्ति मुंज (972-998.ई.)**
- यह श्रीहर्ष का दत्तक पुत्र था, जो उसका उत्तराधिकारी बना।
- **उपाधिया** - 'श्री बल्लन', 'पृथ्वी वल्लम', 'अमोघवर्ष
- मुञ्ज ने चालुक्य नरेश तैलप या तेल द्वितीय की सेनाओं को 6 बार पीछे हटाया।
- मुञ्ज को चालुक्य शासक तैल द्वितीय ने पराजित किया तथा बंदी बनाकर कारागार में वध कर दिया।
- **नवसाहसांक** का रचयिता पद्मगुप्त या परिमलगुप्त, वाक्पति मुञ्ज तथा सिंधुराज का राजकवि था।
- मुञ्ज ने अनेकों मंदिर बनवाए एवं तालाब खुदवाये।
- **विद्वान** – धनञ्जय (दशरूपक), धनिक (यशोरूपावलोक), हलायुध, अमितगति

- **सिंधुराज (998-1010 ई.)**
- **उपाधि** - 'कुमारनारायण' , 'साहसांक' , नवसाहसोक, अवंतिश्वर आदि।
- इसने दक्षिणी चालुक्य राजा सत्याश्रय को हराकर मुञ्ज द्वारा हारे गए प्रदेशों पर पुनः अधिकार कर लिया।
- **सिंधुराज की उपलब्धि-** कोसल के सोमवंशी राजा, हूणमंडल के शासक, लाट के चालुक्य गोम्मीराज को पराजित किया एवं बागड़ के परमार राजा चंद्रप के विद्रोह को शांत किया।
- उत्तरी गुजरात के चालुक्य राजा चामुण्डराज ने इसे पराजित किया।

- **भोज परमार (1010-1050 ई.)**
- **उपाधि** - 'कविराज'
- यह परमार वंश का प्रमुखतम शासक था।
- इसके शासन काल के आठ अभिलेख मिलते है।
- इसमें सैन्य व साहित्यिक प्रतिभा का विलक्षण समन्वय था।
- इसकी प्रसिद्धि साहित्यिक उपलब्धियों के लिए अधिक है।
- **भोज की विजय** –
  - 'लाट' के राजा कीर्तिराज, कोंकण के शिलाहार , उड़ीसा के इन्द्रस्थ, चेदि वंश के गांगेयदेव , चालुक्य नरेश भीम और चाहमान राजा वीर्याराम
- **भोज की पराजय**
  - कल्याणी के चालुक्य जयसिंह द्वितीय , विद्याधर चन्देल से पराजित हुआ ।
  - चालुक्य नरेश सोमेश्वर द्वितीय ने इसकी राजधानी धारा पर आक्रमण कर इसे लूटा तथा जला दिया। इस पराजय का श्रोत विल्हण की 'विक्रमांकदेव चरित' है।
- भोज ने 1008 ई. में महमूद गजनवी के विरुद्ध आनंदपाल की सहायता के लिए एक सेना भेजी थी।

- महमूद गजनवी से भयभीत आनंदपाल के पुत्र त्रिलोचनपाल को भोज ने आश्रय प्रदान किया।
- **भोज की उपलब्धियां -**
  - इसने राजधानी धारा में 'सरस्वती मंदिर' बनवाया।
  - मंदिर के अहाते में एक संस्कृत महाविद्यालय बनवाया।
  - मंदिर के पास एक 'विजय स्तंभ' स्थापित कराया।
  - **भोज द्वारा लिखे गए प्रमुख ग्रंथ-** श्रृंगार प्रकाश, प्राकृत व्याकरण, कूर्मशतक, भोजचम्पू, श्रृंगार-मंजरी, कृत्यकल्पतरु, तत्व प्रकाश, विद्या विनोद, सिद्धांत संग्रह, राजमार्तण्ड, योगसूत्र वृत्ति, चारू चर्चा, आयुर्वेद सर्वस्व शालिहान्न (अश्व चिकित्सा ग्रंथ) आदि।
  - **भोज के दरबारी कवि एवं विद्वान -** भास्कर भट्ट, दामोदर मिश्र, धनपाल, उवट।
  - भोज ने भोपाल के दक्षिणन्पूरब में ' भोजसर' झील तथा भोपाल के समीप 'गोजपुर' नगर बसाया।
  - चित्तौड़ में 'त्रिभुवन नारायण का मंदिर' बनवाया।
- भोज की मृत्यु के बाद परमार वंश का उत्तरोत्तर पतन होता गया।
- अबुल फजल की **'आइन-ए-अकबरी'** में भोज परमार का उल्लेख मिलता है।

❑ जेजाकमुक्ति /बुंदेलखंड के चन्देल

- **संस्थापक -** नन्नुक (831 ई.)
- चन्देल स्वयं को चंद्रात्रेय ऋषि का वंशज मानते थे।
- **राजधानी -** खजुराहो
- **परवर्ती राजधानी -** महोबा (उत्तर प्रदेश)
- नन्नुक के पौत्र जयसिंह या जेजा के नाम पर यह प्रदेश **'जेजाकमुक्ति'** कहलाया।
- अपने लेखों में सर्वप्रथम देवनागरी लिपि का प्रयोग चन्देल शासकों ने कराया।
- **हर्षदेव (900-925 ई.)**
- चन्देल वंश का प्रथम प्रसिद्ध शासक।
- यह वैष्णव धर्मानुयायी था।
- इसके वैवाहिक संबंध कलचुरि तथा चौहान राजवंशों से थे।
- इसने अपने वंश की कन्या नट्टादेवी का कलचुरि नरेश कोक्कल से और स्वयं अपना विवाह चाहमान वंश की कन्या 'कन्चुका' से किया।
- **यशोवर्मन (930-950 ई.)**
- हर्षदेव के उत्तराधिकारी
- **अन्य नाम** – लक्ष्मणवर्मन
- यशोवर्मन ने मालवा, चेदि तथा महाकौशल पर आक्रमण कर साम्राज्य विस्तार किया।
- यशोवर्मन ने राष्ट्रकूटों से कालिंजर दुर्ग जीता था।
- यशोवर्मन ने खजुराहो में विष्णु मंदिर का निर्माण करवाया, जिसमें उसने प्रतिहार शासक देवपाल से प्राप्त 'बैकुण्ठ' की मूर्ति प्रतिष्ठित कराई।
- **धंग (950-1002 ई.)**
- **उपाधि-**महाराजाधिराज
- **राजधानी -** कालिन्जर (महोबा) ,जिसे बाद में खजुराहो स्थानांतरित कर दिया।
- इसने चन्देलों से प्रतिहारों को पूर्ण स्वतंत्र कराया।
- धंग ने संपूर्ण जेजाकमुक्ति पर राज्य विस्तार किया।
- **सबसे उल्लेखनीय विजय -** ग्वालियर की
- इसने सुबुक्तगीन के विरुद्ध भटिण्डा के शाही शासक जयपाल की सहायता की।
- फरिश्ता ने इसका उल्लेख किया है।
- यह ब्राह्मण धर्मानुयायी था।
- इसने जैन मतानुयायियों को धर्म प्रचार तथा खजुराहो में मंदिर बनाने की अनुमति दी थी।
- इसके मुख्य न्यायाधीश भट्ट यशोधर एवं प्रधानमंत्री प्रभास ब्राह्मण थे।
- इसने खजुराहो में जिननाथ, विश्वनाथ, वैद्यनाथ आदि मंदिरों का निर्माण करवाया।
- इसने प्रयाग संगम तट पर शिव-आराधना करते हुए जल समाधि ली।
- **विद्याधर (1019-1029 ई.)**
- चन्देल वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक।
- इसने भोज परमार एवं कलचुरि गांगेय की सहायता से तुर्की को मध्य देश से निकालने का प्रयास किया।
- मुस्लिम लेखो ने उसका उल्लेख 'नंद' तथा 'विदा' नाम से हुआ हैं।
- कन्नौज के राजा राज्यपाल द्वारा महमूद गजनवी से बिना युद्ध किए ही समर्पण कर देने से क्षुब्ध विद्याधर ने उसकी हत्या कर दी। इसका उल्लेख मुस्लिम लेखक इन-जल अतहर ने किया है।
- महमूद गजनवी ने चन्देलों पर प्रथम आक्रमण (1019-20 ई) विद्याबर के समय में ही किया किंतु अंतत दोनों पक्ष पीछे हट गए।
- महमूद गजनवी ने चन्देलों पर द्वितीय अभियान ग्वालियर (दुर्ग का घेरा 1022 ई.) पर तथा तृतीय और अंतिम कालिन्जर (दुर्ग का पेरा) पर किया, किंतु यह विद्याधर को पराजित नहीं कर तका और अंततः उससे संधि कर ली।
- विद्याधर के पश्चात ही इसकावंश का पतन प्रारम्भ हो गया।
- **कीर्तिवर्मा / कीर्तिवर्मन (1060-1100 ई.)**
- इसने कलमुरि चेदि शासक कर्ण को हराकर अपने साम्राज्य का पुनर्गठित किया।
- इसने 'प्रबोध चंद्रोदय' नाटक के रचयिता कृष्ण मिश्र को संरक्षण दिया।
- **मदन वर्मा (1129-63 ई.)**
- राजशेखर कृत **'प्रवन्ध कोश'** में मदनवर्मा का उल्लेख किया गया है।
- **परमर्दिदेव / परमल (1165-1203 ई.)**
- चन्देल वंश का अंतिम शक्तिशाली राजा।
- इसके समय में चौहान राजा पृथ्वीराज तृतीय ने. चन्देल पर आक्रमण कर पराजित किया।
- पृथ्वीराज तृतीय तथा परमर्विदेव के मध्य संघर्ष का वर्णन चंद्रबरदाई कृत 'पृथ्वीराज रासो' एवं 'परमल रासो' और जगनिक कृत 'आल्हखण्ड' में किया गया है।
- इसी युद्ध में चन्देल सेनानायक आल्हा तथा ऊदल, पृथ्वीराज तृतीय के विरुद्ध लड़ते हुए मारे गए।
- पृथ्वीराज के वापस लौटते ही परमर्दिदेव ने पुनः महोबा पर अधिकार कर लिया।
- 1203 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा कालिंजर पर आक्रमण के बाद परमर्दिदेव उसे कर देने के लिए सहमत हो गया।
- ऐबक के साथ इस समझौते के विरोधी जयदेव ने परमर्दिदेव ने मार डाला और ऐबक के विरुद्ध पुनः संघर्ष शुरू किया, अंत में समर्पण करना पड़ा और ऐबक का कालिन्जर दुर्ग पर अधिकार हो गया।
- परमर्दिदेव के साथ ही चन्देल स्वाधीनता का अंत हो गया।

❑ त्रिपुरी का कलचुरि-चेदि राजवंश

- **राजधानी -** त्रिपुरी
- **संस्थापक-** कोक्कल प्रथम
- कलचुरियों को लेखों में 'हैहयवंशी' कहा गया है।
- कलचुरियों का उल्लेख 'कत्तुरी' और 'चेदि' नाम से भी किया गया है।
- कलचुरि सर्वप्रथम नर्मदा तट पर स्थित माहिष्मती में सत्ता में आए।
- **कोक्कल प्रथम (845-878 ई.)**
- कोक्कल प्रथम ने तुरुष्कों को पराजित किया।
- कोक्कल प्रथन ने चन्देल राजकुमारी नट्टा देवी से विवाह किया।

- **Note:-**

- 'तुरुष्क' सिंघ के राजा की तुर्की सैनिक टुकड़ियां थीं।

- **युवराज प्रथम / केयूर वर्ष**
  - यह कलचुरि वंश का प्रथम प्रसिद्ध शासक।
  - इसी की राजसभा में रहते हुए राजशेखर ने 'काव्य मीमांसा' एवं 'विद्धशालमंजिका' नामक ग्रंथ लिखे।
  - इन ग्रंथों में युवराज प्रथम को मालवा तथा कलिंग विजय के कारण राजशेखर ने इसे 'चक्रवर्ती राजा कहा हैं।
  - शैव मतानुयायी था।
  - इसने शैव संतों के निवास हेतु गुर्गी में एक मठ तथा मंदिर बनवाया।
- **गांगेयदेव 'विक्रमादित्य' (1015-1041 ई.)**
  - **उपाधि** – विक्रमादित्य
  - कोक्कल द्वितीय का पुत्र था ।
  - प्रथम राजपूत शासक था, जिसने सोने के सिक्के चलवाएं।
  - इसके लक्ष्मी प्रकार के सिक्कों की नकल चंदेलों, गहड़वालों एवं तोमरों ने भी की।
  - यह शैव मतानुयायी था।
  - विद्याधर चन्देल की मृत्योपरान्त उसने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी।
  - **गांगेय देव की उपलब्धि -**
    - इसने उत्कल , अंग, बनारस तथा प्रयाग को जीता।
    - तत्कालीन पंजाब के गजनी प्रांत के भाग 'किरा' (कांगड़ा घाटी) पर भी आक्रमण किया।
    - दक्षिण में कुन्तल तक सैन्य अभियान किया।
  - नेपाली पाण्डुलिपि में इसको 'तीरमुक्ति का स्वामी' कहा गया है।
- **कर्णदेव /लक्ष्मीकर्ण (1040-1070 ई.)**
  - **उपाधि-** 'त्रिकलिंगाधिपति'(कलिंग विजय के उपलक्ष्य में)
  - मध्ययुग का नेपोलियन कहा जाता है।
  - इसके आठ अभिलेखों से उसकी उपलब्धियां ज्ञात होती हैं।
  - बनारस तथा प्रयागराज, कुछ समय के लिए पश्चिम बंगाल (गौड़) भी उसके राज्य के भाग थे ।
  - **लक्ष्मी कर्ण की उपलब्धि** –
    - दक्षिण में कांजीवरम् पर भी सफल आक्रमण किया।
    - गुजरात के चालुक्य नरेश भीम के साथ मिलकर मालवा के भोज परमार को पराजित किया।
    - कर्ण ने देववर्मन चन्देल को परास्त किया।
  - कीर्तिवर्मन चन्देल द्वारा पराजित किए जाने से इसकी शक्ति क्षीण हो गई।
  - लक्ष्मीकर्ण ने हूण राजकुमारी 'आवल्लदेवी' से विवाह किया।
  - यह शैव मतानुयायी था।
  - इसने बनारस में 'कर्णमेरू' नामक शिव मंदिर बनवाया।
- **विजय सिंह**
  - कलचुरि वंश के अंतिम राजा
  - विजय सिंह को चन्देल नरेश त्रैलोक्यवर्मन ने पराजित्त कर, त्रिपुरी को चन्देल राज्य में मिला लिया।
  - कलचुरि **'त्रैकूटक संवत्'** का प्रयोग करते थे।

❑ गुजरात का चौलुक्य अथवा सोलकी वंश

- **संस्थापक -** मूलराज प्रथम (941-995 ई.)
- **राजधानी -** अन्हिलवाड़
- **भीमदेव प्रथम (1022-1063 ई.)**
  - चालुक्य वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक।
  - इसके काल में ही महमूद गजनवी (1026 ई.) ने सोमनाथ (गुजरात) पर आक्रमण कर शिव मंदिर लूटा था ।
  - भीमदेव प्रथम ने सोमनाथ के मंदिर का पुनर्निर्माण करवाया।
  - **भीमदेव प्रथम की विजय** –
    - जैन विद्वान हेमचंद्र के अनुसार 'भीम प्रथम' ने सिंघ के राजा हम्मुक को परास्त किया।
    - कलचुरि कर्ण के साथ मिलकर भोज परमार को पराजित किया
    - 'धारा' में लूटी गई संपत्ति के बंटवारे में हुए विवाद में कलचुरि कर्ण को भी पराजित किया।
    - इसने मूलराज के समय चालुक्य आधिपत्य में रहे आबू पर्वत पर पुनः अधिकार स्थापित किया।
  - 'भीमेश्वर देव' तथा भट्टारिका के मंदिरों का निर्माण करवाया।
  - सामंत विमल ने आबू पर्वत पर दिलवाड़ा का जैन मंदिर बनवाया।

- **Note:-**
- वाड्नगर लेख के अनुसार, इनकी उत्पत्ति ब्रह्मा जी के कमंडल यानी कि चुलुक से हुई, जिसके कारण इन्हें चालुक्य कहा गया।

- **कर्ण (1063-1092 ई.)**
  - कर्ण ने 'कर्णावती' नगर बसाया।
  - **'कर्णेश्वर का मंदिर'** एवं **'कर्ण सागर झील'** बनवाया।
  - 'कर्णमेरू मंदिर'का निर्माण अन्हिलवाड़ में करवाया।
  - कर्ण ने पश्चिमी चालुक्य शासक के सहयोग से मालवा के विशाल भाग भी जीते।
  - कर्ण की प्रमुख उपलब्धि लाट (दक्षिण गुजरात) पर आधिपत्य थी।
- **जयसिंह 'सिद्धराज'**
  - यह अपनी माँ मयणल्लदेवी के संरक्षण में अल्पायु में राजा बना।
  - जयसिंह 'सिद्धराज' की विजय -
  - इसने शाकम्मरी के चौहान अर्णोराज को पराजित कर उससे अपनी पुत्री का विवाह कर मैत्री स्थापित कर ली।
  - मालवा के परमार शासक यशोवर्मन को पराजित कर मालवा के एक बड़े क्षेत्र को जीत लिया , फिर वह 'अवंतिनाथ' (मालवा का स्वामी) कहलाया। जयसिंह ने महादेव ब्राह्मण को मालवा का शासक बनाया।'
  - बुंदेलखंड के चन्देल शासक मदनवर्मा को भी पराजित किया।
  - सिंधु विजय भी किया।
  - आबू पर्वतों में एक मण्डप में अपने सात पूर्वजों की गजारोही मूर्तियां स्थापित करवाई।
  - यह शैव मतानुयायी था।
  - सिद्धपुर में 'रुद्रमहाकाल' मंदिर बनवाया।
  - सोमनाथ की यात्रा पर लगने वाले यात्रा कर को समाप्त कर दिया।
  - इसने जैन विद्वान हेमचंद्र को संरक्षण प्रदान किया, जिसने 'द्वयाश्रयकाव्य' की रचना की।
- **कुमारपाल (1143-1172 ई.)**
  - वाड्नगर प्रशस्ति (श्रीपाल) लेख से इसके विषय में जानकारी मिलती हैं।
  - यह जैन मतानुयायी था। इसकी आस्था शैव मत में भी थी।
  - इसको 'जैन धर्म का अंतिम राजकीय प्रवर्तक' कहा जाता है।
  - इसने यज्ञीय हिंसा पर प्रतिबंध लगा दिया।
  - इसने पशुवध, शराब, जुआ तथा वेश्यावृत्ति पर भी रोक लगाई।
  - इसने जुआं विहार का निर्माण कराया।
  - इसके सभी लेखों में शिव की प्रार्थना (स्तुति) की गई है।
  - हेमचंद्र की कुमारपालचरित में इसकी विजयों का वर्णन है।
- **अजयपाल (1172-1176 ई.)**

- यह कट्टर शैवमतानुयायी था।
- इसने जैन मंदिरों को ध्वस्त कराया एवं जैन साधुओं की हत्या करायी।
- इसको एक नौकर ने छुरा भोंक कर मार डाला।

- **भीमदेव द्वितीय (1178 ई.)**
- यह राजमाता के संरक्षण में अल्पायु में राजा बना।
- 1178ई. गुजरात पर मुहम्मद गोरी द्वारा आक्रमण किए जाने पर इसकी मां ने स्वयं सैन्य नेतृत्व कर माउण्ट आबू के समीप तुर्की सेना को पराजित किया।
- यह मुहम्मद गौरी को परास्त करने वाला प्रथम भारतीय नरेश था।
- इसने 1186 ई. में पृथ्वीराज चौहान द्वारा गुजरात पर आक्रमण किए जाने पर इसे पराजित किया।
- 1195 ई. में कुत्तबुद्दीन ऐबक को पराजित किया।
- 1197 ई. में ऐबक ने भीमदेव द्वितीय को पराजित कर राजधानी अन्हिलवाड़ा की लूट में सफलता प्राप्त की।
- भीम द्वितीय ने पुनः 1201 ई. में अपना राज्य प्राप्त कर लिया।
- भीमदेव द्वितीय गुजरात के चौलुक्य (सोलंकी) राजवंश का अंतिम शासक था।

❑ **गहड़वाल (राठौर) राजवंश**

- **संस्थापक -** चंद्रदेव
- **गोविन्द चंद्र (1114-1155 ई.)**
- इसने पाल शासक रामपाल को हराकर मगध (बिहार) पर अधिकार किया।
- परमार शासक यशोवर्मा को हराकर पूर्वी मालवा पर अधिकार कर लिया।
- इसके चन्देल, कलचुरि, चालुक्य एवं कश्मीर के शासकों से मैत्रीपूर्ण संबंध थे।
- इसके चोल राजाओं से अत्यन्त प्रगाढ़ संबंध थे।
- इसने और इसके पुत्र ने तुर्क आक्रमणों को विफल किया।
- उपाधि - 'विविधविद्याविचार वाचस्पति'
- इसके मंत्री लक्ष्मीधर ने विधि ग्रंथ 'कृत्यकल्पतरू' की रचना की।
- इसने उत्कल (उड़ीसा) के बौद्ध भिक्षु शाक्यरक्षित एवं उनके शिष्य वागेश्वर रक्षित द्वारा संचालित 'जेतवन विहार' को छह गांव दान दिए।

- **विजय चंद्र (1155-1169 ई.)**
- यह गोविन्द्र चंद्र का पुत्र था।
- इसके समय में दिल्ली चौहानों के अधिकार में चली गई।

- **जयचंद्र (1170-1194 ई.)**
- गहड़वाल वंश का अंतिम शासक।
- चन्दबरदाई की 'पृथ्वीराज रासो' में इसके और चौहान शासक पृथ्वीराज तृतीय के संघर्ष का वर्णन है। इसमें ही पृथ्वीराज द्वारा जयचंद्र की पुत्री 'संयोगिता' के अपहरण का उल्लेख है।
- मेरूतुंग की 'प्रवन्ध चिन्तामणि' से भी जयचंद्र के विषय में बताया गया हैं।
- फरिश्ता नेइसकी सैन्य शक्ति का वर्णन किया है।
- हसन निजामी ने इसके और मुहम्मद गौरी के मध्य युद्ध में मुहम्मद गौरी की विजय का उल्लेख किया है।
- चन्दावर का युद्ध-
- वर्ष -1193-94 ई.
- मध्य -जयचंद्र तथा मुहम्मद गोरी
- अन्य तथ्य -
- जयचंद्र पराजित हुआ तथा मार डाला गया।
- इस युद्ध में कुतुबुद्दीन ऐबक ने गोरी की ओर से सैन्य संचालन किया।

- **हरिश्चंद्र**
- गहड़वाल वंश का अंतिम शासक था।

❑ **शाकम्भरी (अजमेर) के चौहान**

- **संस्थापक-** वासुदेव
- प्रारंभ में चौहान गुर्जर प्रतिहारों के सामंत थे।
- **राजधानी -** सांभर
- राजधानी के नाम के आधार पर ही ये **'शाकम्भरी के चौहान'** कहलाए।
- **अजयराज**
- पृथ्वीराज प्रथम का पुत्र था।
- इसने मालवा के शासक को जीता।
- तुर्कों से नागौर को पुनः जीता।
- गजनियों का प्रसार रोका।
- अजयमेरु (अजमेर) नगर की स्थापना की।
- यह राजधानी सांभर से अजमेर ले गया।
- तुर्कों के विरुद्ध इसकी सफलताओं का वर्णन जगनिक की 'पृथ्वीराज विजय' में है।
- **अर्णोराज (1130-1150 ई.)**
- इसने तुर्कों को अजमेर में पराजित किया।
- यह शैव मतानुयायी था।
- पुष्कर तीर्थ में 'वराह मंदिर'(जहांगीर द्वारा तुड़वा दिया गया) बनवाया।
- इसके पुत्र जगदेव ने इसका वध कर दिया।
- **विग्रहराज चतुर्थ (बीसलदेव) (1153-1163)**
- इस वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक।
- राजस्थान में चालुक्य क्षेत्रों मेवाड़ तथा मारवाड़ पर विजय प्राप्त की।
- तोमर राजा तंवर को हराकर दिल्ली पर जीत हासिल की।
- इसकी सबसे बड़ी सफलता 'तोमरो को अपना सामंत बना लेना था।'
- इसके 'हरिकेलि' नामक नाटक के कुछ अंश अजमेर में 'अढ़ाई दिन का झोपड़ा' मस्जिद की सीढ़ी पर अंकित हैं।
- इसके राजकवि सोमदेव ने 'ललित विग्रहराज' नामक नाटक लिखा।
- इसकी उपलब्धियों का वर्णन दिल्ली-शिवालिक स्तंभलेख में मिलता हैं।

- **Note:-**
- वर्तमान में 'अढ़ाई दिन का झोपड़ा' नामक मस्जिद मूलतः विग्रहराज बीसलदेव द्वारा बनवाया गया संस्कृत विद्यालय था।

- **पृथ्वीराज तृतीय (1177-1192 ई.)**
- **उपाधि** – रामपिथौरा
- **माता -** कर्पूरदेवी
- **पिता -** चौहान राजा सोमेश्वर
- इस वंश का सबसे प्रसिद्ध राजा ।
- मां तथा मंत्री कैम्बास के संरक्षण में बाल्यावस्था (14 वर्ष) में राजा बने।
- चाचा भुवनेकमल्ल का भी प्रशासनिक कार्यों में सहयोग मिला ।
- दरबारी विद्वान - विद्यापति गौड़,पृथ्वीभट्ट, जयानक भट्ट,वागीश्वर, जनार्दन, विश्वरूप।
- इनके राजकवि चन्दबरदाई ने पृथ्वीराज रासो इनके राज्याश्रय में ही लिखा।

- **Note:-**
- चन्दबरदाईका पृथ्वीराज रासो हिंदी साहित्य का प्रथम महाकाव्य हैं

- **तराइन का प्रथम युद्ध-**
  - **वर्ष** -1191 ई.
  - **मध्य -** मुहम्मद गोरी तथा पृथ्वीराज तृतीय
  - **अन्य तथ्य** - मुहम्मद गोरी पराजित हुआ और गजनी लौट गया।
- **तराइन का द्वितीय युद्ध-**
  - **वर्ष -** 1192 ई.
  - **मध्य** - मुहम्मद गोरी तथा पृथ्वीराज तृतीय।
  - **अन्य तथ्य -** पृथ्वीराज तृतीय पराजित हुआ तथा मार डाला गया।

- मुहम्मद गोरी ने दिल्ली पर अधिकार कर भारत में तुर्की राज्य की स्थापना की नींव डाली।

Saarthi

THE COACH

1 : 1 MENTORSHIP BEYOND THE CLASSES

- **Diagnosis** of candidates based on background, level of preparation and task completed.
- **Customized solution** based on Diagnosis.
- One to One **Mentorship.**
- Personalized schedule **planning.**
- Regular **Progress tracking.**
- **One to One classes** for Needed subjects along with online access of all the subjects.
- Topic wise **Notes Making sessions**.
- One Pager **(1 Topic 1 page)** Notes session.
- **PYQ** (Previous year questions) Drafting session.
- **Thematic charts** Making session.
- **Answer-writing** Guidance Program.
- **MOCK Test** with comprehensive & swift assessment & feedback.

Ashutosh Srivastava
(B.E., MBA, Gold Medalist)
Mentored 250+ Successful Aspirants over a period of 12+ years for Civil Services & Judicial Services Exams at both the Centre and state levels.

Manish Shukla
Mentored 100+ Successful Aspirants over a period of 9+ years for Civil Services Exams at both the Centre and state levels.

WALL OF FAME

UTKARSHA NISHAD
UPSC RANK - 18

SURABHI DWIVEDI
UPSC RANK - 55

SATEESH PATEL
UPSC RANK - 163

SATWIK SRIVASTAVA
SDM RANK-3

DEEPAK SINGH
SDM RANK-20

ALOK MISHRA
DEPUTY JAILOR RANK-11

SHIPRA SAXENA
GIC PRINCIPAL (PCS-2021)

SALTANAT PARWEEN
SDM (PCS-2022)

KM. NEHA
SUB REGISTRAR (PCS-2021)

SUNIL KUMAR
MAGISTRATE (PCS-2021)

ROSHANI SINGH
DIET (PCS-2020)

AVISHANK S. CHAUHAN
ASST. COMMISSIONER
SUGARCANE (PCS-2018)

SANDEEP K. SATYARTHI
CTO (PCS-2018)

MANISH KUMAR
DIET (PCS-2018)

AFTAB ALAM
PCS OFFICER

ASHUTOSH TIWARI
SDM (PCS-2022)

CHANDAN SHARMA
Magistrate
Roll no. 301349

YOU CAN BE THE NEXT....

8009803231 / 8354021661

D 22&23, PURNIYA CHAURAHA, NEAR MAHALAXMI SWEET HOUSE, SECTOR H, SECTOR E, ALIGANJ, LUCKNOW, UTTAR PRADESH 226024

MRP:- ₹198